Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

SAMELAN PATRIKA 1970 G.K.V.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

113047

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

RT 0541

सम्मेलनपत्रिका

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की मुखपत्रिका

सम्पादक

गिरिजाकुमार घोष

ाग १ } कार्तिक और मार्गशीर्ष संवत् १९७० { अङ्क २-३

विषयसूची

	पृष्ठ
-हिन्दी भाषा में उच्च शिक्षा देने के उपाय	३३
िन्दी साहित्य की सच्ची उन्नति के उपाय	३४
न्दी भाषियों के लिये कुछ सोचने का मसाला	३६
ग्राम्य कविता	३८
ङ्गाभरण	४०
न्दी भाषा में वैद्यक का एक ग्रन्थ	४६
हिन्दी परीक्षा की नियमावली	४६
-भागलपुर में हिन्दी-साहित्य प्रदर्शनी	५१
-संयुक्त प्रान्त में प्रारम्भिक शिक्षा	५५
—पुस्तक प्राप्तिस्वीकार	६३
—सम्मेलन की स्थायी समिति का अधिवेशन	६५
—विविध	७

ार्षिक मूल्य १)] १९१३ ई० [एक संख्या =)

साहित्य-सम्मेलन कार्यालय से बा० नरेन्द्रनारायण सिंह द्वारा प्रकाशित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन के उद्देश्य

(१) हिन्दी साहित्य के अङ्गों की उन्नति का प्रयत्न करना।

(२) देवनागरी लिपि का देश भर प्रचार करना और देश व्यापी व्यवहारों और कार्यों के सुलभ करने के लिए हिन्दी भाषा को राष्ट्रभाषा बनाने का प्रयत्न करना।

(३) हिन्दी को सुगम, मनोरम और लाभदायक बनाने के लिए समय समय पर उसकी शैली के संशोधन और उसकी त्रुटियों और अभावों के दूर करने का प्रयत्न करना।

(४) सरकार, देशी राज्यों, पाठशालाओं, कालेजों, विश्व विद्यालयों और अन्य संस्थाओं, समाजों, जनसमूहों तथा व्यापार, ज़मींदारी और अदालतों के कार्यों में देवनागरी लिपि और हिन्दी भाषा के प्रचार का उद्योग करते रहना।

(५) हिन्दी के ग्रन्थकारों, लेखकों, पत्रसंपादकों, प्रचारकों और सहायकों को समय समय पर उत्साहित करने के लिए पारितोषिक, प्रशंसापत्र, पदक, उपाधि आदि से सम्मानित करना।

(६) उच्च-शिक्षा प्राप्त युवकों में हिन्दी का अनुराग उत्पन्न करने और बढ़ाने के लिए प्रयत्न करना।

(७) जहां आवश्यकता समझी जाय वहां पाठशाला, समिति तथा पुस्तकालय स्थापित करने और कराने का उद्योग करना तथा इस प्रकार की वर्त्तमान संस्थाओं की सहायता करना।

(८) हिन्दी-साहित्य के विद्वानों को तैयार करने के लिए हिन्दी की उच्च परीक्षाएं लेने का प्रबन्ध करना।

(९) हिन्दी भाषा के साहित्य की वृद्धि के लिए उपयोगी पुस्तकें तैयार कराना।

(१०) हिन्दी-साहित्य सम्मेलन के उद्देश्यों की सिद्धि और सफलता के लिए अन्य जो उपाय आवश्यक और उपयुक्त समझे जांय उन्हें काम में लाना।

सम्मेलन-पत्रिका का उद्देश्य

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के उद्देश्यों की पूर्त्ति में सहायता करना, और साहित्य-प्रेमियों से इसीके लिए उपदेश लेना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

113047

सम्मेलनपत्रिका

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की कार्यकारिणी समिति
की ओर से प्रतिमास प्रकाशित

भाग १ } कार्तिक और मार्गशीर्ष संवत् १९७० { अङ्क २-३

हिन्दी भाषा में उच्च शिक्षा देने के उपाय

आजकल चिन्ताशील विद्वान लोगों की बहुधा यह राय है कि मातृभाषा की सहायता से सभी विषयों में, और युनिवर्सिटी की ऊंची से ऊंची कक्षाओं में भी, शिक्षा देनी चाहिए। आजकल अंगरेज़ी की सहायता से छात्रगण एम. ए., बी. ए., आदि उच्च शिक्षा पाते हैं। चेष्टा ऐसी होनी चाहिए कि आगे चलकर यही शिक्षा, जहां जहां हिन्दी का प्रचार है, उन प्रान्तों में हिन्दी द्वारा ही दी जाया करे। हिन्दी के आधार से विज्ञान, साहित्य, भूगोल, गणित आदि सभी पाठ्य विषयों की शिक्षा बहुत अच्छी रीति से और आजकल की बराबरी में बहुत ही थोड़े व्यय से और थोड़े समय में दी जा सकती है। विदेशी भाषा में विषयों की शिक्षा लेने में छात्रों को जितनी कठिनाइयां पड़ती हैं, उनके समझने में जितना परिश्रम करना पड़ता है, और जितना समय लग जाता है, अपनी मातृभाषा में सरल और आधुनिक रीति से शिक्षा मिलने पर वे सब दोष दूर हो जायंगे। छात्रगण थोड़े समय में अधिक विषयों की जानकारी पा सकेंगे। साथ ही अंगरेज़ी साहित्य की शिक्षा भी जारी रहेगी। उसको कुछ भी हानि न पहुंचेगी। कांगड़ी के गुरुकुल में कुछ कुछ इसी ढंग से कार्य्य हो रहा है। अब इस प्रणाली को अधिकतर कार्य्यकारिणी बनाने का भार हमारी हिन्दू यूनिवर्सिटी को भी लेना चाहिए, और जहां तक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्भव हो, गवर्नमेन्ट को भी इसी प्रणाली का अनुसरण करना चाहिए।

हिन्दी-भाषा के आधार से उच्चशिक्षा देने के लिए इस समय निस्सन्देह कई भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। इसके लिए हिन्दी साहित्य को कुछ काल ही के भीतर—बहुत ही शीघ्र—परिपुष्ट और सर्वतोमुख बना लेना उचित है। इस उद्देश की पूर्ति के लिए कुछ लेखक, अनुवादक और अध्यापकों से साहित्य-सेवा के लिए सांसारिक दूसरे सब झगड़े छोड़ कर जीवन व्यतीत करवाना उचित है। कुछ अनुभवी अन्य-प्रान्तवासी सज्जनों की सम्मति है कि साहित्य-संसार में एक ऐसी नीति का प्रचार कर उन लोगों को यथोचित धन की मासिक सहायता देने का प्रबन्ध होना चाहिए। इस पुण्यकार्य का श्रीगणेश करने के लिए हम हिन्दू धनकुबेरों से आवेदन करते हैं। शिक्षा प्रचार के लिए बम्बई के रायचन्द्र प्रेमचन्द जी के दान ने उनका नाम संसार में अमर बना दिया है। बङ्गाल के भी कई महात्माओं ने शिक्षा विस्तार की इच्छा से बहुत धन दे डाले हैं और उस धन से कार्य्य भी अच्छा हो रहा है। अभी श्रीयुत रासविहारी घोष महाशय के दान की बात सब लोगों की स्मृति में ताज़ी बनी हुई है। प्रयाग में कायस्थ-पाठशाला स्थापन करने के लिए मुन्शी कालीप्रसाद जी ने अपनी सारी कमाई दे डाली है। परन्तु हमारी प्रस्तावित प्रणाली के प्रचार के लिए धन दान करने का यश और पुण्य यदि हिन्दी माता के सुपूत अपने ऊपर ले सकें तो अकेले युक्तप्रान्त में ही नहीं, सारे भारतवर्ष में, सारे संसार में, उनका नाम रह जावेगा और एक बहुत ही बड़े महत्व का कार्य बन जावेगा। इस प्रणाली पर मातृभाषा द्वारा शिक्षा दिये जाने पर हिन्दी-भाषाभाषी बहुत थोड़े समय में अच्छी शिक्षा पाकर भारतमाता की सेवा कर सकेंगे।

हिन्दी साहित्य की सच्ची उन्नति के उपाय

हिन्दी-भाषा की सहायता से शिक्षा प्रचार करने के लिए जिस उपाय के प्रयोग की आवश्यकता हम ऊपर दिखा चुके हैं, उसी प्रकार साहित्य की सच्ची उन्नति करने के लिए ग्रन्थकार-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्प्रदाय के स्वत्वों की रक्षा के लिए, भी एक नई संस्था की नींव डाल देने का समय आ पहुंचा है। इस समय हिन्दी पुस्तकों के छापने और सस्ते दामों पर बेचने के लिए एक उपयोगी पुस्तक-प्रकाशक कार्य्यालय की आवश्यकता है। इस समय जो लोग पुस्तक-प्रकाशक हैं, प्रायः वे व्यवसाय के लिए काम करते हैं, वे प्रतिभा का आदर करना नहीं जानते। वे अधिकतर गोल गोल चक्राकार चमकीले ठन ठन बोलनेवाले देवता के उपासक हैं। इसीलिए ग्रन्थरचना की योग्यता रखनेवाले बहुत से विद्वानों को दूसरे उपायों से जीविका ढूंढ़ने की चेष्टा करनी पड़ती है। इससे अब उचित है कि अन्यत्र वर्णित संरक्षण-नीति का उपयोग ग्रन्थ-कार-सम्प्रदाय की रक्षा के लिए भी किया जावे। इस कार्य का होना उतना कठिन नहीं है। एक लाख या प्रारम्भ में पचास हज़ार रुपये की पूंजी से हिन्दी-ग्रन्थ-प्रकाशक-संस्था के नाम से यह उद्योग करना चाहिए। हिन्दी-साहित्य के सभी सेवक इस संस्था में भाग ले सकते हैं। सब लोग मिलकर पांच पांच रुपये का एक एक अंश अपनाकर अनायास पूंजी का धन इकट्ठा कर सकते हैं। पांच रुपया इस महत्वपूर्ण कार्य के लिए एक ही बार उधार की भांति दे डालना साधारण आय के गृहस्थों के लिए भी असम्भव नहीं है। बड़े लोगों की तो बात ही न्यारी है। वे लोग एक साथ दस, बीस, या सौ, दो सौ अंश भी ले सकते हैं। इस प्रकार बटोरे हुए धन से पहिले आजकल की नवीन रीति पर एक छापाखाना स्थापित किया जावे जहां उत्तमरूप में पुस्तकें छापी जा सकें और उनके जिल्द भी बांधे जा सकें। इसी मुद्रणालय के अधिकारी को पुस्तकों के प्रचार आदि का भी उद्योग करना होगा। और सस्ते दामों पर पुस्तकें भली प्रकार बेंची जा सकती हैं। पुस्तकों की बिक्री से जो आय होगी उसमें से मण्डली पहिले अपनी लागत निकाल लिया करे। तब प्रत्येक पुस्तक के जीवनकाल तक, बराबर, उसके लाभ में से आधा भाग प्रतिमास ग्रन्थकार को दिया जावे। बाकी आधे में से आधा कार्यालय की उत्तरोत्तर भविष्य उन्नति के लिए रख छोड़ा जावे, और लाभ का चौथाई अंश पूंजी का धन उधार देनेवालों को उनके अंशों के अनुसार लौटा दिया जावे। इस रीति से कुछ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय में प्रत्येक सहायक का धन उनके पास लौट आवेगा, और हिन्दी संसार में एक सच्चा धर्मानुष्ठान स्थापित हो सकेगा।

हिन्दी भाषियों के लिए कुछ सोचने का मसाला।

वङ्ग-भाषा में "गृहस्थ" नाम की एक मासिक पुस्तक है। उसकी एक संख्या में बंगालियों को, देखिए, कैसा सुन्दर उपदेश दिया गया है। यह उपदेश बंगालियों के लिए है, परन्तु इसमें हिन्दी-भाषियों के लिए भी सोचने के लिए, काम करने के लिए, अपने को उन्नत करने के लिए, बहुत अच्छे स्वास्थ्यकर मसाले भरे हैं। इसलिए उस उपदेश के कुछ अंश का हिन्दी अनुवाद यहां पर दिया जाता है:—

बंगालियों का कर्म्मक्षेत्र और जातीय साहित्य।

'आपलोग बंगला साहित्य को बड़ा बनाना चाहते हैं तो बंगाली जाति को बड़ा बनाइए। बंगला भाषा के भीतर जो सब भावों को लाना चाहते हों तो बंगला समाज को सब बातों में, सब विषयों में, गौरवान्वित करने की चेष्टा कीजिए, बंगाल के मनुष्यों को दूरदर्शी, चौड़े दिलवाले (प्रशस्तहृदय) और चालचलन के साधु (चरित्रवान्) बनाने की तैयारी कीजिए। यदि बंगालियों के साहित्य को विशाल और विपुल विस्तार में देखना चाहते हैं, तो अनेक उपायों से बंगाल देशभर को मानव-समाज में पूज्य वरेण्य, महनीय बना डालिये। बंगाली के कर्मक्षेत्र का विस्तार हो, बंगालियों का चिन्ताराज्य बढ़ने लगे, तब बंगाली जाति का साहित्य मनुष्यजाति के सारस्वतक्षेत्र में सिर ऊंचा करके खड़ा हो सकेगा। बंगाल के समाज में से छोटी बातें, ओछी तुच्छ बातें, स्वार्थ की बातें, नीचाशयता की बातें, दूर हटा दीजिए। इनके बदले असाधारण चिन्ता, असामान्य आलोचना, अनन्त काम की बातें, असाध्य साधन की प्रचेष्टा, असीम प्रेम, और अक्षय ज्ञान की बातें बंगाल के जनगण के हृदयों में, मस्तिष्कों में स्थान पाने लगें। बंगाल के ज़िले ज़िले में पञ्चनद (पञ्जाब) की कथा, महाराष्ट्र की कथा, द्राविड़ की कथा, सिंहल की कथा, आलोचित हुआ करे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पञ्चनद के ज़िले ज़िले में, द्राविड़ के प्रान्त प्रान्त में, सिंहल के नगर नगर में बंगाल के अनुष्ठान, बंगाल के प्रतिष्ठान, बंगाल के इतिहास की बातें, बंगाली की शिल्प-चतुराई, बंगाली के काम काज की आलोचना हुआ करे। बंगाल के विद्यालय विद्यालय में चीन का साहित्य, जापान का शिल्प, अमेरिका का व्यापार, यूरोप का राष्ट्र बंगाली बच्चों और युवाओं के नित्यप्रति के शिक्षणीय विषय होवें। चीन-जापान के विद्यामन्दिर में, बर्लिन हार्वार्ड केम्ब्रिज के विश्वविद्यालयों में बंगाली का धर्म्म, बंगाली की समाज, बंगाली की रीतिनीति, विभिन्न देशवासी के पाठ्य विषयों में सन्निविष्ट हो जायं। बंगाली दुस्साध्य कार्य आरम्भ करें, असम्भव साधना में लग जावें, बंगाली अपने कर्म्मराज्य का विस्तार करें, विशाल जगत को अपनी चिन्ता का विषय बना लें, —तब बंगाल के साहित्य-सम्मिलन सार्थक होंगे।

"मनुष्य का कर्म्मक्षेत्र ही सब प्रकार के भाव और धारणाओं का कारण है। जीवन के वैचित्र्य और गम्भीरता ही से चिन्ता और आकांक्षा के प्राचुर्य्य और वैचित्र्य का जन्म होता है। इसलिए भाषा और साहित्य को समृद्धिशाली और ऐश्वर्यशाली बनाने के लिए विविध उपायों से सच्चे जीवन के कर्म्मक्षेत्र को विचित्र समस्याओं से पूर्ण और बहुतेरी घटनावलियों से युक्त बनाना पड़ेगा। राष्ट्रीय, सामाजिक और व्यक्तिगत जीवन की समग्रता, सर्वग्राहिता और सचेष्ट कार्य्यपटुता का प्रवेश बिना हुए भाषा अपनी शक्ति प्रकट करने का अवसर नहीं पाती; साहित्य भी अपने को सर्व्वत्र फैलाकर विपुल और वेगवान् नहीं हो सकता।"

"भारतवर्ष की आधुनिक भाषाओं और साहित्यों को परिपूर्ण करने के लिए हम लोगों को भिन्न भिन्न प्रदेशों के रहनेवालों के जीवन जिस प्रकार विचित्र कर्त्तव्यमय और बहुत सी घटनावलिओं के आधार बन सकें, उसकी चर्चा करनी होगी। बंगाली देश और महाराष्ट्र, पञ्जाब और आन्ध्रदेश (यानी मद्रास) जिस रीति से एक दूसरे को आपस में विशेषभाव से सब बातों में अच्छी तरह जान सके, उसका प्रबन्ध करना होगा। एक प्रदेश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के मनुष्य अन्य प्रदेश में जाकर जिस तरह कर्म्मक्षेत्र बना सकें, इसके लिए सहायता करनी होगी। प्रादेशिक भाषाएं भारतवर्ष के सब स्थानों में उच्चशिक्षा के विषय हो सकें, इसकी चेष्टा करनी होगी। इसी भांति हमारे प्रत्येक प्रदेश को दूसरे प्रदेशों से अनेक उपायों से नातेदारी करनी होगी।

"इसके सिवाय संसार के दूसरे देशों के साथ भी भारतवर्ष का सम्बन्ध गहरा बनाना होगा। भारतवासी जिस तरह भिन्न भिन्न जातियों में रह कर भी अपने अपने समाज में विद्या में, वाणिज्य में और दूसरे और और कार्यों में प्रतिष्ठा पा सकें, उसके लिए भी चेष्टा करनी होगी। भिन्न राष्ट्रों में कर्मचारियों के पद पर नियोजित होकर जिससे हमारे देश के शिक्षित मनुष्य विदेश ही में जीवन बिता सकें, जिससे भिन्न देशों में हमारे समाज, धर्म और साहित्य की आलोचना करके शिक्षित जातियों की सहानुभूति आकर्षित कर सकें, और जिससे भिन्न सभ्य जाति की राष्ट्रीय व्यवस्था, व्यापार और धर्म्मजीवन हमारे देशों में विस्तार के साथ आलोचित हो सके, इन सबके लिए उपाय करना होगा। फ्रेञ्च और जर्मन, कम से कम इन दो यूरोपीय भाषाओं को भारतवर्ष की उच्चशिक्षा-पद्धति में भली प्रकार चलाना होगा"।

हिन्दी-भाषा के रसिकों को देखना चाहिए कि यह उपदेश असल में वङ्गभाषा-भाषियों के लिए होने पर भी इसमें कैसी व्यापक और उदार नीति का आभास मिलता है। अब सब प्रान्तवासी इस बात को समझने लगे हैं कि सब भेदभाव भूल कर आपस के मेल से विश्वव्यापी व्यापक-नीति से कार्य करना होगा।

ग्राम्य कविता

जो लोग कानों को सुख पहुंचानेवाले छन्दों द्वारा शब्दों से शब्दों को जोड़कर वाक्यों की छटा से सबको मोहने की चेष्टा करते हैं, अशिक्षित साधारण लोग उन्हींको कवि कहकर उनका आदर करते हैं। ऐसे कवि और उनके काव्यों के परीक्षास्थल कान हैं। कविता भी सुरताल से पढ़ी वा कही जाती है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसीके साथ साथ शरीर भी विविध ढंग से नाचने लगता है। फ़ारसी, उर्दू, हिन्दी, बंगला और संस्कृत आदि भाषाओं में ऐसे काव्यों की कमी नहीं है। भाट, कत्थक आदि गवैये इसी श्रेणी के कवि हैं। इन्हें किसी नाम से पुकारना चाहें तो इनका नाम शाब्दिक कवि रखना अनुचित न होगा। क्योंकि शब्द-विन्यास की चतुराई को छोड़ इनकी कविताओं में और कुछ नहीं रहता। कभी कुछ रहता भी हो तो वह स्वादग्राही मनुष्य के योग्य नहीं समझा जाता। सहृदय मनुष्य काव्य की खोज में कुछ और ऊपर चढ़ते हैं। वे छन्दोबद्ध वाक्यों ही को सुनकर पूरा आनन्द नहीं पाते। वे काव्य में भाव का भी अन्वेषण करते हैं। वे कानों से नहीं, हृदय से सुनते हैं।

परन्तु यहां पर हमारी दृष्टि भावुक कवियों की काव्यपिपासा पर नहीं है। हम पूछते हैं, "बजरिया में नजरिया लगाय गयो सँमरिया" को गानेवाली कोकिल-कंठवाली ग्राम्यरमणियों को किसने कविता सिखलायी? चक्की के घरघर निर्घोष से विदेश जानेवाले सँइया की स्मृति में कोमल रागिणी की तानलय मिलाने वाली विरहिनियों को अपने तापतप्त अन्तःकरण की करुणवेदना प्रकाश करने की भाषा किस निर्झर से फूट निकली? इस श्रेणी के नारीकाव्यों की रचना करनेवाली स्त्रियां भी तो कवि ही न हैं? उनके काव्य में चाहे पिंगल के नियम, शब्दों की छटा, और सभ्यसमाज के उपयोगी रस का आभास न मिलते हों, फिर भी हमारी स्वल्पबुद्धि में वे शाब्दिक कवि हैं, क्योंकि उनकी असंलग्न कविता हमारे समान सूखे साखे नीरसमस्तिष्क वाले नराधमों के कर्णों को भी आकृष्ट करने की पूरी शक्ति रखती है, और कभी कभी उनके हृदय की वेदना से समाज की बहुत सी सच्ची बातें हृदय में एक प्रकार का भाव उत्पन्न कर ही देती हैं। हमने बहुधा सोचा है, इनकी कविताओं का यदि संग्रह हो सके तो काव्य-संसार के किसी अंग का इतिहास, ग्राम्यसमाज की मानसिक-वृत्ति तथा सामाजिक तत्वों के उपोद्घात आदि खोजने का मसाला हाथ लग सकता है। एक ठकुरानी जी ने—जो एक मित्र की हृदयलक्ष्मी हैं—हमारे आग्रह करने पर अपने प्रान्त की चक्की-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संगीतों का संग्रह करने की हामी भरी थी। परन्तु अभी तक वह इस कार्य को पूरा नहीं कर सकी हैं। क्या हम अपने सब पाठक पाठिकाओं से इन निरक्षर अशिक्षिता कवि नारियों के हृदयोच्छ्वासों का संग्रह करने की प्रार्थना कर सकते हैं? यदि सब सज्जन इस प्रकार के एक-एक भी चक्की-संगीत यथावत् भाषा में लिखकर मेरे पास भेजेंगे तो सम्भव है, काव्य के इस अंग का भी एक अद्भुत ग्रन्थ किसी समय साहित्यसेवियों के विनोद के लिए प्रकाशित हो सकेगा।

गङ्गाभरण

पण्डित नन्दकिशोर मिश्र उपनाम लेखराज रचित, तथा उनके पौत्र पण्डित कृष्णविहारी मिश्र, बी. ए., केनिंग कालेज, लखनऊ द्वारा प्रकाशित। डिमाई अठपेजी के ६+१४+१०० पृष्ठ। प्रकाशक से प्राप्य। मूल्य ।=), [१६११]

लेखराजजी (सं० १८८८—१९४९) सीतापुर ज़िला के अन्तर्गत गंधौली ग्रामनिवासी एक अच्छे कवि हो गये हैं। शिवसिंह-सरोज में आपका वर्णन करते हुए जिस ग्रन्थ का नाम लेखक ने भूल से "गङ्गाभूषण" लिखा है वह यही गंगाभरण है, जिसे भूमिका और और संक्षिप्त जीवनचरित समेत उनके सुयोग्य पौत्र ने प्रकाशित किया है। कागज़ और छपाई साधारणतः अच्छी है, किन्तु हिन्दी का कुछ ऐसा दुर्भाग्य है कि शुद्ध छपाई विरले ही होती है। इस ग्रन्थ में प्रेस के प्रेत के सिवा प्रकाशक का समयाभाव भी उन भूलों का कारण जान पड़ता है जो शुद्धाशुद्धिपत्र होते हुए भी रह गयी हैं। जैसे मनहरण नं० ८३ में "कहे" "सापने" "पुजवारे" या दोहा नं० २१५ में "अहं" जो कदाचित् "अहै" के बदले छप गया है। इन अशुद्धियों से पाठकों को अर्थ समझने में जो भ्रम होता है वह कविता के प्रसादगुण को नष्ट कर देता है। शुद्धा-शुद्धि-पत्र को तो ग्रन्थ की बुरी छपाई का सर्टिफ़िकेट समझना चाहिए। किन्तु हमारे प्रेसों में लज्जा का भाव या तो कुंठित हो गया है, या शायद उनके हृदय में उसका उदय ही नहीं हुआ। यदि अशुद्धियाँ न होतीं तो इन्हीं दो पृष्ठों में योग्य प्रकाशक महाशय अकारादि क्रम से अलंकारों की एक अनुक्रमणिका दे देते तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

3113047

पुस्तक की उपयोगिता बहुत बढ़ जाती । "कविवर लेखराजजी" वस्तुतः कवि थे और अच्छे कवि थे। माध्यमिक काल के कवियों में प्रायः काव्यरचना की यही एक शैली थी कि वे बहुधा नायिका-भेद, नखसिख अलङ्कारादि पर ग्रन्थ लिखकर नियमों के उदाहरण के बहाने सब अंगों में अपना रचना-कौशल दरसाते थे और अपना नाम चिरस्थायी करने के लिए बहुत अच्छा उपाय कर जाते थे। चन्द, सूर, तुलसी, जायसी, विहारी आदि कुछ को छोड़ केशव, देव, दास, तोषनिधि, पद्माकर मतिराम प्रभृति सब ही कवियों ने इस रीति का अनुसरण किया है। लेखराज जी यद्यपि इस नियम के अपवाद नहीं थे, तथापि इतना कहा जा सकता है कि इन्होंने यह अलङ्कार ग्रन्थ सच्ची भक्ति के भाव से लिखा है।

गंगाजी की स्तुति में पद्माकर की गंगालहरी प्रसिद्ध है और पहले की है। यदि हम गंगाभरण की कविता की तुलना करना चाहें तो साथ ही साथ गंगालहरी को भी पढ़ना चाहिए। दोनों को ध्यानपूर्वक पढ़ने से यह अवश्य प्रतीत होगा कि पद्माकर की कविता अधिक प्रसादगुणवाली है, तथा पद्माकर की अपेक्षा लेखराजजी ने कवियों के प्रयोग-स्वातंत्र्य से (Poetic License) अत्यधिक काम लिया है। प्रकाशक इस बात को अपनी भूमिका में स्वीकार भी करता है, किन्तु हमारी राय में इस दरजे की "निरंकुशता" कम से कम इस शताब्दी में क्षम्य नहीं है। हम मानते हैं कि पद्य-रचना में कवियों को किसी हद तक निरंकुश होना पड़ता है, किन्तु गद्य-साहित्य का ज्यों ज्यों विस्तार होता है त्यों त्यों पद्य में निरंकुशता की सीमा संकुचित होती जाती है। लेखराज के पहले के कई कवियों ने उनसे भी अधिक स्वातंत्र्य से काम लिया है, किन्तु हम इसे कभी सराहनीय नहीं कहते। हमारे कवि शब्दालङ्कार की ओर इतना अधिक झुके हुए हैं कि अनुप्रास के लिए साधारण व्याकरण का गला घोटने में उन्हें तनिक भी संकोच नहीं होता। लेखराज की कविता में भी इसका उदाहरण कई जगह मिलता है। मनहरण नं० ८३ में ही "नीति रीति" के स्त्रीलिंग होते हुए "धारे" की जगह "धारी" ही शुद्ध होता, किन्तु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और तीनों अन्त्यानुप्रासों के कारण "धारे" लिखना पड़ा। इसी तरह सवैया नं० २४८ में, जिसको जीवनचरित में उद्धृत किया गया है, पहले चरण के अन्त्यानुप्रासमें "भयो वास परे हैं" में "भयो हैं" पद आता है। "है" इसलिए नहीं लिख सकते कि और तीनों चरणों में "हैं" ही हो सकता है। इसके अतिरिक्त "मुनीश की" जगह "मुनेश" और "खगेश" की जगह "खगीश" का प्रयोग भी जान बूझकर अनुप्रासों के लिए हुआ है। अब ऐसा प्रयोग क्षम्य नहीं समझा जाता, और अर्थ की गम्भीरता तथा गौरव को मूल और कोरे शब्दालङ्कार को गौण समझना ही उचित है। "कवयः परितुष्यन्ति नेतरे कविसूक्तिभिः" के अनुसार कवि न होने के कारण सम्भव है कि हमने कवि के श्रम को सम्यक-रीत्या न समझा हो, तथापि इतना कहने की धृष्टता हमको लेखराज और पद्माकर को साथ साथ पढ़ने से आती है। सहृदय पाठकों के विनोदार्थ हम उभय कवियों की रचना से ऐसे पद्य चुनते हैं, जिनमें भाव, अलङ्कार वा कल्पना की समानता है, यथा —

(तृतीय विभावना का उदाहरण)

लेखराज

मरो एक कामी क्रोधी कलही कृतघ्नी क्रूर,
कोढ़ी कृमि क्लेश ते न नेकहुँ हलो गयो।
कौन कहै मौन भलो जौन भई पौन पर्सि[1],
गंगजल ताके भौन गौन कै भलो गयो।
लेखराज देवराज साज सब लीन्हे ठाढ़े,
अप्सरा विमान हू ते नेक न छलो गयो।
दूत दबकाय चित्रगुप्तहिं[2] चकाय जमराजहिं,
जकाय शिवलोकहिं चलो गयो। १४३॥

पद्माकर

तहां आई भूमिते लगाई आसमान हु लौं,
जान गीरवान औ विमानन के लगे थोक।

---

(१) द्वितीय पद का भाव स्पष्ट नहीं है।

(२) पुस्तक में 'चित्रगप्त हिंचकाय' है। हमारी समझ में 'चित्रगुप्तहिं चकाय' का यह "दशरा मशराः" रूप है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहै पद्माकर जो कोऊ नर जैसे तैसे,
तन देत गंगातीर तजिकै महान शोक ॥
सो तौ देत व्याधै विष, दुखन दिनाई देत,
पापन के पुंज को पहारन को ठोक ठोक ।
दगा देत दूतन, चुनौती चित्रगुप्तै देत,
जमको जरब देत, पापी लेत शिवलोक ॥३४॥

("षष्ठम विभावना" का उदाहरण)

लेखराज ।

कहै लेखराज खगराज जाय आजिज़ी सों,
हरिसों कहत बात चुगुली समाजती ।
हौं तौ भयो विकल सकल पापी लादि,
लादि लेन देत कल न अधिकतर गाजती ॥
कौन परी बान आन, निपट मलान मन,
तजी कुलकान तापै नेकऊ न लाजती ।
छोह तुअ तजि निरमोह ताको भजि,
गंगा तोहीते उपजि नित तोही उपराजती ॥१४६॥

("द्वितीय विशेष" का उदाहरण)

पद्माकर ।

यम को न जोर जब पापिन पै चल्यो तब,
हाथ जोरि गंगाजू सों विनती करै खरे ।
बड़ेन पै ढरौना पै ढरौ देवि तुच्छन पै,
कहै पद्माकर सुनावत हरे हरे ॥
बड़ेन पै ढरे बड़ी पाइये बड़ाई देखौ,
ईश पै ढरीं तौ तुम्हैं ईश शीश पै ढरे ।
तुच्छन को देती जैसो नारायन रूप तैसो,
तुच्छ तुम्हैं तुच्छ करि पायन तरे करे ॥२६॥

लेखराज ।

तरु मैं औ तीर मैं औ तोय औ तरंगन मैं,
तरकी न जात है तुरत सो निकारी सी ।
रेत मैं औ खेत मैं औ सेत मैं औ हेतहू मैं,
देत है दिखाई लेत सब जन्म हारी सी ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाउन के भौंर हू में पारावार दौर हू में,
रोरहू में जलके सुभौंर हू में भारी सी।
कहै लेखराज मैं निहारी गंगा सारी ठौर,
मुकति बिचारी फिरै मारी दई मारीसी ॥१८६॥

पद्माकर।

रेनुका की रासन में कीच कुस कासन में,
निकट निवासन में आसन लदाऊ के।
कहै पद्माकर तहाँई मंजु सूरन में,
धौरी धौरी धूरन में पूरन प्रभाऊ के॥
वारन में पारन में देखहु दरारन में,
नाचति है मुकुती अधीन सब काऊ के।
कूल औ कछारन में गंगाजल धारन में,
मँझरा मझारन में भारन में भाऊ के॥ २१॥

विस्तारभय से अधिक उदाहरण न देकर रसज्ञ पाठकों से हमारा अनुरोध है कि लेखराज के १८६ से पद्माकर का ३, लेखराज के १८८ से पद्माकर का ४, इसी तरह और भी समान-कल्पना की रचना मिलावें। हमने जो पहले कहा है उसकी पुष्टि हो जायगी।

पिछले कवियों में पद्माकर मनहरण और कवित्त लिखने में बड़े सिद्धहस्त थे एवं रसिक लोग प्रायः इन्हें बड़ी उच्च पदवी देते हैं। हमने पद्माकर से यदि लेखराज की रचना का मिलान किया तो इसी अभिप्राय से कि लेखराज को उनके दोषों के होते हुए भी हम सुकवि समझते हैं। इसमें सन्देह नहीं कि कहीं कहीं लेखराज की रचना बहुत ही अच्छी हो गयी है जो पद्माकर से कम नहीं है; मर्म्मज्ञ पाठक २८, २१२, २१६, २६७, ३२८, ३३०, ३४१, ३४५ इत्यादि पढ़ कर देख लें। कहीं कहीं तो लेखराजजी पद्माकर से भी बढ़ गये हैं, यथा—

(तृतीय विषम का उदाहरण)

लेखराज

देव नदी तट एक दिना,
लेखराज कहूं खगराज विराजो।
बारि में व्याल विलोकि गहो तेहि,
भच्छिबे को जो मनोरथ साजो॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छूटत प्रान लखो तहं अद्भुत,
कौतुक एक नयो उपराजो।
अंग[१] अहीश खगीश के आनन,
प्रान गोबिन्द ह्वै कंध पै गाजो ॥ १६५ ॥

पद्माकर

भारी सो भुजंग भागीरथी के सुतीर पर्‌यो,
ताहि लखि खाइबे को तरछत पार भो।
कहै पद्माकर चतुर्भुज को रूप भयो,
बड़े बड़े पापनि हूं ताप को तिसार भो॥
नारद विसारद ह्व सारद सराहैं भले,
इन्द्र यम बरुन कुवेर परिवार भो।
गंगा को प्रभाव लखि मुकुति मजा की मंजु,
सोई अहि गरुड़ के कन्ध पै सवार भो॥५५॥

इसी तरह लेखराज का २५० पद्माकर के ४० की अपेक्षा कहीं अच्छा बन पड़ा है। विस्तारभय से यहां नहीं देते।

अलङ्कारों के लक्षण प्रायः अच्छे हैं, ठीक हैं और उदाहरण भी बुरे नहीं हैं। पर इसमें भी वही पुरानी रीति है। तब भी पुस्तक हर तरह से संग्रह करने योग्य है और इसी प्रकार और ग्रन्थों का भी छपवाकर उद्धार करना चाहिए। हमारी समझ में अलङ्कारों के लक्षण सोदाहरण कंठ करने को भाषा-भूषण अच्छा बल्कि बहुत अच्छा है, पर ठीक ठीक समझने के लिए कम से कम लक्षणों का गद्य में होना बहुत ही आवश्यक है। बहुत दिन हुए रसिक-वाटिका में पूर्णादि प्रसिद्ध कवियों ने इस कमी को दूर करने का प्रयत्न किया था। पर वह पत्रिका के बन्द हो जाने पर अपूर्ण ही रह गया। अब तक हमने भाषा गद्य में अलङ्कार-ग्रन्थ कोई नहीं देखा है।[२] यदि ऐसा कोई ग्रथ बने तो कम से कम विद्यार्थियों को बड़ा लाभदायक होगा। रामदास गौड़, एम. ए.

---

(१) "अहीश खगीश' के स्थान में सहज ही "फनेस खगेस' हो सकता था. (फणा+ईशः=फणेशः); परन्तु "अंग" और "अहीश" में जो "अ' का अनुप्रास है सो कैसे बनता? (२) भाषा गद्य में सेठ कन्हैयालाल पोद्दार प्रणीत 'अलङ्कार प्रकाश" नाम का एक ग्रन्थ श्रीवेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई से प्रकाशित हुआ है और हमारी समझ में वह अच्छी रीति से लिखा गया है —सं. स. प.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी-भाषा में वैद्यक का एक ग्रन्थ

अनुभूत चिकित्सासागरः
(पूर्वार्द्ध तथा उत्तरार्द्ध)

अजमेरनिवासी आयुर्वेदपञ्चानन पण्डित गङ्गाप्रसाद दाधीच त्रिपाठी की बनायी हुई यह पुस्तक हिन्दी-साहित्य में एक ही है। इसमें "औषधियों के नाम, गुण और अङ्गों का वर्णन विस्तार के साथ पूरा पूरा किया गया है। इसमें दी हुई औषधियों के मारवाड़ी, गुजराती, मराठी, बंगला, पञ्जाबी, तैलङ्गी, द्राविड़ी, कर्णाटकी, अरबी, फ़ारसी, लैटिन, अंगरेज़ी, आदि भाषाओं के पर्यायवाची शब्द भी दिये हैं। औषधियों की प्रयोगविधि और किन किन रोगों पर कितनी तथा किस प्रकार देनी चाहिए, यह भी दिया है। इस पुस्तक से हिन्दी साहित्य का एक अभाव पूर्ण हुआ है। हमारे जान में यह पुस्तक हिन्दी में पहिली ही है।

हिन्दी-परीक्षा की नियमावली।

[यह नियमावली गत वर्ष मिति मार्गशीर्ष शुक्ल ६ और ७ संवत् १६६६ (ता० १५-१६ दिसम्बर) के स्थायी समिति के अधिवेशन में स्वीकृत हुई थी, किन्तु इस पर समयाभाव से तृतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन में विचार न हो सका। अतः आगामी चतुर्थ हि. सा. सम्मेलन में यह विचारार्थ उपस्थित की जायगी। यह विषय बड़े महत्व का है। इस कारण सब हिन्दी प्रेमियों को और विशेष कर स्थायी समिति के सभासदों को चाहिए कि इस में यदि वे कुछ परिवर्त्तन आवश्यक समझते हों तो शीघ्र सम्मेलन के मंत्री को उसकी सूचना दे दें—सं. सं. प.]

(१) हिन्दी साहित्य-सम्मेलन की ओर से उसके उद्देशानुसार प्रतिवर्ष हिन्दी में निम्न लिखित उपाधियों के लिए परीक्षाएं ली जायंगी:—

(क) साहित्योपध्याय।
(ख) साहित्य-भूषण।
(ग) साहित्याचार्य।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२) इन परीक्षाओं के प्रबन्ध के लिए एक परीक्षा-समिति होगी जिसमें ५ सभ्य होंगे, जो प्रति वर्ष हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के अधिवेशन में निर्वाचित किये जायंगे।

(३) परीक्षा-समिति के सभ्यों का निर्वाचन स्थायी समिति के सभ्यों में से ही होगा।

(४ परीक्षाओं के स्थान, समय और ग्रन्थों का निर्धारण; परीक्षकों की नियुक्ति, परीक्षाओं के फल का विवरण और परीक्षा सम्बन्धी अन्य आवश्यक विषयों का प्रबन्ध परीक्षा-समिति करेगी।

(५) परीक्षा-समिति का मुख्य स्थान सम्मेलन-कार्यालय होगा।

(६) प्रत्येक परीक्षार्थी एक वर्ष में एक ही परीक्षा दे सकेगा।

(७) सभी देश सभी जाति और अवस्था के परीक्षार्थी उक्त परीक्षाओं में सम्मिलित हो सकेंगे।

(८) परीक्षार्थी पहली परीक्षा में उत्तीर्ण होने पर दूसरी और दूसरी में उतीर्ण होने पर तीसरी परीक्षा में समिलित हो सकेगा।

(९) हिन्दी-परीक्षाओं में केवल हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि का व्यवहार होगा।

(१०) परीक्षा के समय और स्थान आदि की सूचना परीक्षा, समय से चार महीने पहले समाचारपत्रों के द्वारा दी जायगी।

(११) प्रति वर्ष होनेवाले सम्मेलन के अधिवेशन से कम से कम दो मास पूर्व ही परीक्षा लेली जायगी।

परीक्षा-फल आगामी सम्मेलन के पहले समाचारपत्रों में प्रकाशित कर दिया जायगा और सम्मेलनोत्सव में भी सुनाया जायगा।

(१२) एक वार अनुत्तीर्ण होने पर दूसरे वर्ष फिर परीक्षा ली जायगी। परन्तु दूसरी या तीसरी बार उन्हीं विषयों में परीक्षा ली जायगी जिनमें पहले वर्ष उत्तीर्णता न प्राप्त की हो। किन्तु यदि कोई परीक्षार्थी तीन बार किसी परीक्षा में सम्मिलित होने पर भी उत्तीर्ण न हो, तो उसे फिर सब विषयों में परीक्षा देनी होगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(१३) परीक्षार्थियों को सम्मेलन के छपे आवेदनपत्र के फ़ार्म को* भर कर परीक्षा से तीन महीने पहले ही सम्मेलन-कार्यालय भेज देना होगा। आवेदन पत्र के साथ नीचे लिखी रीति से शुल्क आना चाहिए:—

१—साहित्योपाध्याय ... ... १)
२ – साहित्य-भूषण ... ... २)
३—साहित्यचार्य ... ... ३)

आवेदन पत्र ठीक समय पर न आने से परीक्षा में सम्मिलित होना असाध्य हो जायगा।

(१४) आवेदन पत्र का फ़ार्म इस प्रकार होगा: —

आवेदन पत्र।

ता०.....................

महोदय,

मैं हिन्दी-परीक्षा देना चाहता हूं। नियमानुसार शुल्क भेजता हूं मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि आपके परीक्षा-सम्बन्धी सभी नियमों का मैं पालन करूंगा। ....

हस्ताक्षर परीक्षार्थी

नाम
पिता का नाम
आयु
मातृ भाषा
धर्म्म
जाति
व्यवसाय
स्थान (पूरा पता)
परीक्षा-स्थान
परीक्षा-नाम

पहले कोई परीक्षा दी हो तो उसका उल्लेख जैसे कब दी, कहां दी, क्या फल रहा।

मुझे विश्वास है कि यह आवेदक सदाचारी है और परीक्षा देने योग्य है.

....

नगर के किसी प्रसिद्ध हिन्दी प्रेमी के हस्ताक्षर।

---

* यह फ़ार्म सम्मेलन-कार्यालय से मांगने पर बिना मूल्य मिलेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझे विश्वास है यह आवेदक सदाचारी है और परीक्षा देने योग्य है।

....

नगर के किसी प्रसिद्ध हिन्दीप्रेमी के हस्ताक्षर।

---

(१५) उत्तीर्ण होने के लिए अङ्क-प्राप्ति—

'उपाध्याय' परीक्षा में उत्तीर्णता प्राप्त करने के लिए प्रत्येक विषय में परीक्षार्थी को प्रति सैकड़ा ३५ अङ्क प्राप्त करने होंगे। उत्तीर्ण परीक्षार्थियों के तीन विभाग होंगे। प्रथम श्रेणी में वे परीक्षार्थी होंगे जो सब विषयों के अङ्क मिलाकर प्रति सैकड़ा ५० या उससे अधिक अङ्क पावें। द्वितीय श्रेणी में वे होंगे जो ४० या उससे अधिक प्रति सैकड़ा अङ्क पावेंगे। तृतीय श्रेणी में वे होंगे जो ३५ या उससे अधिक प्रति सैकड़ा अङ्क प्राप्त करेंगे।

'साहित्य-भूषण' परीक्षा में उत्तीर्णता प्राप्त करने के लिए प्रत्येक विषय में परीक्षार्थी को प्रति सैकड़ा ४० अङ्क प्राप्त करने होंगे। उत्तीर्ण परीक्षार्थियों के दो विभाग होंगे। प्रथम श्रेणी में वे परीक्षार्थी होंगे जो सब विषयों के अङ्क मिलाकर प्रति सैकड़ा ५५ या उससे अधिक अङ्क प्राप्त करेंगे। दूसरी श्रेणी में वे होंगे जो ४० या उससे अधिक अङ्क प्रति सैकड़ा पावेंगे।

'साहित्याचार्य' परीक्षा में उत्तीर्णता प्राप्त करने के लिए प्रत्येक विषय में परीक्षार्थी को प्रति सैकड़ा ५० या उससे अधिक अङ्क प्राप्त करने होंगे। इस परीक्षा में उत्तीर्ण परीक्षार्थियों के २ विभाग होंगे। प्रथम श्रेणी में वे गिने जायंगे जो सब बिषयों के अङ्क मिलाकर प्रति सैकड़ा ६० या उससे अधिक अङ्क प्राप्त करेंगे। दूसरी श्रेणी में वे होंगे जो प्रति सैकड़ा ५० या उससे अधिक अङ्क प्राप्त करेंगे।

(१६) प्रत्येक सम्मेलन में पिछली परीक्षा में उत्तीर्ण परीक्षार्थियों को सभापति उपाधियां प्रदान करेंगे।

प्रथम श्रेणी में सर्वोत्तम उत्तीर्ण को पदवी-प्रदान के अतिरिक्त उत्तम पारितोषिक तथा विशेष प्रतिष्ठासूचक पदक भी मिलेगा।

(१७) साहित्योपाध्याय परीक्षा निम्नलिखित विषयों में होगी:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रथम पत्र—साहित्य—गद्य
द्वितीय पत्र— „ पद्य
तृतीय पत्र—लेख लिखाना—गद्य और पद्य
चतुर्थ पत्र—गणित:—
(१) अङ्कगणित
(२) रेखागणित
पंचम पत्र—भूगोल—एशिया
षष्ठ पत्र—इतिहास—
भारतवर्ष का प्राचीन और आधुनिक
सप्तम पत्र—स्वास्थ्य रक्षा

(१८) साहित्य-भूषण परीक्षा में निम्नलिखित विषय होंगे:—
प्रथम पत्र—साहित्य—गद्य
द्वितीय पत्र—साहित्य—पद्य
तृतीय पत्र—गद्य तथा कविता लिखना
चतुर्थ पत्र—गणित—अङ्कगणित पूरी, रेखागणित और बीजगणित
अथवा विज्ञान।
पंचम पत्र—इतिहास—
भारतवर्ष, इङ्गलैंड
षष्ठ पत्र—अर्थशास्त्र
सप्तम पत्र—धर्म्मशास्त्र और नीति

(१९) साहित्याचार्य परीक्षा में निम्नलिखित विषय होंगे:—
प्रथम पत्र—साहित्य—गद्य
द्वितीय पत्र—पद्य साहित्य
तृतीय पत्र—गद्य पद्य लिखना
चतुर्थ पत्र—भाषा-विज्ञान और भाषा का इतिहास
पंचम पत्र—अर्थशास्त्र
षष्ठ पत्र—दर्शन
सप्तम पत्र—इतिहास—
भारत, इङ्गलैंड, यूरोप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निवेदन—यदि कोई सज्जन इस नियमावली में कुछ संशोधन की आवश्यकता समझें तो वे कृपा करके अपनी सम्मति मिती मार्गशीर्ष कृष्ण ९ (ता० २२ नवम्बर १९१३) तक सम्मेलन-कार्यालय में भेज दें, जिसमें सम्मेलन की स्थायी समिति के आगामी अधिवेशन में वह उपस्थित की जा सके।

श्रीनरेन्द्रनारायणसिंह,

सहायक मंत्री, हि० सा० सम्मेलन—प्रयाग।

भागलपुर में हिन्दी-साहित्य-प्रदर्शनी

इस बार तारीख़ ७, ८, और ९ दिसंबर को भागलपुर में हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का चौथा वार्षिक अधिवेशन होगा। इस अवसर पर भागलपुर के कुछ सज्जनों ने साहित्यविषयिनी एक प्रदर्शनी खोलने का उत्तम विचार किया है। यह प्रदर्शनी ५ वीं से १२ वीं दिसम्बर तक खुली रहेगी और उसने प्राचीन लिपि, हिन्दी के प्रकाशित पुस्तकों, शिला लेखों, मुद्राङ्कण और ताम्रपत्रलेखों इत्यादि का संग्रह करने का अनुष्ठान किया है। प्रदर्शनी का कार्य्य एक समिति के निरीक्षण में हो रहा है, उसके कार्य्यकर्त्तागण की नामावली इस प्रकार है--

सभापति—बनैली राज्याधीश माननीय कुमार कीर्त्यानन्द सिंह बहादुर, बी. ए.।

उपसभापतिगण—राय शिवशंकर सहाय बहादुर, सी. आई. ई., बाबू देवीप्रसाद मारवाड़ी, बाबू रघुनन्दनलाल, पण्डित भगवानप्रसाद चौबे।

मन्त्री—बाबू गणेशलाल। उपमन्त्री—श्रीकृष्ण मिश्र।
सहायक मन्त्री—पण्डित रामलोचन पाण्डेय।

सभासद्गण—रेवरेण्ड सी. एस. कलन, रेवरेण्ड एस. के. तरफदार, बाबू अवधविहारी सिंह, पण्डित श्यामजी पाण्डेय, बाबू श्रीकृष्णप्रसाद, बी. एल., बाबू मुरलीधर सराफ, बी. एल., बाबू रामसरेख सिंह, बाबू पूर्णमल्ल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रदर्शनी से क्या क्या लाभ है उसे दिखाने की विशेष आवश्यकता नहीं। सभी लोग इसे भली प्रकार समझते हैं। इस विषय में इतना कहना ही बहुत होगा कि साहित्य के जिज्ञासुओं को एक स्थान पर इकट्ठा की हुई साहित्य-सम्बन्धी वस्तुओं को देख कर उन से कितनी ही नई नई बातों का पता लगाने का अवसर प्रदर्शनियों द्वारा मिलता है जो किसी दूसरी तरह होना सम्भव नहीं। जिन सज्जनों के पुस्तकालयों में, परोपकार आदि के उद्देश्य से, प्राचीन लिपि आदि रखी हुई हैं, उनको देखने वा पढ़नेवाले उसी स्थान के लोग हो सकते हैं; परन्तु हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के अवसर पर हिन्दी माता के प्रायः सभी सुपूत उपस्थित होंगे। उस समय यदि उन सज्जनों की वस्तु इस प्रदर्शनी में उपस्थित होगी तो उन्हें देखकर बड़े बड़े साहित्यसेवी लाभ उठावेंगे और साथ ही उनके पुस्तकालयों की ख्याति भारत में फैलेगी तथा उनकी परोपकारिता की भी पूर्ण सफलता होगी।

प्रदर्शनी के नियम

(१) इस प्रदर्शनी का नाम "हन्दी-साहित्य-प्रदर्शनी" होगा। (२) इसमें प्राचीन और अर्वाचीन हिन्दी-साहित्य-सम्बन्धी शिला-लेख-लिपि, ताम्र-लेख, मुद्राङ्कण प्रभृति जितने प्रकार की हिन्दी-सम्बन्धी बस्तुएं होंगी सब रहेंगी। (३) प्रत्येक विषय के लिए भिन्न भिन्न स्थान और भिन्न भिन्न प्रबन्ध रहेंगे और बिना प्रदर्शनी-कमेटी की मंजूरी के किसीको स्थान–परिवर्त्तन करनेका अधिकार नहीं होगा। (४) प्रदर्शनी-कमेटी को अधिकार रहेगा कि जिस वस्तु को वह रखना उचित न समझेगी, अथवा जिस वस्तु को जहां रखना उचित समझेगी वहां रखेगी। (५) प्रदर्शनी में दिखाये जाने योग्य पुस्तकादि भेजनेवालों से निवेदन है कि वे प्रदर्शनी-कमेटी के मन्त्री को नीचे दिये हुए फ़ार्म के अनुसार पुलिसकेप साइज पर अपनी वस्तुओं का विवरण ७वीं नम्ववर तक भेज दें। (६) जो वस्तुएं प्रदर्शनी में आवेंगी उनके लिए किसी प्रकार की फ़ीस नहीं ली जायगी। (७) सब प्रकार की वस्तुओं को दर्शकगण अपने अपने निर्द्धारित स्थान पर ही देख सकेंगे। किसी किसी वस्तु को हाथ से छूना या और किसी प्रकार की हानि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहुंचाना मना रहेगा। (८) प्रदर्शनी में जितनी वस्तुएं आवेंगी उनके मंगाने और भेजने का ख़र्च प्रदर्शनी-कमेटी देगी, और सब वस्तुएं भागलपुर हिन्दी-सभा से नियत एक कमेटी के निरीक्षण में रहेंगी। जो सज्जन या सभाएं अपनी वस्तु प्रदर्शनी में भेजेंगे, उनको अधिकार होगा कि उसकी देख भाल और रक्षा के लिए किसी अपने विश्वासी व्यक्ति को भेज सकें, पर भेजे हुए व्यक्ति के ख़र्च का प्रबन्ध उन्हें स्वयं करना होगा। विशेष अवस्था में कमेटी विचार करेगी। (१०) प्रदर्शनी-कमेटी से प्राप्त प्रवेशपत्र के बिना प्रदर्शनी में जाने का अधिकार किसीको न रहेगा। (११) प्रदर्शनी के आय-व्यय की अधिकारिणी भागलपुर की हिन्दी-सभा होगी। (१२) यह प्रदर्शनी ५वीं दिसम्बर से १२वीं दिसम्बर तक सम्पूर्ण दिन और ६ बजे रात तक खुली रहेगी, परन्तु हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की बैठक के समय बन्द रहेगी।

(१३) जो सभा या सज्जन प्रदर्शनी में अपनी वस्तु भेजना चाहें उन्हें २१वीं नवम्बर तक अपनी वस्तु को भागलपुर-प्रदर्शनी-कमेटी के पास पहुंचा या पहुंचवा देना होगा। (१४) प्रदर्शनी में आयी हुई वस्तुएं प्रदर्शनी समाप्त हो जाने के दो सप्ताह के भीतर ही उनके स्वामियों के निकट भेज दी जायंगी। (१५) प्रदर्शनी में आयी हुई वस्तुओं की जवाबदेही प्रदर्शनी कमेटी को होगी (१६) हिन्दी पुस्तक बेचनेवाले दूकानदारों के लिए स्थान का प्रबन्ध रहेगा। (१७) प्रदर्शनी सम्बन्धी सब विषयों की लिखा पढ़ी मन्त्री, प्रदर्शनी-कमेटी से करना चाहिए। (१८) प्रदर्शनी में वस्तु भेजनेवालों को यह आवश्यक है कि अपनी वस्तुओं की फेहरिस्त की दो प्रति वस्तुओं के साथ भेजें जिसमें एक प्रदर्शनी-कमेटी के पास रहे और दूसरी भेजनेवाले को रसीद स्वरूप लौटा दी जावे।

प्रदर्शनी को कोई वस्तु भेजते समय इस नमूने के अनुसार पत्र लिखना चाहिए—

ता०..........................

मन्त्री, हिन्दी साहित्य प्रदर्शनी कमेटी,
भागलपुर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाशय.

मैं आपकी प्रदर्शनी जो ५वीं दिसम्बर से १२वीं दिसम्बर १९१२ तक होनेवाली है उसमें इस पत्र के साथ भेजी हुई सूची के अनुसार वस्तु भेजना चाहता हूं।

मैं प्रदर्शनी कमेटी के नियम का पालन करूंगा।

भवदीय,

दस्तख़त..............................

पूरा पता ________________________________

____

____

भागलपुरपुर हिन्दी-साहित्य प्रदर्शनी, १९१३

नाम पुस्तकादि	संक्षिप्त विवरण	ग्रन्थ-कर्त्ता	कब का लिखा है	भेजने वाले का नाम	मूल्य यदि बिक्री करना हो	कैफ़ियत

मेरे जानते उपर लिखी हुई बातें सच हैं।

दस्तख़त

पत्र व्यवहार

"साहित्य सम्मान"

विदित हो कि हमने २० शिक्षाप्रद समस्याएं तैयार की हैं। जो कवि उनकी पूर्त्ति उत्तमता से करेगा उसको ५) रुपये का मेडल पुरस्कार में दिया जायगा। साहित्य-सेवियों को हमारे साथ पत्र-व्यवहार करना चाहिए।

२५-१०-१९१३

साहित्य-सेवक

मेलाराम सभापति प्रेमसागर सभा,

ठिकाना, नरसिंहदास हनुमान बक्स

मु० अमृतसर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संयुक्तप्रान्त में प्रारम्भिक शिक्षा।

संयुक्तप्रान्त में प्रारम्भिक शिक्षा के अधिकतर प्रचार के सम्बन्ध में नैनीताल में सरकार की ओर से जो कमेटी बैठी थी, उसका समाचार सम्मेलन-पत्रिका की आश्विन की संख्या में दिया गया था। इस कमेटी के पास साहित्य-सम्मेलन की ओर से जो निवेदन-पत्र भेजा गया था उसका भावानुवाद हिन्दी-भाषियों की जानकारी के लिए यहां पर दिया जाता है।

श्रीमान् सभापति, प्रारम्भिक शिक्षा-समिति,

नैनीताल।

[इलाहाबाद, तारीख १२ अगस्त, १९१३]

महाशय,

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की ओर से—जो साहित्य-सेवियों और हिन्दी-साहित्य की उन्नति करने और नागरी को देश की सार्वजनिक लिपि बनाने के लिए भारतवर्ष के भिन्न भिन्न प्रान्तों में उद्योग करनेवाले सज्जनों की एक संस्था है, और जिसकी प्रधान समिति और कार्य्यालय प्रयाग में है—मैं आपकी सेवा में यह निवेदन करता हूं कि आपकी कमेटी कृपा कर इस प्रान्त के तहसीली, हलकाबन्दी आदि देशी भाषा में शिक्षा देनेवाले स्कूलों में किस भाषा में शिक्षा दी जाय इस विषय पर सम्मेलन की निम्नलिखित सम्मति पर ध्यान पूर्व्वक विचार करें। इस बात को सब विचार-शील पुरुष स्वीकार करेंगे कि तहसीली स्कूलों में किस भाषाद्वारा शिक्षा दी जाय, इस विषय का प्रारम्भिक शिक्षा के भविष्य से बड़ा घनिष्ट सम्बन्ध है।

गवर्नमेन्ट की इस सूचना से कि वह प्रारम्भिक शिक्षा की उन्नति में अच्छी रकम खर्च करना चाहती है, केवल सार्वजनिक कार्य्यों से सम्बन्ध रखनेवाले लोगों ही को नहीं किन्तु उन बहुत से लोगों को भी जिनका निज की बातों को छोड़ कर प्रायः अन्य विषयों पर ध्यान ही नहीं जाता बड़ी प्रसन्नता हुई है और ऐसा होना उचित है; क्योंकि बालकों को शिक्षा देनेका विषय ही ऐसा है जिससे सब माता-पिताओं की सहानुभूति उत्पन्न होती है। विशेषतः इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युक्तप्रान्त में शिक्षा का विषय विशेष महत्व का है। हर दसवें वर्ष भारतवर्ष के अन्य बड़े बड़े प्रान्तों की अपेक्षा युक्त प्रान्त में प्रति सैकड़े अनपढ़ लोगों की संख्या बहुत बढ़ती जाती है। गवर्नमेंट के जिस मन्तव्य द्वारा आप की कमेटी सगठित की गई है उसके दूसरे पैरा में जो अङ्क दिये गये हैं वे इस विषय को विशेष रूप से स्पष्ट करते हैं। उनसे पता लगता है कि पढ़ने के योग्य लड़कों में से प्रति सैकड़े स्कूल में पढ़नेवाले लड़कों की संख्या युक्त प्रान्त में १२$\frac{३}{४}$, मद्रास में ३०, बम्बई में २७, बंगाल में २५$\frac{१}{२}$ और मध्य-प्रदेश में १६$\frac{३}{४}$ है। गवर्नमेंट के पास जो साधन हैं उनके होते हुए इन प्रान्तों से अत्यन्त सुगमता पूर्व्वक मूर्खता हटाने के लिए यह आवश्यक है कि इन प्रान्तों में शिक्षा की हीन दशा के कारणों की जाँच की जाय। इस सम्मेलन की सम्मति में इस हीन दशा का एक मुख्य कारण यह भी है कि इन प्रान्तों में सर्वसाधरण को अधिकतर उर्दू में ही शिक्षा दी जाती है। इस उर्दू में ऐसे अरबी और फ़ारसी शब्दों का बहुत अधिक मेल है जो अदालतों, शिक्षित मुसलमानों और उन लोगोंमें, जिन्होंने अरबी, फ़ारसी और उर्दूकी शिक्षा पाई है, प्रचलित होने पर भी जनसमुदाय के लिए बिलकुल विदेशी है और यह ऐसी कठिन विदेशी लिपि में लिखी जाती है जो अदालतों और सरकारी दफ़्तरों में सैकड़ों वर्ष में प्रचलित रहने पर भी अधिकांश लोगों को सर्वथा विदेशी जँचती है और जो उन प्रान्तों से सर्वथा विलुप्त सी हो गई है जहाँ कि अदालतों से उर्दू निकाल दी गई।

यह बात विशेष रूप से विचार करने के योग्य है कि युक्त प्रान्त की दशा कुछ कुछ उसी प्रकार की है या नहीं जैसी अवस्था इङ्गलैंड या जर्मनी की हो जायगी, यदि मान लिया जाय कि, अंगरेज़ और जर्मन बालकों को अपनी मातृभाषा में शिक्षा न देकर एक ऐसी भाषा में शिक्षा दी जाय जिसमें हेब्रू और अरबी शब्द अधिक भरे हों और जो हेब्रू या अरबी लिपि में ही लिखी जाती हो। इसका फल अवश्य ही यह होगा कि इस प्रकार की शिक्षा पानेवाले विद्यार्थियोंमें बहुत कम विद्यार्थी प्रति सैकड़े अर्थात् केवल वे ही जिनकी बुद्धि बहुत तीव्र है ऐसे व्युत्पन्न निकलेंगे जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ वर्षों में लिखने पढ़ने लग जायं और शेष विद्यार्थी वास्तव में अनपढ़ ही बने रहेंगे। यह सम्मेलन निवेदन करता है कि मद्रास, बम्बई, बंगाल और मध्यप्रदेश में युक्त प्रान्त की अपेक्षा पढ़े लिखे लोगों की संख्या अधिक होने का कम से कम एक कारण यह भी है कि उक्त प्रान्तों में लोगों को अपनी देशी भाषाओं द्वारा, जो देशी अक्षरों में लिखी जाती हैं, शिक्षा दी जाती है। बड़े प्रान्तों में केवल पंजाब ही ऐसा है जो शिक्षा में युक्तप्रान्त से भी पिछड़ा हुआ है किन्तु इसका भी इन प्रान्तों के समान यही कारण है कि वहां की अदालतों और स्कूलों में विदेशी शब्दों और विदेशी लिपि के व्यवहार से लोगों को कष्ट सहना पड़ता है। इसके साथ ही यह बात ध्यान देने की है कि इन प्रान्तों में कुमायूँ डिवीज़न के ज़िलों में जहां स्कूलों और अदालतों में उर्दू की जगह नागरी अक्षरों का प्रचार है पढ़े लिखे लोगों की संख्या बहुत अधिक है अर्थात् वहां की जनसंख्या में पिछली मनुष्य-गणना की रिपोर्ट के अनुसार १००० पीछे १२१ व्यक्ति शिक्षित हैं। इलाहाबाद डिवीज़न में जनसंख्या में १००० पीछे ७३ व्यक्ति शिक्षित हैं। इलाहाबाद डिवीज़न में शिक्षितों की संख्या कुमायूँ से कम किन्तु अन्य सब ज़िलों से अधिक है। पर अन्य डिवीज़नों में भी जहां हिन्दी का अधिक प्रचार है वहां उन डिवीज़नों की अपेक्षा जहां उर्दू का अधिक प्रचार है पढ़े लिखे लोगों की संख्या अधिक है। कुमायूँ के बाद इलाहाबाद में पढ़े लिखे लोगों की संख्या ७३ और बनारस में ७१ हैं, रुहेलखंड, जो युक्त प्रान्त में एक मात्र ऐसा डिवीज़न है जहां हिन्दी जाननेवालों की अपेक्षा उर्दू जाननेवाले अधिक हैं वहां पढ़े लिखे लोगों की संख्या सबसे कम है अर्थात् जनसंख्या में १००० पीछे केवल ४४ व्यक्ति पढ़े लिखे हैं; और फ़ैज़ाबाद और लखनऊ में भी जहां उर्दू का अच्छा प्रचार है १००० पीछे केवल ५० और ६० आदमी पढ़े लिखे हैं।

दूसरा विचारणीय विषय-जिसका मूर्खता के दूर करने के उपायों से घनिष्ट सम्बन्ध है-यह है कि हलकाबन्दी स्कूलों में उर्दू पढ़नेवाले कितने फ़ी सदी लड़के ऐसे हैं जो अदालतों, सरकारी दफ़्तरों और लोगों के पत्रव्यवहार के काम में आनेवाली फ़ारसी लिख पढ़ सकें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक यह भी ध्यान देने की बात है कि अच्छी तरह शिकस्ता लिखने पढ़ने की योग्यता प्राप्त करने के लिए कितने वर्ष की शिक्षा और अभ्यास की आवश्यकता है। हिन्दी जो इस प्रान्त के लोगों की भाषा है और नागरी अक्षरों में लिखी जाती है उसके विषय में ऐसे प्रश्न नहीं उठते क्योंकि वे सब लड़के जिन्होंने लगातार हलकाबन्दी स्कूलों में या अन्यत्र हिन्दी की शिक्षा पाई है वे आजीवन नागरी अक्षरों में लिख पढ़ सकते हैं और वास्तव में वे ही शिक्षित कहलाने के अधिकारी हैं।

इसमें सन्देह नहीं कि आपकी कमेटी इस विषय पर भी विचार करेगी कि हलकाबन्दी स्कूलों में किन किन विषयों की शिक्षा देना आवश्यक है। इस बात को सब लोग स्वीकार करेंगे कि हलकाबन्दी स्कूलों में लिखने, पढ़ने और गणित के अतिरिक्त कृषि और आरोग्यमूलक विषयों की शिक्षा देना उचित है। इस सम्बन्ध में भी यह बात विचार करने के योग्य है कि गांव के लड़कों को फ़ारसी लिपि में लिखी जानेवाली उर्दू द्वारा इन विषयों में सुगमता पूर्वक शिक्षा दी जा सकती है अथवा नागरी लिपि में लिखी जानेवाली हिन्दी द्वारा; पर शर्त यह है कि दोनों दशाओं में प्रचलित लिपि के लिखने पढ़ने की योग्यता होना आवश्यक है। यह सम्मेलन प्रार्थना करता है कि यह निश्चित रूप से प्रमाणित हो चुका है कि युक्त प्रान्त के लोगों को साक्षर करने और उनमें विद्या का प्रचार करने के लिए सबसे सुगम और शीघ्र सफल होनेवाला उपाय यह है कि उन्हें नागरी लिपि में लिखी जानेवाली हिन्दी द्वारा शिक्षा दी जाय, क्योंकि यही लिपि और भाषा, बहुत थोड़े उर्दू बोलनेवाले और फ़ारसी लिपि के लिखनेवाले शिक्षित मुसलमानों को छोड़ कर, इस प्रान्त के सब लोगों की स्वदेशी लिपि और भाषा है। यही नहीं किन्तु गांवों में रहनेवाले मुसलमान, जो अधिकतर अशिक्षित हैं, उनकी भाषा भी अपने हिन्दू पड़ोसियों के समान हिन्दी ही है। इसमें सन्देह नहीं कि आपकी कमेटी इस विषय से सम्बन्ध रखनेवाली भिन्न भिन्न बातों को अच्छी तरह जानती है। किन्तु विचार के सुभीते के लिए मैं "कोर्ट कैरेक्टर ऐंड प्राइमरी इजुकेशन" नामकी पुस्तक, जो गवर्नमेंट की सेवा में मार्च

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१८६८ को भेजी गई थी, और उसी विषय पर एक छोटी सी और पुस्तक जो इसके थोड़े समय बादही प्रकाशित हुई थी और नागरी के सम्बन्ध में सन १८६८ में जो एक प्रार्थना पत्र गवर्नमेंट को भेजा गया था वह और उस प्रार्थनापत्र लार्ड मैकडानल का उत्तर-ये सब आपकी सेवा में भेजता हूं। पहली पुस्तक के ५५ और ५६ पृष्ठों से विदित होगा कि उर्दू द्वारा शिक्षा देना मुसलमान और हिन्दू दोनों में शिक्षा की उन्नति के मार्ग को रोकता है; किन्तु यदि मुसलमान लोग धार्म्मिक जोश में आकर अपनी शिक्षा को चौपट करते हैं तो यह कोई कारण नहीं है कि हिन्दुओं को भी यह विपत्ति सहने के लिए बाध्य किया जाय। यह सत्य है कि जो चाहें प्रसन्नता से हिन्दी पढ़ें किन्तु गांवों में रहने वाले भी अधिकांश माता-पिता अपने बालकों को सरकारी नौकरी के लोभ से उर्दू पढ़ाना ही अधिक पसंद करते हैं। किन्तु उन लोगों को जो गांववालों की दशा से परिचित हैं वह भली भांति विदित है कि हलकाबन्दी स्कूलों में उर्दू पढ़नेवाले बहुत कम व्यक्तियों को सरकारी नौकरी मिलती है और बहुत थोड़े लोग वर्तमान रूप में लिखी जानेवाली उर्दू को पढ़ सकते हैं अर्थात् व्यवहार में वे कुपढ़ ही रहते हैं और जितने वर्ष उन्होंने स्कूल में बिताये वह समय व्यर्थ ही गया। यदि यह समय वे हिन्दी पढ़ने में लगाते तो वे सचमुच शिक्षित बन जाते।

किस भाषा द्वारा लोगों को शिक्षा दी जाय इस विषय के अन्तर्गत पाठ्य पुस्तकों की भाषा का विषय एक महत्वपूर्ण विषय है। इस सम्मेलन को खेद है कि प्रारम्भिक शिक्षा दी जानेवाले स्कूलों में हिन्दी-पाठ्य-पुस्तकों की भाषा सन्तोषजनक नहीं है। बहुत करके उनकी भाषा भद्दी, अप्रचलित और बेमुहावरे हैं। इसका एक कारण यह है कि इन पाठ्य पुस्तकों के लिखनेवाले अधिकतर वे लोग हैं जो न हिन्दी के विद्वान हैं और न उसके लेखक ही हैं। इसके सम्बन्ध में यह सम्मेलन इस ओर आपका ध्यान आकर्षित करना अपना कर्तव्य समझता है कि लोगों को इस बात से बड़ी शिकायत है कि उर्दू हिन्दी की पाठ्य पुस्तकें पहले ऐसे लोगों से तैयार कराई जाती हैं जो न उर्दू जानते न हिन्दी और फिर उर्दू हिन्दी में उनका अनुवाद कराया जाता है। कुछ इस कारण भी इन पुस्तकों की भाषा भद्दी और बेमुहावरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होती है। पर दूसरा कारण यह प्रतीत होता है कि पाठ्य पुस्तकों को ऐसी भाषा में लिखने का प्रयत्न किया जाता है कि उसे उर्दू और हिन्दी दोनों पढ़नेवाले समझ सकें। निस्सन्देह यहां उर्दू से अभिप्राय हिन्दुस्तानी या उस हिन्दी से है जिसमें आधी से अधिक फ़ारसी के शब्द भरे हों! ऐसे प्रयत्न का बड़ा ही बुरा फल होता है। यह दिखाने के लिए कि हमारी पुस्तकें सार्वजनिक भाषा में लिखी हुई हैं इन पुस्तकों के लेखक जो हिन्दी भाषा के सौन्दर्य्य को नहीं समझते अपने ग्रन्थों में ऐसे अरबी फ़ारसी के अनावश्यक शब्दों को, जो थोड़े से शिक्षित मुसलमानों और अदालत में नित्य काम करनेवाले हिन्दुओं को छोड़ कर देश में साधारणतः प्रचलित नहीं है, स्थान देते हैं। वे जिस भाषा को पढ़ते हैं वह न तो लोगों ही की भाषा से मिलती है और न हिन्दी के प्राचीन या आधुनिक लेखकों की भाषा ही से उसका कुछ सम्बन्ध है। यह सत्य है कि प्रारम्भिक शिक्षा देनेवाली कक्षाओं की पुस्तकों की भाषा सरल और सुगम होनी चाहिए किन्तु शुद्धता और शब्दों के उचित पठन पर भी पूरी तरह ध्यान देना चाहिए और भाषा के सौन्दर्य्य को कदापि नष्ट नहीं होने देना चाहिए। यह भी स्मरण रखने की बात है कि आगे चलकर जब विचार में जटिलता आने लगती है तब उसके अनुसार स्वाभाविक ही भाषा भी जटिल हो जाती है। यह सम्मेलन प्रार्थना करता है शिक्षा-विभाग को हिन्दी और उर्दू की पाठ्य पुस्तकें इन भाषाओं के प्रसिद्ध लेखकों से लिखानी चाहिए और विदेशी रत्नभंडार से सहायता लेने में लोगों को उत्तेजना देनी चाहिए किन्तु पाठ्य पुस्तकों के लिए अनुवाद करने की प्रथा एक दम बंद कर देनी चाहिए। वर्तमान पाठ्य वुस्तकों की भाषा के कारण शिक्षा के कार्य्य में बहुत हानि हो रही है। शिक्षित माता-पिता भाषा का ज्ञान प्राप्त करने के लिए इन पुस्तकों को व्यर्थ समझते हैं और उन्हें उनके स्थान में या उनके साथ साथ सुन्दर भाषा में लिखी हुई पुस्तकें अपने बालकों को पढ़ने के लिए देनी पड़ती हैं। हिन्दू माता-पिताओं की—चाहे वे नगर में रहते हों चाहे गांव में—साधारणतः यह इच्छा रहती है कि दो तीन वर्ष पढ़ने के बाद उनके लड़के तुलसीकृत रामायण पढ़ने और समझने लगें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दुओं में रामायण एक इतना लोकप्रिय और उत्तम ग्रन्थ है कि प्रसन्नता से विद्यार्थियों को पढ़ने के लिए दिया जा सकता है। वर्तमान पाठ्य पुस्तकों के रहते हुए और अन्य पुस्तकों से कुछ सहायता लिये बिना ६ वर्ष पढ़ने के बाद भी लड़कों को रामायण की भाषा समझना असम्भव है। इस सम्मेलन की सम्मति में हिन्दुओं में शिक्षा को लोकप्रिय बनाने का यह एक बहुत उत्तम उपाय होगा कि रामायण पढ़ाने के लिए अलग कक्षाएं खोल दी जायं और इन कक्षाओं में विद्यार्थी उस समय से रामायण पढ़ने लगें जब उन्हें हिन्दी लिखना पढ़ना आ जाय।

अब दिनों दिन इस बात की अधिक पुकार मच रही है कि मध्यम और उच्च शिक्षा भी देशी भाषाओं में दी जाय और विश्वविद्यालयों में देशी भाषाओं द्वारा शिक्षा देने की उपयोगिता को सर थियोडर मारीसन जैसे प्रसिद्ध विद्वान स्वीकार कर चुके हैं। यह आशा की जाती है कि, चाहे शीघ्र चाहे देर से, हमारे (प्रयाग) विश्वविद्यालय को भी इस विषय में कुछ न कुछ ज़रूर करना पड़ेगा। इसलिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि पाठ्य पुस्तकें ऐसी भाषा में लिखी जांय जिसे इन भाषाओं के विद्वान सुन्दर हिन्दी या अच्छी उर्दू मानें और यह नियम बिलकुल उठा दिया जाय कि पाठ्य पुस्तकें ऐसी कृत्रिम भाषा में लिखी जायं कि वे हिन्दी और उर्दू दोनों के विद्यार्थियों के काम आ सके।

अन्त में मैं इस सम्मेलन की ओरसे आन्तरिक आशा प्रकट करता हूं कि सरकारी नौकरी की मृगतृष्णा में पड़ कर बहुसंख्यक हिन्दू बालकों का उर्दू पढ़ने में जो समय व्यर्थ नष्ट होता है उसका आपकी कमेटी कुछ न कुछ अवश्य प्रबन्ध करेगी। वर्तमान स्थिति के अनुसार, केवल बहुत थोड़े लोगों को छोड़ कर, सरकारी नौकरी की आशा करना निश्चय ही दुराशा मात्र है। यह सम्मेलन इस बात के परामर्श देनेका साहस करता है कि सब जगह हलकाबन्दी स्कूलों में, जहां मुसलमानों की संख्या बहुत कम हो, मान लो १० फ़ी सदी से कम हो, वहां हिन्दी भाषा और नागरी लिपि द्वारा शिक्षा दी जाय और जहां इसी हिसाब से मुसलमानों की संख्या अधिक हो और उनकी उर्दू पढ़ने की अभिलाषा हो वहां उनके लाभ के लिए विशेष प्रबन्ध होना चाहिए। पुनः यह सम्मेलन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हृदय से आशा करता है कि आपकी कमेटी यह सम्मति प्रकट करेगी कि प्रारम्भिक शिक्षा देनेवाली कक्षाओं में पढ़ाई जानेवाली हिन्दी की पुस्तकें बनाने का भार ऐसे विद्वानों को दिया जाय जो अंगरेज़ी और हिन्दी में अच्छी योग्यता रखते हों और हिन्दी के माननीय लेखक समझे जाते हों।

महाशय का आज्ञाकारी सेवक,
पुरुषोत्तमदास टंडन,
मन्त्री, हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन,
इलाहाबाद।

पुस्तक-प्राप्ति-स्वीकार।

४७-दिवाकर प्रकाश	पं० तुलसीराम स्वामी	स्वामी प्रेस, मेरठ	।)
४८-विदुरनीति	,,	,,	।=)
४९-ऋगादि भाष्य भूमिका	,,	,,	–)॥
५०-संस्कृत भाषा की पुस्तक ४ भाग	,,	,,	॥≡)
५१-मादक वस्तु खंडन	पं० देवीदत्त,	टेम्परेन्स प्रीचरप्रयाग पं० देवीदत्त	–)
५२-मद्यभंग का निषेध	,,	,,	–)
५३-गौ गोहार और शुद्धि	,,	,,	)।
५४-सिरोही राज्य का इतिहास	पं० गौरीशंकर हीराचन्दओझा	अजमेर	
५५-गर्भ रक्षा	डाकूर प्रसादी-लाल झा—	हरदेवनारायण झा. गोसांईटोला प्रयाग	।)
५६-पुरुष रत्न (इतिहास)	प्रधान चन्द्र प्रसाद	नागरी प्रवर्धनी सभा प्रयाग।	।)
५७-हिन्दी नवरत्न	तीनों मिश्रभ्राता	,,	
५८-नूतन पाक प्रकाश	पं० रामलाल मिश्र	सुखसंचारक प्रेस मथुरा	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५९-हास्य मंजरी	पंडित सूर्य्य नारायण त्रिवेदी	,,	।)
६०-फोटोग्राफी शिक्षा	पं० क्षेत्रपाल शर्म्मा	,,	१)
६१-प्लेगचिकित्सा-दो प्रति-	ले० डाक्टर महेन्दुलाल गर्ग	,,	
६२-सफलता के सिद्धान्त उपदेश	,,	,,	।)
६३-प्रेम का परिणाम उपन्यास	एक महात्मा	,,	=)
६४-हारमोनियम गाइड	पं० क्षेत्रपाल शर्म्मा	,,	।=)
६५-पालीवाल दशा उपदेश	पं० भोजराज शर्मा	,,	
६६-साबुन शिक्षा	पं० क्षेत्रपाल शर्म्मा	,,	१)
६७-हज़ार व्यापार	,,	,,	१)
६८-तरुणों की दिनचर्या	डा० महेन्दुलाल गर्ग	,,	=)
६९-जापानीय स्त्रीशिक्षा	,,	,,	।)
७०-तिल की ओट पहाड़	पं० क्षेत्रपाल शर्म्मा	,,	॥)
७१-कबायद पटवारियान	पं० रघुनाथप्रसाद मिश्र	शारदाभवन इटावा	
७२-अरबिन्द महिमा	श्री० अरविन्द घोष	पं० जनार्दन भट्ट अहियापुर प्रयाग	≡)
७३-नूतनब्रह्मचारी (उपन्यास)	पं० बालकृष्ण भट्ट	,,	≡)
७४-सौ अजान एक सुजान (उपन्यास)	,,	,,	।=)
७५-रमेशदत्त (जीवनी)	बा० जगन्नाथ खन्ना	,,	≡)
७६-आंख (निबन्ध)	पं० चन्द्रधर शर्म्मा गुलेरी	मेयोकालेज अजमेर	
७७-वैदिक षष्ठतप गोदानम्	,,	,,	
७८-सङ्गीत (निबन्ध)	,,	,,	
७९-कवि कर्त्तव्य (निबन्ध)	पं० जगन्नाथप्रसाद 'साधु' बिशारद भरतपुर	कार्यालय बड़ोदा	
८०-हिन्दीपद्यसंग्रह	पं० द्वारकाप्रसाद चौबे	नैशनल प्रेस प्रयाग	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८१-व्यापार शिक्षा	पं० क्षेत्रपाल शर्म्मा	सुखसंचारक क० मथुरा	।)
८२-गौरीगिरीश १म भाग काव्य	पं० हरिमङ्गल मिश्र प्रयाग	खड्गबिलास प्रेस बांकीपुर	।-)
८३-भारतवर्षका इतिहास	,,	,,	।)
८४- ,,	,,	,,	।)
८५-रानी भवानी	बा० गङ्गाप्रसाद गुप्त काशी	भारतमित्र प्रेस, कलकत्ता	
८६-पल्लीधर्म संग्रह	पं० गिरधरलाल शर्मा बहुगुण	,,	
८७-रोज़गार	बा० दामोदरदास खत्री	,,	
८८-हिन्दीभाषा	बा० बालमुकुन्द गुप्त	,,	
८९-धर्म्मतत्व	बा० महावीरप्रसाद	,,	
९०-कविरत्नमाला	मुंशी देवीप्रसाद मुंसिफ	,,	
९१-स्वामी और स्त्री	बा० महावीरप्रसाद	,,	
९२-निरंकुशता दर्शन (समालोचना)	मनसाराम	,,	
९३-वालेस का जीवन-चरित	बा० महावीरप्रसाद	,,	
९४-दशकुमार चरित	पं० अक्षयबट मिश्र	,,	
९५-जहांगीरनामा (इतिहास)	मुं० देवीप्रसाद मुंसिफ	,,	
९६-रत्नावली नाटिका	बा० बालमुकुन्द गुप्त	,,	
९७-स्फुट कविता	,,	,,	
९८-मधुमक्षिका १ भाग	बा० महावीरप्रसाद	,,	
९९-सज्जाद सम्बुल (नाटक)	पं० केशवराम भट्ट	,,	
१००-रामायण सार	बा० अमृतलाल चक्रवर्ती	,,	
१०१-मार्कण्डेयपुराण पूर्वार्द्ध	पं० अक्षयबट मिश्र	,,	
१०२-उत्तरार्द्ध	,,	,,	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१०३-स्वदेशी आन्दोलन	पं० जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी	भारत मित्र प्रेस, कलकत्ता
१०४-चिट्ठे और ख़त	बा० बालमुकुन्द गुप्त	,,
१०४ शिवशम्भु का चिट्ठा	श्रीशिवशम्भु शर्म्मा	,,

सम्मेलन की स्थायी-समिति का अधिवेशन ।

मिती मार्गशीर्ष कृष्ण १० संवत् १९७० (ता० २३ ११ १३) रविवार को संध्या समय ६ बजे सम्मेलन-कार्यालय में हि० सा० सम्मेलन की स्थायीसमिति का एक साधारण अधिवेशन हुआ।

निम्न लिखित सज्जन उपस्थित थेः--

(१) बाबू नवाब बहादुर	सभापति
(२) पं० द्वारका प्रसाद चतुर्वेदी	प्रयाग
(३) पं० शेषधर शर्म्मा	,,
(४) पं० जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल	,,
(५) पं० लक्ष्मीनारायण नागर	,,
(६) पं० कृष्णकान्त मालवीय	,,
(७) बा० पुरुषोत्तमदास टण्डन	,,
(८) श्री नरेन्द्र नारायण सिंह	,,

कार्य-विवरणः—

[१] पण्डित कृष्णकान्त मालवीय के प्रस्ताव तथा बाबू पुरुषोत्तमदास टण्डन के अनुमोदन करने पर सर्वसम्मति से बाबू नवाब बहादुर सभापति चुने गये।

[२] सहायक मंत्री ने गत भाद्रपद कृष्ण १ संवत् १९७० के अधिवेशन का कार्य विवरण पढ़कर सुनाया और पण्डित द्वारका प्रसाद चतुर्वेदी के प्रस्ताव तथा पं० कृष्णकान्त मालवीय के अनुमोदन करने पर वह सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ।

[३] सम्मेलन के आय-व्यय का ता० ३१ अक्तूबर १९१३ तक का हिसाब उपस्थित किया गया, जिसपर आय-व्यय-परीक्षक ने यह सम्मति दी थी—"इस बार का हिसाब अच्छे प्रकार से रखा गया है। इसलिए मैं हिसाब रखनेवालों को साधुवाद देता हूं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पण्डित जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल के प्रस्ताव और पं० द्वारका प्रसाद चतुर्वेदी के अनुमोदन करने पर सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि यह हिसाब स्वीकार किया जाय।

[४] सम्मेलन से सम्बन्ध कराने के लिए हिन्दी भाषा प्रचारिणी सभा, लहेरिया सराय-दरभङ्गा; हिन्दी-साहित्य-सभा, चौक-लखनऊ; विद्या प्रचारिणी सभा, चित्तोरगढ़-मेवाड़ तथा हिन्दी साहित्य-समिति, कोटा के प्रार्थनापत्र उपस्थित किये गये।

पं० कृष्णकान्त मालवीय के प्रस्ताव और पण्डित लक्ष्मीनारायण नागर के अनुमोदन करने पर सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि ये सब सभाएं सम्मेलन से सम्बद्ध की जायं।

[५] सम्मेलन के प्रधान मंत्री बा० पुरुषोत्तमदास टण्डन ने सूचना के अनुसार यह प्रस्ताव उपस्थित किया कि "सम्मेलन के वार्षिक अधिवेशनों के अवसर पर अबसे प्रस्तावों की स्वीकृति आदि साधारण कार्यों के अतिरिक्त विद्वानों की विशिष्ट समितियों द्वारा हिन्दी-साहित्य के गूढ़ तथा प्रयोजनीय विषयों पर विचार करके कोई सिद्धान्त स्थिर कराने का प्रयत्न किया जाय, जिसमें हिन्दी साहित्य की आवश्यकताओं की पूर्ति हो, और इस वर्ष चतुर्थ सम्मेलन का कार्यक्रम इस प्रकार रखा जायः—

प्रथम दिन—सवेरे से ११ बजे तक—सभापति का स्वागत इत्यादि

२ बजे से ६ बजे तक—सार्वजनिक सभा, जिसमें स्वागतकारिणी सभा के सभापति की वक्तृता, सभापति का चुनाव, सभापति का भाषण और विषय-निर्वाचिनी समिति, वर्णमाला-विचार-समिति तथा राजकार्योपयोगी हिन्दी-शब्द-निर्माण-समिति का संगठन होगा।

रात के ७॥ बजे से ९ बजे तक—विषय-निर्वाचिनी समिति की बैठक।

दूसरे दिन—सबेरे ७॥ बजे से ११ बजे तक—वर्णमाला-विचार-समिति तथा राजकार्योपयोगी-हिन्दी-शब्द-निर्माण-समिति के कार्य।

२ बजे से ६ बजे तक—सार्वजनिक सभा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रात के ७॥ बजे से ६ बजे तक—विषय-निर्वाचिनी समिति की बैठक।

तीसरे दिन—सवेरे ७॥ बजे से ११ बजे तक—वर्णमाला-विचार समिति तथा शब्द-निर्म्माण-समिति के कार्य।

२ बजे से ६ बजे तक—सार्वजनिक सभा।

रात के ७॥ बजे से ६ बजे तक—पुनः उक्त दोनों विशिष्ट समितियों के कार्य (यदि सम्भव और आवश्यक हो)

इस सम्बन्ध में बाबू श्यामसुन्दर दास, पं० श्यामविहारी मिश्र, बाबू माणिकचन्द्र जैन, पं० जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी, पं० ताराचन्द दुबे, बाबू युगलकिशोर अखौरी तथा पं० लोचन प्रसाद पाण्डेय की सम्मतियां सुनायी गयीं।

बहुत वादानुवाद के अनन्तर सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि यह प्रस्ताव बहुत उपयोगी है। इसके अनुसार कार्य होने से हिन्दी साहित्य के बहुत उपकार होने की आशा है। अतः यह प्रस्ताव स्वीकार किया जाय। किन्तु चतुर्थ सम्मेलन के कार्यक्रम में इतना परिवर्त्तन कर दिया जाय कि सार्वजनिक सभा का समय प्रतिदिन २ बजे से ६ बजे के बदले १ बजे से ५॥ बजे तक रखा जाय और विषय-निर्वाचिनी समिति का समय प्रतिदिन ७॥ बजे से १० बजे तक रखा जाय। और स्वागत-कारिणी समिति से प्रार्थना की जाय कि वह इसी क्रम से कार्य करने का प्रयत्न करे।

[६] पण्डित विनोदीलाल उपाध्याय के मिति भाद्रपद शुक्ल ४ तथा मार्गशीर्ष कृष्ण ४ संवत् १६७० के पत्र उपस्थित किये गये जिनमें उन्होंने सम्मेलन-पत्रिका के ग्राहकों को कई विशेष अधिकार देने का प्रस्ताव किया था।

बहुत सोच विचार के बाद सर्वसम्मति से यह निश्चय हुआ कि सम्मेलन-पत्रिका के ग्राहकों को सम्प्रति नीचे लिखे दो विशेष अधिकार दिये जायं।

(७) सम्मेलन-पत्रिका के ग्राहकों को स्थायी-समिति के विचारार्थ प्रस्ताव भेजने का अधिकार होगा।

(८) सम्मेलन के अधिवेशनों के कार्यविवरण और सम्मेलन के विशेष विशेष कार्यों के विवरण पत्रिका के ग्राहकों को आधे दाम पर दिये जायंगे। कोई विशेष पुस्तक या ग्रन्थ जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन की ओर से प्रकाशित हों, वे इस नियम के अन्तर्गत न होंगे। यह नियम केवल विवरणों के लिए ही है।

[७] मंत्री ने भागलपुर की स्वागत-कारिणी समिति के मंत्री का तार—जिसमें यह लिखा था कि स्वागत-कारिणी समिति सर्वसम्मति से स्थायी समिति को आगामी सम्मेलन का सभापति चुनने का अधिकार देती है (Reception Committee unanimously authorises Standing Committee to elect president forthcoming Sammelan)—उपस्थित करते हुए निवेदन किया कि यह तार आज कुछ ही देर पहले प्राप्त हुआ है। अब आगामी सम्मेलन का समय बहुत निकट आ गया है। अब इतना समय नहीं रहा कि १२वें नियम के अनुसार १५ दिन की सूचना देकर पुनः एक अधिवेशन करके इस पर काररवाई की जाय।

इस पर सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि "समिति इस बात पर अपना दुःख प्रकट करती है कि सभापति के निर्वाचन के सम्बन्ध में ऐसा समय उपस्थित हुआ कि स्वागत-कारिणी-समिति स्वयं इस कार्य को न कर स्थायी समिति के अधीन करती है। इस समिति को इस बात पर बहुत दुःख है कि सभापति के निर्वाचन के विषय में कुछ समाचारपत्र सम्पादकों ने आदरणीय हिन्दी-सेवकों के सम्बन्ध में अनुचित शब्दों को अपने पत्रों में स्थान दिया।

आगामी चतुर्थ हि० सा० सम्मेलन के सभापति के विषय में निश्चय हुआ कि यह समिति महात्मा मुंशीरामजी को सभापति के आसन के लिए निर्वाचित करती है। (महात्मा मुंशीरामजी ने विशेष अनुरोध करने पर सभापति होना स्वीकार कर लिया है, यद्यपि उनका स्वास्थ्य अच्छा नहीं है।)

[८] बाबू श्यामसुन्दर दासजी का ता० १३-११-१३ का पत्र उपस्थित किया गया, जिसमें उन्होंने सभापति के चुनाव के सम्बन्ध में कुछ नये नियम बनाकर भेजे थे।

सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि ४३वें नियम के अनुसार सम्मेलन के समय से एक मास पहले न आने के कारण ये इस वर्ष स्वीकार नहीं किये जा सकते।

[९] मंत्री ने निवेदन किया कि माननीय पण्डित मदनमोहन मालवीयजी आज कल प्रयाग में बहुत कम ठहरते हैं, इससे हिन्दी-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पैसा-फंड के करेन्ट एकाउन्ट का रुपया—जो उनके और बा० पुरुषोत्तमदास टण्डन के हस्ताक्षर से मंगाया जाता है—मंगाने में बहुत असुविधा होती है। इसलिए यह आवश्यक है कि माननीय मालवीयजी की जगह किसी दूसरे सज्जन का नाम लिखवा दिया जाय जिनके हस्ताक्षर से पैसा-फंड के सब कार्य हों।

सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि माननीय मालवीयजी से प्रार्थना की जाय कि वे अपनी जगह पर बाबू नवाब बहादुरजी का नाम हिन्दी-पैसा-फ़ंड के करेन्ट एकाउन्ट और फिक्सड् डिपाज़िट में लिखवा दें।

[१०] मंत्री ने सम्मेलन के आगामी वर्ष के व्यय का अनुमानपत्र बनाने का प्रस्ताव किया।

बहुत सोच विचार के बाद सर्वसम्मति से नीचे लिखा अनुमानपत्र बनाया गया। निश्चय हुआ कि यह आगामी सम्मेलन में स्वीकृति के लिए उपस्थित किया जाय।

सम्मेलन के व्यय का अनुमान पत्र सन् १९१४ के लिए।

८००) कार्य्यालय खर्च।
१०००) हिन्दी लेखकों का वेतन।
१५०) कागज़ स्याही आदि।
२०००) पुस्तक प्रकाशन का ख़र्च।
६०) स्टाम्प और तार।
७००) उपदेशकों का ख़र्च।
२००) पुस्तकालय सम्बन्धी ख़र्च।
७५) सामान।
२५) वार्षिक अधिवेशन सम्बन्धी ख़र्च।
४००) सम्मेलन-पत्रिका।
५००) डेपुटेशन ख़र्च।
२५) फुटकर खर्च।
५९३५) कुल जोड़।

सभापति महाशय को धन्यवाद देकर सभा विसर्जित हुई।

श्रीनरेन्द्र नारायण सिंह
सहायक मन्त्री हि० सा० सम्मेलन, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन के आय-व्यय का चिट्ठा।

ता० २१ दिसम्बर १९१२ से ३१ अक्तूबर १९१३ तक।

आय		व्यय	
११३९-)।।।	पिछले वर्ष की बचत	१०॥)	फार्म वकालतनामा इत्यादि
९१९॥≡)	हिन्दी पैसा फंड	३१३।-)	कार्यालय खर्च
४५)	संबन्ध कराने की फीस	३७०॥)	हिन्दी लेखकों का वेतन
६१)॥	फार्म वकालतनामा आदि		
		१४९)	स्थानीय (१)
२१९१॥)	स्थायी कोष	८३॥)	हाथरस (२)
२०१)	तृतीय सम्मेलन का चन्दा	४५)	गोरखपुर (३)
४६-)॥	व्याज	३५)	बुलन्दशहर (४)
१६॥)	नागरी प्रचारिणी सभा, काशी	४८)	मिर्ज़ापुर (५)
१८५॥)	उपदेशक	१०)	लखीमपुर खीरी (६)
———		———	
४८०५।≡)		३७०॥)	
		९५।)।	काग़ज छपाई आदि
		४९।॥)॥	स्टाम्प और तार
		४९८॥)॥	उपदेशकों का खर्च
		३=)	पुस्तकालय संबंधी खर्च
		१५॥-)	सामान
		१७।-)	तृतीय सम्मेलन संबंधी खर्च
		२०=)॥	फुटकर खर्च
		२३)	सम्मेलन-पत्रिका के व्यय के लिए दिया गया।
		———	
		१४१७)॥।	
		३३८८।=)।	बचत
		———	
		४८०५।≡)	कुल जोड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बचत का ब्योरा।

५६५।≡)।।½	इलाहाबाद बैंक चलता
३६)	,, सेविंग बैंक
२५२०)	,, फिक्स्ड् डिपा०
१२०)	ना० प्र० सभा व्यावर के पास
६४)	उपदेशकों के पास जिसका हिसाब लिखा नही गया
४६।।।=)।।½	नकद हाथ में [इसमें ।।।≡) की चेक बुक है]
३३८८।=)।	

श्रीनरेन्द्र नारायणसिंह
सहायक मंत्री हि० सा० सम्मेलन-प्रयाग।

विविध

आर्य्यसमाज के अग्रणी स्वनामधन्य महात्मा मुंशीरामजी इस बार भागलपुर में होनेवाले चतुर्थ हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के अधिवेशन के सभापति का आसन सुशोभित करेंगे। पहिले परिडत महावीरप्रसाद जी द्विवेदी से सभापति का पद ग्रहण करने के लिए प्रार्थना की गयी थी, परन्तु स्वास्थ्य ठीक न रहने के कारण आप इसे स्वीकार न कर सके। आशा है कि द्विवेदी जी का स्वास्थ्य सम्मेलन के समय तक बहुत कुछ सुधर जायगा और आप सम्मेलन में सम्मिलित होकर वहां के कार्य्य में भाग लेने की कृपा अवश्य कर सकेंगे।

आजकल हिन्दी साहित्य के प्रचार की चेष्टा बहुत स्थानों में होने लगी है। पुस्तकें भी प्रायः सभी नगरों में प्रकाशित हुआ करती हैं। परन्तु उन सबका एक ही दूकानदार से मिलना इस समय सम्भव नहीं। यदि ऐसा होता कि एक ही दूकानदार को पत्र लिख कर भारत भर में प्रकाशित होनेवाली हिन्दी पुस्तकें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मँगवाई जा सकतीं तो पढ़नेवालों की बहुत सी असुविधाएं दूर हो जातीं। डाक का व्यय, समय का व्यय, वार वार कई कारख़ानों से पत्रव्यवहार करना आदि बहुत सी बातों में ग्रन्थ मँगवानेवालों को आराम मिलता। आनन्द की बात है कि इस अभाव को दूर करने के लिए कलकत्ते में एक कार्य्यालय खोला गया है। इसका नाम सत्य-हरिश्चन्द्र कार्य्यालय है, और इसके प्रबन्धकर्त्ता बाबू अनुरुद्धसिंह क्षत्री (जौनपुरनिवासी) हैं। पता है—बड़ा बाज़ार, कलकत्ता। आप लिखते हैं कि आपके कार्य्यालय से 'छबीलो भटियारिन' से लेकर 'रासो' तक के हिन्दीभाषा के ग्रन्थ, चाहे जिस धर्म्म व जिस विषय के चाहिए, मिल सकते हैं। कलकत्ते की अन्यान्य वस्तुएं भी आप भेज सकते हैं।

श्री लक्ष्मीचन्द्र खोसला जी ने श्रीनगर में "जीवनसुधार पुस्तकालय" नामक एक हिन्दी पुस्तकालय खोल रक्खा है, जिस में सुना जाता है कि खोसला महाशय ने अपने ही व्यय से अनेक लाभदायक पुस्तकें इकट्ठी कर रखी हैं और वे हिन्दी के ५० समाचार पत्र और सामयिक पुस्तकें मंगवाया करते हैं। काश्मीर ऐसे दूर देश में, जहां मुसलमानी साहित्य का प्रभाव चारों ओर से व्याप्त है, ऐसे महानुभावों की हिन्दी भाषा की सेवा निस्सन्देह प्रशंसायोग्य है।

प्रयागवासी विख्यात कविवर पण्डित श्रीधर पाठकजी एक नये ढंग की कविता-पुस्तक लिख रहे हैं। इस पुस्तक का नाम होगा "आर्यगीता"। पुस्तक नये ही ढंग की और सर्वोपादेय होगी। सम्भव है कि मार्च तक प्रकाशित हो जाय। इसमें चित्रों का दिया जाना भी सम्भव है। जो लोग इस पुस्तक को लेना चाहें, वे अभी से पाठक जी को पत्र लिख कर इसके ग्राहक बन सकते हैं। मूल्य अभी देने की आवश्यकता नहीं। पुस्तक छप जाने पर मूल्य लिया जावेगा। कवि महाशय का पता—पद्मकोट, लूकरगंज, प्रयाग है। 'आर्यगीता" की कविताओं के नमूने "स्त्रीदर्पण" और "मर्य्यादा" में छपे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कलकत्ते का "भारतमित्र" दिनो दिन उन्नति कर रहा है और अपने कर्त्तव्य-साधन में बहुत ही दत्तचित्त देख पड़ता है। यह पत्र बीस वर्ष से साप्ताहिक रूप में प्रकाशित होता रहा है। कुछ दिनों से दैनिक रूप में भी निकलने लगा है। अब इस पत्र के मालिक ने भविष्य में इस पत्र का सञ्चालन अधिकतर शक्तिशाली करने के लिए इसका अधिकार एक लिमिटेड कम्पनी के हाथ में सौंप दिया है। यह नयी कम्पनी ५००००) मूलधन लेकर कार्यारम्भ करेगी और समाचारपत्र के उपरान्त सब प्रकार के छापने का कार्य, टैप ढालना, स्टेशनरी बेंचना, इत्यादि और भी आनुसंगिक व्यापारों से कलकत्ते और बिहार प्रान्त के मुद्रणालय-सम्बन्धी अभावों को दूर करने का उद्यम करेगी। इसका एक एक शेयर १०) को मिल सकता है, और जो चाहे वही चाहे जितने शेयरों को मोल लेकर "भारतमित्र" का मालिक बन सकता है। आशा है कि सर्वसाधारण कम से कम एक एक शेयर मोल लेकर कम्पनी के सञ्चालकों का उत्साह बढ़ावेंगे। उनका १०) तो हाथों हाथ कुछ दिनों में उनके पास लौट ही आवेगा, ऊपर से उनको प्रति वर्ष लाभ भी मिलता रहेगा। "भारतमित्र" की उन्नति प्रत्येक हिन्दी साहित्य-सेवी के आनन्द का कारण है।

इस बार भागलपुरवाले अधिवेशन में पढ़े जाने के लिए निम्नलिखित विषयों पर निबन्ध लिखवाये जाने का प्रबन्ध हो रहा है—

१—पिछले ५० वर्षों में बिहार में हिन्दी की दशा।
२—हिन्दी में नाटक।
३—मैथिली भाषा का हिन्दी से सम्बन्ध।
४—भारतवर्ष में हिन्दी द्वारा उच्च शिक्षा।
५—हिन्दी भाषा के लिङ्गभेद पर विचार।
६—हिन्दी साहित्य का महत्व।
७—वर्ण विचार.
८—प्राकृत भाषा का हिन्दी पर प्रभाव.
९—नागरी प्रचारिणी सभाएं और उनके काम.
१०—देशी राज्यों में हिन्दी और उसके प्रचार का उपाय.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

११—मद्रास में हिन्दी के प्रचार का उपाय.

१२—नागरी, उर्दू और रोमन लिपियों की तुलना और भारतीय भाषाओं के लिए उनकी अपेक्षाकृत उपयोगिता.

१३—हिन्दी का वर्त्तमान पद्य-साहित्य.

पण्डितवर इन्द्रनारायण द्विवेदी जी, सराय आक़िल, ज़िला प्रयाग-निवासी, ज्योतिशास्त्र में बहुत ज्ञान रखते हैं। आप इस समय "हिन्दू ज्योतिष का इतिहास" इस विषय पर एक बहुत बड़ा ग्रन्थ लिख रहे हैं। ग्रन्थ निस्सन्देह हिन्दी-साहित्य का भूषणस्वरूप और अनुपम होगा, परन्तु उसके विषयों का पूरा व्योरा बताना या उनकी पूरी आलोचना करना शक्ति के अतिरिक्त है। आशा है कि हिन्दीप्रेमियों की उत्सुकता निवारणार्थ द्विवेदी जी सम्मेलन-पत्रिका में प्रकाशनार्थ अपनी पुस्तक का कुछ विवरण भेजने की कृपा करेंगे। सुना है कि द्विवेदी जी इस पुस्तक का प्रणयनकार्य स्वार्थ सिद्धि के लिए नहीं करते, सम्मेलन को आपने इस पुस्तक का स्वत्व दे डालने का भी विचार कर लिया है।

हिन्दुओं के प्राचीन शास्त्रों में से बहुतेरे काल के फेर से लुप्त प्राय हो गये हैं। इन लुप्तप्राय शास्त्रों में से ज्योतिष भी एक है। ज्योतिष की तो अब ऐसी दुर्दशा है कि आजकल के विद्वान इस पर विश्वास भी नहीं करते। इसका एक कारण अवश्य यह भी है कि जोतिष विद्या के पारङ्गत विद्वानों की संख्या अब बहुत कम देख पड़ती है। परन्तु जहां तक हमने स्वयं देखा है, ज्योतिर्विद्या कभी असत्य नहीं है, और आजकल भी कहीं कहीं सच्चे ज्योतिर्विद विद्वानों के दर्शन मिल ही जाते हैं; हां उनका आदर करनेवाला नहीं। ज्योतिषशास्त्र के ज्ञाताओं में से हम गया निवासी लाला रामफल लालजी का नाम भी ले सकते हैं। आप ब्राह्मण नहीं वैश्य हैं, परन्तु इस अद्भुत शास्त्र का आपको बड़ा भारी व्यसन है। फलित ज्योतिष बहुधा सच्ची नहीं निकलती। परन्तु रामफललालजी फलितज्योतिष की गणना में भी सिद्धहस्त हैं। इसका एक उदाहरण हमको भी मिल रहा है। आप इस समय एक महत्वपूर्ण कार्य्य में लगे हैं। महर्षि भृगु प्राचीन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय में एक भारी दैवज्ञ और ज्योतिषाचार्य्य हो गये हैं। उनकी बनायी हुई भृगुसंहिता नामकी पुस्तक बहुत प्रसिद्ध है। कोई भी मनुष्य हो भूत-भविष्य, चाहे वर्त्तमान काल का हो—उसकी जन्मकुण्डली भृगुसंहिता में अवश्य निकल आवेगी। इस वृहत् ज्योतिषभिधान वा वृहद् भृगुसंहिता में कुल ४,४७,२०,७६० कुण्डलियां हैं, और लालारामफललालजी इन्हीं कुंडलियों का संग्रह पुस्तकाकार मासिक क्रम से प्रकाशित कर रहे हैं। यह अभिधान अंगरेज़ी और हिन्दी दोनों भाषा में छप रहा है। चाहे जिस भाषा में मंगवा लीजिए। इस छोटी सी पत्रिका में सम्पूर्ण अभिधान की प्रशंसा करने का स्थान नहीं है। दर्शनार्थीगण लालजी से "ज्योतिष कार्यालय, गया" के पते पर पत्र लिख कर नमूना मंगवाकर देख सकते हैं। इस प्रशंसनीय कार्य में ज्योतिष-शास्त्र के विद्वान् रामफलालजी का उत्साह बढ़ावें, यही हमारी प्रार्थना है।

इस वार बिहार के पत्र-सम्पादकों ने पटने में अपना स्वतन्त्र सम्पादक-सम्मेलन किया है।

चीन के विश्वकोष के बराबर विशाल ग्रन्थ जगत् में नहीं है। १७२६ ई० में यह सबसे पहले पुस्तकाकार प्रकाशित होने लगा। आज कल यह सब मिला कर दस हज़ार खंडों में समाप्त हुआ है। छोटे अक्षरों में इस पुस्तक का एक नया संस्करण प्रकाशित हुआ है, जिसके सोलह सौ खंडों में सारी पुस्तक की समाप्ति हुई है। मद्रास के थियासोफ़िकल सोसाइटी के पुस्तकागार को छोड़ भारतवर्ष में और कहीं यह पुस्तक नहीं है।

भागलपुर की हिन्दी सभा ने हमारे पास एक लम्बी सूची भेजी है उसमें सभा की ओर से हिन्दी की परीक्षा में उत्तीर्ण होने वाले छात्रों की नामावली दी हुई है। तृतीय श्रेणी में १७, चतुर्थ श्रेणी में ६८ और सप्तम श्रेणी में १६१ छात्र पारितोषिक पाने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योग्य समझे गये हैं। तृतीय श्रेणी के छात्र भागलपुर केन्द्र से उत्तीर्ण रामनारायण मिश्र को सब से पहिला स्थान अधिकार करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। भागलपुर हिन्दी सभा का हिन्दी भाषा के विस्तार के लिए यह कार्य्य प्रशंसनीय, और साथ ही साथ दूसरी हिन्दी भाषा प्रचारिणी सभाओं के लिए अनुकरणीय है।

भागलपुर में सम्मेलन के समय पर होनेवाली साहित्य प्रदर्शन-समिति ने अपने एक अधिवेशन में प्रदर्शनी की खोज के लिए मनुष्य भेजने के व्यय स्वरूप २००) देना स्वीकार किया है और परिडत रामलोचन जी पाराडेय को इस कार्य के लिए भेजना निश्चय किया है। परिडत रामलोचन जी बड़े ही उत्साही सज्जन हैं, और भागलपुर की हिन्दी सभा के संचालन और उस प्रान्त में हिन्दी प्रचार के कार्य में प्रधान शक्ति स्वरूप हैं। चतुर्थ हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की स्वागतकारिणी समिति के आप सहायक मन्त्री भी हैं। एक विद्यानुरागी उत्साही सज्जन के द्वारा प्रान्त भर में कितना उत्साह फैल सकता है। इसका दृष्टान्त ढूढ़ना हो तो हम पाराडेय जी का भी नाम ले सकते हैं।

हमें यह प्रकट करते हुए हर्ष होता है कि सम्मेलन के आवैतनिक उपदेशक श्रीयुत सत्यदेव जी ने गत सितम्बर और अक्तूबर महीने में राजपूताना प्रान्त के भरतपुर, कोटा, चित्तोड़, रतलाम आदि अनेक स्थानों में भ्रमण करके हिन्दी का प्रचार किया। आपके उद्योग से उन स्थानों में नागरी प्रचारिणी सभाएं स्थापित हो गयीं हैं जिनसे हिन्दी का बहुत उपकार होने की आशा है।

यह प्रसन्नता का विषय है कि श्रीयुत सत्यदेवजी ने अपनी सत्यग्रन्थ-माला का कार्यालय कानपुर से उठा कर प्रयाग में ही हि० स० सम्मेलन कार्यालय के निकट प्रतिष्ठित किया है। इससे आशा की जाती है कि अब सम्मेलन को उनसे और भी अधिक सहायता मिलेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी-साहित्य-प्रदर्शनी ।

आगामी चतुर्थ हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के अवसर पर ५वीं दिसम्बर से १२वीं तक हिन्दी-साहित्य-प्रदर्शिनी होगी, जिसमें शिलालेख, ताम्रपत्र लेख, मुद्रा और प्राचीन तथा अर्वाचीन हिन्दी पुस्तकें तथा देवनागरी अक्षर सम्बन्धी चीज़ें दिखायी जायंगी।

जिन सज्जनों के पास इस तरह की चीज़ें हों वे उन्हें भेजने की कृपा करें। शिलालेख और ताम्रपत्र यदि न भेज सकें तो उनका फोटो ही भेजें। जिनके पास हाथ की लिखी कोई प्राचीन अथवा अनूठी पुस्तक हो तो उसे अवश्य भेजें।

प्रदर्शनी-कमेटी का विचार है कि हिन्दी को आजतक जितनी पुस्तकें छपी हुई हैं वे सब दिखा दी जांय, एक भी छूट न जायें। अतएव पुस्तक-प्रकाशकों और ग्रन्थकारों से प्रार्थना है कि वे अपनी अपनी पुस्तकें अवश्य भेजें। यह भी सम्भव है—ऐसी आशा है कि उनकी पुस्तकें बिक भी जांय। विशेष हाल जानने के लिए नियमावली मँगाकर देखना चाहिए।

इन कार्य्य में उन लोगों का जो कुछ व्यय होगा वह प्रदर्शनी-कमेटी के नियमानुसार दिया जायगा।

रामलोचन पाण्डेय स० म० प्रदर्शनी-कमेटी भागलपुर।

हिन्दी सम्बन्धी सभाओंसे विशेष प्रार्थना।

आपको मालूम है कि चतुर्थ हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के लिए "नागरी-प्रचारिणी सभाएं और उनके काम" पर लेख लिखा जाय। पर अभी तक सम्मेलन कारिणी-समिति को बहुत थोड़ी सभाओं ने अपने विवरण भेजे हैं। अब समय बहुत थोड़ा रह गया है। अतएव जिन सभाओंने अपने विवरण नहीं भेजे हैं, वे कृपाकर शीघ्रातिशीघ्र भेजने की कृपा करें।

सम्मेलन की बैठक ७, ८, ९ दिसम्बर को है। सभाओं से प्रार्थना है कि वे अपना विशेष अधिवेशन करके प्रतिनिधि चुनकर उनकी नामावली कार्त्तिक पूर्णमासी के पहले अवश्य भेजने की कृपा करें।

जिन स्थानों में सभाएं नहीं हैं, वहां सर्वजनिक सभा करके प्रतिनिधि चुने जांय और अपने प्रान्त के हिन्दी प्रेमियों का नामावली पूरे पता के साथ भेजने की कृपा करें।

रामलोचन पाण्डेय, सहायक मन्त्री।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन-पत्रिका के नियम

१—सम्मेलनपत्रिका हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन कार्य्यालय प्रयाग से प्रतिमास प्रकाशित होगी।

२—इसका वार्षिक मूल्य १) इसलिए रक्खा गया है कि सर्व-साधारण इसके ग्राहक हो सकें।

३—इस समय इसमें प्रतिमास कुल २४ पृष्ठ ही रहा करेंगे। परन्तु आवश्यकता होने पर कभी कभी पृष्ठ-संख्या बढ़ा भी दी जाया करेगी। आगे चल कर यदि इसकी सेवा साहित्य सेवियों को रुचिकर हो, और इसके ग्राहकों की यथोचित संख्या हो जावे तो यही पत्रिका अधिकतर पृष्ठ-संख्याओं में और अधिकतर उन्नत दशा में प्रकाशित की जायगी।

४ इसके प्रबन्ध-विभाग के पत्र—ग्राहक बनने के लिए आवेदन, विज्ञापन-सम्बन्धी पत्र, मनीआर्डर इत्यादि—मन्त्री, साहित्य-सम्मेलन कार्य्यालय, जानसेनगंज, प्रयाग, के नाम भेजे जाने चाहिएं।

५—सम्पादक के नाम की चिट्ठियां, बदले के समाचारपत्रादि समालोचना की पुस्तकें, पत्रिका में प्रकाशित होने के लिए लेखादि नीचे के पते से भेजे जाने चाहिएं—

श्रीयुत गिरजाकुमार घोष,
सम्पादक, सम्मेलनपत्रिका, विहारबन्धु यन्त्रालय,
महेन्द्रु पोस्ट आफिस,
बांकीपुर।

यह पता केवल १५ अक्तोबर से ३१ दिसम्बर तक के लिए होगा। सम्पादक ने हिन्दी के ४३ वर्ष के पुराने पत्र विहारबन्धु के स्वत्वाधिकारी की विशेष प्रार्थना पर उन्हें सहायता देने के लिए इस समय उनके पास रहकर कार्य करना स्वीकार कर लिया है। १ली जनवरी से सम्पादक का पता फिर प्रयाग हो जायगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विज्ञापनदाताओं के लिये नियम

१—सम्मेलनपत्रिका में अश्लील विज्ञापनों को स्थान नहीं मिलेगा।

२—विज्ञापन साधारणतः पूरे और आधे पृष्ठ से कम स्थान के लिए स्वीकृत न होंगे।

१ पृष्ठ का मासिक मूल्य	...	४॥) होगा
आधे पृष्ठ का „	...	२॥) होगा

३—जो लोग १२ संख्याओं में विज्ञापन छपवाने का मूल्य एक साथ भेज देंगे, उनका विज्ञापन एक संख्या में बिना मूल्य छाप दिया जायगा, अर्थात् १२ की जगह १३ वार उनका विज्ञापन छापा जायगा।

४—किसी दशा में पेशगी मूल्य बिना मिले कोई भी विज्ञापन नहीं छापा जावेगा। वी० पी० द्वारा मूल्य वसूल करना स्वीकृत नहीं है।

५—विक्रयार्थ पुस्तकों के विज्ञापनों पर ऊपर दिये हुए मूल्य से कम मूल्य लिया जायगा।

१ पृष्ठ का मूल्य १ मास के लिए	३॥) और
आधे „ „	२) होगा।

६—अदालतों में लेखकों की नौकरी, अध्यापक अध्यापिकाओं की नौकरी, इत्यादि हिन्दी-प्रचारार्थ नौकरियों के विज्ञापन १ वार बिना मूल्य छाप दिये जायंगे। दूसरी वा और अधिकवार के लिए ऐसे विज्ञापनों का मूल्य केवल १) प्रतिमास होगा। विज्ञापन ८ पंक्तियों से अधिक न हो।

मन्त्री, हि० सा० स० कार्य्यालय, प्रयाग।

बाबू विश्वम्भर नाथ भार्गव के प्रबन्ध से स्टैन्डर्ड प्रेस इलाहाबाद में छपी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Reg. No. A-629.

सम्मेलन-पत्रिका

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन
की
मुखपत्रिका

भाग ३ } आश्विन संवत १६७२ { अङ्क १

विषय-सूची

संख्या	विषय	पृष्ठ
(१)	विदेश में हिन्दी का प्रचार ...	१
(२)	परीक्षा समिति का सातवां अधिवेशन ...	५
(३)	समालोचना ...	६
(४)	हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन सम्बन्धी सं० १६७२ की परीक्षाओं के प्रश्नपत्र ...	६
(५)	हिन्दी संसार ...	३४
(६)	सम्पादकीय विचार ...	३७
(७)	पुस्तकों की प्राप्ति स्वीकृति ...	४१

वा० मू० १)] [एक प्र० =)

सम्पादक—पं० इन्द्रनारायण द्विवेदी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन के उद्देश्य

(१) हिन्दी-साहित्य के अङ्गों की उन्नति का प्रयत्न करना

(२) देवनागरी-लिपि का देश भर में प्रचार करना और देश व्यापी व्यवहारों तथा कार्यों के सुलभ करने के लिये हिन्दी भाषा को राष्ट्र-भाषा बनाने का प्रयत्न करना।

(३) हिन्दी को सुगम, मनोरम और लाभदायक बनाने के लिये समय समय पर उसकी शैली के संशोधन तथा उसकी त्रुटियों और अभावों के दूर करने का प्रयत्न करना।

(४) सरकार, देशीराज्यों, पाठशालाओं, कालेजों, विश्व विद्यालयों और अन्य संस्थाओं, समाजों, जन-समूहों तथा व्यापार ज़मींदारी और अदालतों के कार्य्यों में देवनागरी-लिपि और हिन्दी भाषा के प्रचार का उद्योग करते रहना।

(५) हिन्दी के ग्रंथकारों, लेखकों, पत्रसम्पादकों, प्रचारकों और सहायकों को समय समय पर उत्साहित करने के लिये पारि तोषिक, प्रशंसापत्र, पदक, उपधि आदि से सम्मानित करना।

(६) उच्च-शिक्षा प्राप्त युवकों में हिन्दी का अनुराग उत्प करने और बढ़ाने के लिये प्रयत्न करना।

(७) जहाँ आवश्यकता समझी जाय वहाँ पाठशाला, समि तथा पुस्तकालय स्थापित करने और कराने का उद्योग करना त इस प्रकार की वर्त्तमान संस्थाओं की सहायता करना।

(८) हिन्दी-साहित्य के विद्वानों को तैयार करने के लि हिन्दी की उच्च-परीक्षाएं लेने का प्रबन्ध करना।

(९) हिन्दीभाषा के साहित्य की वृद्धि के लिये उपयो पुस्तकें तैयार कराना।

(१०) हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के उद्देश्यों की सिद्धि औ सफलता के लिये अन्य जो उपाय आवश्यक और उपयुक्त सम जायँ उन्हें काम में लाना।

सम्मेलन-पत्रिका का उद्देश्य

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के उद्देश्यों की पूर्ति में सहायता कर और साहित्य प्रेमियों से इसी के लिये उपदेश लेना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन पत्रिका

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की स्थायी समिति
की ओर से प्रतिमास प्रकाशित

भाग ३ } आश्विन संवत् १९७२ { अङ्क १

विदेश में हिन्दी का प्रचार

डरबन, नेटाल, दक्षिण अफ्रिका,
२१, सितम्बर १९१५।

श्रीयुत पुरुषोत्तमदास टण्डन—मंत्री हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग

प्रियवर महाशय,

आप का मिति श्रावण शुक्ल १२ सं० १९७२ का संख्या $\frac{५}{९७१}$ श्रीयुत महाबीर प्रसाद त्रिपाठी का हस्ताक्षर युक्त कृपा पत्र आया। उत्तर में निवेदन यह है कि मैं अहर्निश हिन्दी भाषा के प्रचार में तत्पर हूं। मैं ने हिन्दी प्रचार के लिये जितनी संस्थायें स्थापित की हैं उनका नाम नीचे देता हूं।

(१) हिन्दी आश्रम—क्लेरस्टेट नेटाल
(२) हिन्दी विद्यालय—क्लेरस्टेट नेटाल।
(३) हिन्दी पुस्तकालय—क्लेरस्टेट नेटाल।
(४) हिन्दी यंत्रालय—क्लेरस्टेट नेटाल।
(५) हिन्दी प्रचारिणी सभा क्लेरस्टेट नेटाल।
(६) ट्रांसवाल हिन्दी प्रचारिणी सभा—जर्मिस्टन।
(७) हिन्दी नाइट स्कूल—जर्मिस्टन।
(८) हिन्दी फुटबाल क्लब—जर्मिस्टन।
(९) हिन्दी बाल सभा—ज़र्मिस्टन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(१०) हिन्दी प्रचारिणी सभा-डेनहाऊसर।
(११) हिन्दी पाठशाला-डेनहाऊसर।
(१२) हिन्दी पाठशाला-प्रिटोरिया।

मैंने जिस जिस स्थान पर जाकर हिन्दी भाषा के प्रचार के लिये व्याख्यान दिये उसका नाम नीचे देता हूं।

ट्रांसवाल

प्रिटोरिया. जोहांसबर्ग, जर्मिस्टन, न्यूक्लियर, रुडीपोर्ट, क्रुगर्स ड्रोप, बाकलबर्ग, बेनानी. और सोफ़ायाटोन।

नेटाल प्रान्त

चार्लिस्टन, न्यूकासल, फरेली, यूट्रकस, बरेली, वैलंगी डेनहाऊसर, केम्बरीन, हार्टिङ्गस्प्रुट, गलेंको जंकसन, बर्नसाइड गलेंको कोलरी, नेविगेशन, न्यूशॉप, संजोंजिस, न्यूमाइन, वाल्स एन्ड, वाचबेंक, पीनीक्स, वेरुलम, टुगेला, सीडनम, क्रेस्टेट और डरबन।

इसकी संक्षिप्त रिपोर्ट "नवजीवन" में प्रकाशनार्थ भेजी गयी है आशा है छपने पर आप को सब हकीकत ज्ञात हो जायगी। हिन्दी टाइप मंगा लिया गया है और मशीन खरीदने का प्रयत्न किया जा रहा है। प्रेस का सब सामान हो जाने पर शीघ्र ही "हिन्दी" पत्र निकलने लगेगा। इस कार्य में हमें हिन्द के साहित्य प्रेमियों से कुछ सहायता नहीं मिली यह बड़े शोक की बात है। दक्षिण अफ्रिका के हिन्दी भाइयों के प्रतिनिधि श्रीयुत लाल बहादुर सिंह जी स्वदेश को जा रहे हैं वे ट्रांसवाल हिन्दी प्रचारिणी सभा के प्रतिनिधि की हैसियत से हिन्दी साहित्य सम्मेलन में शामिल होंगे आशा है कि वे हिन्दी माता की दुर्दशा का वर्णन करेंगे।

कृपया सम्मेलन-पत्रिका तथा अन्य सम्मेलन सम्बन्धी सूचनायें भेजते रहें ताकि यहां की हिन्दी सभाओं का साहित्य सम्मेलन से दृढ़ सम्बन्ध स्थापित हो जावे। हमारा विचार है कि दक्षिण अफ्रिका में भी प्रति वर्ष "हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन" किया जावे। यदि परमात्मा ने कुशल पूर्वक रक्खा तो इस विचार को शीघ्र ही कार्य्य रूप में परिणत करूंगा।

हिन्दी का एक तुच्छ सेवक
भवानी दयाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हिन्दी"

जिनको न निज हिन्दी तथा निज हिन्द का अभिमान है।
उन कुल कुपूतों के लिये इस विश्व में नहिं मान है॥
जिस को न राष्ट्रिय, हिन्द, हिन्दीप्रेम पारावार है॥
सच जानिये उस नर अधम का जन्म ही बेकार है॥
जिसको न अपने राष्ट्र भाषा, देश का कुछ ज्ञान है॥
वह नर नहीं नरपशु निरा है और मृतक समान है॥

यह बड़े आनन्द की बात है कि दक्षिण अफ्रिका के हिन्दी भाइयों ने दुःखिनी मातृभाषा हिन्दी की दुर्दशा पर ध्यान दिया है। माता के करुण विलाप पर उनको तर्स आया और माता के दुःख दूर करने के लिये कई पुरुषार्थी हिन्दी भाई कमर कस कर तैयार हो गये हैं इस देश में अंग्रेज़ों के असङ्ख्य, काफिरों के अनेक तथा अन्य जातियों के अगणित पत्र निकलते हैं। हमारी गुजराती भाषामें तीन और तामिल में दो पत्र निकलते हैं पर बड़े शोक की बात है कि इस देश में अधिकस्थ संख्या में हिन्दी भाइयों के होते हुये भी हिन्दी में एकभी पत्र नहीं निकलताहै। वास्तवमें यह बड़े लज्जा की बात है। इस कमी को दूर करने केलिये ट्रांसवाल "हिन्दी-प्रचारिणी सभा"ने यह निश्चित किया है कि दरवन के निकट हिन्दी प्रेस स्थापित कर "हिन्दी" नामक साप्ताहिक समाचार पत्रनिकाला जाय इस महान कार्य्य में धन की कितनी बडी जरुरत है सो सहज में अनुमान किया जा सक्ता है। इस कार्य्य के लिये धन इकट्ठा किया जा रहा है आशा है कि सब हिन्दी भाई इस आवश्यक काम की ओर ध्यान देंगे। इस महान कार्य में समस्त हिन्दी भाईयों से प्रार्थना है कि आप लोग यथा शक्ति धन की सहायता देकर यश के भागी बनें। यदि आपके शरीर में राम और कृष्ण के समान अवतारिक महापुरुषों का खून कुछ भी मौजूद है। यदि आपको अपने देव और अपनी मातृ भाषा का कुछ भी अभिमान है तो अपनी गहरी नींद को त्यागो। हिन्दी माता के उद्धार के लिये कमर कस कर तय्यार हो जावो और अपने माथे का कलंक दूर करने के लिये "हिन्दी" पत्र की तन मन धन से सहायता करो। यदि आप इस काम में आलस करेंगे तो जमाना आपको क्या कहेगा। आलसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

या पुरुषार्थी किस नाम से आपको पुकारेगा ,इस का विचार आप खुद करें। यह सुन कर हिन्दी भाइयों को प्रसन्नता होगी कि श्रीमान् हिज हाइनेस महाराजा रामेश्वरसिंह बहादुर के० सी०आई० ई० दरभङ्गा नरेश ने "हिन्दी" पत्र का संरक्षक होना स्वीकार कर अपनी उदारता का अनुपम परिचय दिया है। इस संरक्षकता के लिये श्रीमान् के हम लोग सदैव ऋणी रहेंगे। आशा है कि हमारे अन्य राजे महाराजे भी श्रीमान का अनुकरण करेंगे।

जोहांसवर्ग के श्री सी.के. थम्बी नायडू, श्री डी० मोरगन, श्री राम दयाल सिंह आदि, प्रिटोरिया के राम लाल मूल्लू बाबू लाल महाराज आदि, बेनोनी के लक्ष्मणदास आदि, वोक्सवर्ग के खंडू भाई देशाई आदि, रुडीपोर्ट के भगवान देशाई कृष्ण जी आदि, कुरगर्स ड्रोप के जुगभाई देशाई कम्पनी आदि, और जर्मिस्टन के समस्त हिन्दी भाइयों के परिश्रम से आखा ट्रांसवाल में अच्छा उघराणा हुवा न्युकासल के बाबू लखराज सिंह डाक्टर के डी जोशी जी० बी० सी०, बाबू खड़गधारी सिंह आदि, डेन हाऊसर के बाबू धनेश्वर राय, बाबू राय सिंह आदि, यूठर्कस के श्रीकुन्दन लाल महाराज, न्यूकासल कोलरी के अखज महाराज वैलंगी के जंग बहादुर महाराज, सरयू महाराज, बाबू दीना सिंह आदि, चार्लिस्टन के भुजई राम, बी० बिहारी आदि सज्जनों के प्रयत्न से नेटाल के उक्त स्थानों पर उघराणा हो चुका है आशा है कि इसी प्रकार से समस्त हिन्दी भाई इस महान कार्य में सहायता देकर अपनी उदारता और दान शीलता का परिचय देंगे।

निवेदक

द: लाल बहादुर सिंह सभापति

द: भवानी दयाल मंत्री

कमेटी

C. K. Thambi Naidoo द: सी०के० थम्बी नायडू

द: सुरेन्द्रनाथ

G. Bandhoo द: जी० बन्धु

द: मखन सिंह

ट्रांसवाल हिन्दी प्रचारिणी सभा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षा समिति का सातवां अधिवेशन

परीक्षा समिति का सातवां साधारण अधिवेशन आश्विन कृ० ६ सं० १६७२ बुधवार ता० २६ सितंबर सन् १६१५ ई० को ५ बजे सन्ध्या समय सम्मेलन कार्य्यालय में हुआ।

निम्न लिखित सदस्य उपस्थित थे

(१) श्रीयुत पं० रामजी लाल शर्म्मा
(२) " बा० ब्रजराज बहादुर (संयोजक)
(३) " बा० पुरुषोत्तम दास टण्डन

२. बाबू राम दास गौड़ के पंचम अधिवेशन के निम्न लिखित प्रस्ताव पर विचार हुआ।

"जिन परीक्षार्थियों ने इस वर्ष की परीक्षाओं के लिए शुल्क दिया था किन्तु परीक्षा में नहीं बैठ सके उनको उसी शुल्क के बदले में सन् १६७३ की परीक्षाओं में किस रीति से बैठने का अधिकार देना चाहिये"

बहुत विचार होने पर सर्व सम्मति से निश्चय हुआ कि कई कारणों से केवल मध्यमा परीक्षा के ही उन परीक्षार्थियों को आगामी वर्ष की परीक्षा में अर्द्ध शुल्क देकर बैठने की आज्ञा दी जाय जो शुल्क देकर किसी कारण से परीक्षा में सम्मिलित नहीं हो सके।

२. मध्यमा का परीक्षा फल उपस्थित किया गया और उस पर विचार हुआ। सर्व सम्मति से परीक्षा फल निश्चित हुआ। मध्यमा परीक्षा में सब मिला कर १० परीक्षार्थी उत्तीर्ण हुए। प्रथम श्रेणी में ६ और द्वितीय श्रेणी में ४।

निश्चय हुआ कि मध्यमा परीक्षा का फल भी हिन्दी के दैनिक तथा साप्ताहिक समाचार पत्रों में प्रकाशनार्थ भेज दिया जाय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समालोचना

महात्मा सूरदास की साहित्य लहरी का समय

(श्रीयुत पं० जनार्दन झा लिखित)

श्री सूरदासजी का चरित वर्णन करते हुए हिन्दी-नवरत्न के लेखक पण्डित श्रीगणेशविहारी मिश्र, पण्डित श्यामविहारी मिश्र एम. ए. तथा पं० शुकदेवविहारी मिश्र बी. ए. महाशयों ने मई १९१० ई० की सरस्वती में लिखा है "साहित्य लहरी को सूरदास ने १६०७ वि० में संकलित किया था।" इसके प्रमाण में उन्होंने सूरदास का एक पद उद्धृत करके नीचे उसकी टीका भी लिखी है। वह यों है :—

मुनि पुनि रसन के रस लेख।
दसन गौरीनन्द को लिखि सुवल (सुदल) संवत पेख।
नन्दनन्दन मास छै तें हीन त्रितिया वार।
नन्दनन्दन जनम तें हैं वाण सुख आगार।
तृतिय ऋत्त सुकर्म योग विचारि सूर नवीन।
नन्द नन्दन दासहित साहित्य लहरी कीन।

(टीका) मुनि=७ रसन=० (जिसमें कोई रस नहीं है, अर्थात् जो कुछ भी नहीं है याने शून्य है) रस=६ दसनगौरीनन्द=१=१६०७ नन्दनन्दन मास=वैशाख (मधु) छै तें हीन त्रितिया=अक्षय (अक्षय) तृतीया, तृतिय ऋत्त=कृत्तिका नक्षत्र, सुकर्म योग (देखो सरदार कृत सौर दृष्टकूट की टीका, पृष्ठ ७१)

जान पड़ता है, मिश्र महोदयों ने सरदार कवि की टीका ज्यों की त्यों उठाकर यहां रख दी है। अपनी ओर से उस छन्द पर कुछ विचार नहीं किया। यदि विचार करते तो उस ललित सरल भाव सङ्कलित छन्द का अर्थ सहसा यों न लिख डालते। आप लोगों ने रसना का अर्थ लिखा है "शून्य" रसना शब्द की व्युत्पत्ति की है, जिसमें कोई रस नहीं है अर्थात् जो कुछ भी नहीं है। इस प्रकार शब्द को तोड़ मरोड़ कर आप लोगों ने जो अर्थ निकाला है, वह मेरी समझ में समीचीन नहीं जँचता। मेरी अल्प बुद्धि के अनुसार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रसन शब्द शून्य का बोधक न होकर एक का बोधक है। रसन या रसना का अर्थ है जीभ। ज्योतिष में रसना शब्द सर्वत्र एक का ही पर्यायवाचक है। श्री सूरदासजी का भी अभिप्राय रसन से यहां एक ही का जान पड़ता है। यदि उनका यह अभिप्राय न होता तो वे "रसन के रस लेख" ऐसा न लिखते। सर शब्द ६ और ९ दोनों का बोधक हो सकता है। इस लिए सूरदासजी ने यहां स्पष्ट कर दिया है कि "रसन के रस" अर्थात् जिह्वा का रस। रसन के साथ रस शब्द देने का उनका यही तात्पर्य ठीक जान पड़ता है। इस अर्थ से साहित्य लहरी बनने का समय १६०७ विक्रमाब्द न होकर १६१७ वि० होता है। मिश्र महोदयों ने साहित्य लहरी बनने का मास, तिथि, नक्षत्र और योग तक लिखकर दिन लिखना क्यों छोड़ दिया? अर्थ लिखते समय उक्त छन्द के चतुर्थ चरण को शायद आप तीनों महाशय एकदम भूल गये।.........त्रितिया बार। नन्दनन्दन जनम तें है बाण सुख आगार।" श्री सूरदासजी ने तिथि लिखने के अनन्तर दिन लिखा है। नन्दनन्दन श्रीकृष्णचन्द्र का जन्म दिन बुधवार है। उससे बाण अर्थात् पांचवां दिन रवि-वार उक्त पद से साहित्य लहरी के निर्माण का दिन निकलता है।

यदि यह अर्थ ठीक है तो साहित्य लहरी बनने का जो विक्रमाब्द मिश्र महोदयों ने लिखा है वह ठीक नहीं। साथ ही इसके, उन लोगों ने साहित्य लहरी के निर्माण समय के आधार पर जो श्री सूरदासजी के जन्म मरण का संवत् निर्धारित किया है, उसमें भी दस वर्ष का अन्तर पड़ जायगा। इस लिए मिश्र महोदयों से मेरी विनीत प्रार्थना है कि यदि आप तीनों भाई ऐतिहासिक विषयों के विशेष अन्वेषी और हिन्दी-साहित्य के उत्कट अनुरागी हैं तो आप को चाहिये कि इतिहास सम्बन्धी कोई विषय क्यों न हो भली भांति सोच विचार कर लिखें। क्योंकि आप जैसे संस्कृत, हिन्दी और अंगरेज़ी के दुर्धर्ष पण्डितों की लेखनी से निकला हुआ कोई विषय सहसा अप्रामाणिक नहीं गिना जा सकता।

अन्त में मेरी प्रार्थना यह है कि मिश्र महोदय जैसे विद्वान् हैं वैसे ही समृद्धिशाली भी हैं। वे चाहें तो किसी अच्छे ज्योतिषी से संवत् १६०७ और सं० १६१७ वि० का पञ्चाङ्ग बनवा कर जाँच सकते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं कि दोनों संवत्सरों में किस सम्वत् के वैशाख शुक्ल अक्षय तृतीया को रविवार कृत्तिका नक्षत्र और सुकर्म योग पड़ता है। इससे अर्थ निर्विवाद हो जायगा और मिश्र महोदयों के निर्दिष्ट साहित्य लहरी के समय का भी संशोधन हो जायगा।

ताप—विज्ञान-परिषद् ग्रन्थमाला संख्या २, मूल्य ।)—लेखक पं० प्रेम वल्लभ जोशी बी० एस० सी०। प्रकाशक विज्ञान-परिषद् प्रयाग। हिन्दी भाषा में विज्ञान विषय की पुस्तकों का प्रायः अभाव ही है। यही कारण है कि सर्वसाधारण में वैज्ञानिक शिक्षा का प्रचार बिलकुल नहीं हुआ है। कोई भी साहित्य आजकल आदर की दृष्टि से नहीं देखा जा सकता जब तक उसमें वैज्ञानिक, औद्योगिक और व्यापार सम्बन्धी विषयों पर सर्वसाधारण लोगों को लाभ कारक पुस्तकें उपस्थित न हों। सर्वसाधारण में वैज्ञानिक शिक्षा का प्रचार करने के लिए विज्ञान के कुछ आचार्य्यों ने प्रयाग में विज्ञान परिषद् नामक संस्था का निर्माण किया है और इस उद्देश्य की पूर्त्ति के लिए यह परिषद् विज्ञान विषय की पुस्तकों का निर्माण करता रहता है। ताप विज्ञान परिषद् ग्रन्थमाला की दूसरी संख्या है और विज्ञानप्रवेशिका की तरह अत्यन्त सरल और सुन्दर भाषा में लिखी गयी है। विषय गम्भीर होने पर भी पुस्तक ऐसे सरल और मनोहर ढंग से लिखी गयी है कि विषय को ग्रहण करने में कठिनाई नहीं होती। प्रयोगों को समझाने के लिए स्थान स्थान पर चित्र भी दिये गये हैं। इन चित्रों के बनवाने में परिषद् को अच्छा व्यय करना पड़ा होगा और इस पर ध्यान दे कर इस पुस्तक का मूल्य सस्ता प्रतीत होता है। बालक और बालिकाओं को पढ़ाने के लिए पुस्तक बड़े काम की है हिन्दी साहित्य सम्मेलन की प्रथमा परीक्षा में यह पुस्तक नियत हुई है। इस पुस्तक में लिखे प्रयोग बहुत थोड़े खर्च में और आसानी से किये जा सकते हैं। यह पुस्तक आदर के योग्य है। हम आशा करते हैं कि हिन्दी प्रेमी इस पुस्तक से लाभ उठावेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन सम्बन्धी सं० १९७२ की परीक्षाओं के प्रश्न पत्र

(प्रथमा परीक्षा)

साहित्य १

[परीक्षक—पं० मन्नन द्विवेदी गजपुरी, बी. ए.एम. ए. एस्. बी. एफ़.बी. एस्. एस]

समय ३ घंटे, पूर्णांक १००

१० प्रश्नों में किसी ८ के लिए पूरे नम्बर दिये जायँगे

१. सवैया, सुन्दरी छन्द, सोरठा, मन्दाक्रांता, शिखरिणी और वसंततिलका के लक्षण लिखिए और उदाहरण भी दीजिए। स्वरचित उदाहरणों पर विशेष ध्यान दिया जायगा।

२. अलंकार, उपमा, रूपक और व्याजस्तुति की परिभाषा और उदाहरण लिखिए।

३. निम्न लिखित पदों के अर्थ लिखिए और यह भी वतलाइये कि इनमें कौन से छन्द और अलंकार हैं :—

(क) बद्दल न होहि दल दच्छिण घमंड माहिँ, घटा जू न होहिँ दल सिवाजू हँकारी के। दामिनी दमक्क नाहिँ खुले खग्ग बीरन के, बीर सिर छाप लख तीजा असवारी के।

(ख) अपने बल सो लावहीं, यद्यपि मार शिकार।
तदपि सुखी नहिं होत हैं, राजा सिंह कुमार॥

(ग) सोहत जनु युग जलज सनाला।
शशिहिं सभीत देत जयमाला॥

(घ) उवै भानु पच्छिम प्रतच्छ दिन चन्द्र प्रकासै।
उलटि गंग बरु रहै कामरति प्रीति विनासै।
तजै गौरि अरधंग अचल-ध्रुव आसन चल्लै।
अचल पौन वरु होय मेरु मंदर गिरि हल्लै।
सुरतरु सुखाइ लोमस मरै भीर संक सब परिहरौ।
मुख बचन, बीर हम्मीर को बोलि न यह बहुरो टरौ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४. पिंगल में कितने गणागण दग्धाक्षर बतलाये गये हैं ? उन का वर्णन कीजिए और यह भी लिखिए कि आपकी राय में उनके नियमों का पालन कविता के लिए कहाँ तक आवश्यक है।

५. निम्न लिखित पदों में यदि कोई दूषण हो तो लिखिए।

(क) या विधि दीन दुखीन उबारन कौ अभिमानी।

(ख) नृपनन्द काम समान चांतक नीति जर जर जर भयो।

(ग) तहँबाग डोलहिं कुमुद बासित गंधवंती वात सो।

६. गोस्वामी तुलसीदास, चन्द्रशेखर कवि, भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र और अंगरेज़ी कवि गोल्डस्मिथ के संक्षिप्त जीवन चरित्र लिखिए।

७. मुद्राराक्षस की संक्षिप्त कथा लिखते हुए चाणक्य और अमात्य राक्षस के चरित्र की तुलना कीजिए।

८. राम चरित मानस से, भरत और लक्ष्मण, कौशल्या और सुमित्रा, जनक और दशरथ के चरित्र की तुलना कीजिए।

९. निम्न लिखित पदों का अर्थ लिखिए और यह भी बतलाइये कि ये किसके और कहाँ के वचन हैं।

कानन कठिन भयंकर भारी। घोर घाम हिम वारि बयारी।
कंदर खोह नदी नद नारे। अगम अगाध न जाहिं निहारे।
भोग रोग सम भूषण भारू। यम यातना सरिस संसारू।
कोक शोक प्रद पंकज द्रोही। औगुन बहुत चन्द्रमा तोही।
नहिं असत्य सम पातक पुञ्जा। गिरि सम होहिं कि कोटिक गुञ्जा।
जाकर जापर सत्य सनेहू। सो तेहि मिलत न कुछ संदेहू।

पति देवता सुतीय महँ, मातु प्रथम तुव रेख।
महिमा अमित न कहि सकहिं, सहस शारदा शेष॥

कहहु करहु किन कोटि उपाया। इहाँ न लागहि राउर माया।

१०. भूषण कवि और महाराज शिवाजी के विषय में जो कुछ जानते हों लिखिये। शिवा बावनी का सर्वोत्तम पद जो याद हो लिखिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य २

[परीक्षक—पं० शुकदेव विहारी मिश्र, बी ए.]

समय तीन घंटे

१. ईकारान्त शब्द प्रायः स्त्रीलिंग होते हैं। चार ऐसे ईकारान्त शब्द लिखिये जो स्त्रीलिंग न हों। ८

२. कृत और कृदन्त शब्दों के लक्षण लिखिये और कृदन्त शब्दों के चार उदाहरण दीजिये। ८

३. निम्न वाक्योंका सरल हिन्दी में अनुवाद कीजिये :— १२

(अ) जिसे छुवो, वही अंगारेसा गरम बोध होता है। मानो त्वगिन्द्रिय शीत स्पर्श से निराश हो जलमें शैत्यगुणका निर्देश करने वाले कणाद मुनि की बुद्धि का भ्रम मान बैठी हो। १४

(आ) उस शुभ्र ज्योत्स्नापूर्ण विभावरी में सुधाधर अंशुमाली से प्राप्त किरणों द्वारा अभ्रं लिह उच्च शाखीगण की शाखिकाओं को भी धवलित कर रहा था।

४. ग्रन्थ चुम्बक और पंडित में क्या भेद है? ग्रन्थ चुम्बक किसे कहते हैं और ऐसे लोगोंमें कौनसे दोष प्रायः पाये जाते हैं? १२

५. तोपों से गोले और शत्रु शरीरों से प्राण साथ ही निकलैंगे, वरन् तोपों का नाम सुनकर ही शत्रुगण युद्धस्थल में हहर हहरकर मर जावेंगे। तोपोंकी गरज तो युद्धस्थलमें पीछे सुन पड़ेगी और शत्रुगण हमारे प्रतापानल से सन्दग्ध होकर पहिले ही मर जावैंगे।

उपर्युक्त वाक्यों में कौन कौन अलंकार हैं सो समझाकर लिखिये। उन अलंकारों के लक्षण भी कहिये।

६

बनारस में यह जो बनारस गज़ट है। १४
इबारत सबिस्की अजब ऊट पट है।
मोहर्रिर विचारा तो है बासलीक़ा।
वले क्या करै वह कि तहरीर भट है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस पत्र का ठीक नाम क्या था ? कविने उपर्युक्त पद्य में भट शब्द क्यों लिखा ? यह पत्र किसकी सहायता से कब निकला और इसका सम्पादक कौन था ? इसकी भाषा कैसी थी ?

७. कवि वचन सुधा नाम्नी पत्रिका के विषय में कुछ मुख्य २ बातें लिखिये। १४

साहित्य ३

समय ३ घंटे, पूर्णांक १००

[परीक्षक—अध्यापक श्यामसुन्दर दास, बी. ए., एफ. बी. एस. एस.]

निम्न लिखित विषयों में से किसी एक विषय पर एक निबन्ध लिखिए जो उत्तर पुस्तक की कम से कम १०० और अधिक से अधिक २०० पंक्तियों में हो :—

१. किसी पुष्पवाटिका की संध्या समय की शोभा का वर्णन।
२. तुलसीदासकी रामायणका भारतवासियोंके सामाजिक जीवन पर प्रभाव।
३. जो सबको प्रसन्न करना चाहता है वह किसी को भी प्रसन्न नहीं कर सकता।

गणित

[परीक्षक—अध्यापक ज्योति प्रसाद बेजल, एम. ए.]

समय ३ घंटे, पूर्णांक १००

१. एक मनुष्यने ४६ मन २५ सेर चना एक रुपये में १४$\frac{१}{४}$ सेरकी दरसे मंडीमें ख़रीदे। गोदाममें लानेके लिए उसको २=)॥। तुलाई, २।=)॥ चुंगी और १।) मज़दूरी देनी पड़ी बतलाइये कि उसको चना किस भाव गोदाममें पड़ा। १

२. उसी चनेको वह ६ महीने के बाद बेचता है, कुल क़ीमत पर उसको १०॥) फ़ी सैकड़ा सूद देना पड़ा और फ़ी सेर एक छटांक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घुनसे कमी हुई। बतलाइये कि अगर वह १३ सेरकी दरसे चना बेचे तो उसको फ़ी सैकड़ा क्या लाभ या घाटा होगा। १२

३. दो मनुष्यांने एक महाजनसे बीस बीस रुपये उधार लिये, एकने साल भरके बाद महाजन को २२ रुपये चुकाए और दूसरे ने दो रुपये महीनेके हिसाबसे बाईस रुपये अदा किये। बतलाइये कि महाजनको किसने अधिक दिया। सूदकी दर दस रुपया सैकड़ा सालाना है। १६

४. बतलाइये कि

$$\frac{\cdot १ \times \cdot १}{२५ \times \cdot २५} \times \frac{३\cdot २५ \times ३\cdot २५}{\cdot ४ \times \cdot ६३} + \frac{१\cdot २५ \times २}{६\cdot ५ \times \cdot ७} \text{ का } \frac{५२६ \times \cdot ३१५६}{२७\cdot ५५ \div \cdot ६२५} \text{ रुपया}$$

तीन रुपये चार आने का कौन सा भाग है। १६

५. सरल रूपमें लाइये

$$\frac{\frac{३}{७} - \frac{२}{९}}{\frac{३}{७} + \frac{२}{९}} \text{ का } २\frac{११}{२६} \div \frac{४}{१३ - ३\frac{८}{९}} + ३\frac{११}{१६} - \frac{३}{३ - १\frac{१०}{१३}}$$ १०

६. व्यापारिक रीतिसे ४९ मन ३९ सेर १५ छटाँक ४ तोले गेहूँकी क़ीमत रुपये पीछे १० सेर $४\frac{१}{२}$ छटाँक की दरसे निकालिए। १०

७. एक मनुष्यने एक दीवार ८० फुट लम्बी दस फुट ऊंची और एक फुट दो इञ्च चौड़ी बनवाई। दो राज आठ आने रोज़पर और दो मज़दूर चार आने रोज़पर लगाये। ५० फुट रोज़ दीवार तैयार होती है। कितने रोज़में दीवार तय्यार हो जावेगी? इस मकानमें ९ इंच लम्बी $४\frac{१}{२}$ इंच चौड़ी और ३ इंच मोटी ईंट लगायी गयी और $\frac{१}{४}$ इंच गारा हर ईंट के जोड़ने में लगाया गया, बतलाइये कि कितनी ईंटें इसमें लगीं और अगर सात रुपये हज़ार ईंटकी क़ीमत है तो कुल ईंटों की क्या क़ीमत होगी? अगर हज़ार पीछे सवा रुपये ढुलाई दी जाय, और दो आने गिनवाई लगे तो सारी दीवारकी क्या लागत होगी? २४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतिहास

[परीक्षक—पं० हरिमंगल मिश्र, एम. ए. एस. सी.]

समय ३ घंटे, पूर्णाङ्क १००

१. आर्य जातिके धर्म और आचार व्यवहारके विषयमें जो कुछ जानते हो लिखिये। ८

२. रामायण और महाभारतसे विद्यार्थियोंको क्या शिक्षा मिलती है ? १०

३. भगवद्गीता कौनसा ग्रन्थ है ? उसकी शिक्षाका निचोड़ लिखिये। ८

४. वर्द्धमान महावीरके क्या सिद्धान्त थे ? उसने कौनसा नया मत चलाया ? १०

५. फ़ाहियान कौन था ? भारतवर्षके राज्यप्रबन्धका जो कुछ वर्णन उसने लिखा हो संक्षेपसे लिखिये। १०

६. राजपूत जाति भारतवर्षमें कहाँसे आयी ? उसके अभ्युत्थानका संक्षिप्त वर्णन लिखिये। १२

७. मुहम्मद तुग़लक़के राज्यकालका संक्षिप्त वर्णन लिखिये। १०

८. क्या शाहजहां सचमुच एक नेक बादशाह होगया है ? इस विषयमें अपनी सम्मति युक्ति पूर्वक लिखिये। ६

९. मार्कुइस वेलेज़लीकी कार्यवाहियोंका संक्षेपमें वर्णन कीजिये। ११

१०. निम्न लिखित पुरुषोंका संक्षिप्त वर्णन लिखिये:—हर्षवर्द्धन, बख़्तियारख़िलजी, अबुलफ़ज़ल, शिवाजी, राघोबा और लार्ड लेक। १२

भूगोल

[परीक्षक—पं० कृष्णशङ्कर तिवारी, बी. ए.]

समय ३ घंटे, पूर्णांक १००

१. भूगोल किसे कहते हैं और उसके कितने भेद हैं ? प्रत्येक भागके सीखनेसे क्या प्रयोजन है ? ८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२. पृथ्वी कैसे बनती है और गरम पानीके सोतोंके पाये जानेका क्या कारण है ? १०

३. ओस क्या है और किस तरह बनती है ? जब आकाशमें बादल होते हैं तब ओस क्यों नहीं गिरती ? १२

४. वायुको भौतिक पदार्थ कैसे समझ सकते हैं और पृथ्वीको वह किस प्रकार घेरे हुए है ? १०

५. एक मनुष्य प्रयागसे पूरबकी तरफ़ रवाना होकर पृथ्वीकी परिक्रमा कर फिर प्रयाग आना चाहता है। लिखिये कि उसके मार्गमें स्थल और जलके कौनसे प्रसिद्ध भाग क्रमसे पड़ेंगे ? १६

६. (क) पृथ्वीके किसी टुकड़ेका नक़्शा किस प्रकार बनाया जाता है और पहाड़ किस भांति दिखाये जाते हैं ? १२

(ख) संयुक्त प्रान्तका एक नक़्शा खींचिये और उसमें उसके प्रसिद्ध नगर और नदियोंके स्थान दिखलाइये ? १२

७. भूमण्डलके विभिन्न महाद्वीपोंकी कोई मुख्य नदियाँ और उनके बहनेकी राह बतलाइये ? १०

८. द्वीप, अन्तरीप, डेल्टा, खाड़ी, और डमरुमध्य इनकी परिभाषा और प्रत्येक के दो २ उदाहरण लिखिये ? १०

आरंभिक विज्ञान और स्वास्थ्य-रक्षा

[परीक्षक—अध्यापक गोमती प्रसाद अग्निहोत्री, बी. एस सी]

समय ३ घंटे, पूर्णाङ्क १००

१. नमक और गंधकको संग पीसकर एक बुकनी बनायी गयी अब इन दोनोंको अलग अलग करनेकी कोई युक्ति बतलाइए। १२

२. 'रवा' किसे कहते हैं ? फिटकरीके अच्छे बड़े बड़े रवे बनाने की रीति क्या है ? १०

३. (१) तांबा और (२) पानी—इन पदार्थोंकी जाँच करनेसे उनके विषयमें आपको कौन कौन सी बातें मालूम हुईं ?

४. (क) १० तोले चाँदीका घनफल यदि ११ घन-सेंटीमीटर हो, तो ५ तोले सोनेका घनफल कितना होगा ? ८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

{ आपेक्षिक घनत्व : चाँदीका = १०·६
सोनेका = १६ }

(ख) एक शीशेके टुकड़ेका वज़न तारपीनके तेलमें यदि ४ माशे हो, तो उसका मालूमी वज़न क्या होगा ? १२

{ आपेक्षिक घनत्व : शीशेका = २·५
तारपीनके तेलका = ·५ }

५. मनुष्यको अपने जीवन तथा स्वास्थ्यकी रक्षाके लिए क्या क्या आवश्यक है ? ८

६. पचन क्रियाका संक्षिप्त विवरण लिखिए। २०

७. हमारे घरोंकी हवा किन किन कारणोंसे बिगड़ा करती है और उसे शुद्ध बनाए रखनेके क्या क्या उपाय हैं ? १०

८. 'निद्रा' पर एक छोटासा लेख लिखिये। १२

(मध्यमा परीक्षा)

साहित्य १

[परीक्षक—पं० श्याम विहारी मिश्र, एम. ए॰ एम. आर. ए, एस]

समय ३ घंटे पूर्णांक १००

१. निम्न लिखित छन्दोंका अर्थ और आशय लिखिये:—

(क) ब्रह्म के आनन ते निकसे ते अत्यन्त पुनीत तिहू पुर मानी।
राम युधिष्ठिर के बरने बलमीकिहु व्यास के अंग सोहानी॥
भूषण यों कलि के कबिराजन राजन के गुन पाय नसानी।
पुन्य चरित्र सिवा सरजै वर न्हाय पवित्र भई पुनि बानी॥ ४

(ख) सीता संग सोहत सुलच्छन सहाय जाके भूपर भरत नाम भाई नीति चारु है॥
भूषण भनत कुल सूर कुल भूषन हैं दासरथी सब जाके भुज भुव भारु है॥
अरि लंक तोर जोर जाके संग बानर हैं सिंधुर हैं बाँधे जाके दल को न पारु है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तेगहिकै भेंटै जो नरोकस मरद जानै सरजा सिवा जो
रामही को अवतारु है ॥

(ग) मोलल्लहि जस नोलल्लरि बहलोलिलय धरि ।

(घ) कैसो उयो धरि सीरे सुभाय को चाय महाँ चित में धरिचोखे ।
संग सरोज सखानि लये दये भेष बनाय नछत्रन ओखे ॥
गोकुल जानि कमोदिनी सी हमको ब्रज चन्द बिना परिपोखे ।
पानिप प्रान पिपई सो लेत सखी यह सूर सुधाधर धोखे । ४

(च) ऊंचे अवास बिलास करै अँसुवान को सागर कै चहुं फेखो
ताहू ते दूरिलौं अंग की ज्वाल कराल रहै निसि बासर घेखो ॥
दास लहै वह क्यों अवकास उसास रहै नभ ओर अभेखो ।
है कुसलात इतो इहि बीच जु मीचु न आवन पावत नेखो ॥ ४

(छ) बएर्य वस्तु बर्णि कै अवएर्य का अनादरै सु तीसरो प्रतीप
कबि दूलह गनायो है ।
विष भरे कैवर नसैबर गरब ऐसे तेरे तुल्य वचन प्रपंचिन
को गायो है ॥ ३

२. प्रश्न १ (क) के तीसरे चरणमें भूषण जी किस बातपर कटाक्ष
करते हैं ? इसकी विस्तार पूर्वक विवेचना कीजिए. ५

३. भूषणमें जातीयताका भाव कैसा था ? उदाहरणोंके साथ
अपने मतका समर्थन कीजिए । ६

४. प्रश्न १ में दिये हुये छन्द (क), (ख), (घ) और (च) में कौन
कौन प्रधान अलंकार हैं ? उन्हें व्याख्या सहित समझाइये । १२

५. (क) प्रश्न १ में दिये हुए छन्दोंके नाम लिखिये और उनके
रूप बतलाइए । ८

(ख) मुख्य गण कितने होते हैं ? उनके नाम, लक्षण, रूप, देवता,
फल और उदाहरण सूक्ष्म रूपमें लिखिए । १२

(ग) खंड मेरु किसे कहते हैं ? उसके बनाने की रीति लिखिए । २

(घ) "बसु बसु भंता डिल्ला जानहु ।" इसका क्या आशय है ?
इसे भली प्रकार समझाइये और उदाहरण दीजिए । २

६. (क) निम्न लिखित छन्दका तात्पर्य मात्र लिखिये और उसकी
नायिका बतलाइये ।
एकै चले रस गोरस लै अरु एकै चले मग फूल बिछावत । ३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्योँ पदमाकर गावत गीत सु एकै चले उर आनंद छावत॥
योँ नँद नन्द निहारिबे को नँदगाँव के लोग चले सब धावत।
आवत कान्ह बने बन ते बर प्रान परे से परोसिनि आवत॥

(ख) पद्माकरकी कविताके मुख्य गुण और दोष क्या हैं। उनकी गणना किस कोटिमें है? भूषण और पद्माकर में क्या अन्तर है?

(ग) संचारी भाव किसे कहते हैं? उनमेंसे ५ के नाम लिखिये, और एकका उदाहरण दीजिए।

७. नीचे दिये हुए पद्योंकी टीका कीजिए—

(क) कहलाने एकत फिरत अहि मयूर मृग बाघ।
जगत तपोबन सो कियो दीरघ दाघ निदाघ॥
दीठि बरत बाँधी अटनु चढ़ि धावत न डरात।
इत ते उत मन दुहुन के नट लौं आवत जात॥

(ख) पायो नाम चारु चिन्तामणि उर करते न खसैहौँ।
श्याम रूप शुचि रुचिर कसौटी चित कंचनहिं कसैहौँ॥
परबस जानि हँस्यो इन इन्द्रिन्ह निज बश ह्वै न हँसैहौँ।
मन मधुकर प्रन करि तुलसी रघुपति पद कमल बसैहौँ॥

(ग) हे वीर! देखो तो तुम्हें यों देखकर रोते हुए।
हैं हँस रहे सब शत्रुजन मन में मुदित होते हुए॥
क्या इस महा अपमान का कुछ भी न तुम को ध्यान है?
क्या ज्ञानियों को भी बिपद में त्याग देता ज्ञान है?

८. निम्न लिखित अवतरणों से जायसी के विषय में क्या क्या बातें विदित होती हैं:—

चार मीत जो महमद ठाऊँ। जेहिं क दीन्ह जग निरमल नाऊँ॥
शेर शाह दिल्ली सुलतानू। चारहु खंड तपा जस भानू।
जायस नगर धर्म अस्थानू। तहाँ जाय कबि कीन्ह बखानू॥
जग सूझा एकै नयनाहा। उवा सूक जस नखतन माहा॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य २

[परीक्षक—पं० शुकदेव विहारी मिश्र बी. ए.]
समय ३ घंटे पूर्णांक १००

१ हिन्दी भाषामें संस्कृत व्याकरणकी दृढ़ता स्थापित होनेसे हिन्दी की स्वतन्त्रताके विषयमें क्या दूषण आरोपित होते हैं और उससे और क्या क्या दोष हैं ? ८

२ आदिम, माध्यमिक, अलंकृत और वर्त्तमान हिन्दीमें मोटे मोटे क्या अन्तर हैं ? उत्तर प्रायः ३० पंक्तियोंमें हो । १२

३ वैष्णवता और मानुष जीवन होड़के प्राबल्यसे हिन्दीको क्या क्या हानि लाभ हुए ? उत्तर प्रायः २० पंक्तियोंमें हो ।

४ निम्न लिखित पंक्तियोंमें कमसे कम तीन अर्थालंकार बतलाइये, और अपने बताये हुए अलंकारोंके रूप सूक्ष्मतया उनमें दिखला दीजिये । १२

जे पुर गाँव बसहिं मग माहीं। तिनहिं नाग सुरनगर सिहाहीं ॥
केहि सुकृती केहि घरी बसाये । धन्य पुन्यमय परम सुहाये ॥
जहं जहं राम चरन चलि जाहीं । तहं समान अमरावति नाहीं ॥

५ समालोचनासे क्या क्या लाभ होते हैं ? उत्तर चिपलूणकर महाशयके मतानुसार प्रायः २० पंक्तियोंमें दीजिये । १२

६ हिन्दी अंकों वाले वर्त्तमान रूपोंके बननेके कारणोंमें त्वरा लेखन एवं विना लेखनी उठाये लिखनेकी इच्छा भी प्रधान है। इसके दो उदाहरण अंकोंके भूत और वर्त्तमान रूपोंसे दीजिये । ८

७ यदि सौन्दर्य्योपासकको उपन्यास मानें तो गद्य काव्य मीमांसा में लिखे हुए नव विभागोंमें वह किसमें पड़ता है ? उत्तरके कारण प्रायः १० पंक्तियोंमें लिखिये । १२

८ इस ग्रंथके उपन्यास माननेसे इसमें एवं इसके नायकमें मोटे मोटे गुण दोष क्या हैं ? १२

९ वर्त्तमान कालमें नाटक कैसे होने चाहिये ? ८

१० निम्न वाक्योंके शुद्ध रूप लिखिये— ८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(अ) उसने रामको गालीदी और कहने लगा कि मैं तुझे कुछ भी नहीं समझता।

(अ) उसकी मृत्यु परसों हो गयी।

(इ) उसने मुझे एक किताब लादिया।

(ई) मैं क्या तेरे आधीन हूं ?

साहित्य ३

(परीक्षक--अध्यापक श्यामसुन्दर दास बी. ए., एफ़. बी. एस, एस.)

समय ३ घंटे, पूर्णांक १००

निम्न लिखित विषयों मेंसे किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिये जो उत्तर-पुस्तककी कमसे कम १०० और अधिक से अधिक २०० पंक्तियोंमें हो --

१. मनुष्य ईश्वरकी सृष्टिका मुकुट है।

२. प्राचीन कालके राज-दर्बारोंमें कवियोंकी उपयोगिता और आवश्यकता।

३. किसी प्राचीन नगरका वर्णन जहाँ पुराने खंडहर बहुत हों। उस स्थानके संबन्धमें लेखकके विचार।

साहित्य ४

[परीक्षक—पं० रघुवर प्रसाद द्विवेदी, बी. ए., एफ़. बी. एस. एस.]

समय तीन घण्टे, पूर्णाङ्क १००

सब प्रश्नोंमें समान अंक हैं

१. हिन्दी साहित्यका काल विभाग किस प्रकार किया गया है और प्रत्येक विभाग किस सम्वत् तक माना गया है लिखिए। यह भी बतलाइए कि किस विभागमें न्यूनाधिक कितनी कविता मिलती है। प्रत्येक विभागकी कविताके क्या क्या लक्षण हैं और भाषाका क्या रूप है ?

२. श्रेणि-विभाग और उसका प्रयोजन क्या है खोल कर लिखिए।

३. (क) हिन्दी भाषापर एक लेख लिखिए जिसमें उसके प्रचार, उत्पत्ति, विकासादि विषयोंका समावेश हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ख) गद्य और पद्यकी हिन्दीमें क्या अन्तर रहा है और अब उसके दूर करनेके लिए क्या प्रयत्न किया जा रहा है ?

(ग) किन २ प्रधान कवियोंने किस प्रकारकी हिन्दीका उपयोग किया है ?

४. अष्ट-छाप वाले कवि-गण कौन २ हैं ? उनके विषयमें जो कुछ जानते हों, लिखिये।

५. (क) महाकवि विहारीलालजी कब हुए ?

(ख) इनके मुख्य काव्य-ग्रन्थमें क्या २ विशेषताएँ हैं ?

(ग) उसकी भाषा किस प्रकार की है ?

(घ) हिन्दीके अन्य महाकवियोंके नाम बतलाइये और उनके मध्य इनका स्थान-निरूपण कीजिये।

६ (क) वर्त्तमान नागरी-लिपि वा नागराक्षरोंकी उत्पत्ति कब से और किस प्रकार हुई।

(ख) निम्न लिखित अक्षरोंके रूपान्तर कैसे २ होते गये लिखिए--

ए, थ, ब

इतिहास १

(परीक्षक—श्री जनार्दन भट्ट, एम. ए.)

समय ३ घंटे, पूर्णांक १००

[केवल १० प्रश्न करना चाहिये। प्रत्येक प्रश्नके लिये १० अंक]

१. प्राचीन समयमें योरुप और एशिया के बीच में कौन कौन व्यापारिक मार्ग थे और वे किस तरह से बन्द हो गये।

२. प्राचीन समय में पूरब के व्यापार की बागडोर मुसलमानों के हाथ कैसे पहुंची और उसका क्या परिणाम संसार के इतिहास में हुआ ?

३. "हंस संघ" का विस्तार पूर्वक वर्णन कीजिये।

४. "जिसके अधिकार में समुद्र है उसी के अधिकार में व्यापार रहेगा, इसी तरह जिसके हाथमें संसार का व्यापार है उसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के अधिकार में संसार की संपत्ति रहेगी तथा स्वयं संसार उसके आधीन रहेगा।"

इस कथन को ऐतिहासिक प्रमाणों द्वारा पुष्ट कीजिये।

५. हिन्दुस्तान में पोर्तगीज़ अधिकारकी स्थापना कैसे हुई और उसका अन्त किन कारणों से हुआ? इसका उत्तर संक्षेप में परन्तु सब आवश्यक बातोंके साथ दीजिये।

६. ऋग्वेद के समय में आर्यों के सामाजिक जीवन का वर्णन कीजिये।

७. चन्द्रगुप्त मौर्यके समय में भारतवर्षकी सभ्यता का संक्षिप्त हाल लिखिये।

८. जिस समय बुद्ध भगवान्ने अपने धर्म का उपदेश करना प्रारम्भ किया उस समय भारतवर्ष की क्या अवस्था थी?

९. फ़ाहियानकृत भारतवर्ष का वृत्तान्त संक्षेप में लिखिये?

१० गुप्तकालमें "हिन्दू धर्म और संस्कृत साहित्य के पुनरुद्धार" विषय में आप क्या जानते हैं?

११ राजपूतों और जाटोंकी उत्पत्ति के बारे में पश्चिमीय इतिहासों का क्या मत है?

११ (१) सिकन्दर (२) सेल्यूकस (३) मार्कोपोलो (४) वास्को डि गामा (५) आलबुकर्क (६) समुद्रगुप्त (७) कनिष्क (८) पुराण (९) ह्वेनत्सांग (१०) अलबेरुनी

इनपर छोटे छोटे नोट लिखिए।

इतिहास २

[परीक्षक – अध्यापक रामदास गौड़, एम. ए.]
समय ३ घंटे

प्रश्नों के अंक बराबर हैं। किसी ७ प्रश्न के पूरे उत्तर देनेसे १०० अंक मिल जायँगे। ७से अधिक लिखने वालोंके अंक कट जायँगे।

१. 'इतिहास' किसे कहते हैं? इसके अध्ययन से क्या क्या लाभ हो सकते हैं? संक्षेपमें लिखिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२. रोमके विस्तृत साम्राज्य के अधःपतन के क्या कारण हुए? रोम साम्राज्यसे वर्त्तमान किसी साम्राज्यकी तुलना हो सके तो कीजिए।

३. माध्यमिक कालके धर्म्मयुद्ध तथा साम्प्रदायिक संघर्षों का संक्षिप्त वर्णन करते हुए बतलाइये कि युरोपकी सभ्यतापर इनका क्या प्रभाव पड़ा।

४. जागृतिकाल और माध्यमिककालमें क्या अन्तर समझना चाहिए। वह कौन कौनसे राजनीतिक एवं सामाजिक परिवर्त्तन हुये जिनसे जागृतिकालने युरोपमें युगान्तर उपस्थित कर दिया?

५. फ्रांसकी राज्यक्रान्ति और नेपोलियनके चरित्रसे जर्म्मन-अभ्युदय और वर्त्तमान कैसर के चरित्र की तुलना कीजिये।

६. यूनान, मिस्र और वेल्जियमकी स्वतंत्रता प्राप्ति का संक्षिप्त इतिहास लिखिए। कौन सी घटनाएं इसमें साधक हुईं?

७. बिस्मार्ककी कूटनीतिकी विस्तृत समालोचना कीजिए।

८. उपनिवेशोंका इतिहास देते हुए यह दिखलाइये कि विविध पैतृक राज्योंका व्यवहार और नीति अपने २ उपनिवेशोंके प्रति कैसी है।

९. 'युरोपमें साम्प्रदायिक विरोध तथा अन्ध परम्परा" इस विषय पर एक छोटा सा लेख लिखिये जो १०० पंक्तियोंसे अधिक न हो।

१०. अर्थशास्त्र, समष्टिवाद और विकास सिद्धान्तका युरोपीय आचार विचार पर कैसा प्रभाव पड़ा?

११. वाणिज्य व्यापार तथा शिल्पकलाकी युरोपीय जन साधारण में किन उपायों से उन्नति हुई तथा इस उन्नतिमें शासकवर्ग किस प्रकार सहायक हुए?

गणित

[परीक्षक—श्री कमलाकर द्विवेदी एम. ए.]

समय ३ घंटे, पूर्णांक १००

सब प्रश्नों का उत्तर किये विना भी पूर्णाङ्क प्राप्त हो सकते हैं

१. (अ) समानान्तर रेखाओंकी क्या परिभाषा है और अनन्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूरी पर ये रेखाएं मिलती हैं अथवा नहीं ?

(ब) किसी निर्दिष्ट विन्दुसे दो दिये हुए समानान्तर सरल रेखाओं तक ऐसी दो सरल रेखाएं खींचिए कि वे आपसमें तुल्य हों और उनके बीचका कोण समकोण हो।

२. एक ऐसी सरल रेखा खींचिए जिसमें किसी बिन्दुसे यदि दो स्पर्श रेखाएं दो दिये हुए वृत्तोंपर खींची जायं तो तुल्य हों।

इस सरल रेखा का नाम विशेष क्या है ? २

३. किसी त्रिकोणकी तीनों भुजाओंपर समत्रिबाहु त्रिभुज बनाये जायं तो सिद्ध कीजिये कि इन समत्रिबाहु त्रिभुजोंके बहिर्गत वृत्तोंके केन्द्रोंको मिला देनेसे एक समत्रिबाहु त्रिभुज बन जायगा। १०

४. $क^{२^{न+१}} - ख^{२^{न+१}}$ को $क^{२^{न}} + ख^{२^{न}}$ से भाग दीजिए

बतलाइए कब

$य^{३} + प\,य^{२} + क\,य + र$, में, $य^{२} + अ\,य + ब$, का भाग पूरा लग जायगा। ४

५. (अ) $४य^{४} + ३२य^{२} + ९६ + \frac{६४}{य^{४}} - \frac{१२८}{य^{२}}$ का वर्गमूल निकालिये

(ब) सिद्ध कीजिए कि $य^{४} + प\,य^{३} + क\,य^{२} + र\,य + स$ वर्ग तब

होगा जब कि $\left(क - \frac{प^{२}}{४}\right)^{२} = ४\,स$ और $र^{२} = प^{२}\,स$। ४

(म) $\sqrt{१७५ - \sqrt{१४७}}$ का वर्गमूल क्या है ?

६. (अ) यदि क और ख अतुल्य हों तो

$क^{२} + ख^{२} > २\,कख$

(ब) यदि $क + ख + ग = ०$ ४

तो $क^{३} + ख^{३} + ग^{३} = ३\,कखग$

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७. एक दो स्थानकी संख्या ऐसी बतलाइये जो स्थानांकके योग ५ का वर्ग हो और यदि उस संख्याके स्थानांकको बदल दें तो विपरीत संख्या स्थानांकके योगकी दूनी हो। १०

८. (अ) कोण मापनेकी रीति कितने प्रकारकी होती है ? ३

यदि य किसी कोणका चक्रीय माप हो तो $\frac{\text{ज्याय}}{\text{य}} = १$ जब कोण बहुत न्यून कर दिया जाय। ३

(ब) सिद्ध कीजिये कि वे सब कोण जिनकी ज्या, य के ज्या के तुल्य है $\{ \text{म}\wedge + (-१)^{\text{मय}} \}$ में अन्तर्गत है जिसमें म कोई अभिन्न पूर्णाङ्क है।

(स) घात प्रमापक (लघुरिक्त) क्रियासे क्या लाभ होता है ?

यदि घा ज्या २१° ३′ = ९·५५ ५ ३१ ५२

घा ज्या २१° २′ = ९·५५ ४ ९८ ६८

तो घा ज्या २१° २′ २५″ क्या है ? ४

९. (अ) निम्न लिखित समीकरणमें से य और फ को निकाल कर एक दूसरा समीकरण बनाइए

ज्याय = म कोज्याफ – न ज्याफ

कोज्या = म ज्याफ – न कोज्याफ ३

(ब) सिद्ध कीजिए :—

स्प ५ य – स्प ३ य – स्प २ व = स्प ५ य स्प ३ य स्प २ य और

$\text{स्प}^{-१}\frac{३}{५}$ – कोस्प$^{-१}\frac{७}{३}$ = कोस्प$^{-१}\frac{१३}{१२}$ ३

१० (अ) किसी त्रिकोणके तीनों भुज ज्ञात हैं तो कोणका मान कैसे निकाला जायगा ? २

(ब) किसी वृत्तार्द्धका व्यास जिसकी लम्बाई २र है किसी बिन्दुपर दो भागमें किया जाता है इनको व्यास मानकर दो वृत्तार्द्ध खींचे जाते हैं इनके व्यासर्द्ध $र_१$ और $र_२$ हैं यदि एक ऐसा वृत्त खीचा जावे कि तीनों वृत्तार्द्धोंको स्पर्श करे तो

इस का व्यास $= २\frac{र\,र१\,र२}{र^२ - र_१र_२}$ ४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्कृतसे हिन्दी में अनुवाद

[परीक्षक—पं० चन्द्रमौलि शुक्ल, एम. ए. एल्. टी.]

समय ३ घन्टे

निम्न लिखित गद्य पद्य मय संस्कृत का अनुवाद सरल हिन्दी में लिखो —

(क) ६० अंक

ततः द्वारपालः प्राह, 'देव, श्री शैलात् आगतः कश्चित् विद्वान् ब्रह्मचर्य्यनिष्ठः द्वारिवर्त्तते' इति। राजा 'प्रवेशय' इति आह। ततः आगत्य ब्रह्मचारी 'चिरंजीव' इति वदति। राजा तं पृच्छति 'ब्रह्मन्, बाल्ये एव किं नाम व्रतं ते? अन्वहं उपवासेन कृशः आसि। कस्यचित् ब्राह्मणस्य कन्यां तुभ्यं दापयिष्यामि, त्वं चेत् गृहस्थधर्म्मं अँगी करिष्यसि' इति। 'ब्रह्मचारी प्राह, 'देव, त्वं ईश्वरः, त्वया किं असाध्यम्, परन्तु शान्तिः एव मम गृहिणी, अतः विवाहं न करिष्यामि'। इति श्रुत्वा राजा उत्थाय पादयोः पपात आह च, 'ब्रह्मन्, मया किं कर्त्तव्यम्' इति। स आह, 'देव, अहं काशीं गन्तुमिच्छामि। ततः त्वत्सदने ये पंडितवराः तान् सर्व्वान् अपि काशीं प्रति प्रेषय' राजा तथा एव चकार। ततः सर्व्वे पंडितवराः तदाज्ञया प्रस्थिताः। कालीदासः एकः न गच्छतिस्म। तदा राजा कालिदासं प्राह, 'सुकवे, त्वं कुतः न गतः असि' इति। ततः कालिदासः राजानं प्राह, देव, सर्व्वज्ञः असि।

ते यान्ति तीर्थेषु बुधा ये शंभोर्दूर वर्तिनः।
यस्य गौरीश्वरश्चित्ते तीर्थ भोज परं हि सः॥

एतत् श्रुत्वा राजा भोजः अतीव संतुष्टः॥

(ख) ४० अंक

यस्य नास्ति स्वयं प्रज्ञा शास्त्रं तस्य करोति किम्।
लोचनाभ्यां विहीनस्य दर्पणः किं करिष्यति॥
किं करिष्यन्ति वक्तारो यत्र श्रोता न वर्त्तते।
नग्नक्षपणके देश रजकः किं करिष्यति॥
धनिकः श्रोत्रियो राजा नदी वैद्यस्तु पंचमः।
पंच यत्र न विद्यन्ते वासं तत्र न कारयेत्॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्णानामर्थसंघानां रसानां छन्दसामपि ।
मंगलानां च कर्त्तारौ वन्दे वाणी विनायकौ ॥
भवानी शंकरौ वन्दे श्रद्धा विश्वास रूपिणौ ।
याभ्यां विना न पश्यंति सिद्धाः स्वान्तःस्थमीश्वरम् ॥

ज्यौतिष्

[परीक्षक—ज्यौतिर्विद् पं० इन्द्रनारायण द्विवेदी]
समय तीन घन्टे, पूर्णाङ्क १००

स्वच्छ और सुवाच्य लेखनके लिये १० अङ्क

१. खगोल विद्या किसे कहते हैं और उसमें प्रधान विषय कौन हैं ? ५

२. (अ) आकर्षणशक्ति और सामान्यगुरुत्व केन्द्र का सम्बन्ध क्या है ? ५
(इ) एक पिण्डपर दो शक्तियों का प्रभाव कैसा पड़ता है ?

३. (अ) ग्रहोंकी कक्षायें अण्डाकार क्यों होती हैं ?
(इ) ग्रह और उपग्रह की परिभाषा लिखिये ?
(उ) क्या कोई उपग्रह वक्री भी है (पूर्वसे पश्चिमको जाता है) ? यदि है तो वह किस ग्रहका उपग्रह है ।

४. (अ) चन्द्रग्रहण के समान सूर्यग्रहण, पृथ्वी के सभी भागों में समान रूप से क्यों नहीं दिखलाई देता ?
(इ) उपच्छाया और प्रच्छाया में क्या अन्तर है ?
(उ) ज्वारभाटे के कारण और उनके प्रकार लिखिये । ८

५. (अ) इस समय १ सौर वर्ष कितने दिन, घण्टे और मिनट का होता है ?
(इ) प्रतिवर्ष सौर वर्षमें वृद्धि होती है कि ह्रास और उस ह्रास या वृद्धि का मान क्या है ?

६. सूर्यसिद्धान्त में प्रधान प्रधान विषय कौन हैं ? और त्रिप्रश्न किन तीन प्रश्नों को कहते हैं ?

७. सूर्यसिद्धान्त की रचना उसके अनुसार कब हुई, उसको किसने बनाया और फिर उसका प्रचार किसके द्वारा हुआ ? ५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८. कल्पादि और सृष्ट्यादि में क्या अन्तर है। एक कल्प कितने दिव्य वर्षों का होता है ?

९. सूर्यसिद्धान्तानुसार अयन की वार्षिक गति क्या है ? और उसका संस्कार कहाँ कहाँ होता है ?

१०. मध्य और स्पष्ट ग्रह में क्या अन्तर है ? और मेष के आदि में पात और मन्दोच्च के बिना मध्यमग्रह और शीघ्रोच्च एक समान अन्तिमवार कब हुये थे ?

११. विषुवच्छाया, वलन और तिमिनारेखा किसे कहते हैं और मध्यलग्न को दशम लग्न क्यों कहते हैं ?

१२. (अ) सूर्य, चन्द्रमा और पृथ्वी के व्यासों का पृथक् २ मान क्या है ?

(इ) सूर्यसिद्धान्त में व्यास से जो भूपरिधि का मान निकाला गया है उसमें क्या स्थूलता है ?

(उ) सूर्यसिद्धान्तानुसार पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है अथवा सूर्य पृथ्वी के ?

१३. स्वयम्वह-यन्त्र के सम्बन्ध में जो कुछ जानते हों लिखिये ? ७

अंग्रेज़ीसे अनुवाद

[परीक्षक—मोहनलाल मिश्र]

समय ३ घन्टे, पूर्णाङ्क १००

स्पष्ट और सुन्दर अक्षरों के १० अङ्क मिलेंगे

निम्नलिखित का सरल हिन्दी अनुवाद करो :—

No slavery is greater and more harmful than that of mind and no sin is greater than that of attempting to keep human beings in a state of perpetual bondage. It is bad enough to enslave people but to create circumstances and perpetuate them, which prevent them from breaking their chains and becoming free, is intolerably so ——infamous beyond measure and galling to the very soul of man.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

No man or a number of men have a right to do so, and, if there be any, they deserve the severest condemnation at the hands of all who have a conscience and do not want to lose it, It is my firm conviction, gentlemen, that injustice and oppression of fellowmen attempt to stifle legitimate human ambition, desire to keep people down to profit by their misfortune, is as sure to react on those who are the authors and agents thereof, as night follows day, that nothing can save them from a similar fate sooner or later except perhaps a timely consciousness of the gravity of their sin and a vigorous attempt to atone for it by undoing the mischief wrought thereby.

The laws of nature are inexorable and under those laws no expiation short of the same fate is ordinarily adequate for those whose sin consists in deliberate and persistent degradation of men and women and in deliberate and persistent misuse of powers and faculties which have been given them for the betterment of self and for the service of others and not for keeping people down and reducing them by brute force or by religious and social duplicity to the level of beasts.

Those who brutalise themselves in this way do a great wrong to their own nature, which has to be put right by making them go throuh the same ordeal at some stage or other of the life of their souls; unless it be that they awake in time and with their own hands set to undo the mischief wrought by them under the intoxicating influence of power and under a mistaken presumption of their right to do so.

धर्मशास्त्र

[परीक्षक—पं० श्रीकृष्ण जोशी]

समय तीन घन्टे, पूर्णाङ्क १००

[इन १२ प्रश्नोंमें से पहिले ४ प्रश्नों के उत्तर अवश्य लिखने चाहिये । शेष ८ में ५ के उत्तर देने चाहिये, चाहे कोई ५ हों । इस प्रकार १२मेंसे ९ प्रश्नों के उत्तर देने हैं । प्रत्येक प्रश्न में बराबर अङ्क है]

१. मनुस्मृति के प्रत्येक अध्याय के मुख्य विषयों को संक्षेप से लिखिए ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२. अच्छी सन्तति उत्पन्न होनेकी दृष्टि से जो विवाह के नियम रक्खे गये हैं उनको लिखिए।

३. मनुके अनुसार विवाहों के भेद और प्रत्येक के लक्षण लिखिए और लिखिए कि कौन कौन विवाह किस किस वर्ण के लिए शास्त्रोक्त हैं।

४. उत्तम कुलों को अधम करने वाले और नाश करने वाले काम कौन कौन लिखे हैं?

५. 'अपांक्तेय' और 'पंक्तिपावन' शब्दों के अर्थ लिखिए और अपंक्तियों के १० उदाहरण और 'पंक्तिपावनों' के ५ उदाहरण लिखिए। जो नाम लोक प्रसिद्ध न हों उनके शास्त्रोक्त लक्षण लिखिए।

६. मांस भक्षण के विषय में मनुस्मृति के विधि निषेध के मुख्य वचनों का सार लिखिए।

७ (क) ब्राह्मणादि वर्णों के साक्षियों से प्रश्न पूछने की और उनको शपथ देने की क्या विधि लिखी हैं?

(ख) किन किन ब्राह्मणों को शूद्र के समान वर्तना लिखा है?

८. (क) पुत्रों के कै भेद लिखे हैं?

(ख) उनमें जो दायाद और बान्धव माने हैं उनके नाम अर्थ सहित लिखिए।

(ग) ऐसे पुत्र पिता के धनके अनधिकारी किन कारणों से हो जाते हैं?

९. ब्रह्महत्या, सुरापान और सुवर्णकी चोरी इन तीन महापातकों में एक एक के समान जो पातक कहे हैं उनके नाम लिखिए।

१०. "कर्तव्याकर्तव्यशास्त्र" नामक पुस्तक के ऊपर अपनी समालोचना लिखिए अर्थात् उसके गुण दोषों की परीक्षा कीजिए।

११. किसी कार्यके सदसद्विवेकमें मुख्य हेतु उस ग्रन्थ में कौन माना गया है और उस हेतु के समर्थन में क्या उदाहरण दिये गये हैं? उनके अतिरिक्त एक उदाहरण अपनी कल्पना से दीजिये।

१२. (क) 'परिणामदृष्टि' इस पदका अर्थ "कर्तव्याकर्तव्यशास्त्र" पुस्तकमें क्या लिखा है?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ख) उस अर्थ का वाचक कोई उपयुक्त शब्द अपनी रुचि से लिखिए।

(ग) 'परिणामदृष्टि विषयक निर्णय' और "सदसदाचार विषयक निर्णय" में जो भेद पुस्तक में दिखाये हैं उनको संक्षेप से लिखिए।

दर्शन

[परीक्षक—अध्यापक दीवान चन्द एम. ए.]

समय ३ घंटे, पूर्णांक १००

१. "कर्मयोग गीताका सार है और इसका सम्बन्ध मनुष्यके समस्त जीवनसे है।" १२
   इस वाक्यकी व्याख्या कीजिए।

२. (१) जीवात्माके अमर होनेमें क्या प्रमाण हैं?
   (२) आचारादर्शके विषयमें कृष्ण और काण्टकी शिक्षाकी तुलना कीजिए।

३. सृष्टिके निमित्त-कारणके विषयमें श्वेताश्वतर उपनिषद्‌में क्या शिक्षा दी गयी है। १२

४. श्वेताश्वतर उपनिषद्‌में ज्ञान और कर्मका मेल कैसे किया गया है? १२

५. वाक्यके भेद लिखिए। वाक्योंके विरोध और अविरोधके नियम क्या हैं? १२

६. लक्षण क्या है? अच्छे लक्षणके नियम लिखिए। १२

७. प्लेटोके तर्कका सार क्या है? तर्कके विषयमें प्लेटो और अरस्तुमें मुख्य भेद क्या हैं? १४

८. बाह्य वस्तुओंके सम्बन्धमें बर्कलेका सिद्धान्त क्या है? परमात्माकी हस्ती वह कैसे सिद्ध करता है? १४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विज्ञान

[परीक्षक—अध्यापक विनायक गणेश साठे, एम. ए.]

समय तीन घण्टे, पूर्णाङ्क १००

१ जानदार और बेजान चीज़ोंमें क्या अन्तर है ? इसी प्रकार वनस्पतियों और प्राणियोंमें क्या क्या भेद और कहाँ कहाँ समानताएं हैं ? १०

२. जड़ों (roots) के सामान्य लक्षण दिखाकर उनके भेद और उपभेद आदिका वर्णन कीजिए। जड़ोंकी उपयोगिता दिखलाइये।

३. रीढ़दार जानवरोंके जो मुख्य विभाग हैं उनको उदाहरणों सहित बतलाइये और इनमेंसे किसी विभागके किसी परिचित प्राणीका उदाहरण लेकर सविस्तर वर्णन कीजिये। जहाँ तक हो सके इन विभागों में ज्ञान तन्तु जालका (nervous-system) अथवा अन्ननालिकाकी (alimentary canal) जैसी जैसी उन्नति होती गयी है उसका संक्षेपमें वर्णन कीजिए। १५

४ आपेक्षिक घनता, वायुका दबाव, विशिष्ट ताप, विलीन ताप और शतांशिक तापमानपर संक्षेपमें नोट लिखिए। १२

५. वायु-पम्पका समग्र रीतिसे चित्र सहित वर्णन कीजिए और उसके उपयोग बतलाइये। ११

६. बैटरी (battery) किसे कहते हैं ? किसी एक बैटरीका चित्र सहित वर्णन कीजिए। ११

७. ग्रामा-प्रेसका चित्र देकर वर्णन कीजिए। ११

८. मुख्य मुख्य अम्ल और क्षारोंके नाम लिखिए और हरिण गैस बनानेकी विधि वर्णन कीजिए। ८

९. रेलका इञ्जिन, मोटर गाड़ी, बिजली उत्पन्न करनेका यन्त्र, एक्स किरण अथवा, टेलिफ़ोन इनमेंसे किसी एकका वर्णन कीजिए जिससे इनके मुख्य तत्वों सम्बन्धी आपका ज्ञान प्रकट हो जाय। ११

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्थशास्त्र

[परीक्षक—अध्यापक बालकृष्ण एम. ए.]

समय ३ घंटे पूर्णाङ्क १००

[निम्न लिखित १३ प्रश्नोंमें किसी सात प्रश्नोंके पूरे २ उत्तर देनेसे १०० अंक मिल सकेंगे। प्रश्नों में बराबर अंक हैं।]

१. अर्थशास्त्रमें सम्पत्ति, परिश्रम, लगान तथा राष्ट्रीय समष्टिवादसे क्या अभिप्राय है?

२. क्रमागत ह्रास नियम और भौमिक लगानकी उत्पत्तिके सिद्धान्तकी व्याख्या कीजिए।

ब्याज और व्यवसायपतियों के लाभोंका निश्चय करनेवाले सिद्धान्तोंकी व्याख्या कीजिए?

३. सिद्ध कीजिए कि श्रमी लोग व्यवसायपतियों (कारख़ानें वालों) की अपेक्षा बलहीन हैं। इस निर्बलताको हटानेके लिए समाज और राष्ट्रकी ओर से कौन कौन साधन प्रयुक्त किये जाते हैं?

४. बीमेके हानि लाभोंका वर्णन कीजिए।

या

मानवजातिमें पूंजी संचयके भिन्न भिन्न उद्देश्यों तथा शक्तियोंका वर्णन कीजिए।

५. भारत और इग्लैण्डकी तुलना करते हुए बतलाइए कि देशोंकी उत्पत्तिको घटाने बढ़ाने वाले कौन साधन हैं?

६. देशोंके अन्तर-राष्ट्रीय व्यापारके खुलनेपर क्या २ हानि लाभ होते हैं?

७. (क) अर्थशास्त्रको राष्ट्रीय अर्थशास्त्रनाम देनेमें क्या गुण दोष हैं?

(ख) अर्थशास्त्रका शुद्ध लक्षण लिखिए।

८. आजकलके व्यवसायिक जगतकी झंझट एक गर्मकोटकी बनावट से सिद्ध कीजिए।

या

"मानवजातिको अर्थशास्त्रकी आवश्यकता है" इस पर ४० पंक्तियोंका एक निबन्ध लिखिए।

९. (क) उत्पत्तिके कितने आवश्यक साधन हैं और क्यों?

(ख) नहरोंके हानि लाभ क्या हैं?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ग) भूमिकी उत्पादक शक्ति किन साधनोंसे बढ़ाई जा सकती है ?

या

"भारतीय कृषिकी अपूर्णता" पर ४० पंक्तियोंका एक निबन्ध लिखिए।

१०. (क) भारतमें पशु पालनकी विधियोंमें किन किन बातोंकी आवश्यकता है ?

(ख) भूमिकी हत्याके सिद्धान्तपर प्रकाश डालिए।

११. सहकारी बैंकोंके हानि लाभ लिखिए।

१२. (क) मनुष्यको आर्थिक उन्नति करनेके लिए किन किन बातों की आवश्यकता है ?

या

भारतकी अन्य देशोंके साथ भिन्न भिन्न प्रकारकी विद्याओंमें तुलना कीजिए।

(ख) श्रम विभागकी हानियाँ प्रकट कीजिये।

या

बड़ी मात्राकी उत्पत्तिकी हानियां बतलाइए।

१३. भारतमें शिल्पकी दशापर एक निबन्ध लिखिए।

हिन्दी-संसार

विदेश

दक्षिणीय अफ्रीका में हमारे भारतवासी भाइयों ने हिन्दी प्रचार का काम उठाया है और वहां भी एक हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन करने का विचार हो रहा है यह अत्यन्त हर्ष की बात है। भारतवासियों को उनकी सब प्रकार से सहायता करनी चाहिये।

राघवगढ़ में हिन्दी का सम्मान

हिन्दी-समाचार (५-१०-१५) में यह समाचार पढ़कर अत्यन्त आनन्द हुआ है कि "श्रीमान् राघवगढ़ (कोटरा) नरेश ने रियासत के सब अहलकारों को आज्ञा दे दी है कि आगामी जनवरी से सब दफ़्तरों की लिखापढ़ी हिन्दी (देव नागरी) में की जावेगी जो मनुष्य हिन्दी न जानता होवे वह नियत समय तक उसे सीख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेवे। श्रीमान् हिन्दी के बड़े प्रेमी हैं आपने हर एक कसबे में हिन्दी स्कूल खोल दिये हैं। हम आशा करते हैं कि हमारे अन्यान्य राजे महाराजे भी अपनी मातृभाषा हिन्दी को सम्मानित करने में शीघ्र ही अग्रसर होंगे।

शाखा हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन (बांदा)

आनन्द की बात है कि बांदा के उत्साही महानुभावों के प्रशंसनीय उद्योग से वहां 'शाखा हिन्दी-सम्मेलन' स्थापित हुआ है और उसके सञ्चालकों में वहां के सभी श्रेणी के लोग हैं। बड़े से बड़े राजकर्मचारी, वकील, व्यापारी, साधारण मनुष्य और पंडितजन भी सम्मिलित हैं। शाखा सम्मेलन ने अपने यहां 'मातृ भाषा पुस्तकालय' नाम का एक पुस्तकालय भी खोला है। सम्मेलन की प्रथम बैठक में बाँदा के ज़िलाधिपति श्रीमान् मि० पन्नालाल जी साहब बहादुर का नाम पढ़कर हमें अधिक आनन्द हुआ है आशा है कि सम्मेलन अपने उद्देश्यों की पूर्ति में सफल होगा।

हिन्दी पुस्तकों का मिलना

इस समय हिन्दी में अनेक ग्रन्थमालायें निकल रही हैं। दिनों दिन हिन्दी पुस्तकों का प्रचार बढ़ रहा है किन्तु खेद की बात है कि हमें आज तक एक भी बुकडिपो ऐसा नहीं मिला कि जिसमें हिन्दी की सारी पुस्तकें मिल सकें। मर्य्यादा के सञ्चालकों ने 'मर्यादा पुस्तक भाण्डार' नाम से एक पुस्तकालय अभी हाल में खोला है हम आशा करते हैं कि वह अथवा अन्य बुकडिपो के सञ्चालकगण एक बुकडिपो खोलेंगे कि जिसमें हिन्दी की समस्त पुस्तकें मिल सकें। इसकी अत्यन्त आवश्यकता है।

न्यायालय में हिन्दी

हमें नागरी-प्रचारिणी सभा वदायूं के मन्त्री पं० बाबूराम शर्म्मा जी के पत्र से विदित हुआ है कि बिसौली ज़िला वदायूं के मुंसिफ श्रीमान् बाबू मदनमोहनजी सेठ एम० ए० एल. एल. बी. महोदय हिन्दी-प्रचार की ओर बड़ा उद्योग कर रहे हैं। साक्षियों के इजहार आप प्रायः हिन्दी ही में लिखते हैं और १८ अप्रैल सन् १९०० ई० की गवर्नमेण्ट की आज्ञानुसार अपने अधीनस्थ कर्मचारियों से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उर्दू के साथ साथ हिन्दी के फार्मों की कोष्ट पूर्ति कराने की ओर भी अधिक ध्यान देते हैं। अवश्य ही यह बड़े आनन्द का विषय है और इस समुचित कर्तव्य पालन के लिये हम उक्त महोदय को हृदय से धन्यवाद देते हैं और आशा करते हैं कि हमारे अन्यान्य न्यायाधीश भी अपनी उदार गवर्नमेण्ट की आज्ञा के अनुसार स्वयं चलते हुये अपने अधीनस्थ कर्मचारियों को भी चलाने की ओर ध्यान देंगे।

मध्यभारत-हिन्दी-साहित्य-समिति (इन्दौर)

हर्ष का विषय है कि 'मध्यभारत-हिन्दी-साहित्य-समिति' नाम की एक सभा इन्दौर में १२ नवम्बर सन् १६१४ ई० को स्थापित हो गयी है। सभा के उद्देश्य प्रशंसनीय हैं और समिति के पदाधिकारी एवं सभ्यों की नामावली के देखने से ज्ञात होता है कि समिति को सभी बड़े बड़े लोग अपना रहे हैं। यह बड़े सौभाग्य की बात है। अभी थोड़े ही दिनों की यह समिति बड़े बड़े कार्य कर रही है। पुस्तकालय और वाचनालय तो प्रथम ही से खोले जा चुके हैं किन्तु अभी गत ६ जुलाई सन् १६१५ ई० को इसने एक सार्वजनिक सभा करके अपना स्वतंत्रभवन बनवाने के लिए सहायता की अपील की थी और लगभग ४००० रु० का वचन मिल चुका है और शीघ्र ही इससे भी अधिक मिलने की आशा है। समिति की ओर से डेप्यूटेशन निम्नलिखित महाराजों की सेवा में जा चुका है और उन लोगों ने समिति की सहायता करने का वचन भी दिया है।

श्रीमान् राजा साहब-पन्ना, चरखारी, दतिया, सैलाना, झाबुआ, राघोगढ़, खानडू और बखतगढ़।

इनमें से श्रीमान् राजासाहब सैलाना बखतगढ़, राघवगढ़ और खानडू ने अपनी उदारता से आर्थिक सहायता भी दी है। प्रबन्धकारिणी सभा के सभ्यों के अतिरिक्त समिति के साधारण सभ्यों की संख्या भी इस समय १४० है। समिति के सभापति श्रीमान् रायसाहब डाक्टर सरयू प्रसाद जी असिस्टेण्ट सर्जन केम्प इन्दौर हैं। इसी समिति के उद्योग से महाराज दतिया ने अपने राज्य में हिन्दी का प्रचार करने की अभी हाल ही में आज्ञा दी है। हम समिति के सञ्चालकों को धन्यवाद देते हैं और आशा करते हैं कि समिति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने उद्देश्यों की पूर्ति में अधिक सफल होगी। अवश्य ही हमारी अन्य हिन्दी संस्थाओं को इस समिति से इस बात की शिक्षा लेनी चाहिये कि आज हमें हिन्दी प्रचार के लिए न केवल साहित्य-सेवियों ही की सहानुभूति अपेक्षित है प्रत्युत उन बड़े लोगों की भी सहानुभूति आवश्यक है जिनके हाथों में बड़े बड़े अधिकार और अधिकार के दिलानेवाली विद्या एवं विभव है।

सम्पादकीय विचार

दक्षिण अफ्रिका

बड़े हर्ष का विषय है कि हमारे द० अफ्रिका के प्रवासी भाई अपनी मातृ-भाषा के लिये उद्योग कर रहे हैं। जो पत्र प्रधान मंत्री जी के पास दक्षिण अफ्रिका से आये हैं वे इसी अङ्क में दिये गये हैं। पत्र को पढ़कर हम यह कहेंगे कि सुख की नींद सोते हुए हम भारत-वासी उन प्रवासी भाइयों की अपेक्षा अपनी मातृ एवं राष्ट्र-भाषा के लिए कुछ नहीं कर रहे हैं। जिस देश में अपने भाइयों के अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं है वहां तो सभायें, स्कूल और पुस्तका-लय खुल रहे हैं साप्ताहिक 'हिन्दी' पत्र निकालने का प्रबन्ध हो रहा है और जिस भारत में विदेशियों को भी झखमार के हमारी हिन्दी भाषा सीखनी पड़ती है वहां हमारे ही भाई बन्धु अपना कारबार विदेशी लिपि और भाषाओं में करें यह कितनी बड़ी लज्जा की बात है। अस्तु। अभी समय है हमें सचेत हो जाना चाहिये और भारत जननी के सच्चे सपूत दक्षिण अफ्रिका के प्रवासी भाइयों की अपील पर ध्यान देना चाहिये। हमें चाहिये कि हम उनकी सहायता उदारतासे करें एक नहीं वहां पर अनेक समाचार पत्र हिन्दी में छपें तभी कल्याण है। द० अफ्रिका की सरकार की जैसी नीति है उसको ठीक रास्ते पर लाने के लिये यह परम आवश्यक है कि वहां पर हिन्दी के समाचार पत्रों का जन्म हो और हिन्दी का प्रचार हो हम आशा करते हैं कि जिस उदा-रता से हमारे बन्धुजन अब तक अपने प्रवासी भाइयों की सहा-यता करते आये हैं उससे भी अधिक उदारता इस हिन्दी प्रचार के कार्य में दिखलाएंगे क्योंकि मातृ भूमि की लाज रखकर अब हमारे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रवासी भाइयों ने मातृ भाषा की सेवा करने का सङ्कल्प किया है। इसमें हम लोगों को अवश्य ही सहायता देनी चाहिये।

सम्मेलन

सम्मेलन का समय निकट है आगामी सम्मेलन में सफलता लाभ हो इसके लिये लोग दत्तचित्त हो रहे हैं आशा है कि लाहौर में हमारे आर्य समाज की प्रधानता के कारण हिन्दी साहित्य सम्मेलन को अधिक सहायता मिलेगी। यह भी सुना गया है कि कुछ लोग सम्मेलन के नाम को बदलने की चेष्टा कर रहे हैं किन्तु इस विवाद में पड़ना हम उचित नहीं समझते और हमारे आर्य बन्धुभी अपने सद्विचारों से इस विषय में न पड़ें तभी कल्याण है। हमें अभी बहुत कुछ करना बाकी है आपस का कलह ऐसी अवस्था में उचित न होगा। सम्मेलन एक रजिस्टर्ड संस्था है उसका नाम बदलना-निष्कारण-सहल कार्य नहीं है इस बात पर ध्यान देना आवश्यक है।

परीक्षा समिति

परीक्षा समिति ने एक प्रकार से अपना इस वर्ष का कार्य पूरा कर दिया है। अवश्य ही समिति के संयोजक बाबू ब्रजराज बहादुर जी ने समिति को जिस उत्तमता से चलाया है उसके लिये सम्मेलन उनका कृतज्ञ है किन्तु अब तक हमें यथार्थ रूप से यह विदित नहीं हुआ है कि २०६ परीक्षार्थियों ने शुल्क दिया और परीक्षा में बैठे केवल ६३ इस बहुत बड़ी कमी का वास्तविक कारण क्या है समिति को इस ओर ध्यान देना चाहिये। यद्यपि इस वर्ष के प्रश्न पत्र इसी अङ्क में दिये गये हैं और उनपर व्यवस्थापकों एवं परीक्षकों की सम्मतियां भी दी जाने को थीं तथापि समय पर उनके न पहुंचने से सम्मतियों को अगली संख्या में देना निश्चय हुआ है।

दिया तले अंधेरा

प्रयाग की म्युनिसिपेलटी का निजका प्रेस भी है किन्तु प्रेस में अङ्गरेजी और उर्दू के अतिरिक्त हिन्दी के पवित्र टाइप नहीं हैं अब तक सारी कार्रवाई उर्दू और अङ्गरेज़ी ही में होती थी सुना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया है कि स्कूलों के सम्बन्ध में कुछ हिन्दी कागज़ों के छपाने की आवश्यकता पड़ी थी तो अन्य प्रेस से छपाने का प्रबन्ध किया गया है। समझ में नहीं आता कि हमारी यह प्रजा शासित संस्था-म्युनिसिपेलटी हिन्दी से क्यों विरक्त है? हम आशा करते हैं कि जिस म्युनिसिपेल्टी में श्रीमान् माननीय मालवीय जी जैसे महापुरुष विद्यमान हैं वह अब अधिक दिनों तक देव नागरी अक्षरों से विरक्त न रहेगी और अपने प्रेस में उसे स्थान दे कर अपने सारे देशी भाषा के कागजों को हिन्दी और उर्दू दोनों में छापेगी।

पटियाला में गुरुमुखी

दैनिक भारतमित्र में एक नोट छपा है कि "कहते हैं कि पटियाले के महाराज ने आज्ञा दी है कि, राज्य के सब विभागों में गुरुमुखी भाषा में लिखा पढ़ी की जाय। अब तक उर्दू अदालती भाषा थी? इस टिप्पणी से यह स्पष्ट ही होता है कि लिपि कौन होगी। यदि हमारे प्रान्त की सी अरबी और फारसी की दादी अदालती उर्दू भाषा रही हो तो उसकी अपेक्षा गुरुमुखी का प्रचार उत्तम ही है किन्तु हमारे सुयोग्य पटियाला नरेश यदि अन्य देशी नरेशों के समान हिन्दी भाषा को स्थान दिये होते तो अधिक उत्तम होता अब भी हम अपने विचारशील महाराज से प्रार्थना करना उचित समझते हैं कि वे अपने प्रजाजन और देश के हित के लिये हिन्दी भाषा को स्थान देने के लिये विचार करने की कृपा करें और कम से कम नागरी लिपि को तो अवश्य ही स्थान दें क्योंकि गुरुमुखी अक्षरों की एक देशीयता और भाषा की कठिनता ये दोनों मिलकर महाराज की प्रजा को भारत की अन्य जनता से बिलकुल भिन्न कर देगी जो कदाचित् लाभप्रद नहीं होगा।

पण्डितों की उदारता

हिन्दी समाचार (५-१०-१५) में सम्मेलन से उदासीनता शीर्षक एक टिप्पणी निकली है। "भारतजीवन" काशी के आधार पर वह लिखता है कि 'हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन में पण्डितों की उपेक्षा की जाती है। इससे वे भी इससे विमुख रहते हैं' आगे चलकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उक्त पत्र ने सम्मति दी है कि 'आगामी लाहौर के सम्मेलन में इस विषय का भी निर्णय होना चाहिये कि क्या सचमुच पण्डित लोग साहित्य-सम्मेलन से उदासीन हैं। और हैं तो उनकी उदासीनता का कारण क्या है'। हमारे विचार में अब तक उदासीनता के लक्षण प्रकट रूप से दिखाई नहीं दिये हैं और अनेक महामहोपाध्याय सम्मेलन में प्रारम्भ ही से हमें दिखाई दे रहे हैं। यदि सहयोगी को इस विषय में विशेष बातें विदित हुई हों तो स्पष्ट लिखना चाहिये। यह विषय लाहौर के विचारने का नहीं है इसे मन्त्रिमण्डल तै कर सकता है।

सूचना।

सम्मेलन पत्रिका के गत अंक में जो हिन्दी शिक्षक के लिये विज्ञापन निकला है उस पर कोई भी सम्मेलन परीक्षोत्तीर्ण या हिन्दी साहित्य के ज्ञाता सज्जन प्रार्थना पत्र भेज सकते हैं। संस्कृत अथवा अंग्रेज़ी में दक्ष महानुभावों को विशेषता दी जायगी।

मंत्री, नागरी प्रचारक विद्यालय
१५६ डी, मछुआ बाज़ार स्ट्रीट कलकत्ता।

आनन्द समाचार
विज्ञान

प्रति कापी ।) वार्षिक ३)

सचित्र वैज्ञानिक मासिक-पत्र भारतवर्ष की राष्ट्र भाषा में यह एकमात्र वैज्ञानिक पत्र है, जो सर्वसाधारण में विज्ञान-शिक्षा के प्रचार के लिये विज्ञान-परिषद की ओर से प्रति सङ्क्रान्ति को प्रकाशित होता है। लीजिये अब विज्ञान के कठिन विषयों को सहज ही सीधी सादी भाषा में समझ लीजिये। बालक, स्त्री, बूढ़े सबको समझाइये। विदेशीयभाषा की मुहताज़ी नहीं रही। इस पत्र की इस समय हिन्दी-संसार प्रशंसा कर रहा है। आकार सरस्वती का है। प्रति मास कम से कम ४८ पृष्ठ होते हैं।

मैनेजर-विज्ञान,
इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकों की प्राप्ति स्वीकृति

[पूर्व प्रकाशित से आगे]

	पुस्तक का नाम	लेखक	नामपुस्तक दाता	मूल्य
३८५	भवानी वाक्य	पं० तनसुख राम	पं० तनसुख राम	।)
३८६	संक्रान्ति प्रकाश	पं० मीठा लाल व्यास	पं० मीठालाल व्यास	१)
३८७	वैद्य गाइड का नमूना	श्रीयुत पूनमचंद तनसुख	श्रीयुत पूनमचंद तनसुख	विना मूल्य
३८८	पुष्करणे ब्राह्मणों की प्राचीनता	व्यास मीठा लाल	व्यास मीठालाल	,,
३८९	भावी फल	पं० तनसुख व्यास	पं० तनसुख व्यास	=)
३९०	बुद्धि बढ़ाने का उपाय	श्रीयुत पूनमचंद तनसुख	श्रीयुत पूनमचंद तनसुख	=)
३९१	वेश्या चरित्र दर्पण	पं० देवीदत्त द्विवेदी	पं० देवीदत्त द्विवेदी	-)
३९२	लालू कालू	पं० देवी प्रसाद तिवारी	पं० देवी प्रसाद तिवारी	=)
३९३	भाषा सार संग्रह ४रों भाग	ना० प्र० सभा काशी	ना० प्र० सभा काशी	
३९४	फांस का इतिहास	पं० सोमेश्वर दत्त सुकुल	इन्डियन प्रेस प्रयाग	।≡)
३९५	षोड़शी	पं० जनार्दन झा	,,	१)
३९६	माधवी कंकण	,,	,,	॥।)
३९७	आर्य ललना	पं० मन्नन द्विवेदी	,,	।)
३९८	भूगोल तीनों भाग	एस० ए० हिल	,,	
३९९	हिन्दी शिक्षावली चारों भाग	लाला सीताराम	,,	
४००	विचित्र वधू रहस्य	पं० जनार्दन झा	,,	॥।)
४०१	कादम्बरी	गदाधर सिंह	,,	॥)
४०२	बाला बोधनी पांचों भाग	पं० रामजी लाल शर्मा	,,	
४०३	प्रकृति	श्रीयुतद्वारिकानाथ मैत्र	,,	१)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लीजिये लीजिये शीघ्रता कीजि

षोड़शसंस्कारविधि

जिसको देखने के लिये सहस्रों सनातनधर्मी सज्जन वर्षों प्रतीक्षा कर रहे थे वही पुस्तक षोडशसंस्कारविधि छपकर तैयार है। इसमें १६ संस्कारों का साङ्गोपाङ्ग विधान है, ऊपर मूल संस्कृत में विधान लिखकर नीचे भाषा टीका दी गयी है। जगत्प्रसिद्ध पं० भीमसेन शर्मा सम्पादक ब्राह्मण सर्वस्व ने इस पुस्तक की रचना स्वयं की है। इसीसे आप समझ सकते हैं कि पुस्तक कैसी उपयोगी होगी सोलहों संस्कारों के एकत्र विधान की कोई पुस्तक अभी तक कहीं नहीं छपी थी। इस पुस्तक से यह अभाव मिट गया। इससे साधारण पढ़े लिखे भी प्रत्येक संस्कार को विधिपूर्वक करा सकते हैं प्रत्येक द्विजाति को इस पुस्तक की एक २ प्रति मंगानी चाहिये मूल्य २) है पर इस पत्र के ग्राहकों को पुस्तक १॥) ही में मिलेगी शीघ्रता कीजिये थोड़ी ही पुस्तकें छपी हैं।

पता:-मैनेजर ब्रह्मप्रेस, इटावा।

"शारदा-विनोद"

(हिन्दी का एक निराला मासिकपत्र)

प्रति मास ४० पृष्ठ।

वार्षिक मूल्य १॥) एक सङ्ख्या =)।

इसमें मनोरञ्जन की अच्छी सामग्री रहा करती है। प्रतिमास रोचक एवं शिक्षाप्रद गल्प प्रकाशित हुआ करते हैं। प्रत्येक गल्प उसी अङ्क में पूरा हो जाता है और इस प्रकार यह बिलकुल स्वतंत्र रहता है। इसमें ऐसी कोई बात नहीं रहती है जिसे कोमल हृदय विद्यार्थी तथा कन्याओं तक को पढ़ने में किसी प्रकार की लज्जा व संकोच हो। पवित्र उद्देश्यों के साथ अपने पाठकों का यथाशक्ति मनोरञ्जन करना ही इस पत्र का प्रधान उद्देश्य है। आप स्वयं इसके ग्राहक बनिये और औरों को बनाइये। ५ ग्राहक बनाकर उनका चन्दा भिजवाने से एक प्रति, वर्ष-भर बिना मूल्य मिलेगी =)॥ भेजकर नमूना मंगाइये। पीछे केवल १।=) ही देना पड़ेगा।

सम्पादक,
"शारदा-विनोद"
जबलपुर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन-पत्रिका के नियम

१—यह पत्रिका सम्मेलन कार्य्यालय प्रयाग से प्रतिमास प्रकाशित होती है। इसका वार्षिक मूल्य १) रु० इसलिये रक्खा गया है कि सर्वसाधारण इसके ग्राहक हो सकें।

२—अभी इस में प्रतिमास कुल २४ पृष्ठ ही रहा करेंगे। आवश्यकता होने पर पृष्ठ सङ्ख्या बढ़ा भी दी जाया करेगी। आगे चल कर यदि इसकी सेवा साहित्यिकों को रुचिकर हुई, और ग्राहकों की यथोचित सङ्ख्या हो गयी तो अधिकतर पृष्ठ-सङ्ख्याओं में और अधिकतर उन्नत दशा में प्रकाशित की जायगी।

३—प्रबन्ध-सम्बन्धी पत्र और रुपये आदि तथा सम्पादन सम्बन्धी पत्र, पुस्तकें परिवर्त्तन के पत्रादि सब "मन्त्री सन्मेलन कार्यालय, प्रयाग" के नाम आने चाहियें।

विज्ञापनछपाई के नियम

६ मास अथवा उससे अधिक दिनों के लिये

	१ पृष्ठ,	आधा पृष्ठ	और चौथाई पृष्ठ के
कवर पेज पर	५)	३।	२)
साधारण पेज पर	४)	२।)	१।)

विशेष बातें जाननी हों तो मन्त्री जी से पूछिये।

क्रोड़पत्र बटाई के नियम

आधा तोला तक अथवा इससे कम के लिये... १०)

१ तोला के विज्ञापन के लिये ... १२)

मन्त्री, हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग

नोट—विज्ञापन के ऊपर यह छपा होना चाहिये कि अमुक मास को "सम्मेलन-पत्रिका" का क्रोड़पत्र और उसमें यथोचित समचार भी होने चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन-कार्य्यालय की नयी और अत्यन्त

उपयोगी पुस्तकें

नागरी अंक और अक्षर

इस ग्रन्थ में अङ्कों और अक्षरों की उत्पत्ति पर जो बड़े गवेषणा पूर्ण लेख प्रथम और द्वितीय सम्मेलन में पढ़ेगये थे, सङ्कलित हैं। हिन्दी में ऐसी दूसरी पुस्तक है ही नहीं। मूल्य ≡)

इतिहास

यह ग्रन्थ पं० विष्णुशास्त्री चिपलूणकर के प्रसिद्ध निबन्ध का अनुवाद है। मध्यमा के पाठ्य ग्रन्थों में होने के अतिरिक्त यह अत्यन्त रोचक भी है। इतिहास का वास्तविक महत्व इससे जाना जा सकता है। मूल्य ≡)

अन्यपुस्तकें

प्रथम वर्ष का विवरण	।)	हिन्दी का सन्देश	-)
द्वितीय वर्ष "	।)	इतिहास	≡)
तृतीयवर्ष "	।=)	नागरी अङ्क और अक्षर	≡)
प्रथम सम्मेलन की लेखमाला	।||)	सौ अजान और एक सुजान	।=)
द्वितीय " "	१)	पिङ्गल का फलक (प्रथमा के लिये)	-)
तृतीय " "	।||)		
चतुर्थ " "	।||)	गद्यकाव्यमीमांसा	।)
पञ्चम " "	।।)	ऊजड़ग्राम	।)
नीतिदर्शन "	।||)	विवरणपत्रिका १९७२ (तैयार	
लाजपतराय की जीवनी	१)	है) डाकव्ययसहित	=)।।

मन्त्री—हिन्दी साहित्य-सम्मेलन कार्यालय

प्रयाग।

प० ओंकारनाथवाजपेयी के प्रबन्ध से ओङ्कार प्रेस प्रयाग में छपकर हिन्दी-साहित्य सम्मेलन से श्रीनरेन्द्रनारायणसिंह द्वारा प्रकाशित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Reg. No. A-620

सम्मेलन-पत्रिका

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन

की

मुखपत्रिका

भाग ३ } फागुन संवत् १९७२ { अङ्क ६

विषय-सूची

संख्या	विषय	पृष्ठ
(१)	सम्मेलन पर विचार	१५९
(२)	उपदेशक का भ्रमण वृत्तान्त	१६४
(३)	स्थायीसमिति का प्रथम अधिवेशन ...	१६५
(४)	सौरमासों की प्रधानता	१६८
(५)	परीक्षा-समिति का प्रथम अधिवेशन ...	१७१
(६)	समालोचना	
	(क) आनन्दमय जीवन	१७६
	(ख) युद्ध की २५०० बातें	१७६
(७)	हिन्दी-संसार	१७७
(८)	परीक्षा-समिति के गत वर्ष का आय-व्यय ...	१८१
(९)	सम्पादकीय-विचार	१८१

वा० मू० १)] [मूल्य ।)

सम्पादक—पं० इन्द्रनारायण द्विवेदी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन के उद्देश्य

(१) हिन्दी-साहित्य के अङ्गों की उन्नति का प्रयत्न करना।

(२) देवनागरी-लिपि का देश भर में प्रचार करना और देश-व्यापी व्यवहारों तथा कार्यों के सुलभ करने के लिये हिन्दी भाषा को राष्ट्र-भाषा बनाने का प्रयत्न करना।

(३) हिन्दी को सुगम, मनोरम और लाभदायक बनाने के लिए समय समय पर उसकी शैली के संशोधन तथा उसकी त्रुटियों और अभावों के दूर करने का प्रयत्न करना।

(४) सरकार, देशीराज्यों, पाठशालाओं, कालेजों, विश्व-विद्यालयों और अन्य संस्थाओं, समाजों, जन-समूहों तथा व्यापार ज़मींदारी और अदालतों के कार्य्यों में देवनागरी-लिपि और हिन्दी भाषा के प्रचार का उद्योग करते रहना।

(५) हिन्दी के ग्रंथकारों, लेखकों, पत्र-सम्पादकों, प्रचारकों और सहायकों को समय समय पर उत्साहित करने के लिये पारि-तोषिक, प्रशंसा-पत्र, पदक, उपाधि आदि से सम्मानित करना।

(६) उच्च-शिक्षा प्राप्त युवकों में हिन्दी का अनुराग उत्पन्न करने और बढ़ाने के लिये प्रयत्न करना।

(७) जहाँ आवश्यकता समझी जाय वहाँ पाठशाला, समिति तथा पुस्तकालय स्थापित करने और कराने का उद्योग करना तथा इस प्रकार की वर्त्तमान संस्थाओं की सहायता करना।

(८) हिन्दी-साहित्य के विद्वानों को तैयार करने के लिये हिन्दी की उच्च-परीक्षाएँ लेने का प्रबन्ध करना।

(९) हिन्दी-भाषा के साहित्य की वृद्धि के लिये उपयोगी पुस्तकें तैयार कराना।

(१०) हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के उद्देश्यों की सिद्धि और सफलता के लिये अन्य जो उपाय आवश्यक और उपयुक्त समझे जाँय उन्हें काम में लाना।

सम्मेलन-पत्रिका का उद्देश्य

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के उद्देश्यों की पूर्ति में सहायता करना और साहित्य-प्रेमियों से इसी के लिये उपदेश लेना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन-पत्रिका

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की स्थायी-समिति
की ओर से प्रतिमास प्रकाशित

भाग ३ | फाल्गुन संवत् १९७२ | अङ्क ६

सम्मेलन पर विचार

(ले० भगवानदयालु अग्निहोत्री इन्सट्रक्टर ट्रेनिङ्ग क्लास, हरदोई)

स्वस्ति मित्रा वरुणा स्वस्ति पथ्ये रेवति।
स्वस्ति न इन्द्रश्चाग्निः स्वस्ति नो अदिते कृधि॥

उष्ण काल में मौसमी वायु के समानभाव के चलने और न चलने पर आगामी उन्नति तथा अवनति का विचार मानव समाज किया करता है उसीके द्वारा कृषकों के चित्त प्रफुल्लित और स्फुटित होते हैं। यद्यपि वह उष्ण काल में बड़ी दुखदाई और जीव निग्राहक होती है, परन्तु भविष्य की आशा कर उसके विविध प्रकार के उपचार कर सहन करने का साहस किया जाता है और सहते हैं। जहाँ तक विचार में आता है प्रत्येक कार्य्य की आदि की कठिनाइयों का परिश्रम इसी आशा पर सहन किया जाता है कि भविष्य में सुख और शान्ति प्राप्त होगी। मनुष्यों का विचार भी है। (आदि की कड़ुआई, अन्त की मिठाई) प्रकृति का नियम भी यही है कि परिश्रम और उद्योग करने से फल प्राप्त होता है, किन्तु किसी कार्य्य का परिश्रम और उसमें कितने उद्योग की आवश्यकता होगी यह फल के ऊपर तथा फल प्राप्त करने में सावधानी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और असावधानी एवं क्रमानुसार उद्योग पर निर्भर है। कार्य्य का फल जितना ही बड़ा गम्भीर और विश्वव्यापी हो उसमें उतनी ही सावधानी गम्भीरता कार्य्य-परायणता तथा परिपक्वता एवं विश्वव्यापी परिश्रम की आवश्यकता पड़ेगी। 'हिन्दी राष्ट्रभाषा हो उसका प्रचार सारे संसार में हो उसका बोल बाला हो' (परमात्मा ऐसे समय का शीघ्र दर्शन दें) कितना महान् काम है, उसमें कितनी कार्य्यपरायणता की आवश्यकता है। उसके अङ्गों में कितनी अधिक पुष्टि की कमी है। उन अङ्गों की पूर्ति के हेतु कितने महान् उपादेय विचारों की और कार्य्यकर्त्ताओं की आवश्यकता है। ये सब बातें वे महानुभाव समुन्नतिशील हिन्दी के प्रेमी जन उसके राष्ट्रभाषा बनाने के अभिलाषी भले प्रकार समझे हुए हैं। किन्तु अब की लाहौर षष्ठ हिन्दी साहित्य सम्मेलन (जो प्रयाग में हुआ) के लेखमाला के विषयों में जब 'प्रान्तीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन की आवश्यकता', इस विषय पर दृष्टि पड़ी तब मेरी इस क्षुद्र बुद्धि ने भी इस लेख को अपने टूटे फूटे शब्दों में लिखने का साहस किया। हिन्दी को राष्ट्र भाषा बनाने और उसका प्रचार भारतवर्ष के कैलाश पर्वत से लेकर कन्या कुमारी तक और मुञ्ज अन्तरीप से लेकर ऊपरी आसाम में सदिया तक ३३ कोटि में नहीं, २२ कोटि ही मनुष्यों में अवश्य ही करने और उनको उसका प्रेमी बनाने और उनसे यह उद्घृत कराने में कि "हिन्दी ही राष्ट्रभाषा हो सकती है" जितनी सफलता प्रान्तीय-साहित्य-सम्मेलन के द्वारा हो सकती है, किसी द्वितीय उपचार से मेरे विचार में इससे अधिक नहीं हो सकती। और भारतवर्षीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन की पुष्टता भी अधिकांश इसीसे है कि उसके उपाङ्ग पुष्ट हों। गत वर्ष में गोरखपुर में स्वर्गवासी श्रीमान राय देवीप्रसाद पूर्ण-कानपुर निवासी की अध्यक्षता में संयुक्त देशीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन हुआ। शीघ्रता के कारण वह इतना सफल न हुआ, किन्तु देशीय जातीय कानफ्रंशों के साथ हिन्दी कानफ्रंश की बड़ी आवश्यकता है। इस दृष्टि से उपर्युक्त सम्मेलन एक उच्च कोटि की कानफ्रंश हुई। यथार्थ में प्रान्तीय हिन्दी साहित्य-सम्मेलन जातीय कानफ्रंशों के साथ करने से उनको अधिक लाभ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होने की सम्भावना है। कारण यह है कि जातीय कानफ्रंशों में राष्ट्रवादियों का समूह एकत्रित हुआ करता है। उसके साथ में हिन्दी कानफ्रंश होने से हिन्दी का थोड़ा बहुत रङ्ग राष्ट्रवादियों पर अवश्य चढ़ेगा, जो भारतवर्ष की जातीय महती सभा (कांगरस) में अपना रङ्ग जमाए बिना नहीं रह सकती। अधिक नहीं तो बहुमतानुसार इतना अवश्य सम्भव होगा कि जातीय महती सभा की कार्य्यवाही का कार्य्य देशी भाषा में हुआ करे। यद्यपि व्याख्याताओं के व्याख्यान किसी भाषा में हों, किन्तु कार्य्यवाही का देशी भाषा में होना और बात है और व्याख्यानों का किसी भाषा में होना—जिसका प्रेमी उपस्थित समुदाय हो और बात है। गत वर्ष अलीगढ़ प्रान्तीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन हुआ। और इस वर्ष आगरा तथा इससे प्रथम एक दो और, मैं विचार करता हूं कि यह बड़ी सफलता से हुए और यदि इनकी स्थायीसमिति अपना कार्य्य समानता से सञ्चालित करती रही तो प्रान्त भर में हिन्दी के उच्च कोट में पहुंचने में कोई त्रुटि न रह जावेगी। इसी भाँति जिस जिस प्रान्त में प्रान्तीय सम्मेलन होगा। उस प्रान्त के निवासी अवश्य ही हिन्दी के घनिष्ट प्रेमी बन जाँयगे और उसको समुन्नतिशील बनाने तथा कचेहरी आदि में प्रचालित करने में कोई कसर न रक्खेंगे। एक मनुष्य उद्योग करने से बहुतों को निज मतावलम्बी बना लेता है। इसके लिये आदर्श महात्मा बौद्ध तथा स्वामी दयानन्द सरस्वती की ओर विचार करना पर्याप्त है। फिर जिसमें दश मनुष्य एकत्र हों उस विचार की उन्नति में कोई विघ्न बाधा नहीं आ सकती और इन्हीं प्रान्तीय-हिन्दी-सम्मेलनों के विधि पूर्वक कार्य्य करने से भारतवर्षीय हिन्दी सम्मेलन के उद्देश्यों शीघ्र पूरित होने की सम्भावना है, किन्तु इन प्रान्तीय हिन्दी सम्मेलनों की बागडोर और उनके भली भाँति चलने के मार्ग का दर्शक भारतवर्षीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन को रहना पड़ेगा। इसीसे सफलता हो सकती है। अपने महत्व का सन्निधान कराना और उनको गौर्वान्वित बनाना महान् हिन्दीसम्मेलन का कार्य्य होगा। यदि मौसमी वायु बड़े वेग से चले और वह किसी किसी प्रान्त पर अपना घनिष्ठ गौरव दर्शाये और किसी किसी प्रान्त की ओर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृष्टि भी न करे उनकी ओर पीठ करके चलती बने तो इस चाल से सम्पूर्ण देश का भला कदापि नहीं हो सकता। हमारी मौसमी वायु ने वर्तमान काल में निज गति प्रायः इसी प्रकार निर्दिष्ट की है। जिससे कि संयुक्त देश तथा बङ्ग देश उसके मुख में समा गये और राजपूताना, मध्यप्रदेश तथा पञ्जाब उसकी पीठ देखते रह गये। क्या इस गति से कहा जा सकता है कि इस वर्ष की मौसमी वायु से भारतवर्ष का यथार्थ कल्याण हुआ, कदापि नहीं। यदि इस मौसमी वायु की कृपा थोड़ी थोड़ी सर्वत्र समान होती तो देश की अति ही समुन्नति करती, किन्तु यह प्राकृतिक नियम है इसमें परिवर्तन करने की शक्ति प्रकृति को छोड़ कर द्वितीय किसीमें नहीं। यह क्रियात्मक कार्य्य है इसके अङ्गों की सम्पुष्टता और निर्बलता उसके कर्त्ताओं पर निर्भर होगी। प्रान्तीय सम्मेलन महान् सम्मेलन के बड़े बड़े अङ्ग होंगे। इन अङ्गों की पुष्टता उनके प्रेमियों द्वारा और सम्मेलन के रेख देख से हो सकती है। हिन्दी साहित्य सम्मेलन में, बाम्बे और मद्रास देशों में, हिन्दी के प्रचारार्थ विचार करना और प्रान्तीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन की नींव डालने की युक्ति सोचने की बड़ी आवश्यकता है, इस ओर ध्यान देना और उसकी पूर्ति के उपाय सोचना आवश्यकीय बात है। जिस समय इन देशों में हिन्दी का अखाड़ा नियत हो जायगा और आसाम आदि दूर देशों में भी कुछ कार्य्य होने लग जायगा उस समय में कथन किया जा सकता है कि हिन्दी साहित्य के उद्देश्यों में कुछ उद्देश्यों की पूर्ति हुई और यह पूर्ति उन देशों के स्थायी समिति के सभासदों द्वारा होना अधिकांश सम्भव है। हिन्दी सम्मेलन को उस दिवस की बाट आनन्दित चक्षुओं से हेरना चाहिए जबकि सभी भाषाएँ अपना शिरमौर हिन्दी भाषा को मानने की ओर आकर्षित हो रही हैं और सब मिल कर यह कहना ही चाहती हैं कि यदि भारतवर्ष में राष्ट्रभाषा होने का अधिकार है तो केवल हिन्दी ही को है और हो सकता है। मुझे स्मरण है कि श्रीमती एनी बेसेन्ट जी ने किसी लेख में स्वराज्य के शासन की चर्चा करते हुए लिखा था कि प्रत्येक गाँव में एक एक पञ्चायत नियत होनी चाहिए जो निर्दिष्ट सङ्ख्या के धन तक के अभियोगों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को स्वयं निपटारा कर दिया करें। ऐसी पञ्चायतों की कुरीतियां सुनने के लिये अन्त में एक बड़ी पञ्चायत होनी चाहिए और समस्त प्रान्त के पञ्चायतों की संरक्षक देशीय पञ्चायत नियत की जावे जिसका सम्बन्ध स्वराज्य-शासक-समिति से हो। यह न्याय की कहानी भई। अब प्रबन्ध की दशा सुनिये। प्रत्येक गाँव में एक एक मुखिया नियत रहे जो प्रान्त के बड़े मुखिया के आधीन हों और वह उनकी देख रेख करता रहे। उस मुखिया का सम्बन्ध देश के मुख्य मुखिया से हो और भारत के समस्त देशों के मुखिया स्वराज्य शासक समिति में जो प्रस्ताव उठाया जावे वह क्रमशः गाँव के मुखिया और पञ्चायत ही तक नहीं प्रत्युत "प्रजा वर्ग में पहुंच कर सहज ही में प्रचारित हो सकता है तथा प्रजा की ध्वनि क्रमशः स्वराज्य-शासक-समिति के सभासद और प्रधान तक पहुंच कर अपनी कार्य्यवाही में सफल हो सकती है। प्रान्तीय सम्मेलनों का यही क्रम भारतीय महा सम्मेलन के साथ होने पर सम्मेलन की प्रत्येक बात भारतवर्ष के प्रत्येक कोने कोने में प्रचारित हो सकती है; किन्तु इन सम्मेलनों के सङ्गठन में इस बात का ध्यान रखना आवश्यकीय होगा कि वे भारतीय महासम्मेलनों के अनुयायी रहें।" और भारतीय सम्मेलन उन पर अपनी रेख देख रक्खे। यह प्रथम भी बता चुका हूं कि प्रान्तीय सम्मेलन अपने आपकी निर्मित (जो उनके कार्य्यकर्ता मनोनीत करें) नियत सङ्ख्या महासम्मेलन को प्रतिवर्ष दिया करें और अपने प्रतिनिधि सम्मेलन के वार्षिक अधिवेशन में भेजा करें और वे इन प्रतिनिधियों द्वारा सम्मेलन के ज्ञातव्य मनुष्यों की कार्य्यवाही करते रहें। इस प्रकार प्रान्तीय सम्मेलनों से हिन्दी भाषा के प्रचार और उसके पुष्ट करने में बड़ी सुगमता और शीघ्रता होना सम्भव है। इति शुभम्॥

CC-0, In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपदेशक का भ्रमण वृत्तान्त

मिति फाल्गुन कृष्ण १२ को हरदोई प्रान्तीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सहायतार्थ मैं हरदोई गया। मिति फाल्गुन कृष्ण १५ के दोपहर तक सम्मेलन की प्रबन्धकारिणी-समिति के कार्य्यालय में रह कर सम्मेलन-सम्बन्धी कार्यों में सम्मति तथा सहायता दिया। दोपहर को वहाँ से उसी जिले के साण्डी स्थान में आया और शुक्ल परिवा को वहाँ के मान्य जनों को प्रेरणा कर एक सार्वजनिक सभा कराई और उस सभा में नागरीप्रचार की आवश्यकता अपनी वक्तृता द्वारा दर्शा कर वहां एक 'हिन्दी साहित्य सम्बर्धिनी' नाम की सभा और तदन्तर्गत एक हिन्दी का पुस्तकालय स्थापित करायी। दूसरे दिन पुनः हरदोई आया और ५मी पर्यन्त सम्मेलन के कार्यों में सम्मति तथा सहायता देता रहा। मिती फा० शु० ६ को सम्मेलन के सभापति पं० श्रीकृष्ण जोशी जी के अगवानी स्वागत में सम्मिलित होकर स्वागतकारिणी के सभापति आदि का आप से परिचय कराया और जय घोषणादि हर्ष ध्वनि कराते हुए स्वागत करके जलूश के साथ उनको सभा स्थान से होते निवास स्थान पर पहुँचाने के उत्साह कार्य में सम्मिलित हुआ। मिति फा० शु० ७ को सम्मेलन में सम्मिलित हुआ। 'मिति फा० शु० ८ को विषय निर्वाचिनी समिति के विषयों पर सम्मति दिया। सम्मेलन के आरम्भ में मङ्गलाचरण सरस्वती देवी का स्तुति पाठ किया। सम्मेलन के नागरी में प्रार्थना पत्रादि अदालतों में देने के अर्थ कई वकील मुहर्रिरों को धन्यवाद देने और बाकी लोगों से उनका अनुकरण करने का अनुरोध करने के प्रस्ताव का अपनी सङ्क्षिप्त वक्तृता द्वारा अनुमोदन किया। तत्पश्चात् सम्मेलन की परीक्षा का परिचय लोगों को प्रदान कर परीक्षा के निमित्त प्रोत्साहित किया। मिति फा० शु० ६ को एक सार्वजनिक सभा में भारत में एक भाषा और एक लिपि की आवश्यकता और हिन्दी की उपयोगिता पर व्याख्यान दिया। श्रीरामेश्वर सहाय जी आदि सज्जनों का उत्साह सराहनीय है, आपने सम्मेलन के सहायता में ५) रुपया स्वागतकारिणी समिति की ओर से दिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीसतानन्द जी आदि सज्जनों का हिन्दी प्रेम सराहनीय है। श्रीमान् बाबू गौड़ीशङ्कर जी व बाबू बालमुन्द वर्म्मा जी तथा श्री बाबू गोपालदास जी ने सम्मेलन के कार्य में जिस प्रकार सहायता दी है, हिन्दी के प्रेम का पहाड़ तथा कर्त्तव्यज्ञान का समुद्र बहने पर भी मुझे तृप्ति नहीं होती है। ईश्वर ऐसे सदात्माओं को इस देश के कल्याण के लिये चिरञ्जीवी करें।

मिति फा० शु० ११ से १३ तक सम्मेलन कार्य्यालय में रह कर १४ को परीक्षा-प्रचार तथा पैसा फण्ड के हेतु मिर्जापुर गया। १५ को सीखड़ सरस्वती सदन पुस्तकालय के वार्षिकोत्सव में गया। वहाँ चैत्र कृष्ण १ को पुस्तकालय की सभा में मातृभाषा के महत्त्व पर व्याख्यान दिया। मिति चैत्र कृष्ण २ को चुनार गये और वहाँ सार्वजनिक सभा में 'हमारे त्योहार और उनकी उपयोगिता' पर व्यख्यान दिया। मि० चैत्र कृ० ३ को काशी गये और वहाँ चैत्र कृ० १० तक रह कर वहाँ के कालेज स्कूल में परीक्षा के प्रचार तथा पैसा फण्ड के सङ्ग्रह का कार्य किया। मिति ११ को सम्मेलन में आये। चैत्र कृ० १३ को स्थानीय विद्या मन्दिर स्कूल स्कूल में छात्रों को हिन्दी की उपयोगिता का दिग्दर्शन करा कर परीक्षा में सम्मिलित होने को प्रोत्साहन दिया। इस स्कूल के हेड मास्टर साहब ने जिस कर्त्तव्यज्ञान का परिचय मुझे इस अवसर पर दिया है अन्य मास्टरों के लिये आदर्श होने योग्य है।

स्थायी-समिति का प्रथम अधिवेशन

हिन्दीसाहित्य-सम्मेलन की वर्तमान स्थायी-समिति का प्रथम अधिवेशन सम्मेलन कार्य्यालय में मिति माघ कृ० ३ सं० १६७२ ता० २३ जनवरी सन् १६१६ रविवार को सन्ध्या समय पाँच बजे से निम्नलिखित सदस्यों की उपस्थिति में हुआ।

१—पं० रामजीलाल शर्म्मा।
२—पं० इन्द्रनारायण द्विवेदी।
३—पं० जगन्नाथप्रसाद शुक्ल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४—स्वा० सत्यदेव परिव्राजक ।
५—प्रो० व्रजराज बहादुर ।
६—प्रो० रामदास गौड़ ।
७—बा० नवाब बहादुर ।
८—ठा० शिवकुमार सिंह ।
९—पं० लक्ष्मीनारायण नागर ।

प्रो० व्रजराज ने सभापति का आसन ग्रहण किया ।

१—परीक्षा समिति के सङ्गठन और प्रो० व्रजराज के प्रस्ताव पर विचार हुआ । बाहर से आयी हुई और उपस्थित सदस्यों की सम्मतियों पर विचार होने के अनन्तर निम्नलिखित स्थायी समिति के सदस्य परीक्षा समिति के सभ्य चुने गये ।

१—बाबू श्यामसुन्दर दास बी० ए०, लखनऊ ।
२—बाबू पुरुषोत्तम दास टण्डन एम० ए०, प्रयाग ।
३—प्रो० रामदास गौड़ एम० ए०, प्रयाग ।
४—पं० श्रीकृष्ण जोशी, प्रयाग ।
५—प्रो० व्रजराज बी० एस-सी०, एल-एल० बी०, प्रयाग ।
६—पं० इन्द्रनारायण द्विवेदी, बुद्धिपुरी ।
७—पं० रघुवर प्रसाद द्विवेदी बी० ए०, जबलपुर ।
८—पं० शुकदेव बिहारी मिश्र बी० ए०, छत्रपुर ।

निम्नलिखित अन्य सज्जन परीक्षा-समिति के सभ्य चुने गये ।

१—पं० चन्द्रमौलि शुक्ल एम० ए०, प्रयाग ।
२—बा० हीरालाल खन्ना बी० एस-सी०, प्रयाग ।
३—प्रो० ताराचन्द एम० ए०, प्रयाग ।

परीक्षा समिति के संयोजक पूर्ववत् प्रो० व्रजराज ही बनाये गये ।

२—पं० राजमणि त्रिपाठी के अरायज नवीसी की परीक्षा सम्बन्धी प्रस्ताव पर विचार हुआ और सर्व-सम्मति से निश्चय हुआ कि सम्मेलन का मन्त्रिमण्डल परीक्षाक्रम का एक मसौदा बनाकर अगले अधिवेशन में इस प्रस्ताव के साथ उपस्थित करे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६—पं० लक्ष्मीनारायण नागर के प्रस्ताव पर विचार हुआ। सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि स्थायी-समिति और साहित्य सम्मेलन के कार्य को स्थायी रूप से निर्विघ्न, निरन्तर चलाने के लिये ऐसे स्थायीकोष की आवश्यकता प्रतीत होती है जिसके ब्याज से उसका पूरा काम चल सके। इस लिये यह समिति निम्न लिखित सदस्यों की एक उप-समिति बनाती है, जिसके संयोजक पं० लक्ष्मीनारायण नागर होंगे और जिसका कर्त्तव्य होगा कि इस विषय पर पूरा विचार करके एक सुनिश्चित स्कीम अगले अधिवेशन में उपस्थित करे।

१—पं० श्रीकृष्ण जोशी।
२—स्वा० सत्यदेव।
३—पं० लक्ष्मीनारायण नागर (संयोजक)
४—बा० पुरुषोत्तमदास टण्डन।
५—बा० नवाब बहादुर।
६—ठा० शिवकुमार सिंह।

४—अन्य आवश्यक विषय—

(अ) स्वामी सत्यदेव जी ने प्रस्ताव किया कि स्थायी-समिति की ओर से एक उपदेशक-विभाग खोला जाय जिसका कर्त्तव्य "साहित्य सम्मेलन के उद्देश्यों का प्रचार और पैसा फण्ड सम्बन्धी धन सङ्ग्रह करना होगा।"

निश्चय हुआ कि निम्न लिखित सदस्यों का उपदेशक विभाग बनाया जाय।

१—पं० श्रीकृष्ण जोशी।
२—स्वामी सत्यदेव।
३—ठा० शिवकुमार सिंह।
४—पं० रामजीलाल शर्म्मा।
५—बाबू नवाबबहादुर।

इस विभाग के प्रधान पं० श्रीकृष्ण जोशी और मन्त्री स्वामी सत्यदेव होंगे और इस समिति का कर्त्तव्य होगा कि आगामी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिवेशन में स्थायी-समिति के सामने उचित व्यवस्था उपस्थित करे।

(ब) हिन्दीहितैषिणी-सभा लालगञ्ज और मध्यभारत-हिन्दी साहित्य-समिति इन्दौर का सम्मेलन से सम्बद्ध होने के लिये प्रार्थनापत्र उपस्थित किया गया। निश्चय हुआ कि सम्बद्ध सभाओं का फार्म भर कर भेजने पर ये सभाएं सम्मिलित कर ली जावें।

सभापति को धन्यवाद देकर बैठक समाप्त हुई।

सौर मासों की प्रधानता।

(लेखक—श्रीयुत पण्डित राधावल्लभ स्मृति-व्याकरण-ज्योतिस्तीर्थ। ज्योतिषाध्यापक "संस्कृत-कालेज" कलकत्ता।)

(१) सङ्क्रान्ति के द्वारा सौर मासों का ज्ञान होता है। वर्तमान समय में सूर्य्य के मन्दोच्च ७७ अंश हैं, अतएव इससे बारह सौर मास ऐसे होते हैं।

सौर बैशाख—३० । ५६ । ४६	सौर कार्तिक—२६ । ५२ । ५१
„ ज्येष्ठ—३१ । २५ । ३६	„ अग्रहायण—२६ । २६ । १
„ आषाढ़—३१ । ३८ । ३५	„ पौष—२६ । १६ । ६
„ श्रावण—३१ । २७ । ५७	„ माघ—२६ । २७ । २३
„ भाद्र—३१ । ० । २०	„ फाल्गुन—२६ । ५० । ४
„ आश्विन—३० । २५ । ४०	„ चैत्र—३० । २२ । ३

सूर्य्य की मन्दोच्च गति इतनी थोड़ी है, कि सहस्र वर्षों में भी इन महीनों के मानों में एक दिन का भी पार्थक्य नहीं होता। उपर्य्युक्त दिवस समूह "सावन-दिन" हैं। सूर्य्योदय से पुनः सूर्य्योदय पर्य्यन्त "सावन-दिन" होता है। यह प्रत्यक्ष-सिद्ध तथा पृथिवी के सब प्रान्तों में व्यवहार-सिद्ध भी है। इस सावन-भित्ति पर प्रतिष्ठित होने के कारण सौर मासों का व्यवहार वैज्ञानिक-युक्ति-पूर्ण और तारीखों का व्यवहार भी बहुत ही सुगम है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सङ्क्रान्ति के पर दिवस से नवीन मास का प्रारम्भ होगा, इस युक्तियुक्त सहज-बोध्य नियम की सत्ता में, (इसके द्वारा) निरक्षर मनुष्यगण भी सरलता से महीनों के तारीख जान सकते हैं। किस महीने में कितने दिन होते हैं; ऐसी स्थूल-धारणा सब में ही रहती है। केवल सङ्क्रान्ति किस दिन में होगी, यह जान लिया जावे तो (इसकी सहायता से) तारीखों का ज्ञान अति सुगम हो जावेगा।

(२) ग्रहों की गणनादि सावन दिनों पर निर्भर करती है, अतएव ज्योतिर्विदों को सावन दिनों का ज्ञान उपलब्ध करना अत्यन्त आवश्यक है। जिन जिन प्रान्तों में सावन तारीखों का (सौर मासों का) व्यवहार नहीं है, उन उन प्रान्तों के ज्योतिर्विद्गण विशेष विपन्न हो, सौरदिन, अधिदिन, चान्द्रदिन, तथा अवमदिन जान कर (तदुपरान्त) सावनदिन निर्णय करते हैं। परन्तु जिन प्रान्तों में सावन तारीखों का प्रचलन है, वहां इतना कष्ट उठाना नहीं पड़ता। वे गत वर्ष की सङ्ख्या को वत्सर का परिमाण ३६५। १५। ३१। ३१ २४ से गुण कर वर्तमान वत्सरारम्भ दिवस से अभिप्रेत दिवस पर्य्यन्त जितने दिवस अतीत हुए हैं, उन्हें योग करके ही सावन दिन पा सकते हैं। अतएव सावन दिनों की तारीखों का अर्थात् सौर मासों के व्यवहार का प्रचलन होना उचित है।

(३) प्रति दिवस एक एक सावन दिन में एक एक तारीख वृद्धि होती जाती है। कल्पना किया, कि शनिवार को सङ्क्रान्ति हुई, अतएव रविवार परिवर्ती मास का पहला दिन हुआ, सोमवार दूसरा दिन, तथा मङ्गलवार तीसरा दिन इत्यादि। परन्तु तिथियों के तारीख रूप के व्यवहार में ऐसी श्रृङ्खला दिखाई नहीं देती। कारण कभी एक दिन में दो तिथियाँ अतीत होती हैं, कभी दो दिनों की एक तिथि भी होती है। अतएव (व्यावहारिकी दृष्टि से) चान्द्र तिथियाँ तारीखों के स्वरूप में व्यवहृत नहीं हो सकतीं।

(४) चन्द्र और सूर्य्य—इन दोनों के ज्ञान पर तिथियों का ज्ञान निर्भर करता है, परन्तु सावन तारीखों का व्यवहार और सौर मासों का व्यवहार एक सूर्य्य के ज्ञान से ही सम्पन्न हो सकता है, अतएव लाघव है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(५) धर्म्म कार्य्यों में सौर, चान्द्र, सावन, आदि अनेक प्रकार के मासों की आवश्यकता होती है। जिन प्रान्तों के मास व्यवहार में सौर मासों का प्रचलन है, उन प्रान्तों में अन्यान्य मासों का कार्य्य नष्ट नहीं हुआ, तथा जिन प्रान्तों में चान्द्र मासों का प्रचलन है, उन प्रान्तों के अन्यान्य मासों के धर्म्म कार्य्यों का व्यवहार भी बन्द नहीं हुआ। अतएव मास व्यवहार मे एक प्रकार के मास के प्रचलन से अन्यान्य मासों के धर्म्म कार्य्यों का व्यवहार नष्ट नहीं हो सकता।

(६) जो महाशयगण तिथियों के द्वारा तारीख का व्यवहार करते हैं, वे जैसे बिना पञ्चाङ्ग के तिथि जान नहीं सकते, वैसे ही सावन तारीखों के व्यवहार की सत्ता में भी बिना पञ्चाङ्ग के तिथि ज्ञान नहीं हो सकता। अतएव धर्म्मप्राण हिन्दूगण धर्म्म कार्य्यों के लिए पञ्चाङ्ग का व्यवहार करेंगे ही। परन्तु व्यावहारिकी दृष्टि से पञ्चाङ्ग पर सम्पूर्ण निर्भर कर कार्य्य निर्व्वाह नहीं हो सकता। अतएव तिथियों के द्वारा तारीखों का व्यवहार युक्ति विरुद्ध है, परन्तु सावन तारीखों का व्यवहार युक्तियुक्त है।

(७) सूर्य्य के ज्ञान के न होने की अवस्था में, किस नक्षत्र में चन्द्रमा हैं, केवल इसकी सहायता से तिथियों का ज्ञान नहीं हो सकता। कारण सब महीनों में ही चन्द्रमा अश्विन्यादि सब नक्षत्रों में भ्रमण करते हैं। आकाश में नक्षत्रों का कोई सीमाबद्ध स्थान चिन्हित नहीं है। सब नक्षत्र भी समान अन्तर में अवस्थित नहीं हैं। अतएव नक्षत्र के अति समीपवर्ती न होने से किस नक्षत्र में चन्द्रमा हैं, यह यन्त्र द्वारा ग्रहवेध करने में सक्षम ज्योतिर्विदों के बिना अन्य कोई जान नहीं सकता। ऐसे ज्योतिर्विद् कितने दिखाई देते हैं? तथा ऐसे यन्त्र भी कितने पण्डितों के पास हैं? अतएव केवल नक्षत्र ज्ञान की सहायता से तिथियों का निश्चय नहीं हो सकता, तथा इस पर निर्भर भी किया नहीं जा सकता। सूर्य्य का ज्ञान होने पर भी एक नक्षत्र दो तिथियों के काल में रह सकता है, तथा एक तिथि भी दो नक्षत्रों के काल में रह सकती है; अतएव सूर्य्य और चन्द्र स्थित नक्षत्र ज्ञान से भी, वास्तव तिथि ज्ञान नहीं हो सकता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(८) तिथियों के ह्रास वृद्धि के सदृश सावन दिनों की ह्रास वृद्धि नहीं होती। अतएव पञ्चाङ्ग की सहायता के बिना भी ह्रास वृद्धि न होने की सहायता से सौर मासों की तारीख सुगमता से निरूपित हो सकती हैं। तारीख सम्पूर्ण धर्म्मावलम्बियों की साधारण सम्पत्ति है। अतएव केवल हिन्दुओं के पञ्चाङ्गों पर निर्भर कर सब धर्म्मावलम्बीगण तारीध जान लेंगे, ऐसी कल्पना करना असङ्गत है। इसलिए सावन तारीखों का व्यवहार जैसा कि वङ्गदेश, उड़िष्या, आसाम, पञ्जाब आदि प्रान्तों में चल रहा है, इसका प्रचलन और सावन मान पर निरूपित सौर मासों का तथा सौर वत्सर का प्रचलन सर्वथा युक्तियुक्त और न्यायसङ्गत है।

(९) "बारहों सौर मास समान नहीं है" ऐसा कह कर प्रतिपादकर्त्ता ने आक्षेप किया है, यह युक्तिहीन है। क्योंकि चान्द्र मास के भी सब मास समान नहीं है। इससे मास व्यवहार में किसी प्रकार की असुविधा नहीं होती, यह सभी जानते हैं। अतएव सौर मासों के व्यवहार पर भी असुविधा किसी प्रकार की नहीं हो सकती।

षष्ठवर्ष की परीक्षा-समिति का प्रथम अधिवेशन

परीक्षा-समिति का प्रथम अधिवेशन जो मिति फा० शु० १ सं० १९७२ को होने वाला था उस दिन स्थगित रक्खा जाकर मि० फा० शु० ७ सं० १९७२ शनिवार ता० ११ मार्च सन् १९१६ को हुआ।

कार्य्यवाही का सङ्क्षिप्त विवरण निम्नलिखित है—

१—प्रो० रामदास गौड़ के प्रस्ताव पर निम्नलिखित विभाग और वर्ग सम्बन्धी उपनियम बनाए गए।

विभाग और वर्ग सम्बन्धी उपनियम

१—परीक्षा विषयों के दो विभाग होंगे। (१) साहित्य और (२) विज्ञान।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२—परीक्षा के समस्त कार्य्यों में परीक्ष्य पिवषयों पर उपयुक्त और आवश्यक सम्मति देने के लिए प्रत्येक विभाग में परीक्षा-समिति द्वारा मनोनीत अधिक से अधिक इकतीस सदस्य होंगे। जिनमें से एक को परीक्षा-समिति ही विभाग मन्त्री नियुक्त करेगी और विभाग के अधिवेशन में उपस्थित सदस्य आपस में से किसी को सभापति नियुक्त कर लिया करेंगे।

३—विभाग का अधिवेशन वर्ष में कम से कम एक बार, सम्भवतः सम्मेलन के समय अवश्य होगा जिसमें विभाग के अन्तर्गत समस्त विषयों की उन्नति तथा परीक्षा में उन विषयों की स्थिति, उन विषयों के आदर्श, तथा तद्विषयक नीति पर पूर्ण विचार होगा और इस विचार का फल परीक्षा-समिति में उचित कार-रवाई के लिए उपस्थित किया जायगा।

४—विभाग मन्त्री का कर्त्तव्य होगा कि विभाग के अधिवेशन से दो मास पूर्व सदस्यों से उपस्थित होने वाले प्रस्ताव मँगवा कर कार्य्यक्रम बना कर अधिवेशन से एक मास पूर्व सदस्यों के पास भेज दे और सम्मेलन-पत्रिका द्वारा प्रकाशित कर दे, विचाराधीन विषयों की विस्तृत सूची बना कर अधिवेशन से एक मास पूर्व विभाग के समस्त सदस्यों और परीक्षा समिति के पास भेजे तथा उस सूची में परिवर्तन और परिवर्द्धन के लिए सम्मति माँगे।

५—साहित्य-विभाग में काव्य, दर्शन, इतिहास, अर्थशास्त्र, धर्मशास्त्र, पुरातत्व विविध भाषा ये सात वर्ग होंगे और प्रत्येक वर्ग में अधिक से अधिक सात और कम से कम तीन सदस्य होंगे जिनमें से एक को परीक्षासमिति वर्ग संयोजक नियुक्त करेगी।

६—यदि वर्ग के सदस्यों में अधिकांश के मत में सदस्य पर्य्याप्त न हों तो सदस्यों को दो और अधिक सभ्यों को स्वयं चुन लेने का अधिकार होगा, जिनके अधिकार वही होंगे जो वर्ग के सदस्यों के हैं।

७—विभाग के अधिवेशनों के लिए ५ सदस्यों का और वर्ग के अधिवेशनों के लिए दो सदस्यों का कोरम होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८—प्रत्येक वर्ग का कर्त्तव्य होगा कि अगले दो वर्षों के लिए पाठ्य विषयों और ग्रन्थों पर पूरा विचार करें (साम्प्रतिक वर्गों को १६७५ और १६७६ के लिए विचार करना होगा) और परीक्षा समिति के निर्धारित उपनियमों और आदर्श के अनुकूल उपयुक्त विषय और ग्रन्थ की सूची बना कर परीक्षा-समिति के पास भेजे।

९—वर्ग संयोजक के कर्त्तव्य—

(१) उपनियम ८ में निर्दिष्ट कार्रवाई का विवरण परीक्षा-समिति के संयोजक के पास उपाधि वितरण के ३ मास पूर्व भेज दे।

(२) वर्ग-सम्बन्धी विषय में जितने अच्छे ग्रन्थ प्राचीन व अर्वाचीन उपलब्ध हो सकें उनकी ऐसी तालिका रक्खे जिससे ग्रन्थ का नाम, प्रकाशक का पता, मूल्य और विषय इत्यादि का पता लग जाया करे और इस तालिका में बराबर परिवर्धन करते रहें।

(३) ग्रन्थ प्रकाशकों से वर्ग के विषय-सम्बन्धी पुस्तकों की सूची मगवा कर रक्खे और परीक्षा-समिति को उपयुक्त पुस्तकें मँगवा कर रखने के लिए परामर्श दे।

(४) जब कभी आवश्यक समझे अपने वर्ग का अधिवेशन करे और चाहे तो सब वर्गियों की सम्मति पत्र द्वारा भी लेकर कार्य्य सम्पादन करे।

(५) विभाग के अधिवेशन में अनुपस्थित सब वर्गियों के प्रतिनिधि का काम करे।

१—जिस तालिका का निर्देश उपनियम ९ (२) में हुआ है उस की एक प्रति परीक्षा-समिति के कार्य्यालय में भी रहा करेगी तथा उसमें जो कुछ परिवर्तन वा परिवर्धन वर्ग संयोजक करेगा उसकी सूचना भी हर छठे मास कार्य्यालय को देता रहेगा।

२—निश्चय हुआ कि मध्यमा-परीक्षा में स्त्रियों के लिए बिहारी की सतसई के स्थान पर रामचन्द्रिका वैकल्पित नियत कर दी जाय।

३—निम्न-लिखित नये केन्द्र तथा व्यवस्थापक प्रथमा तथा मध्यमा-परीक्षाओं के बनाये गये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केन्द्र	व्यवस्थापक
इन्दौर	बा० नानकचन्द हेड मास्टर कल्यानचन्द जैन हाई स्कूल
एटा	पं० विश्वेश्वरनाथ शुक्ल हे मास्टर गवर्नमेन्ट हाई स्कूल
खण्डवा	श्रीयुत कालूराम गङ्गराडे
गोरखपुर	श्रीयुत नरसिंहदास
झाँसी	श्रीयुत विपिन विहारी बनर्जी मेकडानल हाई स्कूल
बड़ौदा	श्रीयुत प्रिन्सिपल ट्रेनिङ्ग कालेज
मेरठ	श्रीयुत हेड मास्टर देवनागरी हाईस्कूल
रायबरेली	पं० द्वारका प्रसाद शुक्ल बी० ए०, एल-एल० बी०
लखनऊ	पं० गणेश विहारी मिश्र, गोलागञ्ज लखनऊ

नोट—लखनऊ केन्द्र पुराना है पर व्यवस्थापक की नियुक्ति नई हुई है।

निश्चय हुआ कि उन नगरों में जहाँ परीक्षाएँ स्कूलों को छोड़ अन्य स्थानों में होती हैं। व्यवस्थापकों से प्रार्थना की जाय कि वे परीक्षाओं का स्कूलों में प्रबन्ध करें।

४—निश्चय हुआ कि प्रतिदिन दो प्रश्न पत्र दिये जाँयगे।

५—पं० इन्द्रनारायणद्विवेदी के तीसरे प्रस्ताव पर निश्चय हुआ कि मेट्रिकुलेशन, स्कूल लीविङ्ग सार्टिफिकेट और वर्नाक्युलर फाइनल उत्तीर्ण परीक्षार्थी यदि प्रथमा के साहित्य में उत्तीर्ण हो जाँयगे तो उन्हें मध्यमा में परीक्षा देने का अधिकार होगा। परन्तु हिन्दी लेकर जिन्होंने मैट्रिक स्कूल लीविङ्ग तथा हिन्दी नारमल पास किया है। उनके लिए साहित्य परीक्षा भी आवश्यक नहीं होगी *।

* अर्थात् प्रथमा परीक्षा से वे मुक्त समझे जांयगे (सं०)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६—निश्चय हुआ कि स्थायीसमिति से परीक्षा-समिति के आगामी वर्ष के व्यय के लिए ५००) की प्रार्थना की जाय।

७—निश्चय हुआ कि विश्वकोष के सम्पादक से 'अक्षर' नामक लेख जो विश्वकोष में निकला है, पुस्तकाकार छापने की प्रार्थना की जाय।

८—निश्चय हुआ कि सं० १६७५ के लिए 'विज्ञान' विषय उत्तमा परीक्षा में न रक्खा जाय और यह भी निश्चय हुआ कि अङ्ग्रेजी तथा संस्कृत साहित्य उत्तमा परीक्षा से न निकाले जाँय। निश्चय हुआ कि अङ्ग्रेजी तथा संस्कृत साहित्य की उत्तमा परीक्षा में गुजराती, बङ्गला तथा मरहठी भाषाओं के साथ उर्दू भाषा भी वैकल्पिक रक्खी जाय।

६—विवरणपत्रिका संशोधन के लिए निश्चय हुआ कि कुछ सज्जन विवरण बना कर परीक्षासमिति में उपस्थित करें।

पण्डित इन्द्रनारायणद्विवेदी के निम्नलिखित दोनों प्रस्ताव अस्वीकृत हुए—

(१) जो परीक्षार्थी अधिक से अधिक दो विषयों में गत वर्ष की परीक्षा में अनुत्तीर्ण हुए हैं उनके अनुत्तीर्ण विषयों की परीक्षा मार्च के मध्य में किसी रविवार को ले ली जाय और उनके लिए परीक्षा-शुल्क भेजने की अन्तिम तिथि इस वार की परीक्षा का फल निश्चित होने के १५ दिन पर रक्खी जाय और इसकी सूचना समस्त हिन्दी पत्रों में दे दी जाय।

(२) बा० रामदास गौड़ के प्रस्ताव पर गत वर्ष की परीक्षा समिति ने अपने सप्तम अधिवेशन में निश्चय किया है कि "केवल मध्यमा-परीक्षा के ही उन परीक्षार्थियों को आगामी वर्ष की परीक्षा में अर्द्ध शुल्क देकर बैठने की आज्ञा दी जाय जो शुल्क देकर किसी कारण से परीक्षा में सम्मिलित नहीं हो सके" किन्तु कोई कारण नहीं प्रतीत होता कि उसी प्रकार समिति प्रथमा के परीक्षार्थियों के लिए भी आज्ञा न दे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समालोचना

आनन्दमयजीवन

अभ्युदय प्रेस की 'साधारण-शिक्षा-निबन्धावली' का यह 'आनन्दमयजीवन' नवम अङ्क है। इसके लेखक हिन्दी संसार के सुपरिचित श्रीयुक्त पण्डित सोमेश्वरदत्त शुक्ल बी० ए० हैं और प्रकाशक अभ्युदय प्रेस, प्रयाग। पृष्ठ सं० १२६ और मूल्य ||=) प्रकाशक के यहाँ से मिलती है।

यह आनन्दमयजीवन, अङ्गरेजी के प्रसिद्ध विद्वान् 'सर जान लवक' की "प्लेज़र्स आव् लाइफ़" के दूसरे भाग के भावों के आधार पर रचा गया है। पुस्तक में "ऐश्वर्य पाने की इच्छा, धन, आरोग्य, प्रेम, ललितकला, कविता, सङ्गीत, प्रकृत की सुन्दरता, जीवन के क्लेश, मेहनत और आराम, धर्म, उन्नति की आशा और मनुष्य के लक्ष्य" इन १३ विषयों पर विचार किया गया है। संसार में आनन्द कौन नहीं चाहता फिर भी उसके वास्तविक मार्ग के न जानने के कारण लोग दुःखमय जीवन बिताते हैं। किन्तु इस पुस्तक को ध्यान से पढ़ जाने पर एक वार तो जीवन आनन्दमय होने की ओर आकृष्ट हो ही जायगा पुनः प्रारब्धवश चाहे भटक कर दुःख ही भोगे। सारांश यह कि पुस्तक सभी के पढ़ने योग्य है। विद्यार्थी से लेकर विद्वानों तक और ग्रामीण जनों से लेकर साहब बहादुरों तक के लिये यह पुस्तक उतनी ही लाभप्रद है जितना मनुष्यों के लिये आनन्दमय जीवन। ऐसी पुस्तकों का प्रचार होना देश के लिये अधिक लाभदायी है और मेरी राय में यदि यह पुस्तक हिन्दी साहित्य सम्मेलन की प्रथमा-परीक्षा की पाठ्य पुस्तकों में रख ली जाय तो अधिक उत्तम हो।

युद्ध की २५०० बातें

यह पुस्तक युद्ध ग्रन्थमाला (अभ्युदय प्रेस-प्रयाग) की दूसरी सङ्ख्या है। इसके लेखक पण्डित श्यामकरण शर्मा और प्रकाशक अभ्युदय प्रेस है। पृष्ठ सङ्ख्या १२५ और मूल्य ।-) ठीक ही है। प्रकाशक के पास से मिलती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस बात के कहने की आवश्यकता नहीं कि इस समय संसार व्यापी महायुद्ध के नवीन समाचारों के जानने के लिये सारा देश विशेष कर शिक्षित समाज लालायित रहता है। समाचारपत्रों में तार द्वारा खबरें आया करती हैं। तार में विवरण न होने के कारण सङ्क्षिप्त समाचार मात्र रहता है। कभी छपता है कि अमुक देश के अमुक किले पर अमुक का अधिकार हो गया और अनावश्यक समझ कर अमुक ने बहादुरी से उसका त्याग किया। कभी छपता है कि अमुक नाम के अमुक नगर पर अमुक राजा का अधिकार हो गया और जहाज, तोप और वायुमानों की सञ्ज्ञाएँ भी छपती हैं जिनका ठीक ज्ञान न होने के कारण समाचार का जो प्रयोजन है वह प्राप्त नहीं होता ऐसी दशा में यह युद्ध की २५०० बातें बड़े ही लाभ की चीज है। इसमें उपर्युक्त प्रायः सभी बातों का वर्णन है अतएव समस्त हिन्दी समाचार पढ़ने वालों को इसकी एक एक प्रति अवश्य अपने पास रखनी चाहिये। हिन्दी साहित्य में ऐसी ऐसी उपयोगी पुस्तकों की बड़ी आवश्यकता है।

हिन्दी-संसार

(ले० पं० रामकृष्ण सारस्वत स० मन्त्री)

हिन्दीनाटक का आदर

हर्ष की बात है कि हिन्दी नाटकों का आदर दिन पर दिन बढ़ता जाता है। अभी उस दिन काशी की नागरी-नाटकमण्डली ने हिन्दू विश्वविद्यालय के उत्सव पर महाभारत नाटक खेला था, जिसे देखने के लिये अनेक राजे महाराजे भी पधारे थे। अवश्य ही देशी नरेशों को हिन्दी नाटक मण्डली द्वारा खेला हुआ यह नाटक बहुत पसन्द आया होगा। यह इस बात से प्रकट होता है कि नाटक मण्डली के नाटक-भवन के लिये अपील होते ही ४८०००) के ऊपर चन्दा हो गया। चन्दा देने वालों में महाराज काश्मीर, महाराज कोटा, महाराज जोधपुर, महाराज किशनगढ़, महाराज अलवर, महाराज दतिया, राजराना झालावाड़, सर प्रतापसिंह आदि के नाम हैं। नागरी-नाटकमण्डली की इस सफलता पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम उसे बधाई देते हैं और आशा करते हैं कि आगे चल कर वह हिन्दी के उत्तमोत्तम नाटकों का अभिनय करके हिन्दी के एक बड़े अभाव को पूरा करने में प्रयत्नवान होगी।

हिन्दी-साहित्य में चोरी

दुःख की बात है कि हिन्दी साहित्य में चोरी दिन दिन बढ़ती जाती है। दूसरों के लिखे लेख कविताओं में थोड़ा सा फेर बदल कर अपने नाम से छपवा देना एक साधारण सी बात हो गयी है। अभी हाल में तरङ्गिणी के जनवरी के अङ्क में "प्रातश्चिन्ता" नाम की कविता हमें दिखलाई दी जिसे हमें ध्यान आया कि हमने सरस्वती के किसी पिछले अङ्क में पढ़ा था। फाइल उलटने पर हमें जनवरी सन् १९१२ की सरस्वती के ३० वें पृष्ठ पर वह कविता मिल गई। सरस्वती में वह पण्डित रूपनारायण पाण्डेय के नाम से और तरङ्गिणी में कोई बी० जोशी नामधारी महाशय के नाम से छपी है। बी० जोशी महाशय ने पाठकों की आँखों में धूल झोंक कर एक सुन्दर कविता में अपना नाम देकर खूब वाहवाही लूटने का प्रयत्न किया है। जोशी महाशय को वह कविता इतनी अच्छी मालूम हुई कि उन्होंने केवल दो एक शब्दों के फेरफार के सिवाय कविता को ज्यों की त्यों लिख दिया है। उन्होंने समझा होगा कि बता रहा है के स्थान पर "दिखा रहा है" पाठ पढ़ रही हैं के स्थान पर "पाठ कर रहा है" "उसी की धुन में हरेक पक्षी उमङ्ग से चहचहा रहा है" के स्थान पर "उमङ्ग में हरेक पक्षी जहाँ तहाँ चुहचुहा रहा है" तरङ्ग के स्थान पर "चढ़ाव" उद्यम के स्थान पर "उद्गम" वह के स्थान पर "वो" लिख कर तथा दो लाइनों को साफ नौ दो ग्यारह करने से हमारी श्रेष्ठ कवियों में गणना होने लगेगी। पर फल उलटा ही निकला। अस्तु, हम बी० जोशी महाशय से अनुरोध करते हैं कि यदि उन्हें इस प्रकार दूसरे की कविता को अपना कह कर वाहवाही लूटना हो तो वे उसे हिन्दी-पत्रों में प्रकाशित करने के बदले अपने आस पास के लोगों को सुना कर वाहवाही लूट लें। हिन्दी-संसार में आने से उनकी चोरी खुल जायगी और सुकीर्ति के बदले में अपकीर्ति का भय रहेगा।

हिन्दी साहित्य की चोरी का एक दूसरा हाल दैनिक "भारत"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मित्र' के ता० ८ अप्रैल के अङ्क में प्रकाशित हुआ है। इसमें एक पूरी पुस्तक के उड़ा लेने और उसे अपने नाम से छपा देने का वर्णन है। पहले पहल जब हमने दैनिक भारतमित्र के इस लेख को पढ़ा। हमें इस पर कुछ अविश्वास हुआ: क्योंकि इसमें जिन महाशय को चोरी का दोषी बतलाया गया है उनकी गिनती हिन्दी के लेखकों में है और सामयिक पत्रों में उनके लेख छपा करते हैं। अधिक अनुसन्धान करने पर हमारा अनुमान ठीक न निकला। बात यह है कि बा० महेशचन्द्रप्रसाद द्वारा लिखित एक पुस्तक 'भारत-भाग्योदय' नाम से सन् १९११ में प्रकाशित हुई और सन् १९१६ में वही पुस्तक "भारत में इङ्गलैण्ड के कार्य्य और शासन पद्धति" के रूप में पं० रामदहिन मिश्र काव्यतीर्थ के नाम से निकली। चोरी खुल गई और काव्यतीर्थ जी बेढब फँसे; क्योंकि असली पुस्तक का कापीराइट हो चुका था। इस मामला का निबटारा किसी प्रकार सुगमता से हो गया और काव्यतीर्थ जी को अपनी पुस्तक की बची हुई ७०० प्रतियाँ और Copy right दे देने पर ही छुटकारा मिल गया।

पत्र-सम्पादकों तथा हिन्दी हितैषियों का कर्तव्य है कि ऐसी ऐसी बातें मालूम होने पर उन्हें अवश्य प्रकाशित कर दें; क्योंकि ऐसी बातें हिन्दी के लिये कलङ्क रूप हैं।

हिन्दी सभाएँ और हिन्दी पुस्तकालय

अभी हाल ही में सनातनधर्म सभा के उत्सव पर स्वामी सत्यदेव जी गाजीपुर पधारे थे। दो ढ़ाई हजार मनुष्यों की उपस्थिति में आपने हिन्दी का सन्देश सुनाया, जिसका उपस्थित जन समुदाय पर अच्छा प्रभाव पड़ा और एक नागरी-प्रचारिणी-सभा स्थापित की गयी। गाजीपुर निवासियों का कर्तव्य है कि इस सभा की उन्नति की पूरी चेष्टा करें।

हर्ष की बात है कि नागरी प्रचारिणी सभा रायबरेली का वार्षिकोत्सव श्रीमान् राजा रामपालसिंह के सभापतित्व में ता० २९, ३० जनवरी को सानन्द समाप्त हो गया। बाहर से आये हुए उपस्थित सज्जनों में रामदास गौड एम० ए०, स्वामी सत्यदेव परिव्राजक, लखनऊ के पं० गणेश बिहारी मिश्र और बा० गोपाललाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खत्री और पं० ज्ञानेन्द्रदत्त जी शर्म्मा मुख्य थे। पं० गोकर्णनाथ मिश्र बा० श्यामसुन्दरदास बी० ए० तथा अन्य कई सज्जनों ने सहानुभूति सूचक तार तथा पत्र भेजे थे। रिपोर्ट पढ़ी जाने के अतिरिक्त स्वामी सत्यदेव जी ने शिक्षा का आदर्श तथा हिन्दी का सन्देश इन दोनों विषयों पर दोनों दिन तथा प्रो० रामदास गौड़ एम० ए० ने हिन्दी में वैज्ञानिक शिक्षा की आवश्यकता पर व्याख्यान दिया। लगभग साढ़े तीन सौ के चन्दा हुआ, जिसमें से ८०) के लगभग नगद प्राप्त हुआ। ४०) सभा ने उपदेशक विभाग को दिये। रात्रि को सभा के उद्योग से सन्मित्र नाटक और नागरी निरादर प्रहसन खेला गया। नाट्यकारों में अनेक ग्रेज्युएट और वकील थे।

ता० २६-२७ फरवरी को आगरा नागरी प्रचारिणी सभा का उत्सव सानन्द समाप्त हुआ।

काशी की नागरी प्रचारिणी सभा का २२ वाँ वार्षिकोत्सव बड़ी धूमधाम से ता० ५ फरवरी को काशी में मनाया गया। सभापति का आसन श्रीकाश्मीर नरेश ने ग्रहण किया था। उपस्थित सज्जनों में काशीनरेश के कुमारसाहब महाराज गिद्धौर सर प्रभाशङ्कर पट्टनी, कर्मवीर गान्धी और उनकी धर्मपत्नी, प्रोफेसर विष्णुदिगम्बर तथा अन्य बहुत से सज्जन थे।

पं० श्यामविहारी मिश्र ने सभा की रिपोर्ट पढ़कर सुनायी और बा० श्यामसुन्दरदास बी० ए०, कर्मवीर गान्धी, लाहौर के एडवोकेट, भगत ईश्वरदास तथा सभापति महोदय की वक्तृताएँ हुईं। कर्मवीर गान्धी महाशय ने अपनी वक्तृता में हिन्दी के प्रति पूर्ण सहानुयूति प्रकट की और वकीलों से अपना काम हिन्दी में करने तथा अन्य सज्जनों से अपना पत्र-व्यवहार हिन्दी में करने का अनुरोध किया। श्रीमान् काश्मीर नरेश ने १०००) और श्रीमान् गिद्धौर नरेश ने ५००) सभा को देने का वचन दिया।

चन्दौसी के पण्डित रामस्वरूप शर्म्मा एक उत्साही सज्जन हैं। आपने अपने उद्योग से कई नगरों में हिन्दी के पुस्तकालय स्थापित कराये हैं जिनसे सर्वसाधारण को अच्छा लाभ पहुँच रहा है। गजरौला जङ्कशन का पुस्तकालय, विजनौर की फ्रेन्डस लायब्रेरी, फैजाबाद की सोहनलाल लायब्रेरी, बिसवाँ का आनन्द पुस्तकालय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और चन्दौसी की शर्म्मा प्रेम-वर्द्धिनी लायब्रेरी आप ही के उद्योग के फल हैं।

गत वर्ष की परीक्षा-समिति का आय-व्यय

मि० पौष कृ० ७ सं० १९७२ ता० २८ दिसम्बर सन् १९१५ से
मि० मार्ग शु० सं० १९७२ ता० २६ दिसम्बर सन् १९१६ तक

आय	व्यय
४॥।)। पिछले साल की बचत	२०२-)॥ कागज छपाई
५५१) शुल्क से प्राप्त	८४॥।)॥ व्यवस्थापक को भेजा
१४॥=) विवरण	२५॥-)। पुस्तकालय
	७१) स्टाम्प
	१३॥।=)॥। पार्सल
	२०=)॥ वेतन
	२॥-)॥ तार
	६॥) फुटकर
	६॥)॥ स्टेशनरी
	१३६॥।≡)॥। हस्त में
५७०।=)।	५७०।=)।

सम्पादकीय विचार

स्थायीसमिति

सम्मेलन की स्थायीसमिति का प्रथम अधिवेशन मि० मा० कृ० ३ सं० १९७२ को हुआ था और उसमें परीक्षा-समिति के ११ सभ्यों का (नवीन नियम के अनुसार) चुनाव हुआ है। यद्यपि नवीन नियम के अनुसार उसमें स्थायीसमिति के ७ सभ्यों के अतिरिक्त ४ अन्य सज्जन भी लिये जा सकते थे किन्तु इस वार वाहरी सज्जनों में से केवल ३ ही लिये जा सकें हैं और शेष ८ स्थायी समिति के सभासदों में से लिये गये हैं। स्थायी-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समिति ने अपने इस अधिवेशन में दो उपसमितियां पुनः बनायी हैं। अवश्य ही उपसमिति के द्वारा कार्य होगा इसमें हमें सन्देह है और इसी कारण से हम उपसमिति बनाने के विरोधी हैं तथापि जो हो गया सो हो गया अब तो हमें यही उद्योग करना चाहिये कि दोनों समितियों के सञ्चालकों से तकाजा करके काम करावें। यदि ऐसा न हुआ तो अब भी हमें सावधान हो जाना चाहिये और उपसमितियों के सङ्गठन की ओर से सन्तोष करना चाहिये।

परीक्षा-समिति

नवीन सङ्गठित परीक्षा-समिति का प्रथम अधिवेशन फा० शुक्ल ७ सं० १९७२ को हो गया। समिति में विभाग और वर्ग सम्बन्धी अनेक उपनियम बनाये गये हैं अवश्य ही उपनियम उपयुक्त हैं और उनको पढ़कर यह विदित होता है कि समिति के कार्य का भार कितना बढ़ रहा है और समिति कैसी उन्नति कर रही है। मैट्रिक, स्कूल लीविङ्ग, नारमल, वर्नाक्यूलर मिडिल के सम्बन्ध में ठीक नियम बनाये गये हैं किन्तु साथ ही संस्कृत की प्रथमा और मध्यमा के लिये भी यह नियम हो जाना चाहिये कि यदि भूगोल, इतिहास और गणित सम्बन्धी अपनी योग्यता का प्रमाण दे सकें तो प्रथमा या मध्यमा (संस्कृत की) पास परीक्षार्थी हिन्दी की प्रथमा परीक्षा से मुक्त करके मध्यमा में सम्मिलित होने के अधिकारी हो सकेंगे। इस वर्ष परीक्षार्थियों की सङ्ख्या विशेष बढ़ी है और प्रतिदिन बढ़ने की आशा है किन्तु पाठ्य ग्रन्थों के मिलने में बड़ी कठिनाई हो रही है और पुस्तकें भी इतनी अधिक हैं कि जिनका मूल्य भी बहुत अधिक हो जाता है अतएव परीक्षा-समिति को इस ओर भी ध्यान देना परम आवश्यक है।

उपसमितियाँ

लिङ्ग-विचार समिति की रिपोर्ट आ गयी है और अगले अङ्क में वह सम्मति के लिये प्रकाश की जायगी इस अङ्क में स्थानाभाव के कारण दी नहीं जा सकती है। समालोचक-समिति के कार्यों का क्षेत्र बहुत बड़ा है और उसके कार्य शीघ्र ही प्रारम्भ होने चाहियें। हम आशा करते हैं कि उसके संयोजक इस ओर शीघ्र ही ध्यान देंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन-पत्रिका के नियम

१—यह पत्रिका सम्मेलन कार्य्यालय प्रयाग से प्रतिमास प्रकाशित होती है। इसका वार्षिक मूल्य १) रु० इस लिये रक्खा गया है कि सर्वसाधारण इसके ग्राहक हो सकें।

२—अभी इसमें प्रतिमास कुल २४ पृष्ठ ही रहा करेंगे। आवश्यकता होने पर पृष्ठ सङ्ख्या बढ़ा भी दी जाया करेगी। आगे चल कर यदि इसकी सेवा साहित्यिकों को रुचिकर हुई, और ग्राहकों की यथोचित सङ्ख्या हो गयी तो अधिकतर पृष्ठ-सङ्ख्याओं में और अधिकतर उन्नत दशा में प्रकाशित की जायगी।

३—प्रबन्ध-सम्बन्धी पत्र और रुपये आदि तथा सम्पादन सम्बन्धी पत्र पुस्तकें परिवर्त्तन के पत्रादि सब "मन्त्री, सम्मेलन कार्य्यालय, प्रयाग" के नाम आने चाहियें।

विज्ञापन छपाई के नियम

६ मास अथवा उससे अधिक दिनों के लिये

	१ पृष्ठ,	आधा पृष्ठ	और चौथाई पृष्ठ के
कवर पेज पर	५)	३)	२)
साधारण पेज पर	४)	२॥)	१॥)

विशेष बातें जाननी हों तो मन्त्री जी से पूछिये

क्रोड़पत्र बँटाई के नियम

आधा तोला तक अथवा इससे कम के लिये ... १०)

१ तोला के विज्ञापन के लिये ... ... १२)

मन्त्री, हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग

नोट—विज्ञापन के ऊपर यह छपा होना चाहिये कि अमुक मास की "सम्मेलन-पत्रिका" का क्रोड़पत्र और उसमें यथोचित समाचार भी होने चाहियें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वामी सत्यदेव जी

की

प्रथम पुस्तक

मेरी कैलाश-यात्रा

हिमालयल के श्वेतभवन की छटा देखिये
श्री कैलाश जी के भव्यमन्दिर के दर्शन कीजिये
मानसरोवर स्नान का पुण्य सञ्चय करिए
तिब्बतियों का रहन सहन जानिये

अपूर्व पुस्तक है। दाम आठ आने

दूसरी पुस्तक

शिक्षा का आदर्श

शिक्षा सम्बन्धी समस्या को हल करती है
नया जीवन प्रदान करती है

इस पुस्तक का घर घर प्रचार करने की आवश्यकता है। कृपा
अपने मित्रों में इसका प्रचार बढ़ाइये। मूल्य पाँच आने।

प्रार्थी—

मैनेजर, सत्य-ग्रन्थ-माला, जानसेनगञ्ज, इलाहाबाद

पं० सुदर्शनाचार्य्य बी० ए० के प्रबन्ध से सुदर्शन प्रेस, प्रयाग में छपकर
हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन से पं० रामकृष्ण शर्मा द्वारा प्रकाशित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिस्टर्ड नं. ए. ६९६.

सम्मेलन-पत्रिका

भाग ११, अङ्क ११; आषाढ़ १९८१

संपादक

वियोगी हरि

प्रकाशक

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग

वार्षिक मूल्य २)   प्रत्यंक ≡)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

संख्या	विषय	पृष्ठ
१—निवेदन—(कविता) [ले० श्री० अम्बिकादत्त व्यास] ...		४७५
२—प्रेम कहानी (कविता) [ले० कविवर श्री० वल्लभजी] ...		४७६
३—कवि और कविता—[ले०—श्रीयुत आनन्दिप्रसाद श्रीवास्तव]		४७८
४—भ्रमर गीत (कविता)—[ले०—श्री० पं० मदनलाल चतुर्वेदी]		४८३
५—अश्वघोष का बुद्धचरित—[ले०—श्री० पं० ठाकुरदत्त मिश्र]		४८५
६—हिन्दी प्रेमियों से दो दो बातें—[ले० श्री० राजा महेन्द्र प्रताप]		४९०
७—चन्द्रिका (कविता)—[ले० श्री० 'ललन'] ...		४९२
८—स्थायी समिति का चौथा अधिवेशन		४९३
९—परीक्षा समिति की पहली बैठक		४९५
१०—परीक्षा समिति की दूसरी बैठक		४९७
११—प्रचार समिति का प्रथम अधिवेशन		५००
१२—कविवर पं० विनायक राव—[ले०—श्री० पं० सूरज प्रसाद अवस्थी]		५०१
१३—कविनायक विनायक रावजी का स्वर्गवास ...		५०६
१४—साहित्य-समालोचन		५०७

'सम्मेलन-पत्रिका' में

विज्ञापन की दर

	१ मास	६ मास	एक वर्ष
एक पृष्ठ	५)	२५)	४५)
आधा पृष्ठ	३)	१५)	२८)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन-पत्रिका के नियम

१—'पत्रिका' प्रत्येक मास की पूर्णिमा को प्रकाशित हो जाती है। यदि किसी मास की कृष्णा १० तक उस मास की पत्रिका न मिले, तो पत्र द्वारा सूचना देनी चाहिए।

२—'पत्रिका' का वर्ष भाद्रपद से प्रारम्भ होता है। जो लोग भाद्रपद से लेकर फाल्गुन तक किसी मास में ग्राहक होते हैं, उन्हें भाद्रपद से, और जो चैत्र से भाद्रपद तक किसी मास में ग्राहक होते हैं, उन्हें चैत्र से 'पत्रिका' के अंक भेजे जाते हैं। डाकव्यय सहित पत्रिका का वार्षिक मूल्य २=) है। २) मनीआर्डर द्वारा भेजने से अधिक सुभीता होता है।

३—यदि दो एक मास के लिए पता बदलवाना हो तो डाकखाने से प्रबन्ध कर लेना चाहिए और यदि बहुत दिनों के लिए बदलवाना हो, तो हमें उसकी सूचना देनी चाहिए, अन्यथा 'पत्रिका' न मिलने के लिए हम उत्तरदायी न होंगे।

४—लेख, कविता, समालोचना के लिए पुस्तकें-"सम्पादक सम्मेलन पत्रिका पोस्ट बाक्स नं० ११ प्रयाग" के पते से व प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र—"प्रचार मन्त्री हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, पोस्ट बाक्स नं० ११ प्रयाग" के पते से और पत्रिका का मूल्य विज्ञापन की छपाई आदि का द्रव्य "अर्थमंत्री, हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन पोस्ट बाक्स नं० ११ प्रयाग" के पते से आना चाहिए।

५—प्राप्त कविता और लेखों के घटाने, बढ़ाने एवं प्रकाश करने वा न करने का पूर्ण अधिकार सम्पादक को है।

आवश्यक सूचना

६—आज से सम्मेलन द्वारा प्रकाशित पुस्तकों की बिक्री पर कमीशन की दर निम्नलिखित अनुसार होगी।

(क) १०) से नीचे की पुस्तकों पर कुछ भी कमीशन न दिया जायगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ख) १०) से २५) तक की पुस्तकों पर, दो आना कमीशन दिया जायगा।

(ग) २५) से ऊपर १००) तक २०) रुपया सैकड़ा

(घ) १००) से ऊपर, २५) सैकड़ा।

(ङ) ५००) या अधिक की पुस्तकें लेने पर तृतीयांश कमीशन अर्थात् ३।-)४ दिया जायगा।

(नोट) सम्मेलन से सिर्फ़ सम्मेलन द्वारा प्रकाशित पुस्तकें बेची जाती हैं। अतः सर्वसाधारण को चाहिए कि वे सम्मेलन से केवल सम्मेलन द्वारा प्रकाशित ही पुस्तकें मगावें। अन्य प्रकाशकों की पुस्तकें हमारे यहाँ नहीं मिलतीं।

संयोजक,

मिती चैत्र कृष्ण १० पुस्तक-प्रकाशन-समिति
सं० १९८० हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन,
प्रयाग।

सुलभ-साहित्य-माला

इस माला का उद्देश्य यह है कि हिन्दी में उत्तमोत्तम ग्रन्थों के सुन्दर और सस्ते संस्करण इस ढंग से निकाले जायँ कि जिससे हिन्दी-प्रेमी इन ग्रन्थरत्नों को सुलभता से पा सकें। यह माला [प्र]ाचीन साहित्य का विशेष रूप से उद्धार करने की चेष्टा कर रही [है]। इसमें प्राचीन साहित्यिक, दार्शनिक, सामाजिक, राष्ट्रीय आदि उत्तमोत्तम ग्रन्थ सिद्धहस्त लेखकों को उचित पुरस्कार देकर लिखाये और प्रकाशित किये जाते हैं। अब तक इस माला में निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१—भूषण-ग्रन्थावली (सटिप्पण)

भूषण कवि हिन्दी में वीररस के एक मात्र कवि हैं। इनकी कविता में भाव हैं, ओज है और प्राण हैं। परन्तु अधिकांश में वह इतनी क्लिष्ट है कि उसका समझना कठिन हो जाता है। इस कठिनाई को दूर करने के लिए हिन्दी के सुपरिचित विद्वान् पं० रामनरेशजी त्रिपाठी ने क्लिष्ट स्थानों पर टिप्पणी दे दी हैं और कठिन शब्दों का अर्थ लिख दिया है। कविता में सूत्र रूप से वर्णित ऐतिहासिक घटनाओं का भी यथास्थान स्पष्ट उल्लेख कर दिया गया है।

यदि भारतीय वीरता का पता चलाना हो, यदि जातीय ज्योति का प्रकाश जगमगाना हो और यदि साहित्यिक आनन्द लूटना हो, तो इस ग्रन्थावली को एक बार अवश्य पढ़ जाइए। इसमें अलङ्कार शास्त्र का अनुपम ग्रन्थ शिवराज-भूषण, शिवा-बावनी, छत्रसाल दशक तथा भूषण कवि के फुटकर कवित्तों का संग्रह किया गया है। यह ग्रन्थावली साहित्य-सम्मेलन की मध्यमा परीक्षा में भी स्वीकृत है। पृष्ठसंख्या १८४, मूल्य ॥-)

२—हिन्दी-साहित्य का संक्षिप्त इतिहास

लेखक—श्री मिश्रबन्धु

हिन्दी भाषा और साहित्य का क्रमशः विकास कैसे हुआ, उसने कौन कौन से रूप पकड़े, किन किन बाधकों एवं साधकों का उसे सामना करना पड़ा, वर्त्तमान परिस्थिति क्या है आदि गम्भीर विषयों का पता इसी पुस्तक से भली भाँति लग जाता है। अपने ढंग की यह पहली पुस्तक है। "मिश्रबन्धु विनोद" रूपी महासागर से मथन कर यह इतिहासामृत निकाला गया है। यह भी हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की मध्यमा परीक्षा में स्वीकृत है। पृष्ठ संख्या १८८, मूल्य ।=)

पुस्तकें मिलने का पता—हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, पोस्टबाक्स नं० ११ प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३—भारतगीत

लेखक—पं० श्रीधर पाठक

श्रद्धेय पाठक जी की रसमयी-रचना से किस सहृदय साहित्य-रसिक का हृदय रसाप्लावित न होता होगा ? आपकी गणना वर्तमान हिन्दी-साहित्य के महारथियों में है। आपकी राष्ट्रीय कविता नवयुवकों में जातीय जीवन सञ्चार करनेवाली है। प्रस्तुत पुस्तक श्री पाठक जी के उन गीतों का संग्रह है जिन्हें उन्होंने समय समय पर स्वदेश-भक्ति की उमंग में आकर लिखे हैं। इसकी प्रस्तावना साहित्यमर्मज्ञ बाबू पुरुषोत्तमदासजी टंडन ने लिखी है। यह पुस्तक राष्ट्रीय विद्यालयों के बड़े काम की है। पृष्ठ संख्या ६४, मूल्य ≡)

४—भारतवर्ष का इतिहास

(प्रथम खण्ड)

ले०—श्री० मिश्रबन्धु

यह इतिहास प्राचीन और अर्वाचीन काल से सम्बन्ध रखता है। इसमें पूर्व वैदिक काल से सूत्र काल तक अथवा ६०० संवत् पूर्व से ५० संवत् पूर्व तक की घटनाओं का उल्लेख है। अब तक हिन्दी में भारतवर्ष का सच्चा इतिहास एक भी नहीं था। विदेशियों के लिखे हुए अपूर्ण और पक्षपातयुक्त इतिहासों के पढ़ने से यहाँ के नवयुवकों को अपने देश के प्रति अश्रद्धा उत्पन्न हो जाती है। ऐसे समय में हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेखक मिश्रबन्धुओं ने बड़ा काम किया है। मध्यमा परीक्षा के इतिहास विषय में यह पुस्तक निर्दिष्ट है। जिल्दवाली पुस्तक जिसकी पृष्ठ संख्या ४०६ है, मूल्य केवल १॥)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५—राष्ट्रभाषा

संपादक—श्री० 'भारतीय हृदय'

कुछ समय हुआ, महात्मा गांधी ने यह प्रश्न किया था कि, क्या हिन्दी राष्ट्र-भाषा हो सकती है? इसके उत्तर में भारत के प्रत्येक प्रान्त के बड़े बड़े विद्वानों और नेताओं ने पक्षपात रहित सम्मतियाँ दी थीं, कि निःसन्देह हिन्दी ही राष्ट्रभाषा होने योग्य है। उन्हीं सब अमूल्य सम्मतियों का संग्रह इस पुस्तक में किया गया है। इसके विरोधियों का भी यथेष्ट खण्डन हुआ है। इस विषय के व्याख्यानों का भी इसमें सङ्कलन कर दिया गया है। हिन्दी भाषा के प्रेमियों के लिए यह पुस्तक प्राणस्थानीय नहीं तो क्या है? पृष्ठ संख्या २००, मूल्य ॥)

६—शिवा-बावनी

महाकवि भूषण के वीररस सम्बन्धी ५२ कवित्तों का उत्तम संग्रह। इन कवित्तों के टक्कर के छन्द शायद ही वीररस के साहित्य में अन्यत्र कहीं मिलें। महाराष्ट्रपति शिवा जी की देशभक्ति और सच्ची वीरता का यदि चित्र देखना हो, तो एक बार इस छोटी सी पोथी का पाठ अवश्य कर जाइए। शब्द एवं भाव काठिन्य दूर करने के लिये कवित्तों की सुबोधिनी टीका, टिप्पणी और अलङ्कार साहित्य से सम्बन्ध रखनेवाली आवश्यक बातों का इसमें उल्लेख कर दिया गया है। साहित्य सम्मेलन की प्रथमा परीक्षा में यह पुस्तक रक्खी गयी है। पृष्ठ संख्या ५४, मूल्य ≡)

७—सरल पिङ्गल

ले०—{ श्री पुत्तनलाल विद्यार्थी,
श्री लक्ष्मीधर शुक्ल, विशारद

इस पुस्तक में पिङ्गल शास्त्र के गूढ़ रहस्यों को सरल और सुन्दर भाषा में समझाने का प्रयत्न किया गया है। छन्दों के उत्तम उदाह-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रण भी दिये गये हैं। अन्त में संस्कृत छन्दों का भी संक्षेप में दिग्दर्शन करा दिया गया है। पृष्ठ संख्या ५८, मूल्य ।)

८—सूरपदावली

(सटिप्पण)

श्री सूरदास जी के १०० अत्युत्तम पदों का अपूर्व संग्रह जो हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की परीक्षा में स्वीकृत भी है। मूल्य ।)

९—भारतवर्ष का इतिहास

(द्वितीय खण्ड)

लेखक—श्री मिश्रबन्धु

इसमें ६०० संवत् पूर्व से १२५० संवत् तक की घटनाओं का वर्णन किया गया है। भारतवर्ष के उत्थान-पतन के क्रम का पता इस पुस्तक से जैसा कुछ चलता है, वह पढ़ने से ही मालूम होगा। हिन्दू-समाज की उन्नति और अवनति, इस देश में स्वदेशी और विदेशी भावों का आविर्भाव तथा धार्मिक जीवन की महत्ता आदि जानने योग्य आवश्यक विषयों का ज्ञान इससे पूर्णतः हो सकता है। इस इतिहास की आवश्यकता प्रत्येक नवयुवक को होनी चाहिए। सुन्दर छपाई, कपड़े की जिल्द, पृष्ठ संख्या ४४८, मूल्य ॥)

१०—पद्य-संग्रह

संपादक { श्री व्रजराज एम. ए., बी. एस-सी., एल. एल. बी. / श्री गोपालस्वरूप भार्गव एम. एस-सी.

आधुनिक खड़ी बोली के प्रसिद्ध प्रसिद्ध कवियों की कविताओं का सुन्दर संग्रह। ये कविताएँ विद्यार्थियों के लिए बड़े काम की हैं। संग्रह सामयिक और उपादेय है। यह पुस्तक हिन्दी साहित्य सम्मेलन की प्रथमा परीक्षा के साहित्य में स्वीकृत है। पृष्ठ संख्या १२८, मूल्य ।≡)

पुस्तकें मिलने का पता हिन्दी—साहित्य-सम्मेलन, पोस्ट बाक्स नं० ११ प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

११—संक्षिप्त सूरसागर

संपादक—श्री वियोगी हरि

सूरदास जी रचित सूर-सागर से २५० पद-रत्न चुन कर इसमें एकत्र किये गये हैं। जहाँ तक हो सका है, कई प्रतियों से पदों का पाठ शुद्ध किया गया है। प्रत्येक पद की पाद-टिप्पणी भी लगा दी गयी है। इसकी प्रस्तावना हिन्दी-साहित्य के महारथी सुप्रसिद्ध विद्वान्

श्रीराधाचरण जी गोस्वामी ने

लिखी है। सागर की थाह लेनी सहज नहीं है। तब उसे पार कौन कर सकता है? तथापि बिना शोभा देखे रहा नहीं जाता। अब तक सब के अनुशीलन करने योग्य सूरसागर का सुन्दर और सुलभ संस्करण नहीं निकला था। लोग इसके रसास्वादन के लिए लालायित हो रहे थे। सम्मेलन ने इस अभाव को दूर कर हिन्दी-साहित्य-रसिकों की पिपासा शान्त करने की यथाशक्ति चेष्टा की है। पुस्तक के अन्त में लगभग १०० पृष्ठ की सूरदासजी की जीवनी तथा काव्य परिचय जोड़ा गया है। उनकी जीवनी की मुख्य मुख्य घटनाओं का पूरा पूरा उल्लेख आ गया है। कविता की सुन्दरता भी पर्याप्त रूप से दिखला दी गई है। पदों में आई हुई अन्तर्कथाएँ भी लिखी गयी हैं। यह पुस्तक हिन्दी-साहित्य सम्मेलन की उत्तमा परीक्षा में स्वीकृत है। एण्टिक कागज़ का जिल्ददार संस्करण पृष्ठसंख्या ४२५, मूल्य २)

१२—बिहारी-संग्रह

सम्पादक—श्री वियोगी हरि

कविवर बिहारीलाल की सतसई से प्रथमा परीक्षा के विद्यार्थियों के लिए यह छोटा सा संग्रह तैयार किया गया है। जहाँ तक सम्भव हुआ है इसमें शृङ्गार रस के दोहों ही का समावेश नहीं किया गया है, किन्तु ऐसे दोहों का संग्रह किया गया है, जो बिना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी सङ्कोच के हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की प्रथमा परीक्षा के परीक्षार्थियों को पढ़ाए जा सकते हैं। पृष्ठ संख्या ६४, मूल्य ≡)

१५—व्रज-माधुरी-सार

सम्पादक—श्री वियोगी हरि—इस पुस्तक का विषय इसके नाम ही से प्रकट होता है। इसमें व्रजभाषा की कविता का सार सङ्कलन किया गया है। इस संग्रह में चार विशेषताएँ हैं:—

(१) इसमें सूरदासजी से लेकर आधुनिक काल के स्वर्गीय सत्यनारायणजी तक की भावपूर्ण कविताओं का संग्रह किया गया है। व्रजभाषा का कोई भी प्रसिद्ध कवि नहीं छोड़ा गया है।

(२) इसमें कुछ ऐसे कवियों की रचनाओं का रसास्वादन भी कराया गया है जो अभी तक कहीं नहीं प्रकाशित हुई थीं।

(३) इस ग्रन्थ में यथेष्ट पाद टिप्पणी लगा दी गयीं हैं जिनकी सहायता से साधारण पाठक भी लाभ उठा सकते हैं।

(४) इसके प्रारम्भ में प्रत्येक कवि का संक्षिप्त जीवनचरित और उसकी कविता की संक्षिप्त आलोचना भी की गयी है।

पृष्ठसंख्या ६३२, मूल्य जिल्दवाले संस्करण का केवल २)

१६—पद्मावत (पूर्वार्द्ध)

सम्पादक—श्री लाला भगवानदीन

यह हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि मलिक मुहम्मद जायसी कृत पद्मावत का पूर्वार्द्ध है। इस भाग में पहले खण्ड से लेकर ३४वें खण्ड तक समावेश हुआ है। सम्पादक महोदय ने इस ग्रन्थ में इतनी यथेष्ट पादटिप्पणी लगा दी है कि अब इस प्राचीन काव्य का रसास्वादन करना प्रत्येक कविता प्रेमी के लिए सुलभ हो गया है। अन्त में एक संक्षिप्त शब्दकोश भी जोड़ दिया गया है। पृष्ठसंख्या लगभग २०० मूल्य साधारण जिल्द का १) और जिल्दवाली का १।)

पुस्तकें मिलने का पता—हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, पोस्टबाक्स नं० ११ प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन-पत्रिका

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन
की
मुख-पत्रिका

भाग ११ } आषाढ़, संवत् १९८१ { अङ्क ११

निवेदन

नासा लटकनवारे, भौंह मटकनवारे,
हीय खटकनवारे मेरी गैल आजा रे।
कुण्डल झलकधारे, घूंघुरी अलकवारे,
केसर तिलकवारे, मही दही खाजा रे।
कवि 'अम्बादत्त' के अनन्दवारे नन्दवारे,
दुख दंद वृन्द कन्द फन्दनि छुड़ाजा रे।
सुन्दर लकुटवारे पीरे पीरे पटवारे,
मोर के मुकुटवारे दरस दिखाजा रे॥

—अम्बिकादत्त व्यास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेम-कहानी

[कविवर श्री वल्लभजी]

श्री राधे नव नारि रूप गुन गरब गहीली ।
बैठी करन सिंगार पिया सुधि साधि रंगीली ॥
प्रेम विवस पिय मन आकर्षन करन धारि हिय ।
सुखद सेज पै वैठि समारन लगी बार तिय ॥
ललिता ललित सुलाय मुकुर आगे धरि दीनों ।
मन पिय सुधि लौलीन डिबा गहने को लीनों ॥
लै कखई धरि बारन काढ़ति मांग डरति अत ।
ज्यों फणिधर फहरावत लखि लखि बबकि परत कित ॥
कबहुँ कहति इन केसन मोकों अति दुख दीनों ।
नागिन सी लट लटकति मो मन संभ्रम कीनों ॥
कहि ललिता इत आवहु मेरो दुसह मिटावहु ।
परे रहत नित पीछे बारन बाँधि दिखावहु ॥
ललिता सूंटि समारि हाल चुटिया करि दीनीं ।
मोतिन सों रचि मांग गुही बेनी रंग भीनी ॥
स्याम केश बिच दमकति यों मुक्तावलि राजति ।
ज्यों घन में बग-पांति अधिक सोभा छबि छाजति ॥
सीस चन्द्रिका सीसफूल वंदनी सुहाई ।
कर्णफूल झूमका पहरि अति हिये सिराई ॥
गोल कपोलन लोलन अति सोभा छबि छाई ।
तिय डोलत मुख इत उत भौंह तरेरत जाई ॥
कंठ पाटिया पँचमनिया पहिरयो अति सुन्दर ।
मानों बन्दनवार बँधी द्वारे उर मन्दर ॥
दोउ चकवन कंचुकी जार बिच बांधति कसि कसि ।
कबहुँ कि हारन धारति कबहुँ उतारति हँसि हँसि ॥
निरखि मुकुर प्रतिबिम्ब मुग्ध भई रूप निहारी ।
कहन लगी यह कौन नवल आई ब्रजनारी ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो प्रीतम लखि पावै यह नागरि गुन आगर।
तौ मेरो अपमान अवसि करिहैं नटनागर॥
कहन लगी, तू कौन भट्ट इत कैसे आई?
कहौ कौन सो गाम कौन बाबा की जाई?
हौंठ हलत ही दीसत शब्द न परत सुनाई।
तब प्यारी रिसि मानि कहन लागी झुंझराई॥
जोबन कौ अति गरब ग्वालिनी मोय बिरावति।
शब्द सुनत कछु नाहिं लाज सों हौंठ चलावति॥
प्रीती रिस भय बिबस परस्पर बिकल भई तिय।
दुबकि खंभ की ओट पिछारी सों निरखत पिय॥
कहन लगी, सुन ओ नव नागरि जोबनमाती।
मिल्यौ न अजहूं तोय कहूं कान्हर रसघाती॥
जो तोकों मग आवत जात कहूं लखि पावै।
पढ़ि मुरली में मंत्र मोहिनी फूंक चलावै॥
तब न रहैगी ऐसी जैसी परति दिखाई।
दुरि अपने ग्रह जाव, न देखो कुंवर कन्हाई॥
वह लंपट अति ढीठ कपट की प्रीति दिखावै।
पहिले मन को छीनि फेर टेढ़ो बतरावै॥
ऊपर सुन्दर स्याम दिपत उर अंतर कारो।
कनक कुंभ बिष भरो मधुप रसचाखनहारो॥
कनकलता सी कामिनि दीसति भोरी भारी।
रूप उजागरि नागरि मोय अति लागति प्यारी॥
ताते मैं कछु कहीं तिहारे हित की बातें।
दीसति सरल सुभाव नाहिं जानति रसघातें॥
स्याम खंभ की ओट पर्‌यो प्रतिबिम्ब दिखाई।
निरखि पिया तिहि पाछें अति मन में खिसियाई॥
कहन लगी हौं तबहि कहत ही तो सों सुन्दरि।
जाव जाव निज भौन, देख आयो वह गिरिधरि॥
नील कंज कर स्याम नैन खंजन दोउ मीचे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेमबेलि की बारिन ज्यों अमरत जल सींचे ॥
कमल-करन टकटोरति हृदय बिचारति जाई ।
लेति सखिन के नाम कौन आई यह माई ॥
ललिता सूझी कहा, करति तू कहा ढिठाई ?
दूखन लागीं आँखिन छाँड़ो मोय न सुहाई ॥
नहिं ललिता तौ अबस बिसाखा प्रानन प्यारी ।
छांड़ि छांड़ि बलि जाउँ मोय लागत स्रम भारी ॥
लै लै सखियन नाम पुकारति राधा प्यारी !
बिहँसि उठे मनमोहन प्यारे कुंजविहारी ॥
द्रग खंजन मनरंजन छाँड़े कमल वंद सौं ।
लखि प्यारी चट लपटि गई आनंदकंद सौं ॥
कहा कहौं पिय पलट गई इस मति बौरानी ।
क्यों ऐसी गति भई मोय कछु जाति न जानी ॥
कहि बल्लभ जीवनधन यह सब प्रेम-कहानी ।
रसिकन प्रानाधार, कहा जानैं गुर ग्यानी ॥
मैं तुमरी तुम मेरे जीवनधन श्री राधा ।
नवल निकुंज पधारहु मैटन अंतर बाधा ॥

कवि और कविता

(गतांक के आगे)

[श्रीयुत आनन्दिप्रसाद श्रीवास्तव्य]

इस बात से भी मैं सहमत नहीं कि कवि का सम्बन्ध मस्तिष्क से उतना नहीं जितना हृदय से है। जैसे नर-नारी के अधिकार-तारतम्य (harmoney) में ही गृह-जीवन का सुख है, वैसे ही मस्तिष्क-हृदय के जीवन-तारतम्य में कवित्व की जान है। जहां किसी की प्रधानता हुई कि कवित्व के अंग शिथिल हुए। हृदय की प्रधानता होने से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवित्व में छिछलापन आ जाता है। आज कल की कितनी ही करुण-रस की कविताएं असभ्य वृद्धाओं के छाती कूटने के समान होती हैं। उनकी करुणा में गंभीरता की छुआई नहीं रहती—ऐसी हाय-हाय मचाई जाती है जो हृदय की बात न होकर परिस्थिति को देखते हुए अस्वाभाविक होती है। फल यह होता है कि वह करुण-संचार करने के बदले परिहास की सामग्री उपस्थित कर देती है—भाँड़ों के रोने का समा दिखाती है। शृंगार रस में हृदय प्रधान हुआ तो अश्लीलता की सृष्टि होती है—रस-संचार के लिये कवि पर्दा फाश कर बैठता है—जहां बुद्धि दबी वहां मतवालापन आ ही जाता है। इसी प्रकार और रसों में समझ लेना चाहिये। यदि मस्तिष्क की प्रधानता हुई तो लगे दर्शनशास्त्र के सूत्र गढ़ने, रूपक बाँधने, निरार्थक उपमा और उत्प्रेक्षा की भरमार करने। करुण रस में अनुपयुक्त उपदेशों का रस आ जाता है—हास्य में भँड़ैती होने लगती है—शृंगार में बनाव और बिस्तृत वर्णन ही प्रधान हो जाता है या विचित्र उक्तियों—फबतियों—का अनुसन्धान मात्र ही उद्देश्य हो जाता है। उर्दू के कवियों में अधिकतर यही बात है, कहीं हृदय प्रधान, तो कहीं मस्तिष्क प्रधान।

बाज़ीगरी या मदारी का खेल करने में वास्तविक कवित्व का नाश हो जाता है। कहीं नारियल व शिव को स्तन बनाने में, बरफ़ को परकीया बनाने में, काशी में बाला का रूपक बांधने में या चार चार अर्थ ला देने में कविता रक्खी है! रसका परिपाक ही हमारा उद्देश्य है, उसका साधन ऊपर कह चुके हैं। इसकी परिपक्वावस्था में चञ्चल से चञ्चल मन गंभीर हो जाता है, वह ठहाका मार कर हँसता नहीं, छाती पीटकर हाय-हाय नहीं करता, वरन् बड़ी गंभीरतापूर्वक धीरे से मुंह खोलता है, वृद्धों की सी परिमित बातें करता है। बच्चा भी अधिक करुणा में बोलता नहीं, केवल आंसू बहाता है, मचलता नहीं, शान्त रहता है। ऐसे समय पर हृदय रस का अनुभव करता है, उसे बकबक करना, शान्ति भङ्ग करना अभीष्ट नहीं। जितना चाहिये उतना ही कहना एक बड़ी भारी बात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है—जो केवल प्राकृत कवियों के ही पल्ले पड़ी है, सब के नहीं। यह हो सकता है केवल मस्तिष्क और हृदय के तारतम्य की अवस्था में, जब रस का परिपाक हो।

कविता और विज्ञान दो भिन्न-भिन्न वस्तुएं अवश्य हैं, पर जैसा लोग समझते हैं इनमें विरोध कोई भी नहीं है। मेरी धारणा है कि एक प्रकृत कवि यदि विज्ञान में दक्ष हो तो वह ऐसी करामात दिखा सकता है, कविता में कुछ ऐसी नई जान फूक सकता है कि संसार थकित लोचनों से उसको देखता ही रह जाय। इस विषय पर मैं किसी स्वतंत्र निबन्ध द्वारा अपने विचार प्रकट करूंगा।

यह ठीक है कि आजकल हिन्दी-कवि कहाने योग्य कदाचित् कोई भी नहीं है, पर इस विषय में एक बात कह देना उचित प्रतीत होता है। किसी भी कवि-नामधारी के पास जब मैं जाता हूं तब वह लगता है आजकल के कवियों की भर्त्सना करने। सब के सब हिन्दी की कविता की बाढ़ से ऊबे हुए हैं—केवल अपनी कविता से, जिसका भाग उस बाढ़ में अवश्य है, नहीं ऊबे हुए हैं। जब दो चार सिद्धहस्त कवि बैठ कर शेष सब कवियों को फटकारने लगते हैं तो मुझे हँसी आती है। वे भूल जाते हैं कि उनकी अधिकांश बातें अधिकांश में उन्हीं पर लागू हैं। मैं जहां तक समझता हूं, यह बाढ़—वह चाहे जैसी हो—असन्तोष का कारण नहीं। जैसे अब तक के खड़ी बोली के बड़े कवियों ने अब के नवयुवक कवियों के लिये सीढ़ियाँ बनाईं—बालिका खड़ीबोली को खिला-खिला कर बड़ा किया—वैसे ही अब के कवि भी भावी महाकवियों के लिये पथ-शोधन मात्र कर रहे हैं। इस बाढ़ से ही हिन्दी-कविता आगे बढ़ेगी।

आजकल कुछ नई प्रतिभाएँ ऐसी दीख पड़ती हैं, जो कदाचित् आगे कुछ कर दिखावें। खड़ीबोली में विश्व-साहित्य का निर्माण अभी बहुत दूर है, पर उसकी क्षीण झलक दीख पड़ने लगी है। पर इस निर्माण के मार्ग में कांटे भी बहुत हैं। हिन्दी पढ़े-लिखे लोग अधिकांश में विश्व-साहित्य निर्माण करनेवाली कविता का मूल्य नहीं समझते। वे बहुत समझते हैं तो नायक-नायिका-भेद पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फुटकर लच्छेदार कवित्तों पर उछल पड़ते हैं, जिन्हें विश्व-साहित्य अपने से बाहर ठुकराने के सिवा और कुछ कर नहीं सकता। नई प्रतिभाएं जो सृष्टि करती हैं उनको बूढ़े कवि अवश्य ही संदिग्ध दृष्टि से देखेंगे। ऐसे परिवर्तन-काल में तो यह भी होता है कि वृद्ध-समुदाय युवकों की कृति में विशेषता देख कर समझता है कि ये छोकरे इतना अच्छा लिख कैसे सकते हैं, अवश्य इनकी कृतियां त्रुटिपूर्ण होंगी! यह सोचकर जहां वे ग़लतियां निकालने पर ही कटिबद्ध हो गये तो ग़लतियों का मिलना क्या कठिन है? पिंगल का उल्लंघन किया—पिंगल की मर्यादा नहीं रख सकते तो पिंगल कोही दोषी ठहराते हैं—रस अलंकार कुछ नहीं जानते, रबर छंद में लिखते हैं, उक्ति से भेंट नहीं है। हंसा लेने से, रुला लेने से, रस सञ्चार कर सकने से ही क्या लाभ, जब कविता पिंगलसंबन्धी दोषों से मुक्त नहीं है? अलंकार कविता में ठूँस दिये, पर एक अलंकार का भी नाम नहीं मालूम! हमसे मधुर भाषा लिखते हैं! तुक जोड़ते बनता ही नहीं, छाँटते हैं संस्कृत, तब भी हिन्दी के कवि हैं! इतना निश्चय है कि आप स्वयं जब केवल साधारण बातों को उससे अधिक क्लिष्ट भाषा में कहते हैं तब उसमें कोई नई बात आ जाती है—भाषा की साधुता और प्राञ्जलता सराहनीय हो जाती है—तुक गौण हो जाता है।

इस 'प्राप्ति-स्वीकार' में यह उलाहना है कि अमुक-अमुक कवियों को कविता-कौमुदी में नहीं रक्खा गया। इस उलाहना की आवश्यकता नहीं। इसमें किसी का दोष भी नहीं। जब एक व्यक्ति कवियों का संग्रह कर रहा है, तो वह अपनी रुचि के अनुसार ही संग्रह करेगा। यदि संग्रहकार स्वयं भी कवि है तब तो उसकी रुचि और भी विशेषता से प्रधान होगी। यदि कोई दूसरा संग्रहकार होता तो वह कदाचित् इस संग्रहकार को ही छोड़ जाता, अपने संग्रह में स्थान न देता। ऐसी अवस्था में स्थान देना या न देना व्यक्तिगत रुचि पर ही निर्भर है—अतएव उसमें किसी के कुछ कहने-सुनने की जगह नहीं—किसी के दुखी होने की जगह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं। अभी तो न जाने कितनी कविता-कौमुदियां हिन्दी में बनेंगी, और न जाने कौन-कौन कवि उनमें न रक्खे जावेंगे। इन छोटी बातों की कहाँ तक परवाह की जावेगी ? हां, यदि साहित्य-सम्मेलन की ओर से निर्वाचित कोई समिति आधुनिक कवियों के इतिहास संकलन का कार्य करती होती, और वह कुछ होनहार कवियों की उपेक्षा करती तो कुछ कहने-सुनने की आवश्यकता थी।

इसके उपरान्त अभी तो यह संभव है कि हमारे सम्मान्य बड़े-बड़े कवियों और नवयुवक कवियों में साहित्यिक युद्ध छिड़े, क्योंकि दोनों दलों की धुन एक दूसरे से टकराती हुई दृष्टि आती है। संभव है कि वृद्ध-दल सचमुच ही युवक-दल का दिल दुखावे, उन्हें अनभिज्ञ और पागल कहकर कवियों की श्रेणी से बाहर रखना चाहे। नवीन दल के लिये ये सब बातें उपेक्षणीय हैं। वृद्ध-दल का साथ सम्पादक और समालोचक भी देंगे। यहां कौन माई का लाल है जो समालोचना की वर्णमाला पार कर चुका हो ! कोई ऐसी बड़ी पत्रिका भी दिखलाई देती है जिसका सम्पादक सम्पादन-पद का अधिकारी हो ? फिर इनकी बातें ही क्या होंगी जिन पर ध्यान दिया जाय ? नवीन दल का कार्य इतना महान् है कि ऐसी तुच्छ बातों की ओर ध्यान देने का उसे अवकाश ही नहीं। उसे तो अपने मार्ग पर बढ़ते ही जाना चाहिये, कान बन्द रखना चाहिये। बिना कटु आलोचना का पात्र हुए भला कोई वड़्सवर्थ हो सकता है ? आप किसान की झोपड़ी में बैठ कर उसको अपनी कविता सुनाइये। यदि वह हँस दे या रो दे तो आपकी कविता का जन्म सफल और आपका भी ! बड़ों के साहित्य-भवनों को एक ओर पड़ा रहने दीजिये। बड़ों के लिये कविता हो चुकी, अब छोटों के लिये होगी।

हमारा हृदय इन क्षुद्र अड़चनों पर रो नहीं सकता। वह द्विगुण उत्साह ही धारण कर सकता है। ऐसी बातों से सुमन को हिम-विन्दु से प्रफुल्लित होना चाहिए, आंसू नहीं भरना चाहिये। इसी अड़चन के सागर में सूर्यकान्त मणि होंगे, नवीन पुष्प खिलेंगे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और हमारे नयन खुलेंगे। जब हिन्दी-संसार के वृद्ध इन नये पौधों को साफ़ कर सकेंगे तब हिन्दी—खड़ीबोली—का साहित्य ही हलाल हो जावेगा। यदि खड़ीबोली की बाढ़ रोकी गई, तो उसकी मृत्यु ही निश्चित है। किन्तु इन सब बातों की आशंका ही कहां है। खड़ीबोली को किशोर वाक्य प्रदान करनेवाले नवीन दल की कीर्त्ति-पताका भारतवर्ष में फहरावेगी।

भ्रमर गीत

(श्रीयुत पं० मदनलाल चतुर्वेदी)

भौंरा, अजहूँ लै हरि नाउँ।
जाने कौन बखत चलि दीजै, ना रहनो या गाँउ॥

(२)

क्रीड़ा कौल-कोष में छिपिबो औ करिबो रस-पान।
भूमि भूमि मालती कुञ्ज में संभव नहिं फिर गान॥
भौंरा अजहूँ लै हरि नाउँ।

(३)

उमगँ रितु प्रसून जोवन की दिन द्वै को महमान।
नैन उघारि नैक लखु आगे, ताने काल कमान॥
भौंरा अजहूँ लै हरि नाउँ।

(४)

बौरे जनि अलि मत्त बावरे, नहिँ रहि है सुख तौर।
ठाँउ न रहैं साँझ-बदरा ज्यों छिनै और छिन और॥
भौंरा अजहूँ लै हरि नाउँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अश्वघोषका बुद्धचरित

(श्रीयुत पंडित ठाकुरदत्त मिश्र)

अश्वघोष-रचित बुद्धचरित नामक संस्कृतभाषा का एक प्राचीन महाकाव्य है। खेद की बात है कि इस देश के पण्डित-समाज में इस ग्रन्थ का प्रचार नहीं है। अधिक दुःख तो इस बात का है कि इसकी शुद्ध तथा सम्पूर्ण प्रति का आविष्कार आज तक नहीं हो सका। केवल इ० वि० काउल साहेब द्वारा सम्पादित संस्करण ही हम लोगों का एक मात्र अवलम्बन है। यह नैपाल में प्राप्त हस्तलिखित ग्रन्थ के आधार पर प्रकाशित हुआ है। कई कारणों से इस ग्रन्थ के प्रथम सर्ग का अंश अन्य कवि की रचना कहा जा सकता है, तथा चतुर्दश सर्ग के अन्तिम भाग से सप्तदश सर्ग पर्यन्त अमृतानन्द नामक किसी अन्य लेखक द्वारा मिलाया गया है। इस बात को ग्रन्थ के अन्त में उक्त लेखक महोदय ने स्वयं स्वीकार किया है, परन्तु यह अंश निर्दोष भाषा में नहीं लिखा गया है। छन्द सम्बंधी दोषों के अतिरिक्त व्याकरण की अशुद्धियाँ भी यथेष्ट परिमाण में पाई जाती हैं। इस प्रकार आदि तथा अन्त में खण्डित होने के कारण मूल ग्रन्थ की रचना हृदय-ग्राहिणी होने पर भी उसके अनेक स्थल अस्पष्ट तथा वास्तविक पाठ के विकारों का परिचय देते हैं। सम्पादक महोदय ने यथाशक्ति प्रयत्न करने में लेशमात्र भी त्रुटि नहीं की, परन्तु तो भी अनेक स्थलों पर मूल ग्रन्थ के पाठ उद्धृत नहीं कर सके इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है। इस प्रकार प्राप्त ग्रन्थ में अनेक त्रुटियाँ होने पर भी कई कारणों से यह पण्डित-समाज की आलोचना तथा आदर के योग्य है। यह महाकाव्य भगवान् बुद्धदेव के चरित के आधार पर रचा गया है। इसकी कविताओं में महाकवि बाल्मीकि तथा कालिदास के काव्यों की भाषा तथा भावों की छाया कई स्थलों पर दिखाई पड़ती है। इस ग्रन्थ में शान्त रस प्रधान है, और इसके सहायक अन्यान्यरसों की भी अवता-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रणा की गई है। इस काव्य के अध्ययन में साहित्यिक, ऐतिहासिक तथा दार्शनिक प्रायः सभी व्यक्तियों का मनोविनोद हो सकता है।

महाकवि अश्वघोष कनिष्क के समकालीन थे, अतएव पुरातत्व-वेत्ताओं ने इन्हें ईसा की पहली शताब्दी का कवि माना है। महाकवि कालिदास का समय निश्चित करते समय अनेक विद्वानों ने स्थान स्थान पर अश्वघोष के काव्य के साथ उनकी कविताओं की समालोचना की है। कोई-कोई तो कालिदास को इनका पूर्ववर्ती और कोई परवर्ती मानते हैं। इन दोनों महाकवियों की कविताओं पर गम्भीर विचार करने से यह भली भाँति ज्ञात होता है कि इनमें से एक ने अवश्य दूसरे का अनुकरण किया है। कालिदास के समय-निरूपण के सम्बन्ध में पुरातत्ववेत्ताओं में बड़ा मतभेद है। कुछ लोग तो इन्हें ईसा का पूर्ववर्ती, तथा कुछ लोग प्रथम या द्वितीय शताब्दी का मानते हैं। और कुछ लोगों का कथन है कि ये ईसा की पाँचवीं या छठवीं शताब्दी में हुए थे। प्रायः सभी ने अपने-अपने मत के समर्थन का यथेष्ट प्रयत्न किया है, फलतः भारत के अद्वितीय कवि कालिदास का समय आज तक भी सर्वसम्मति से स्थिर नहीं किया जा सका। जिन लोगों का मत यह है कि महाकवि कालिदास ईसा से पूर्व हुए थे उनके अनुसार अश्वघोष ने इनका अनुकरण किया है, और जो लोग उक्त महाकवि को पाँचवीं या छठीं शताब्दी का बतलाते हैं उनके अनुसार इन्होंने ही अश्वघोष की छाया ग्रहण की है। काउल साहेब ने अपने सम्पादित बुद्धचरित की भूमिका में अश्वघोष तथा कालिदास के भावों की समता अनेक स्थानोंपर दिखलाई है। अश्वघोष के सम्बन्ध में उनका कथन है कि ये ही कालिदास की कवित्व-प्रभा के प्रवर्तक हैं। कुमार का दर्शन प्राप्त होने पर नगर की रमणियों की व्याकुलता का वर्णन बुद्ध चरित के तृतीय सर्ग के १७-२३वें श्लोक में जिस भाव से किया गया है उसके साथ "रघुवंश" के सप्तम सर्ग के ५-१२वें श्लोक तथा "कुमार सम्भव" के सप्तम सर्ग के समान अनेक श्लोकों की तुलना की जा सकती है। इन अंशों को पढ़ने से प्रायः प्रत्येक व्यक्ति समझ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकता है कि इन दोनों महाकवियों में से एकने अवश्य दूसरे की छाया ग्रहण की है। किसने किसका अनुकरण किया है इस विषय में जो मतभेद है उसका उल्लेख पहले ही किया जा चुका है।

अश्वघोष की भाषा कालिदास की भाषा के समान मधुर तथा परिमार्जित न होने पर भी सरल तथा स्वाभाविक सौन्दर्य से भूषित है। कालिदास के काव्यों के समान बुद्धचरित काव्य प्रायः अलङ्कारों द्वारा सुसज्जित नहीं है। केवल भाषा ही की ओर दृष्टिपात करने से इसकी प्राचीनता सिद्ध की जा सकती है। भाषा तथा भाव अनेक स्थलों में रामायण के ही अनुसार सरल तथा हृदयग्राही हैं। यथाः—

"नावजानामि विषयाञ्जाने लोकं तदात्मकम्।
अनित्यं तु जगन्मत्वा नात्र मे रमते मनः॥
जराव्याधिश्च मृत्युश्च यदि न स्यादिदं भयम्।
ममापिहि मनोज्ञेषु विषयेषु रतिर्भवेद्॥ ४ स० ४५, ४६
अशुचिर्विकृतश्च जीवलोके वनितानामयमीदृशः स्वभावः।
वसनाभरणैस्तुवञ्च्यमानः पुरुषः स्त्री विषयेषु रागमेति। ४८
भोजनस्य फलस्थस्य न स्यादभिमुखोजनः।
जनी भवति भूयिष्ठं स्वजनोऽपि विपर्य्यये॥
कुलार्थं धार्यते पुत्रः पोषार्थं सेव्यते पिता।
आशयाश्लिष्यति जगन्नास्ति (?) निष्कणास्वता॥ ६–६, १६
त्यज नरवर शोकंमेहि धैर्य्यं कुधृतिरिवार्हसि धीरनाश्रु भोक्तुम्।
स्रजमिवमृदितमपास्यलक्ष्मीं भुवि बहवोहिनृपा वनान्यभीयः॥ ८—४७
समुद्रवस्त्रामपि गामवाप्य पारं जिगीषन्ति महार्णवस्य।
लोकस्यकामैर्न वितृप्तिरस्ति पश्यद्भिरम्भोरिवार्णवस्य (?)॥ ११ स० १२॥

इसी प्रकार और भी बहुत से श्लोक उद्धृत किये जा सकते हैं। करुणारस की अवतारणा में भी अश्वघोष सिद्धहस्त थे। बुद्ध चरित के अष्टम सर्ग में उनकी इस शक्ति का यथेष्ट परिचय प्राप्त होता है। कुमार को बन में छोड़ कर नेत्रों में जल भरे हुए जब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छन्दक लौट आया, उसके प्रति यशोधरा की करुणरस से भरी हुई कटूक्तियाँ कैसी स्वाभाविक हैं!

अनार्यमस्निग्धममित्र कर्म मे नृशंसकृत्वाकिमिहाद्यरोदिषि।
नियच्छ वाष्पं तव तुष्ट मानसो न संवदत्यश्रुचतच्च कर्म ते॥
वरं मनुष्यस्य विचक्षणोरिपुर्न मित्रमप्राज्ञमयोग पेशनम्।
सुहृद्ब्रुवेण ह्यविपश्चिता त्वया कृतः कुलस्यास्य महानुपप्लवः॥

यशोधरा का विलाप भी बड़ा ही मर्मवेधी है। यथा:—

"अभागिनी यद्यह मायतेक्षणं शुचिस्मितं भर्तु रुदीक्षणं मुखम्।
समन्द भाग्योऽर्हति वाहुलोऽप्ययं कदाचिदङ्के परिवर्तितं पितुः॥"

बुद्धचरित में काव्य की सुन्दरता का अभाव नहीं है। इस काव्य का बारहवाँ सर्ग दार्शनिक आलोचना के कारण कुछ जटिल सा है, किन्तु इसके अतिरिक्त अन्यान्य स्थानों पर दार्शनिक विचार भी सरल भाषा में ही व्यक्त किये गये हैं।

महाकवि कालिदास कवित्व तथा रचना-चातुर्य में अश्वघोषकी अपेक्षा कहीं बढ़ कर हैं। वास्तव में, केवल भाषा सम्बन्धी तुलना के द्वारा ही कवियों की लघुता तथा गुरुता का निर्णय नहीं किया जा सकता, अतएव कुछ अन्य प्रबल प्रमाणों के द्वारा अश्वघोष की रचना कालिदास के आधार पर समझी जा सकती है। बंगाल के सुप्रसिद्ध विद्वान् श्रीयुत सारदारञ्जन राय ने अपनी सम्पादित "शकुन्तला" की भूमिका में अश्वघोष को कालिदास का परवर्ती निर्णीत किया है। समालोचना के प्रसङ्ग में उन्होंने बुद्धचरित के प्रथम सर्ग के प्रथमांश से—

"भूभृत्पराध्योऽपि सपक्ष एव प्रवृत्तदानोऽपि सदानुपेतः।"

यह अंश उद्धृत करके कहा है कि इस प्रकार की श्लेषयुक्त रचना उत्तर काल में प्रचलित हुई है। कालिदास के पहले इस प्रकार की रचना की सम्भावना नहीं की जा सकती। मेरा भी इस विषय में यही अनुमान है। किन्तु यह पद्य अश्वघोष का लिखा हुआ नहीं है। काउल साहेब ने स्वयं निर्दिष्ट किया है कि प्रथम सर्ग के आदि के २४ श्लोक तिब्बती और चीनी भाषा के अनुवाद से ज़रा भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं मिलते, इसके अतिरिक्त इस भाग में बुद्धचरित के मूल भाग की सी भाषा भी नहीं है ? इस अंश में आधुनिक प्रथा के अनुसार कवित्व शक्ति दिखलाने की भी भलीभाँति चेष्टा की गई है। इस अंश में, "दशकुमार-चरित" की पूर्व पीठिका के समान, दूसरे का मिलाया हुआ सा अंश समझने के अनेक कारण हैं।

प्रथम सर्ग के प्रथम श्लोक में जो कुछ प्रक्षिप्तांश पाया जाता है वह भी परवर्ती काल की योजना का फल है। इस अंश के द्वारा अश्वघोष की आपेक्षिक प्राचीनता सिद्ध होती है।

कालिदास कभी कभी आमन्त भाग में, (जिन धातुओं के लिट् लकार में आम् लगा कर कृ, अस् तथा भू धातुओं के प्रयोग किये जाते हैं) "आम्" तथा "चकार" इत्यादि अनु प्रयोगों का व्यवधान रखकर क्रिया पद लिखते थे। यथाः—

"तम्पातयाम्प्रथम मास पपात पश्चात्" "संयोजयां विधिवदास समेत बन्धुः।" अश्वघोष ने भी इसी प्रकार "संवर्धयामात्मजव· द्बभूव" लिखा है। इन्द्रध्वज के साथ उपमा दोनों कवियों ने दी है। आदिकवि वाल्मीकि, व्यास तथा भास के दोनों ऋणी हैं।

यहाँ यह बतला देना आवश्यक प्रतीत होता है कि महाकवि कालिदास ने पूर्व कवियों की केवल छाया ही ग्रहण की है इस प्रकार का स्पष्ट अनुकरण प्रायः किसी स्थानपर नहीं किया। इस विषय में काव्यमीमांसा नामक ग्रन्थ के प्रणेता राजशेखर ने लिखा है।

"नास्त्यचौरः कविजनो नास्त्यचौरो वणिग्जनः।
सनन्दति विनावाच्यं यो जानाति निगूहितुम् ॥"

पाठक वृन्द ! अब हम बुद्धचरित के कामविजय के दो स्थलों की आलोचना करेंगे। महाकवि अश्वघोष ने त्रयोदश सर्ग के सोलहवें श्लोक के आदि के अर्द्ध भाग में लिखा है—

"शैलेन्द्र पुत्रीं प्रति येन विद्धो देवोऽपि शम्भुश्चलितो बभूव।"
इसे देखने से अनुमान होता है कि अश्वघोष ने "कुमार सम्भव"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवश्य देखा था। पार्वतीजी के उद्देश्य से महादेवजी का काम का बाणों द्वारा भेदन करने का किसी भी रामायण-महाभारत इत्यादि ग्रन्थ में स्पष्ट उल्लेख नहीं पाया जाता। कामदेव ने महादेवजी की चित्त-वृत्ति विकृत कर दी थी, अतएव उन्होंने क्रुद्ध हो कर हुङ्कार से ही काम को भस्म कर दिया था, यह उपाख्यान रामायण के एक स्थल में बहुत संक्षिप्त रूप में है, उसीको बढ़ा कर महाकवि कालिदास ने कुमारसम्भव नामक महाकाव्य में मदन-दाह की अपूर्व अवतारणा की है। बुद्धचरित में एक श्लोक है—

"कश्चित्ततो रौद्र विष्टत्त दृष्टिस्तस्मै गदायुद्धमयांचकारः।
तस्तम्भ बाहुः सगदस्ततोऽस्य पुरन्दरस्येव पुरा सवज्रम् ॥"
२३ स० ३७ श्लोक।

इस पद्य का चतुर्थ पाद पढ़ने से ज्ञात होता है कि कवि ने अवश्य रघुवंश के द्वितीय सर्ग का "जड़ी कृतस्त्र्यम्बक वीक्षणेन वज्रं मुमुक्षन्निव बज्रपाणिः" यह अंश देख कर ऐसी उपमा का उपयोग किया है। यदि यह कहा जाय कि महाभारत के द्रोणपर्व में के संक्षिप्त उपाख्यान के आधार पर इस उपमा का प्रयोग किया गया है तो कालिदास ने ही सब से पहले "त्र्यम्बकवीक्षणेन" पद के द्वारा उसे आलोकित किया है। अश्वघोष का "पुरन्दरस्येव पुरासबज्रः" पढ़ कर महाभारत के उस अप्रसिद्ध उपाख्यान की ओर साधारण पाठकों की दृष्टि नहीं पड़ सकती। मेरा तो जहाँ तक अनुमान है, सब से पहले कालिदास ने ही अपनी उपमा के द्वारा उस उपाख्यान का सर्वसाधारण को परिचय दिया था। अतएव अश्वघोष ने उसकी ओर ज़रासा सङ्केत कर देना ही पर्याप्त समझा। आशा है कि, पण्डित-समाज अश्वघोष तथा कालिदास के सम्बन्ध में कुछ निर्णय करता हुआ मेरी इन बातों पर भी एक बार ध्यान देगा।*

---

* अध्यापक हेमचन्द्र राय एम. ए. द्वारा लिखित बंगला लेख के आधार पर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी-प्रेमियों से दो दो बातें† !!

निबन्ध ! अरे निबन्ध कैसा ? निबन्ध तो मुझे लिखना आता नहीं ! और वह मुझ से निबन्ध लिखने को कहते हैं। बात यह कैसी ठनी !—एक ही बन्धन दुखदायी होता है और यह निबन्ध तो दूना बन्धन है। यह कैसे बन्धन-प्रेमी हैं कि दूसरों को भी फांसना चाहते हैं। नहीं जी ! हम तो स्वतन्त्रता-प्रेमी हैं। हम तो आप के बंधन में पड़ कर निबन्ध नहीं लिखेंगे। हम तो यहां अपने प्रिय हिन्दी-प्रेमियों से दो दो बात ही कहेंगे।

हिन्दी-प्रेमियो ! मैं आप से पूछता हूं कि आप हिन्दी-प्रेमी क्यों हैं ? क्या आप हिन्दी के मुख पर मोहित हो गए हैं ? क्या आप हिन्दी के प्रेम में उन्मत्त हो गए हैं ? यदि आप केवल सिड़ी हैं तो हम आप से एक बात भी करने को तयार नहीं। पागलों से कौन सर मारे ! और यदि आप अपने वा मनुष्य-जाति के लाभार्थ, हिन्दी लिपि को उपयोगी समझ, हिन्दी-प्रेमी हैं तब तो आप बड़े आदरणीय महाशयगण हैं। क्षमा कीजिए, क्षमा कीजिए। मैंने आप के बड़प्पन का विचार नहीं किया। मस्ताना राग अलाप दिया। क्षमा कीजिए ! अब शान्त भाव से कुछ निवेदन करूंगा। सच्चे ज्ञानी वा मनुष्य-जाति के शुभचिन्तक ! यह बड़े आनन्द की बात है आप मनुष्य-जाति की भलाई सोच कर एक ऐसी लिपि को फैलाने वा प्रचलित करने का उद्योग कर रहे हैं कि जिन अक्षरों में जो लिखा जाता है वह वैसा ही पढ़ा जाता है। सम्भव है कि हिन्दी अक्षरों को और भी कुछ घटा बढ़ा कर उत्तम बनाया जा सकता है।

परन्तु आज कल की समस्त प्रचलित लिपियों में बिना संदेह हिन्दी लिपि सब से उत्तम है। इस लिए हिन्दी लिपि का प्रचार वास्तव में मनुष्य-जाति सेवा है।

† पंजाब प्रांतीय प्रथम हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के मन्त्री श्रीजयचंद विद्यालंकार को यह पत्र काबुल से स्वनामधन्य राजा महेन्द्रप्रतापजी ने भेजा था।

—सम्पादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी प्रेमियों ! आप को भारतवर्ष में भी बहुत कार्य करना है। आप को भिन्न-भिन्न प्रान्तिक लिपियों के स्थान में हिन्दी-लिपि का व्यवहार करवाना है। इस कार्य को सफल बनाने और अधिक जन-संख्या की सहानुभूति प्राप्त करने के लिए आप को सब से पहले यह आवश्यक है कि आप श्री ग्रन्थ साहब को शीघ्र हिन्दी-लिपि में छपवा दें। फिर ऐसे-ऐसे महान् पुरुषों के वाक्यों वा रचनाओं को जैसे श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर अथवा तिलक महाराज के बंगाली वा मराठी लेखों को हिन्दी-अक्षरों में प्रकाशित करा दें। खूब रही ! दीपक के नीचे अंधेरा ! पञ्जाब की हिन्दी-सभा और हम पञ्जाब के प्रसिद्ध उर्दू कवि डाक्टर इक़बाल को ही भूल गए ! जी हां, इन की उर्दू शाइरी को भी हिन्दी-लिपि में छपवा डालें।

हिन्दी-प्रेमियो ! वह मेरे मन की बात तो रह ही गई। मैं चाहता हूं कि यह हिन्दी-अक्षर तुर्की वा अरब से लेकर चीन जापान तक तो अवश्य ही शीघ्र प्रचलित हो जावें। इस कार्य को भी अपने आप ही करना होगा। यह इतना कठिन नहीं जितना कि आप को प्रतीत होता है। हां, यदि आप केवल कपोल-प्रेमी हैं। अच्छे रहे ! महावरा बिगड़ गया। यदि आप केवल गाल बजाना ही जानते हैं तब तो कुछ न होगा, सब कुछ कठिन है। परन्तु यदि आप वास्तव में हिन्दी-प्रेमी हैं तो शीघ्र प्रसिद्ध-प्रसिद्ध अरबी, तुर्की, ईरानी, अफ़ग़ानी, चीनी, जापानी वा स्यामी अक्षरों को हिन्दी-लिपि में छपवाने का उद्योग कीजिए। और प्रत्येक पुस्तक के आरम्भ में हिन्दी-अक्षर-बोध दूसरे देश की लिपियों के साथ साथ छपवा दें ताकि प्रत्येक देश-निवासी इस हिन्दी-अक्षर-बोध से हिन्दी-लिपि को दो-तीन दिन में सीख ले। और ऐसी पुस्तकें छपवा कर प्रत्येक देश के पण्डितों को भेंट कीजिये। पांच-दश लाख इस यज्ञ में भी स्वाहा कीजिए। आहुति का घी सुगन्ध उत्पन्न करेगा। हिन्दी-लिपि का प्रचार होगा वा अन्तर्जातीय मित्र भाव अवश्य बढ़ेगा।

प्रेमी महेन्द्र प्रताप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चन्द्रिका

(श्रीयुत 'ललन')

कर चन्द्र की प्यारी दुलारी सखी,
सिगरी बसुधा पै सुधा बरसावति।
थल पै बिहरै, उछलै जल में,
कल कामिनि-आनन को चमकावति॥
पर, पहो! धनी अभिमानी जनो!
तुम्हरे सम शेखी न व्यर्थ जनावति।
गगनाङ्गन में जो बिहार करै,
सोई चांदनी पङ्क को अङ्क लगावति॥

स्थायी समिति का चौथा अधिवेशन

स्थायी समिति का चौथा अधिवेशन मिति ज्येष्ठ शुक्ल ६ सं० १९८१ वि० तदनुसार ता० ८ जून सन् १९२४ ई० को हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन-कार्यालय, प्रयाग में ४॥ बजे निम्नलिखित सज्जनों की उपस्थिति में हुआ:-

१—श्री बाबू पुरुषोत्तमदासजी टण्डन
२— " पं० भागीरथ प्रसादजी दीक्षित
३— " पं० इन्द्रनारायणजी द्विवेदी
४— " पं० जगन्नाथ प्रसादजी शुक्ल
५— " पं० रामजीलालजी शर्मा
६— " चतुर्वेदी पं० द्वारिका प्रसादजी शर्मा
७— " अध्यापक पं० रामरत्नजी
८— " बाबू सङ्गमलालजी अग्रवाल
९— " प्रोफेसर ब्रजराजजी
१०- " पं० लक्ष्मी नारायणजी नागर
११- वियोगी हरिजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२—पिछले दो अधिवेशनों की कार्रवाई पढ़ी गई और सर्व-सम्मति से स्वीकृत हुई।

३—पं० रामनरेशजी त्रिपाठी प्रचारमन्त्री का, मि० बैशाख कृष्ण १० सं० १९८१ का, त्याग-पत्र पढ़ा गया, तदनन्तर उस पर प्रधानमंत्रीजी का वक्तव्य पढ़ा गया, तथा स्थायी समिति के सदस्यों के आए हुए निम्नलिखित पत्र पढ़े गए—

१—श्री पुत्तनलालजी विद्यार्थी
२— " नन्द कुमार देव शर्मा
३— " राजमणिजी त्रिपाठी
४— " चाँदकरणजी शारदा
५— " रामधारी प्रसाद सिंहजी
६— " हरिहर शर्माजी
७— " हृषीकेशजी शर्मा
८— " बालमुकुन्दजी त्रिपाठी
९— " गङ्गाप्रसादजी अग्निहोत्री

अन्त में, भली भाँति विचार होकर निश्चय हुआ कि पं० रामनरेशजी त्रिपाठी का, प्रचार मन्त्री के पद से, त्यागपत्र स्वीकार किया जाय। इस मन्तव्य के प्रतिकूल केवल एक ही सम्मति थी।

४—पं० जगन्नाथ प्रसादजी शुक्ल ने प्रस्ताव किया कि नवीन प्रचार मंत्री का चुनाव हो। साथ ही उक्त पद के लिए शुक्लजी ने पं० लक्ष्मीधरजी वाजपेयी का नाम उपस्थित किया, और वह स्वीकृत हुआ।

५—कार्यालय के लिए कार्यालय-भवन के उत्तरवाले बरण्डे में दो कमरे बनवाने के लिए २५०) दो सौ पचास रुपये स्वीकृत किए गए।

६—प्रधानमंत्री के प्रस्ताव करने पर नियमानुसार "मङ्गलाप्रसाद पारितोषिक" समिति का संगठन किया गया, और सर्वसम्मति से निम्नलिखित सज्जन उक्त समिति के सदस्य चुने गये—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१—श्री बाबू गोकुलचन्द्रजी
२— " बाबू पुरुषोत्तम दासजी टण्डन
३— " प्रो० ब्रजराजजी
४— " पं० रामजी लालजी शर्मा (संयोजक)
५— " पं० इन्द्र नारायणजी द्विवेदी

७—प्रधानमंत्रीजी द्वारा "संग्रहालय-समिति" के संगठन का प्रस्ताव उपस्थित होने पर निम्नलिखित सज्जनों की एक समिति बनाई गई :—

१—श्री सेठ जमुनालालजी बजाज, वर्धा
२— " बाबू शिवप्रसादजी गुप्त, काशी
३— " बाबू पुरुषोत्तम दासजी टण्डन, प्रयाग
४— " बाबू राजेन्द्र प्रसादजी, पटना
५— " पं० रामजी लालजी शर्मा (संयोजक), प्रयाग
६— " पं० जगन्नाथ प्रसादजी चतुर्वेदी, कलकत्ता
७— " पं० गौरीशङ्कर हीराचन्दजी ओझा, अजमेर

८—पं० नरदेवजी शास्त्री का पत्र व तार पढ़ा गया, जिसमें उन्होंने यह अधिकार मांगा था कि स्थानीय सुविधा के अनुसार वह सम्मेलन के पन्द्रहवें अधिवेशन को देहरादून अथवा हरिद्वार में कर सकें। विचार करने के बाद यह अधिकार पन्द्रहवें अधिवेशन की स्वागत-कारिणी-समिति को दिया गया। और पं० नरदेवजी शास्त्री के प्रस्तावानुसार पन्द्रहवें अधिवेशन के लिए कार्तिक शुक्ल ११, १२, १३ तिथियाँ स्वीकृत की गयीं।

(९) वृहत्संग्रहालय के लिए धन-संग्रह करने के विषय में विचार हुआ। निश्चय हुआ कि यह विषय संग्रहालय-समिति में विचारार्थ उपस्थित हो। साथ ही यह भी निश्चित हुआ कि विशेष कार्यों के लिए जो धन मांगा जाय उसके साथ ही सम्मेलन के ख़र्च के लिए भी अपील की जाय।

(१०) वियोगीहरिजी ने प्रस्ताव किया कि जिन महानुभावों ने साहित्य-सम्मेलन को एक कालीन ५०) या ५०) से अधिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्थिक सहायता दी हो उन्हें 'सम्मेलन-पत्रिका' बिना मूल्य दी जाय।

सर्व सम्मति से प्रस्ताव स्वीकृत हुआ और निश्चय हुआ कि नवीन वर्ष से इस मन्तव्य के अनुसार कार्य किया जाय।

(११) बाबू सङ्गमलालजी का वह पत्र, जिसमें उन्होंने 'प्रयाग-महिला-विद्यापीठ' के लिए सम्मेलन से आर्थिक सहायता मांगी थी, पढ़ा गया। निश्चय हुआ कि बाबू सङ्गमलालजी को लिख दिया जाय कि सम्मेलन को खेद है कि वह इस समय आर्थिक-कृच्छ्रता के कारण 'महिला-विद्यापीठ' को सहायता देने में असमर्थ है।

(१२) भूतपूर्व प्रबन्ध-लेखक मुं० गौरीशङ्करजी की फाइल पेश हुई। निश्चय हुआ कि प्रधानमंत्रीजी के मतानुसार मुं० गौरीशङ्करजी को प्राविडेंड फण्ड का पूरा रुपया दे दिया जाय।

सभापति को धन्यवाद देने के बाद अधिवेशन समाप्त किया गया।

रामजीलाल शर्म्मा
प्रधान मन्त्री

परीक्षा समिति की पहली बैठक

(चैत्र कृष्ण १०, सं० १९८०)

उपस्थिति—प्रो० गोपाल स्वरूपजी भार्गव, पं० रामजीलालजी शर्म्मा, पं० द्वारिका प्रसादजी चतुर्वेदी, पं० लक्ष्मीनारायणजी नागर, बाबू पुरुषोत्तमदासजी टण्डन।

१—सभापति का आसन श्रीगोपालस्वरूपजी भार्गव ने ग्रहण किया।

२—गत अधिवेशन का कार्य-विवरण पढ़ा गया और स्वीकृत हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३—विवरण-पत्रिका के नियम ६५ के अनुसार निम्नलिखित सज्जन परीक्षा-समिति के सदस्य चुने गये—

श्रीयुत पं० जगन्नाथप्रसादजी चतुर्वेदी, कलकत्ता.

श्रीयुत प्रो० ईश्वरी प्रसादजी शर्म्मा एम. ए., प्रयाग।

४—पं० राजमणिजी त्रिपाठी, गोरखपुर का पत्र पढ़ा गया और विचारोपरान्त उस पर निश्चय हुआ कि उनका प्रस्ताव नं० ५ आगामी बैठक में उपस्थित किया जाय, और शेष बातों का उत्तर उन्हें परीक्षा मंत्री दे दें।

५—श्रीजगन्नाथ प्रसादजी, विशारद काशीपुर की लिखी "योग" विषय पर सूची उपस्थित हुई, जो निम्नलिखित संशोधन के साथ स्वीकृत हुई—

"इस निबंध में आधुनिक योग सम्बन्धी बातों का भी समावेश होना चाहिये। लेखन-शैली आलोचनात्मक रहे।"

६—श्रीयुत रामभरोसेजी वाजपेई विशारद, गांधीस्कूल फ़र्रुख़ाबाद की "आत्मा" विषयक सूची उपस्थित हुई, और निश्चय हुआ कि "आत्मा के भिन्न-भिन्न सिद्धान्तों का समाज पर प्रभाव और भिन्न सिद्धान्तों के कारण मोक्ष का स्वरूप तथा आत्मा की अन्तिम गति आदि बातों पर भी दृष्टि रखते हुए निबन्ध लिखना चाहिए।"

७—नीचे लिखे हुए सज्जनों को परीक्षा में बैठने का अधिकार दिया गया :—

श्रीमहानन्द त्रिपाठी, श्रीजगदम्बाप्रसाद सिंह, श्रीलादूराम, श्रीसरजूदास, श्रीलेखराज, श्रीदेवीदत्त, श्रीश्रीदेवी, श्रीकन्हैयालाल, श्रीबासुदेव शरण अग्रवाल, श्रीबलवीर नारायण, श्रीटीकाराम शर्मा, श्रीकाशीराम शर्मा, श्रीहरनारायण व्यास, श्रीसदाशिव नाथूराम, श्रीरामकृष्ण सिंह शर्मा, श्रीदुर्गासिंह, श्रीकमला प्रसाद, श्रीज्वालाप्रसाद, श्रीराधामोहनप्रसाद सिंह, श्रीलखनलालसाहु, श्रीभगवती प्रसाद वाजपेयी, श्रीगंगाराम अध्यापक, श्रीदधिबलसिंह क्षत्रिय, श्रीरामदास तिवारी, श्रीसत्यनारायण भगत, श्रीरामचन्द्र गोपाल लोले, श्रीरामसखा शर्मा, श्रीरामरतनलाल, श्रीजगन्नाथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रसाद वर्मा, श्रीकृष्णानन्द त्रिपाठी, श्रीप्यारेलाल, श्रीहेरम्बदत्त शर्मा, श्रीविष्णुदत्त, श्रीसीताराम, श्रीरामाधीन त्रिवेदी (प्रचण्ड) श्रीशिवदयाल, श्रीकपिलेश्वर चौधरी, श्रीशिवरत्न काण्डू, श्रीरामनिरंजन पाण्डेय, श्रीचन्द्रनारायणसिंह, श्रीसूर्यनारायणसिंह, श्रीउपेन्द्रनारायणसिंह, श्रीगोवर्द्धनचन्दश्री शर्मा, श्रीरामशरण, श्रीशिवनन्दनप्रसाद, श्रीफ़क़ीरचन्द्र, श्रीबरजोर सिंह, श्रीगोपाल कृष्णव्यास चुरुवाला, श्रीभागवत शर्मा, श्रीकेदारधर, श्रीबेनीमाधवराम, श्रीचक्रधर त्रिपाठी, श्रीकामरूप शर्मा।

८—श्रीशंकर मुकुन्दराम दुबे, प्रथमा में अनुत्तीर्ण होने से, मध्यमा में नहीं बैठ सकते।

९—श्रीरत्नचन्द रस्तोगी को लिखा जावे कि शुल्क क्षमा करने का हमारे यहाँ कोई नियम नहीं है।

१०—परीक्षा मन्त्री ने प्रस्ताव उपस्थित किया कि कुछ दिन के लिए दो ऐसे प्रचारक रखें जावें, जो घूमकर परीक्षाओं का प्रचार करें।

निश्चय हुआ कि उपयुक्त पात्र मिलने पर रखें जांय, और परीक्षा मन्त्री स्वयं भी घूमकर यह कार्य करें तो बहुत अच्छा हो।

सभापतिजी को धन्यवाद दे कर सभा विसर्जित हुई।

रामरत्न
परीक्षामंत्री

परीक्षा समिति की दूसरी बैठक

बैशाख शुक्ला प्रतिपदा, संवत् १९८१

उपस्थिति—पं० जगन्नाथप्रसादजी शुक्ल वैद्य, पं० रामजीलालजी शर्म्मा, चतुर्वेदी पं० द्वारका प्रसादजी शर्म्मा, बाबू गंगाप्रसादजी, प्रोफेसर व्रजराजजी, पं० रामनरेशजी त्रिपाठी, बाबू पुरुषोत्तमदासजी टण्डन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१—श्री जगन्नाथप्रसादजी शुक्ल ने सभापति का आसन ग्रहण किया।

२—गत अधिवेशन का कार्य-विवरण पढ़ा गया, और सर्व-सम्मति से स्वीकृत हुआ।

३—उत्तमा के लिए आयी हुई निबंध-सूचियां विचारार्थ उपस्थित की गयीं, और उनपर निम्नलिखित आज्ञाएँ दी गईं—

परीक्षार्थी	विषय	आज्ञा
अ—श्री रघुबरदयाल मिश्र, इटावा	मानस-चन्द्रिका अर्थात् तुलसी और केशव	भाषा, शैली, भाव प्रकाशन पर विचार, दोनों कवियों के धार्मिक विचारों पर प्रकाश, इनको भी सूची में सम्मिलित। करके निबंध लिखिए।
आ—श्री शान्ति देवी फ़तहगढ़, फ़र्रुख़ाबाद	तुलसी और सूर की तुलनात्मक समालोचना	फिर से अध्ययन करके अगले वर्ष सूची भेजिए।
इ—श्रीचन्द्रशेखर शर्म्मा, प्रयाग	भागवत धर्म	सूची अधूरी है; विस्तृत होनी चाहिए; उन ग्रन्थों के नामों का भी उल्लेख हो जिनसे मसाला लिया जाय।
ई—कँवरलाल शर्म्मा छीपा बड़ौद (कोटा स्टेट)	(१) हिंदी-साहित्य-सिंहावलोकन	अस्वीकृत
	(२) रसराज-संग्रह	„
उ—श्रीधर विशारद फ़र्रुख़ाबाद	देव और विहारी	स्वीकृत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ङ—शम्भूदयाल सक्सेना, फर्रुखाबाद	रामचरितमानस और रामचन्द्रिका	स्वीकृत
क—जगपति चतुर्वेदी, प्रयाग	साहित्य-दुर्दशा	अस्वीकृत
ख—सर्वदेव तिवारी, मेहनगर, आजमगढ़	मलिक मुहम्मद जायसी	तीसरे अध्याय में पद्मावत और अखरावट की आलोचना, एक साथ न होकर, अलग अलग होनी चाहिए, पांचवां और छठा अध्याय एक साथ मिला देने चाहिये।
ग—गोकुलप्रसाद पाण्डेय, चूरू बीकानेर	हिन्दी-साहित्य	अस्वीकृत

४—मध्यमा में बैठने का अधिकार चाहनेवालों के प्रार्थना-पत्रों पर विचार किया गया। परीक्षार्थी श्रीशङ्कर मुकुन्दराव जी दुबे पुजारी को आज्ञा दी गई कि प्रथमा परीक्षा देकर तब मध्यमा में बैठिये।

परीक्षार्थी श्रीभृगुनाथजी मिश्र को आज्ञा हुई कि अपना प्रमाण पत्र उपस्थित कीजिये। परीक्षार्थी श्रीवैजनाथजी शर्म्मा को अधिकार नहीं दिया गया, उनकी प्रार्थना अस्वीकृत हुई। परीक्षार्थी श्रीमहादेवजी पाण्डेय को आज्ञा हुई, कि वे अपनी योग्यता का पूरा परिचय दें। परीक्षार्थी श्रीशिवचरण लालजी शर्मा की प्रार्थना अस्वीकृत हुई। इनके अतिरिक्त निम्नलिखित परीक्षार्थियों को मध्यमा परीक्षा देने का अधिकार दिया गया। श्रीरामनाथ, श्री विश्वनाथ मण्डल, पं० राजाराम ज्योतिषी, श्रीगोपालसिंह वर्मा,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीरतनचन्द रस्तोगी, श्रीशंकर मुकुन्दराय दुबे, श्रीलक्ष्मीदत्त शर्मा, श्रीबच्चनलाल सक्सैना, श्रीचन्द्रशेखर उपाध्याय, श्रीभृगुनाथ मिश्र, श्रीजगन्नाथदास, श्रीहरिवल्लभ शुक्ल, श्रीरामदत्त जोशी, श्रीसुरेश्वर पाठक, श्रीचन्द्रशेखरप्रसाद, श्रीवासुदेव झा, श्रीसूर्यनारायण, श्रीमानिकचंद गुप्त, श्रीचन्द्रदेव सिंह, श्रीमोतीलाल, श्रीभैरवलाल, श्रीरामदुलारे दुबे, श्रीओंकारनाथ शर्म्मा, श्रीरामनारायण मिश्र, श्रीदेवीप्रसाद माथुर, श्रीरामशकल सिंह शर्मा, श्रीप्यारेलाल करौली, श्रीरामलाल शर्मा, पाण्डेय श्रीअमृतलाल चतुर्वेदी ।

रामरत्न
परीक्षा मंत्री

प्रचार-समिति का प्रथम अधिवेशन

प्रचार-समिति का प्रथम अधिवेशन वृहस्पतिवार मिति ज्येष्ठ शुक्ल ३ सं० १९८१ [तदनुसार ५ जून १९२४] को सन्ध्या समय ५ बजे सम्मेलन-कार्यालय (प्रयाग) में निम्नलिखित सदस्यों की उपस्थिति में हुआ—

१—श्रीमान बाबू पुरुषोत्तमदासजी टण्डन
२— " प्रोफेसर ब्रजराजजी
३— " पं० रामजीलालजी, शर्मा
४— " पं० भगीरथ प्रसादजी दीक्षित ।

कार्य-विवरण

(१) सर्वसम्मति से श्रीपुरुषोत्तमदासजी टण्डन ने सभापति का आसन ग्रहण किया ।

(२) मद्रास की हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन-प्रचार-समिति के सदस्य श्री सुब्बारावजी का त्यागपत्र और उसीके सम्बन्ध में पं० हरिहर शर्मा का पत्र विचारार्थ प्रस्तुत हुआ । निश्चय हुआ कि श्री सुब्बारावजी, का त्यागपत्र स्वीकृत कर लिया जाय । साथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही यह समिति मद्रास-प्रचार-कार्यालय के व्यवस्थापक की कठिनाइयों का अनुभव करती हुई भी यह समझती है कि व्यवस्थापक के कुछ कार्य नियमानुकूल नहीं हुए, इसलिए यह उनका ध्यान नियमों की ओर आकर्षित कराती हुई आशा करती है कि भविष्य में वे नियमों के पालन में अधिक दृढ़ता दिखावेंगे।'

(३) कर्नाटक में हिन्दी-प्रचार करने पर विचार किया गया, और श्री रामभरोसे श्रीवास्तव तथा पं० हरिहर शर्मा के पत्र भी पढ़े गए। निश्चय हुआ कि 'इस विषय में पं० हरिहर शर्माजी और देश पाँडे श्री गङ्गाधर रावजी से पत्र भेज कर पूछा जाय कि उनकी सम्मति में कर्नाटक में किस प्रकार प्रचार-कार्य का प्रबन्ध किया जाय कि जिससे वहाँ राष्ट्र-भाषा का प्रचार शीघ्र हो सके। यह भी निश्चय हुआ कि उनका उत्तर आने पर वह पुनः प्रचार-समिति में निश्चयार्थ प्रस्तुत किया जाय।

(४) करौली राज्य में हिन्दी के प्रचार पर विचार उपस्थित हुआ। सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि यह समिति श्रीमान् महाराज करौली-नरेश का ध्यान 'दिल्ली-सम्मेलन' में स्वीकृत निम्नलिखित मन्तव्य की ओर आकर्षित करती हुई आशा करती है कि श्रीमान् करौली-नरेश अपनी अधिकांश हिन्दी जाननेवाली प्रजा के सुभीते के विचार से अपने राज्य के समस्त व्यावहारिक कार्यों में राष्ट्र-भाषा हिन्दी और राष्ट्र-लिपि देवनागरी का प्रयोग करने की आज्ञा प्रचलित कर दें, जिससे आपकी प्रजा को इस विषय में किसी प्रकार की असुविधा न रहे।

दिल्ली-सम्मेलन का तीसरा प्रस्ताव (ख)

'यह सम्मेलन हिन्दी-भाषा-भाषी समस्त राजा, महाराजा, जमींदार, तथा क़ानून-व्यवसायियों से अनुरोध करता है कि वे अपने प्रबन्ध, न्यायालय-सम्बन्धी लिखा-पढ़ी आदि कार्य हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि में किया करें।'

(५) आसाम में हिन्दी-प्रचार के कार्य पर विचार उपस्थित हुआ। निश्चय हुआ कि श्री टण्डनजी के पास जो आसाम के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रसिद्ध कार्यकर्ता श्री फूकनजी का पत्र आया है, उसके अनुसार उनकी सेवा में यहाँ से योग्य प्रचारक भेजने का प्रबन्ध श्रीप्रबन्धमंत्री जी शीघ्र कर दें जिससे आसाम में प्रचार का कार्य शीघ्र होने लगे।

(६) पं० भगीरथप्रसाद दीक्षित का वह पत्र उपस्थित हुआ जिसमें श्रीराजा महेन्द्रप्रतापजी के उस लेख की चर्चा थी जो उन्होंने अफ़गान में देवनागरी लिपि के प्रचार के सम्बन्ध में भारतीय पत्रों में प्रकाशित कराया था।

निश्चय हुआ कि इस विषय में श्री राजा महेन्द्रप्रतापजी से पत्र-व्यवहार करना चाहिए।

प्रधान मंत्रीजी ने मद्रास में प्रचार-कार्यालय के प्रबन्ध की देख-रेख करने और वहां की ठीक-ठीक व्यवस्था का विवरण प्राप्त करने की आवश्यकता प्रकट की।

निश्चय हुआ कि सम्मेलन के प्रबन्धमंत्री श्री पं० द्वारकाप्रसादजी चतुर्वेदी, कार्यालय से एक लेखक को साथ लेकर मद्रास में शीघ्र जांय, वहां की व्यवस्था डेढ़-दो मास भ्रमण करके जांचें और लौटकर अपनी आवश्यक रिपोर्ट यहां उपस्थित करें।

लक्ष्मीधर बाजपेयी
प्रचार मंत्री

कविवर पंडित विनायकराव

(श्रीयुत पंडित सूरजप्रसाद अवस्थी एम. ए.)

स्वर्गीय कवि नायकजी की अवस्था इस समय लगभग ६८-६९ वर्ष की थी। आपका जन्म पौष शुक्ला १०, सं० १९१२ को सागर में हुआ था। और मृत्यु जबलपुर में ज्येष्ठ शुक्ला १०, गुरुवार सं० १९८१ को हुई।

बचपन में ही पिता का स्वर्गवास हो जाने से आप की शिक्षा दीक्षा आदि का प्रबन्ध आप की माता को करना पड़ा था। आपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंगरेज़ी की एफ़. ए. परीक्षा पास की थी। यद्यपि आपको छात्रवृत्ति भी मिली थी, पर कई कारणों के आप आगे न पढ़ सके। आप की स्कूली शिक्षा का यहीं अन्त हो गया। आप सनाढ्य ब्राह्मण थे।

पढ़ाई का कार्य समाप्त कर आप ने २५) मासिक पर अंगरेज़ी स्कूल में शिक्षकी कर ली थी, और अपनी योग्यता, कार्यकुशलता, तत्परता एवं समय-सूचकता के सहारे आप २२२) मासिक की जगह तक पहुँच गए थे; यद्यपि स्वयं एफ़. ए. थे किन्तु इस प्रान्त के ट्रेनिंग इन्स्टीट्यूशन के प्रधान पद पर रह कई बी. ए. पास लोगों को आपने पढ़ाया था। अभिप्राय यह कि आपने शिक्षा-विभाग में बड़ी योग्यता से कार्य किया और अच्छा नाम कमाया।

स्वर्गीय कवि नायकजी को हिन्दीभाषा से बड़ा प्रेम था। यह प्रेम आप को कुछ तो स्वाभाविक ही था और कुछ अपनी व्यवसायात्मिका बुद्धि के कारण हो गया था। आपने अब तक कोई १६–२० पुस्तकें हिन्दी में लिखी हैं, जिनमेंसे बहुतसी तो आप ने शिक्षा-विभाग की प्रेरणा से ही प्रस्तुत की थीं जो इस प्रान्त की पाठशालाओं में बहुत समय तक पढ़ाई भी जाती रहीं और जिनके लिए आपको सरकार से पुरस्कार भी मिला, किन्तु रामायण की विनायकी टीका और काव्य-कुसुमाकर की रचना करके आप ने हिन्दी-संसार में जो स्थान प्राप्त किया वह विशेष गौरवास्पद है। आप के इन ग्रंथों की विद्वत्-समाज में खासी प्रतिष्ठा है। सर्वसाधारण भी विनायकी टीका को बड़े प्रेम से पढ़ते हैं। आज भारतवर्ष का विरला ही कोई प्रान्त होगा जहाँ रामायण की विनायकी टीका न पहुँच गई हो। मध्यप्रान्त और युक्तप्रान्त की तो बात ही क्या, बंगाल, मद्रास, बम्बई, गुजरात, पंजाब एवं सीमान्त प्रदेश में भी विजय-वैजयन्ती फहराती हुई वह सुदूर आफ्रिका, इटली, इजिप्ट, जर्मनी तथा अमेरिका तक जा पहुँची है।

आपने यद्यपि फुटकर लेख नहीं लिखे, इसलिए समाचार पत्रों के पाठक भले ही आप से परिचित न हों, तथापि आप ने अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय में, इस प्रान्त में, हिन्दी के उत्कर्ष के लिए जो कुछ किया है वह औरों से किसी प्रकार कम नहीं है। जिस प्रकार आप गद्य-पद्य लिखने में सुचतुर थे, उसी प्रकार सभा-समाजों में भाषण देने का भी आप को अच्छा अभ्यास था। सरकारी नौकरी करते हुए भी आप साहित्यिक सभा-समाजोंमें निर्भीकता के साथ अवश्य भाग लिया करते थे। जबलपुर में ऐसी कोई सभा या ऐसा कोई समाज न होगा जिससे आप का सम्बन्ध न हो, और जिसकी बैठकों या अधिवेशनों में उपस्थित होकर आप भाषण न देते रहे हों। स्थानीय कवि-समाज के तो आप अध्यक्ष ही थे। मध्यप्रान्तीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन और सम्मेलन-पुस्तकालय के संचालकों में से थे। राष्ट्रीय हिन्दी-मंदिर के साथ भी आप का घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। काशी की नागरी-प्रचारिणी-सभा के आप स्थायी सदस्यों में से थे।

यद्यपि इधर वृद्धापकाल में आँखों की ज्योति कम हो जानेसे पठन-पाठन के कार्य में रुकावट आ गई थी, तथापि आप बराबर साहित्य-सेवा के कार्य में लगे रहते थे। कई लेखकों की छोटी-मोटी कृतियों को आपने अपनी ओर से प्रकाशित कराकर उन्हें उत्साहित किया था। देशहितकर कार्यों में भी आप बराबर भाग लेते और उन्हें सामर्थ्यानुरूप आर्थिक सहायता भी दिया करते थे। शिक्षा-प्रसार के आप बड़े पक्षपाती थे। स्थानीय म्युनिसिपल शिक्षासंघ तथा हितकारिणी हाईस्कूल की प्रबन्ध-समिति के आप अन्त तक सदस्य रहे। इतना ही नहीं, सन् १९२०-२१ में जब स्थान-स्थान पर नये-नये विद्यालय स्थापित हो रहे थे, तब जबलपुर में भी बाबू नाथूरामजी मोदी के प्रयत्न से "तिलक महाविद्यालय" की स्थापना हुई थी, यद्यपि यह विद्यालय कई अनिवार्य कारणवश चिरस्थायी न हो सका। यदि चिरस्थायी हो जाता तो जबलपुर में अपने ढंग की वह एकही संस्था होती। अस्तु, स्वर्गीय पंडितजी उक्त विद्यालय को भी अपने अनुभवका लाभ देने के लिए सदा प्रस्तुत रहा करते थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिस प्रकार आप को साहित्य-चर्चा से प्रेम था, और अंगरेज़ी हिन्दी के अतिरिक्त संस्कृत, मराठी एवं उर्दू भाषा में आपने योग्यता प्राप्त कर ली थी उसी प्रकार संगीत का भी आप को अच्छा अभ्यास था। तबला आदि बाजों के बजाने में आप सुनिपुण थे। चित्रकला और फ़ोटोग्राफी में भी आपने निपुणता प्राप्त की थी।

स्वभाव आपका बड़ा सरल, मिलनसार और विनोदी था। इस गुण के कारण आपके स्थान पर पंडित-मंडली का बहुधा जमघट जमा ही रहा करता था, और किसी न किसी विषय पर वादानुवाद हुआ करता था। आप के न रहने से शहर में अब ऐसा दूसरा स्थान नहीं रह गया, जहाँ लोग इस तरह स्वच्छन्दरूप से एकत्र हो अपने इच्छित विषयों पर चर्चा करते और सन्देह निवारण कर सन्तुष्ट होते। हाज़िर जवाबी की मात्रा भी आप में ख़ूब थी।

आप के काव्य-ज्ञान पर मुग्ध हो स्थानीय "भानुकवि-समाज" ने आपको 'कविनायक' की पदवीसे विभूषित किया था। साहित्य-ज्ञान पर प्रसन्न हो "सनातनधर्म-महामण्डल" ने 'साहित्य-भूषण' की पदवी प्रदान कर आपको सम्मानित किया था। मध्यप्रान्तीय "बरार-कवि-सम्मेलन" के प्रथम अधिवेशन के आप अध्यक्ष चुने गये थे। उस समय का आप का भाषण कवि-जनोचित सहृदयता से भरा हुआ था। खेद है, स्वागत-समिति की अकर्मण्यता के कारण वह अब अप्राप्य हो रहा है।

आप के वियोग से इस प्रान्त में साहित्य-क्षेत्र की बड़ी क्षति हुई है। आप की मृत्यु से मध्यप्रान्त का एक रत्न खो गया। परमात्मा आप की आत्मा को मोक्ष, और दुःखी कुटुम्बियों को दुःख सहन करने की सामर्थ्य प्रदान करे। हम पंडितजी के दुःखी कुटुम्बियों के साथ अपनी हार्दिक समवेदना प्रकट करते हैं। आशा है, उनके सुपुत्र बाबू रामप्रसादजी बी. ए. 'योग्य पिता की योग्य सन्तान' वाली कहावत चरितार्थ करेंगे और अपने कार्यों से स्वर्गीय पंडितजी की उज्ज्वल कीर्तिध्वजा को और भी ऊँचा उठावेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कविनायक विनायकरावजी का स्वर्गवास !!

सुप्रसिद्ध साहित्य-सेवी विद्या-वयोवृद्ध पंडित विनायकरावजी का, अभी हाल में, स्वर्गवास हो गया है। पंडितजी के इस अचानक वियोग से प्रत्येक हिन्दी-भाषा-सेवी, विशेषतः रामचरितमानस रसिक, का हृदय विदीर्ण हो रहा है। पंडितजी ने रामचरितमानस की विवेचनामयी सारगर्भा सुललित विस्तृत टीका लिख कर हिन्दी-संसार की कितनी भारी सेवा की है यह किसी सहृदय सज्जन से छिपा नहीं। अत्युक्ति न होगी यदि हम यह कहें कि पंडितजी का समस्त जीवन रामचरितमानसमय था। आपके टीका की छाप है। कविता-रत्नों के आप एक ऊँचे जौहरी थे। कठिन से कठिन काव्य-भेदों का सुलझा देना आपके बाएँ हाथ का खेल था। इसके अतिरिक्त आपका जीवन बड़ा ही सरल, भक्तिपूर्ण, शान्त और शिक्षाप्रद था। सच बात तो यह है कि आप साहित्य-मंडल में अपना एक खास स्थान रखते थे।

आपकी तरह प्रशान्त, उदात्त, राम-पद-पद्म-पराग-चंचरीक, मानस-विहारी मराल हमें तो नहीं दिखाई दे रहा है। आप जैसे देदीप्यमान नक्षत्रों का बार बार उदय नहीं होता। आपकी कृति-कौमुदी अजर-अमर होकर हमारे अंधकार आच्छादित हृदयों को सदा आलोकित करेगी, इसमें संदेह नहीं।

हम आपके शोकाकुल कुटुम्बियों के साथ हार्दिक समवेदना प्रकट करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य-समालोचन

कवि-कौमुदी—सचित्र मासिक पत्रिका, सम्पादक श्रीयुत पं० रामनरेश त्रिपाठी—प्रकाशक, हिन्दी-मंदिर, प्रयाग। डिमाई साइज़, पृष्ठसंख्या ५०, काग़ज़ छपाई सुन्दर। वार्षिक मूल्य २)

सहृदयवर त्रिपाठीजी ने जिस उद्देश्य से यह होनहार पत्रिका प्रकाशित की है वह बड़ा ही उच्च, आवश्यक और मौलिक है। सम्पादक महोदय इसके द्वारा प्राचीन ब्रज-भाषा की कविता की महत्ता दिखाते हुए वर्तमान खड़ीबोली की कविता को परिष्कृत, उच्च और भावपूर्ण बनाने का उद्योग करेंगे। क्या ही अच्छा हो यदि यह पत्रिका कवि-संसार की क्षुद्र दलबन्दियों का अन्त करके भाव-विहारिणी भगवती भारती की अर्चा करने का श्रेय अपने ऊपर ले।

इसके गद्य-लेखों में खड़ीबोली की कविता, एक कवि का स्वप्न और वियोग-वर्णन शीर्षक लेख सरस और भावमय हैं। कविवर 'हरिऔध' रचित 'एक चिरप्रवासी पथिक के मनोभाव' नामक कविता सचमुच ही हृदय में गुदगुदी पैदा करती है। श्री जयशंकर प्रसादजी की पंक्तियां भी पते की बात बतलाती हैं। समस्या-पूर्तियां, दो चार को छोड़ कर, बहुत ऊँची नहीं हैं। पत्रिका के आदि में 'मुरली मनोहर' नामक श्रीकृष्ण का रंगीन चित्र देखने ही योग्य है। हम हृदय से चाहते हैं कि कवि-कौमुदी अपनी शीतल शांत रश्मि-माला द्वारा नीरस कवि-हृदयों को, सुधासिक्त कर, दिव्य बनाने का सतत उद्योग करे।

बार्हस्पत्य अर्थशास्त्र—अनुवादक और लेखक लाला कन्नोमल एम. ए. जज, प्रकाशक श्रीमोतीलाल बनारसीदास, अध्यक्ष

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंजाब-संस्कृत-पुस्तकालय, सैद मिट्ठा बाजार, लाहौर। डिमाई साइज़, पृष्ठसंख्या ११४, कागज़ पुष्ट, छपाई साफ़, सजिल्द मूल्य नदारद !

'बार्हस्पत्य अर्थशास्त्र' भारतीय राजनीति और समाजनीति में अपना खास स्थान रखता है। इसमें राजनीति, अर्थशास्त्र, संपत्ति शास्त्र, दंडनीति, धर्मशास्त्र आदि सभी सिद्धांतों पर विवेचनापूर्ण विचार किया गया है। प्रधानतः राजनीति, और गौणरीत्या भारतीय सम्प्रदाय, भौगोलिक विवरण, युगवर्णन आदि पर विचार किया गया है। सुप्रसिद्ध साहित्य-सेवी लाला कन्नोमलजी ने सूत्रों का तत्सम अर्थ लिख कर विशेष टिप्पणियों का तथा परिशिष्ट भाग में धर्म, मत, सम्प्रदाय, भूगोल, युग और मन्वन्तर का विद्वत्तापूर्ण उल्लेख किया है। परिशिष्ट में, चाणक्य-सूत्रोक्त राजनीति की भी प्रसंगवश चर्चा की गई है। पुस्तक सब प्रकार से उपयोगी और पठनीय है। हम इस अमूल्य ग्रंथ के प्रकाशक महोदय को हार्दिक बधाई देते हैं ! हमें आशा है कि प्राचीन लुप्तप्राय संस्कृत और प्राकृत साहित्य का प्रकाशन करते हुए अन्य पुस्तक-प्रकाशक-गण आप का अनुकरण करेंगे।

सत्यानंद—लेखक श्रीमान् ठाकुर कल्याणसिंह शेखावत बी. ए.; प्रकाशक हिन्दी-पुस्तक-भवन, १८१ हरिसनरोड, कलकत्ता; पृष्ठसंख्या २६२, कागज़ छपाई सुन्दर; मूल्य १॥)

हिन्दी-पुस्तक-माला का यह नवां पुष्प है। श्रीमान् ठाकुर साहब हिन्दी के एक अच्छे सेवक हैं। आप कई पुस्तकें लिख चुके हैं। यह पुस्तक एक उपदेशपूर्ण सामाजिक उपन्यास है। धर्माडम्बर, पाखंड, जालसाज़ी, अन्याय आदि कुरीतियां समाज को किस तरह कुतर कर छिन्न-भिन्न कर डालती हैं यह इसमें भलीभांति दिखाया गया है। सत्यानन्द का चित्रण दर्शनीय है। पुस्तक पढ़ने योग्य है।

मेघदूत—अनुवादक श्रीयुत केशवप्रसाद मिश्र, प्रकाशक साहित्य-सदन, चिरगाँव (झांसी) पृष्ठसंख्या ४०, कागज़ छपाई सुन्दर; मूल्य ।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिश्रजी ने खड़ीबोली के पद्यों में कवि-कुल-गुरु कालिदास कृत मेघदूत काव्य का बड़ा ही सुन्दर अनुवाद किया है। दो एक अनुवादों को छोड़ कर यह पद्यानुवाद बड़ा ही सरस हुआ है। न इसमें भाव ही छूटा है, और न शब्दों की कपालक्रिया ही की गई है। उदाहरणस्वरूप एक पद्य उद्धृत किया जाता है—

हाय गई होंगी उसकी वे अँखियां रोते रोते फूल;
गरम उसासें लग कर होगी ओठों की आभा प्रतिकूल।
छिपा हुआ बिखरी अलकोंमें कर पर रक्खा वह मुखचन्द्र;
होगा तेरे घेरघार में पड़कर मलिन इन्दु सा मन्द।

अनुवादक महोदय की लिखी हुई प्रस्तावना भी सरसता, विवेचना और विदग्धतापूर्ण है। मेघदूत के इस पद्यानुवाद को पढ़ कर साहित्य-सेवियों का मनोमुकुल प्रफुल्ल हुए बिना न रहेगा।

रहिमन-शतक*—कुंडलियाकार कविरत्न श्रीयुक्त नवनीत चतुर्वेदी, पृष्ठसंख्या ३४

कविरत्नजी एक वयोवृद्ध साहित्य सेवी हैं। गुदड़ी के छिपे हुए लालों में से एक आप भी हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में आप ने कविवर रहीम के १०० दोहों पर कुंडलिया द्वारा प्रकाश डाला है। रहीम के कविता-प्रेमियों को अवश्य ही इस पुस्तक का अवलोकन करना चाहिए।

पाप का अन्त—लेखक और प्रकाशक कुँवर ब्रजेन्द्रसिंह क्षत्रिय धौलपुर; पृष्ठसंख्या ८४, कागज़ छपाई मामूली, मूल्य ॥=)।

यह एक शिक्षाप्रद सामाजिक उपन्यास है। पुस्तक के निवेदन में लेखक ने स्वयं ही पुस्तक की काफ़ी तारीफ़ कर दी है! साधारणतः लेखनशैली अच्छी है। आशा है, इस 'मेरी पुस्तक माला' से अच्छी-अच्छी पुस्तकें प्रकाशित होंगी।

'साहित्यानन्द'

* पोष्टेज भेज देने से यह पुस्तक सम्मेलन-पत्रिका के ग्राहकों को बिना मूल्य मिलेगी। सम्पादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राप्ति-स्वीकार

नीचे लिखी पुस्तकें भी प्राप्त हो गयी हैं। प्रेषक महोदयों को धन्यवाद !

लाला लाजपतराय और जैनधर्म—लेखक पं० हंसराज-जी शास्त्री—प्रकाशक—मंत्री श्रीआत्मानन्द जैन-टेक्ट-सोसायटी, अम्बाला शहर; पृष्ठसंख्या ३८; मूल्य =)

रजस्वला (?) के समय पालन करने योग्य आरोग्यता के नियम—लेखक—व्यास पूनमचन्द तनसुख वैद्य; प्रकाशक-पं० मीठालाल व्यास, ब्यावर (राजपूताना); पृष्ठसंख्या ४३; मूल्य ।)

सम्पादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग

सूचना

"श्रीमङ्गलाप्रसाद-पारितोषिक"

नियमानुसार इस वर्ष 'दर्शन' विषय की सर्वोत्तम मौलिक रचना के लेखक को १२००) का श्रीमङ्गलाप्रसाद-पारितोषिक देहरादून में, पन्द्रहवें हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के अवसर पर, प्रदान किया जायगा। धर्मशास्त्र, नीतिशास्त्र, तर्कशास्त्र, अध्यात्म विद्या और मनोविज्ञान दर्शन विषय के अन्तर्गत हैं। दर्शन के अन्तर्गत उपर्युक्त विषय के ग्रन्थों की नियमानुसार तीन तीन प्रतियाँ सम्मेलन कार्यालय (प्रयाग) में भेज देनी चाहिएँ। पुस्तकें भेजनेकी अवधि श्रावणी पूर्णिमा सं० १९८१ वि० तक है। इसलिए दर्शन विषय के ग्रन्थों के प्रकाशकों और लेखकों से सविनय प्रार्थना है कि वे अपनी अपनी पुस्तकें अवधि से पूर्व ही भेजने की कृपा करें; हस्तलिखित या अधूरी छपी पुस्तक भेजने का कोई सज्जन कष्ट न उठावें।

निवेदक

रामजीलाल शर्मा

संयोजक

श्रीमङ्गलाप्रसाद-पारितोषिक-समिति

सम्मेलन-पत्रिका के ग्राहकों को विशेष लाभ

१—देशभक्त लाजपत

[ले०—श्री राधामोहन गोकुलजी (राधे)]

लालाजी के जीवन में देश-सेवा करते हुए कैसी कैसी घटनाएँ हुई हैं, उन्हें क्या क्या कष्ट उठाने पड़े हैं, कष्ट सहन करते हुए भी वे अपने पथ पर कैसे डटे रहे हैं, आदि सभी बातें लेखक ने इस पुस्तक में यथास्थान संपादित कर दी हैं। पृष्ठसंख्या ३२५ मूल्य १), रियायती मूल्य केवल ॥।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूचना

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का तार का पता अब रजिस्टर्ड करा लिया गया है। इसलिए तार भेजनेवाले सज्जनों को अब पूरा पता लिखने की ज़रूरत नहीं है। सिर्फ "सम्मेलन प्रयाग" इतना ही लिखना काफ़ी होगा।

प्रबन्ध मंत्री

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग।

सूचना

सम्मेलन-कार्यालय के अतिरिक्त निम्नलिखित स्थानों पर भी हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की परीक्षाओं के आवेदनपत्र व विवरण पत्रिकाएँ मिलेंगी—

(१) हिन्दी-साहित्य-विद्यालय, आगरा।
(२) हिन्दी-साहित्य-विद्यालय, काशी।

परीक्षा मंत्री

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग।

सूचना

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के किसी विभाग के सम्बन्ध में पत्र व्यवहार इत्यादि करते समय अथवा रुपया-पैसा भेजते समय सब सज्जनों को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि किसी व्यक्ति विशेष के नाम पर कोई पत्र अथवा रुपया-पैसा न भेजा जाय; बल्कि जिस विभाग के सम्बन्ध में किसी प्रकार का व्यवहार किया जाय, उस विभाग के मंत्री के पद का उल्लेख कर देना ही पर्याप्त होगा। नाम लिखने की आवश्यकता नहीं।

प्रबन्ध मंत्री

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग।

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन द्वारा प्रकाशित।
सूरजप्रसाद खन्ना के प्रबन्ध से हिन्दी-साहित्य प्रेस, प्रयाग में मुद्रित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिस्टर्ड नं० ए. ९२९.

सम्मेलन-पत्रिका

सम्मेलन की मुख पत्रिका

भाग १३, अङ्क ८, वैशाख संवत १९८३ वि०

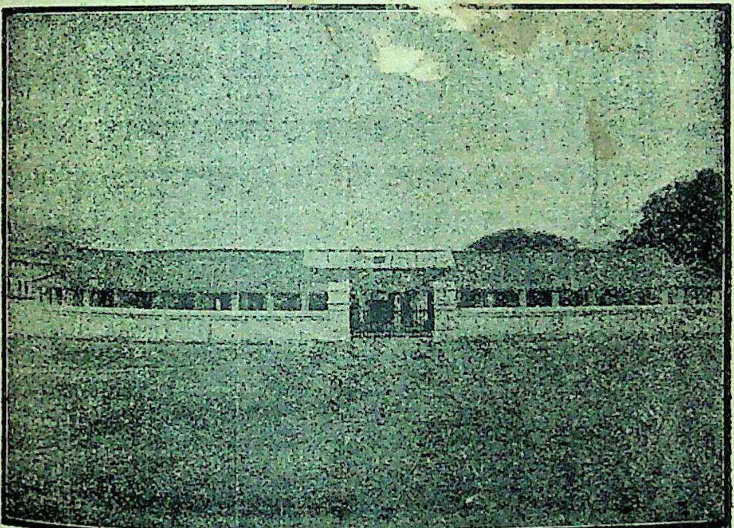

सम्पादक

भगीरथप्रसाद दीक्षित विशारद

प्रकाशक

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग

वार्षिक मूल्य २)   प्रत्येक ।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

१—प्रतिज्ञा—[महात्मा सूरदास] ३५

२—पूरणमल—[श्रीयुत पं० अयोध्याप्रसादजी शर्मा दि ३५

३—संत-कवि—[श्रीयुत पं० भगीरथप्रसाद दीक्षित विशारद] ३६

४—रत्नों की पिटारी या कवितान्वेषण—[श्रीयुत भगीरथप्रसाद दीक्षित विशारद] ३६

५—मद्रास प्रान्त में हिन्दी—[श्रीयुत 'एक तामिल हिन्दी-भक्त'] ३७

६—अखिल भारतवर्षीय हिन्दी-अध्यापक-सम्मेलन —[श्रीयुत हरिकृष्णराय विशारद प्रधान मंत्री] ३७

७—सम्पादकीय—[स्टाम्पों में हिन्दी, ग्वालियर राज्य में शिक्षण-सप्ताह, सब डिप्टी इन्स्पेक्टर का हिन्दी-द्वेष, सम्मेलन के कार्यक्रम में सुधार की आवश्यकता, सिन्ध में देवनागरी आन्दोलन, इलाहाबाद विश्व-विद्यालय में हिन्दी का माध्यम, टर्की में लिपि-परिवर्तन, हिन्दी-साहित्य-विद्यालय काशी, अधिकारियों द्वारा हिन्दी की अवहेलना, प्रेम-महाविद्यालय, कोआपरेटिव सोसाइटी] ३

८—हिन्दी-जगत—[डिस्ट्रिक्ट बोर्ड फ़तेहपुर ध्यान दे, हिन्दी-अध्यापक-मण्डल; मद्रास प्रान्तीय हिन्दी-परिक्षा-फल-सारिणी, हिन्दी-सम्पादक-समिति, इण्टर मीजिएट परीक्षा में देशी-भाषा, दिल्ली में हिन्दी को अर्द्धचन्द्र, हाई स्कूलों में हिन्दी, राष्ट्रीय हिन्दी-मन्दिर, दुगड्डा-कवि-सम्मेलन, हिन्दू-विश्व-विद्यालय काशी, डीडवाणा हिन्दी-पुस्तकालय, नागरी लिपि में सुधार की आवश्यकता, नागरी-प्रचारणी सभा बाढ़ का तृतीय वार्षिकोत्सव, फाजल का विवरण, दाहिमा ब्राह्मण सभा] ... ३

९—पुस्तकावलोकन—[पंडितजी तथा बड़ी दीदी, विद्यापति, अधिकार, चाँद, कादम्बरी, विभूति, कीचकवध नाटक, मराठी साहित्य की पुस्तकें] ३

१०—सम्मेलन-समाचार—[भरतपुर-सम्मेलन, । जाट सभा के सभापति की विज्ञप्ति, पञ्जाब में हिन्दी-प्रचार, पञ्जाब प्रान्तीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन; परीक्षा के लिये प्रस्ताव, अदालतों में हिन्दी-प्रचार, हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन प्रयाग की सूचनाएँ] ४

११—स्फुट विषय—[गुलाब की—श्रीयुत पं० अम्बिकाप्रसाद भट्ट अंबिकेश राजकवि रीवाँ राज्य, नैनन निहारिये —श्रीयुत श्रीहरिजी मुख्याध्यापक हिन्दी-विद्यापीठ प्रयाग, हिन्दी—श्रीयुत रघुबर दयाल मिश्र विशारद तथा चित्रकूट-यात्रा—सम्पादक ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन-पत्रिका

भाग १३ } वैसाख संवत् १९८३ वि० { अङ्क ९

प्रतिज्ञा

रघुपति जो न इन्द्र जित मारौं ।
तौ न होउँ चरनन की चेरौ, जो न प्रतिज्ञा पारौं ॥
जो दृढ़ बात जानिये प्रभुजू, धर्म गये वहि बान निवारौं ।
सपथ राम परताप तिहारे, खंड-खंड करि डारौं ॥
कुंभ करन दस-सीस बीस-भुज, दानव दलहिं विदारौं ।
तबै 'सूर' संधान सफल है, रिपु को सीस उपारौं ॥

—महात्मा सूरदास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूरणमल

इस कवि का 'सिपर-वंश यश-प्रकाश' नाम का ग्रंथ खोज में मिला है। जिसके देखने से ज्ञात होता है कि कवि बारहट जाति का है और शेखावाटी प्रदेशान्तर्गत पालड़ी-नरेश अजमाल भूप के आश्रित रह कर उन्हीं की आज्ञा से इस ग्रंथ की रचना की है। ग्रंथ में आठ प्रभाव हैं; जिनमें से प्रथम से लेकर छठवें तक नृप-वंश-वर्णन है, सातवें में नगर-वर्णन और आठवें में संक्षेप से अलंकार-वर्णन है। पुस्तक समाप्ति का समय ग्रंथ के अंत में निम्न प्रकार दिया है—

दोहा

चैत्र शुक्ल अरु पंचमी, सिद्धि कला निधिवार।
बरनन कीन्हों सिपर-वंश, यश प्रकाश विस्तार॥
सुभ संवत गुनीस सत, बरस तीन की साल।
ग्रंथ भयो पूरन जबै, हुकुम भूप अजमाल॥

अर्थात् सं० १९०३ में यह ग्रंथ पूर्ण हुआ है। कवि का विशेष परिचय ज्ञात न हो सका; परन्तु ग्रंथ के देखने से ज्ञात होता है कि कवि प्रतिभावान था। नमूने के तौर पर कुछ छन्द पाठकों को भेंट किये जाते हैं।

ग्रंथारंभ में कवि ने ४ छप्पय गणेश, सरस्वती और श्री रामचन्द्र जी की स्तुति विषयक मंगलाचरण के तौर पर कहे हैं। इसके पश्चात् नृप-वंश-वर्णन निम्न प्रकार प्रारंभ किया है—

छंद भुजंगी

इही धाम में आदिनारायण सोहैं, जही नाभि से कंज परगट भयो है।
भयो कंज के पुत्र जो ब्रह्म भारी, निज दृष्टि हू ते सृजी सृष्टि सारी।
जेहि ब्रह्म के पुत्र मारीच जायो, दिपै सूत कासिप जो वेद गायो।
विवस्वान ताके प्रगट्यो प्रतापी, विवस्वत मनुं आइ मुरजाद थापी।
प्रगट्यो बली बीर इक्ष्वाकु ताके, जनमे तपोधीर जो कुक्षि जाके।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसी प्रकार पद्धरी छन्द में सूर्यवंशी राजाओं की पीढ़ियां गिनाते हुए द्वितीय प्रभाव, लव-कुश पर आकर समाप्त किया है। आगे तृतीय प्रभाव निम्न प्रकार आरंभ किया है:—

दोहा

इहि प्रभाव तृतीये विषै, रोहितास रजधान।
ह्वै है दूलहराय कूँ, देवी को वरदान॥

छन्द हनुमतफाल

उन अवध पुर सूँ आय, रुहितास राज जमाय।
करि अमल रस चहुँ कोर, घन घुरत नौबत घोर।
आथाण नलवर आय, गढ़ लयेउ खग्ग बजाय।
जहँ बांधि राज सुथान, सुर-राज केर समान।
लरि खग्ग चोसा लीन, निज राज अपनो कीन।
रघुराम रघुकुल-राज, मनु वंस भय महराज।
वहि अंस पुनि फल पाय, अवतर्यो दूलहराय।
नृप दूलहराय बरात, कहुँ परन वे कूँ जात।
सावंत मीण सेर, इहि वसत सो आमेर।
अण संक वह मद अंध; कछु रखत हो बल फंद।
तिन के जये ही बाद, नहिं सुनत पर दल नाद।
जहँ आय निकसी जान, नृप बाजियो नीसान।
सो सुनत सांखल सींह, आडोस फिरि अण बीह।
सोजे जनहि किय सूर, जुरियो स जुद्ध जरूर।
लरि परे लुत्थपलुत्थ, बिन सीस नाचत जुत्थ।
करि कोप कूरमराय, बरियास खग्ग बजाय।
मैवास सावँत मारि, जबरैल पुर दिय जारि।
सब दुलह नृप के साथ, रन परे जूझि बरात।
तब भूप चिन्ता कीन, हूं भयो साथ विहीन।
जिहि वार महि जमवाय, दिये दरस चंडी आय।
कुलपूज थापहु मोहि, ह्वै प्रसन्न वर देहुँ तोहि!
तिहि समय दूलहराय, कुल-पूजा किय जम वाय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर-नुआ छिरको देन, सब सुनी जागी सेन।
रन फेरे कर घमसान, नृप लियो बहु रज धन।
किय मीणनैं निरमूल, कर दियो भूपति दूल।
इहि भाँति गढ़ आमेर, सो लेइ बल समसेर॥

इसके आगे दूलहराय की संतति का संक्षिप्त वर्णन करता हुआ कवि तृतीय प्रभाव समाप्त करता है। आगे चतुर्थ प्रभाव में मोकलसी महाराज से एक साधू की मुलाकात का वर्णन करता है। महाराज के कोई पुत्र नहीं था; उसकी दुआ से इनके पुत्र उत्पन्न हुआ। जिसने आशीर्वाद देते समय कहा था कि:—

जनमें इक तात जो तुम घरै, भुव नायक तेजन ये संभरै।
तुम कीजियो मैं कहुँ बैन जती, अब सूँ रखियो मरजाद अती।
नियसान बंधो निपला पटका, भयभूल न खाहु कबहुँ झटका।

साधू के कथनानुसार ही पुत्र का नाम सेखा रक्खा गया। उन्हीं की संतति आज सेखावत कहलाती है। सेखावतों की जहाँ बस्तियाँ हैं; जयपुरान्तर्गत उस प्रदेश को सेखावाटी कहते हैं।

इस प्रभाव में और पांचवें प्रभाव में सेखा जी के युद्धों का वर्णन कवि ने बड़े प्रभावशाली शब्दों में कथन किया है। नमूने के तौर पर कुछ पद्य उद्धृत किये जाते हैं—

छन्द पद्धरी

दहुँ दला बार तिण हुई दीठ, फरकिय झण्डा पै नाग पीठ।
पनघजे कायरां तणा प्राण, जिमि गलै बरफ लखि जोनि भांण।
हरषिया सूर मन धरि उछाह, रथ रंभ निरखिया गयण राह।
वलोवल नगारां ठोर बाजि, मिलि चहूं वोर पलचर समाज।
अध पली दगाई तोप आनि, मढ़ि घटा धूम ढकि आसमान।
धारिया अठोत्री कर धनंक, चहुँटिया बापड़ा मेल चंप।
जां हथ बाण छूटत जरूर, दंतियां फूटि तन छुटै दूरि।
पच्छुटै तीर बड्बल पठान, कुँजरां लगै जां तजै प्राण।
इण रीति दंधे सरजाल आय, दल भूप तणो लीधो दबाय।
बर हांस हांकिया जेणवार, पहो गयण ढांकिया रज अपार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हय खुरां हलहला धरि अ सेस, सो पड़े कमठ भर सीस सेस।
कीधी न पलक अध जेज काय, जोरावर हुअ मुहु मेज आय।
तिण भये त्रमागल प्रबल ताव, घट फूटि परे अणियार घाव।
खग झरां लड़े के पट्टा चूटि, तरबूज जेम सिर पड़े तूटि।
बरछिया दाय के करत बोर, सदू घाव श्रवत श्रोणित सरीर।
हुसीन खान मन है हुस्यार, सूर तहँ बजावत बहोत सार।
भिड़ स्यंघनाद करि बार-बार, अरि गाहीगरा कीधा अपार।
समसेर चाट समसेर खान, वही करत चढ़ावत बंसवान।
दाऊद खान धरि दिल उछाह, विरदैत रीस बढ़ि करत वाह।
छकिया रजपूती धारि छोह, मन कीधो हूरां वरण मोह।
मग गैण अपछरा झुकि विमाण, भालण जुध थँभियो सुरथ-भाण।
अमकंत घाव के पड़े भूमि, घायल मदपी जूं रहे घूमि।
धर सीस बह रहे रुधिरधार, आषाढ़ मेघ जिमि जल अपार।
प्रीभणी उचाभरि ले गरूर, खप्पर भरि जोगणी छकत पूर।
बैताल भूत मिलि नचत वृन्द, निज वीण बजावत ब्रह्म नन्द।
आसीस देत अपछर-समाज, जुग कोड़ि रहो सेखाण राज।

इस प्रकार सेखाजी ने चंद से युद्ध करके उसकी सारी भूमि पर अधिकार जमा लिया। इसके पश्चात् सेखा की संतति का वर्णन किया है और उनके द्वारा भटनेर और सोनगरा की विजय का वर्णन छठवें प्रभाव में किया है। इन युद्धों के पश्चात् पालड़ी के गद्दी नशीनों का संक्षेप वर्णन अपने आश्रय दाता तक किया है। सातवें प्रभाव में पालड़ी नगर की शोभा-वर्णन की है। कवि ने इस वर्णन में नगर की सीमा वहां के निवासी व उनके कार-बार आदि-आदि बातों पर साधारणतया प्रकाश डाला है। और आठवें प्रभाव में राजा की आज्ञा से अलंकारों का संक्षेप-वर्णन किया है। नमूने के तौर पर कुछ उदाहरण दिये जाते हैं—

भ्रमालंकार—अलंकार यह भ्रम को, 'पूरन' करत प्रसंग।
नयन कुज ही जानि कै, भँवर भ्रमत तेहि संग॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्मरणालंकार—अलंकार सुमिरन यहै, नाम सुलच्छन रीत।
देखत ही शशि कूँ जवै, आवत वा मुख चीत॥

पर्यायुक्तालंकार

दोय प्रकार पर्यायोक्ति कहूं, ग्रंथ सभा परकास विचारी।
बात करै रचना करि कै, इक जो मिसतैं कछु कारज सारी॥
वे अति चातुर हैं कवि 'पूरन', तो गल-माल बिना गुन डारी।
कुंज में चालि के बैठो दोऊ, हम आवत हैं लखि कै फुलवारी॥

छन्द हनुमन्त-फाल

यह अलंकारन रीति, कवि कही बरनन कीर्ति।
महाराज नृप अजमाल, हो सदा अरियन-साल।
आचार सार अभंग, अण छेद पौरुष अंग
विरदैत बुद्धि विसाल, सो सुनन वैरिय साल।
थट सुभट दीपत संत, जयरैन जीतण जंग॥

इसके पश्चात् कवि ने अपने आश्रयदाता के सुप्रसिद्ध हर्षों आदि का संक्षेप वर्णन करके ग्रंथ को समाप्त किया है; और मैं भी लेखको समाप्त करता हूं।

—अयोध्या प्रसाद शर्मा 'विशारद'

सन्त कवि

पत्रिका के पिछले दो अङ्कों में रीवां राज्य के कुछ कवियों के विषय में लिखा जा चुका है। आज हम एक और प्रसिद्ध कवि का वर्णन तथा उसकी कविताओं का रसास्वादन अपने पाठकों को कराना चाहते हैं।

संत कवि रीवा शहर के निवासी थे। इनके पिता जैताराम ब्रह्म भट्ट थे। कहा जाता है कि मुनि पूरनदास के आशीर्वाद से इनका जन्म बैसाख सुदि, सातैं संवत १८८१ वि० को हुआ था। महात्मा पूरनदास बाबूपुर (हुजूर तहसील) राज्य रीवा में एक आश्रम बना कर रहते थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संत कवि हिन्दी साहित्य के उद्भट पंडित और प्रतिभाशाली कवि थे। इसके अतिरिक्त आप बंगला, संस्कृत, ज्योतिष, मंत्र-शास्त्र आदि विद्याओं के भी अच्छे ज्ञाता थे। ये महाशय रींवा नरेश महाराजा रघुराज सिंह के सम कालीन थे। रींवा नरेश आपका बहुत सम्मान करते थे। यहाँ के सिवाय आप दरभंगा नरेश महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह, बलरामपुर नरेश दिग्विजय सिंह, बूँदी नरेश रामसिंह तथा जैपुर और जोधपुर दरबार में भी पधारे थे।

काशी नरेश के यहाँ भी संत कवि गये थे, और वहाँ पर सरदार कवि से, कवि केशव दास के ग्रंथों पर विचार हुआ; जिसमें आपकी विजय हुई।

रींवा नरेश रघुराजसिंह जी ने संत कवि की प्रशंसा में एक छंद बनाया था; वह इस प्रकार है—

सवैया

साधन साधु के साधि सबै करखयौ रस-रासि जलै रवि सान है।
त्यों कर आपने सों बरसाय कह्यो जन शीतल सीतल थान है॥
श्री रघुराज सनाथ कै केतिक सिख्य सयान औ हौंहू अयान है।
लच्छन लच्छे में दच्छ विचच्छन संत समान नहीं कवि आन है॥

इस प्रकार अपनी प्रशंसा सुनकर फिर आपने कभी रींवा नरेश के सम्मुख दान के लिये हाथ नहीं फैलाया। और अन्य राज्यों में आश्रय के लिये भ्रमण करते रहे।

एक बार आप बूंदी नरेश महाराजा रामसिंह के दरबार में गये थे। महाराजा साहब से मिलने के लिये कई मास टिके रहे; परन्तु वहां के कवियों तथा कारभारी लोगों के द्वेष के कारण भेंट न हो सकी। अन्त में दुःखित होकर एक दोहा बनाया और गढ़ के फाटक पर चिपका कर, वहां से प्रस्थान कर दिया। वह दोहा यह है—

सतयुग त्रेता द्वापरहु, फिरे सन्त के धाम।
अब कलियुग में सन्त सों, नज़र चुरावत राम॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब महाराज को विदित हुआ, तो स्वयं आकर उस दोहे को पढ़ा; तब विदित हुआ कि कोई संत कवि आये थे। वे निराश होकर लौट गये। तब महाराज ने सवार दौड़ाये। उन्होंने कविराज जी से लौट चलने को कहा; परन्तु उन्होंने नहीं माना। तब सवार वहीं ठहरने की प्रतिज्ञा संत कवि से लेकर लौट गये। फिर महाराज ने कुछ उच्च पदाधिकारियों तथा कवियों को उन्हें लौटालने के लिये भेजा। अन्त में बहुत आग्रह करने पर आप लौट कर बूंदी गये। वहां उनका महाराज ने बहुत सम्मान किया। इस यात्रा में कविराज जी के पुत्र दिनेश कवि भी साथ थे। जो अभी वर्तमान हैं। यद्यपि वृद्ध होगये हैं।

महाराजा बलराम पुर की आज्ञा से आपने कालिका-नख-शिख रचा था। जो कि बहुत उत्तम और भाव पूर्ण ग्रंथ है। सुनिये, सन्त कवि दुर्गा जी के किस रूप का ध्यान करते हैं—

घनाक्षरी

चमकैं निरंजित मयूखैं मणिमाल जड़ी,
मुकुटै उपेन्द्र इन्द्र कंजज प्रकासिनी।
लीन्हें उपहारैं सुर किन्नरी खड़ी हैं सौंह,
दर्प भी दर्पण दिखावैं रमा दासिनी॥
वारुणी सवारैं केस काम बाम सेज स्वच्छ,
रंजिनी हिये की चौंर ढारैं पाक-सासनी।
सन्त मुद रासिनी प्रभासिनी विभूति विस्व,
त्रिगुण उपासिनी बिराजैं विंध्य-वासिनी॥

अब सन्त कवि अपने द्वार-द्वार फिराने की शिकायत भी माता जी से करते हैं; अवलोकन कीजिये—

घनाक्षरी

कुंदन के कलस उरोज-पय प्याय नीके,
मंगल को दानि गण नायक कहायो है।
तैसोई षडानन नरायन को अवतार,
विक्रम अपार जो पुराणनि में गायो है॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तारक-असुर सुरकंटक संहारि मारि,
सकति कराल क्रौञ्च सिखर ढहायो है।
जाय के कपूत क्यों फिरावै द्वार-द्वार हाथ,
तारिणी तिहारो तनै संतऊ कहायो है॥

यह ग्रन्थ महाराजा बलरामपुर ने राज्य की ओर से लैथो में प्रकाशित कराया है। ग्रंथ बड़ी ही उच्चकोटि का है। कहा जाता है कि महाराजा बलरामपुर ने भी संत जी को एक प्रशंसा सूचक पत्र दिया था। जिसका भाव यह है—

खुशतलीका खुश सलीक़ा रहते है इनसे महाराज।
इसलिये इनको सब कहते हैं कविराज॥

कवित्त

रींवा राजधानी जन्म भूमि थल मध्य जम्यौ,
रह्यौ देश-देश यश रस लै उताल है।
विद्या की बड़ाई पाई उच्चता विशद शाखा,
काव्य-गुण-अलंकार पल्लव विसाल है।
आयो बलरामपुर छाया करिबे को, पुनि-
रागमके हेतु माग्यौ विदा यहिकाल है।
भूप दिगविजै सिंह सारटी फिकट देत,
संत कवि कविता में सरस रसाल है॥

कविराजजी ने दरभंगा नरेश लक्ष्मीश्वर सिंह जी की आज्ञा से लक्ष्मीश्वर-चन्द्रिका नामक अलङ्कार का बहुत उत्तम ग्रन्थ रचा है। आइये पाठकगण! इसकी भी बानगी देखिये और आनन्दित हूजिये—

कैतवापन्हुति का उदाहरण देते हुए कवि नायका का वर्णन करता है—

उन्नत सैल उरोजन ते कढ़ि गंग की है छवि नीरज हार में।
रोमनिकी अवली कल राजति भ्राजति भानुजा सोभ अपार में॥
दोउन के वर संगम में मन आवत संत के योंही विचार में।
चन्द कलंक छुड़ाइबे काज नखक्षत के मिसि मज्जत धार में॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कितना सरस, भावपूर्ण, गंभीर और अलंकारिक वर्णन है। संत कवि द्वारा नर्मदा शतक नामक एक छोटा सा ग्रंथ भी नर्मदा की स्तुति में रचा गया है। उसका भी एक उदाहरण लीजिये—

घनाक्षरी

आनन्द के आल-वाल सागर सुधा के कंज,
संत मन मधुकर मोद के करन हैं।
जीवन की मूरि रूरि आंगुरी नखनि जोति,
तारका कुसुम चंद—रवि भा हरन हैं॥
अंकुस कुलिस अध ऊरध विराजै रेख,
लेख जग जाकी असरनि के सरन हैं।
भव भय खंडन विहण्डन कितेक बाधा,
मण्डन मही के रेवा रावरे चरन हैं॥

अब संतकृत विनय-पचीसी से दो दोहे भी पाठकों की भेंट हैं—

मोर मुकुट धर लकुट धर, गोबर्द्धन धर वेणु।
केस-कंस धर चरण की अधम उधारन रेनु॥१॥
पटुकी खोलि खुथी दई सुनि पंचाली टेर।
मो कारण अब चाहिये नाथ न इतनी देर॥२॥

सन्त जी ने राम-रावण के युद्ध का कैसा ओज पूर्ण तथा विशद वर्णन किया है; कि पढ़ते-पढ़ते हृदय ओजस्व पूरित होजाता है। देखिये—

घनाचरी

आसमान छुअत निसान फहरात आवैं,
गरजत आवैं यातुधान जो पहष में।
बीसौ हस्त धारे शस्त्र आयौ दस मस्त देखि,
आसन तें ठाड़े भये राम तब रोस में॥
स्याम जल जात गात कुंदन से रंगन में,
मंगल बिराजै रघुनंदन के मुख में।
आपुहि तें आपु बान त्रोन ते कढ़न लागे,
आपुहि ते आपु रोदा चढ़िगो धनुष में॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन ग्रन्थों के अतिरिक्त आप का सब से प्रसिद्ध ग्रन्थ बिहारी-सतसई पर टीका है। जिन दो एक साहित्यिक सज्जनों ने उसे देखा है, उन्होंने उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की है। उसमें दोहे के आलोचनात्मक सालङ्कार अर्थ किये गये हैं। कहा जाता है कि दिनेश जी (सन्त कवि के पुत्र), उस पुस्तक के दर्शन भी किसी को नहीं होने देते। ज्ञात नहीं इसमें कितना तथ्य है? यदि प्रकाशित हो जाय तो जनता को उससे अधिक लाभ पहुँच सकता है। साथ में सन्त कविकी कीर्ति भी चिरस्थायी हो सकती है। यदि वह अथवा उसका कोई भाग नष्ट हो गया; जैसा कि प्रकृति का नियम है; तो फिर वह सम्पत्ति कदापि हाथ नहीं आ सकती। अशिक्षित व्यक्ति ही इस प्रकार की धारणा कर सकते हैं।

संत कवि का देहावसान फागुन कृष्ण ३ सं० १९५० वि० में काशी जी में हुआ था।

आप की कविता अत्यन्त हृदय-ग्राहिणी, मनोहर और बहुत उच्च कोटि की होती थी। रीवां वाले आज भी उनका नाम बड़े आदर से स्मरण करते हैं।

इनके पुत्र दिनेश कवि और पौत्र चँडिका प्रसाद अभी वर्तमान हैं। आप लोगों को चाहिये कि अपने पूर्वजों की कीर्ति और मान को सुरक्षित रखने के लिये, इन पुस्तकों के प्रकाशन का प्रबंध करें। साथ में धनी-मानी रईसों तथा प्रकाशकों को भी इस ओर ध्यान देना चाहिये। रीवां के कवि मंडल को विशेष ध्यान देना चाहिये। विनोद में संत कवि कृत केवल लक्ष्मीश्वर-चन्द्रिका का उल्लेख किया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रत्नों की पिटारी
या
कवितान्वेषण
(१)
महा कवि भूषण

रतन कवि कृत फतह प्रकाश ग्रंथ श्रीनगर (गढ़वाल) नरेश फतह शाह के लिये रचा गया था। इसमें कवि ने कुछ कवियों के छंद भी उदाहरण स्वरूप उद्धृत किये हैं। इन्हीं में भूषण कृत दो छन्द भी हैं।

भूषण कवि कमाऊँ नरेश ज्ञानचंद के दरबार में गये थे। और वहीं से श्री नगर नरेश फतहशाहि के दरबार में भी पहुँचे थे। उसी समय कुछ छंद गढ़वाल नरेश की प्रशंसा में रचे गये हैं। वे पाठकों की सेवा में अवलोकनार्थ उपस्थित हैं—

घनाक्षरी

लोक ध्रुव लोकहू तें ऊपर रहैगो भारो,
भानु तें प्रभानि को निधान आनि आनैगो।
सरिता सरिस सुर सरितै करैगो साहि,
हरिते अधिक अधिपति ताहि मानैगो॥
ऊरध परारध तें गनती गनैगो पुनि,
वेद तें प्रमाण सो प्रमान कछू जानैगो।
सुजस तें भल्यो मुख भूषण भनैगो बाढ़ि,
गढ़वार राज पर राज जो बखानैगो॥१॥
देवता को पतिनी को पतिनी शिवा को हर,
श्री पति न तीरथ वे रथ उर आनिये।
परम धरम को है सेइबो न ब्रत नेम,
भोग को संजोग त्रिभुवन जोग जानिबे॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूषन कहा भगतिन कनक मनि ताते,
विपति कहा वियोग सोग न बखानिये।
संपति कहा सनेह न गथ गाहिरो गेह,
सुख कों निरखिबोई मुकुतिन मानिये ॥२॥

फतह शाह ने सं० १७४१ से सं० १७७१ वि० तक और ज्ञानचन्द्र ने सं० १७५७ वि० से सं० १७६५ वि० तक राज्य किया था। अतः इसी बीच में भूषण ने किसी समय दोनों राज्यों में भ्रमण किया था। वहीं से लौट कर महाकवि भूषण महाराजा साहू की सेवा में गये थे।

(२)

महाराजा भगवन्तसिंह खीची

असोथर नरेश महाराज भगवन्तसिंह खीची के नाम से पाठक भली-भांति परिचित हैं। आप ने अपनी भुजाओं के पराक्रम से एक छोटे से राज्य को बढ़ा कर बहुत विस्तृत कर लिया था। नितप्रति युद्धों तथा राजकीय कार्यों में निरत रहने पर भी आप सरस्वती की सेवा करते रहते थे। आप की कुछ फुटकर कविताएं तथा दो-एक ग्रन्थ भी प्राप्त हैं। कविता बड़ी ही ओजस्वनी होती थी। तथा बहुत से प्रसिद्ध-प्रसिद्ध कवियों के आश्रयदाता थे। महाकवि भूषण के खीची की मृत्यु-संबंधी दो छंद पाठक पढ़ चुके हैं। आज कवीन्द्र (उदयनाथ) कृत एक छन्द और भी पाठकों की भेंट है सुनिये—

घनाक्षरी

दान गये दुनी तें गुमान पुरबासिन के,
गुनिन के गांठनि तें मानिक से छूटिगो।
जूझे भगवन्त जू के धरा सों धरम गयो,
सरम के सागर को सेतु ऐसो फूटिगो॥
भनित कविंद यही हिये में परी है हूक,
कबिन की कबिताई कोषे मनछूटि गो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कविन की कामना कों पूरन करैगो कौन,
तातें कलिहू में कलपद्रुम सो टूटिगो ॥

इस छंद में महाकवि भूषण की तत्संबधी कविता की छाया का दर्शन हो जाता है। दो एक चरणों में तो भाव तथा पद सादृश्य भी अच्छा है।

एक छंद महाराजा भगवंतसिंह की प्रशंसा में और भी प्राप्त हुआ है। अवलोकन कर आनन्दित हूजिए—

देशी मारु मारि तुरकाने को मिटाइ दीन्हों,
चहुंधा सुगंध फैलो जस की चमेली को।
तब चढ़ि धायौ दतिया को राव रामचन्द,
धरै पग आगे भगि परत पछैली कों॥
ह्वै गयौ फकीर कमरुद्दी खां उजीर तब,
डारि गल डोरा अपकीरति की सेली कों।
शाह लै-लै थाकि गो मलाह लौं दिली को कंस,
अंत नहिं पायो भगवन्त की दिलेली को॥

इस छन्द के रचयिता का पता नहीं; परन्तु कविता बहुत उच्च कोटि की ओज व प्रसाद गुण पूर्ण है। और भूषण के उत्तम छंदों से टक्कर खाती है।

यदि कोई साहित्य-सेवी सज्जन इस पर कुछ प्रकाश डाल सकें तो बहुत अच्छा हो।

(३)

महाकवि घनश्याम शुक्ल

घनश्याम शुक्ल भी एक बड़े उच्च कोटि के कवि थे। आपने भी भूषण की भांति कुछ घटनाओं का ऐसा उत्तम वर्णन किया है कि एक ही छंद से देश की परिस्थिति और राज्य की शासन प्रणाली का अच्छा परिचय मिल जाता है। राजाओं का बहुधा स्वभाव पड़ जाता है, कि अपने आश्रित किसी व्यक्ति पर अत्यधिक विश्वास करने लगते हैं। जिसका परिणाम यह होता है कि राज की बाग-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओर उसी व्यक्ति के हाथ में चली जाती है; और राजा कुछ ही दिनों में काठ पुतली के समान बन जाता है।

महाकवि घनश्याम ने भी इसी संबंध में कई राज्यों में भ्रमण कर, वहां का भली प्रकार अनुभव प्राप्त करके एक छन्द में उनकी शासन प्रणाली का बड़ा अच्छा वर्णन किया है; देखिये, शुक्ल जी क्या कहते हैं—

घनाक्षरी

भूप तेजसिंह के निवाजी दरगाही बढ्यौ,
रावत खुमंला बढ्यौ खीची सिरताज के।
ईश्वरी बहादुर के बनुआं महाउत भौ,
तुंडवा कहार अनुरुद्ध सिंह राज के॥
कहैं घनश्याम राज-काज में प्रवीन भये,
जाहिर अनंतिया महीप जुगराज के।
तानी सारसानी के भवानी चोबदार,
बकाउल्ला के गुमानी भगवानी महाराज के॥

इस छंद में ८ राजाओं के आश्रित आठ व्यक्तियों के अधिकारारूढ़ होने का वर्णन किया गया है; जिनसे प्राचीन उक्त राजाओं की परिस्थिति का ज्ञान तो होता ही है। साथ में उनके ऐतिहासिक काल का भी पता लग जाता है। वर्तमान राजाओं को भी इससे अच्छी शिक्षा मिलती है।

(४)

दत्त कवि

दत्त कवि ने 'हीरा' को लक्ष करके बड़ी अनोखी अन्योक्ति कही है। सुनिये और आनन्द प्राप्त कीजिये—

खानि ते कढ्यौ है खरसान पै चढ्यौ है फेरि,
कंचन मढ्यौ है त्यों अनूप ज्योति जागवौ तें।
कीमति बढ्यौ है चढ्यौ पानि में प्रवीनन के,
आदर अपार पाइ प्रेम रस पाग्यौ तें।
दत्त कवि कहै जड्यौ मुकुट महीपन के,
हारबनि कामिनी हियें में अनुराग्यौ तें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अरे सुनु हीरा ! भयो जगत जहीरा वीर,
एते पर नेकु ना कठोर पन त्यागी तैं ॥

पाठक गण ! कितनी सुन्दर अन्योक्ति है कि कवि की बार-बार प्रशंसा करने को जी चाहता है।

(४)

शंभु कवि

किसी व्यक्ति को पतित होता हुआ जानकर उसे चेताने के लिये इस अन्योक्ति द्वारा कितनी मीठी चुटकी ली है श्रवण कीजिये—

जाके मूल थल में अनेक कुश कंकर हैं,
कंटक वलित अङ्ग जा में आइ फूले हो।
कोऊ कवौं आवत न याके पास आसकरि,
पथिक निरास जात फूलन में फूले हो ॥
सोऊ रज रंजित उतार तरु नीचन की,
शंभुनाथ कहत वृथा ही अनुकूले हो।
जानत न शील जाहि अपत बखील महा,
कैसे या करील में भँवर आजु भूले हो ॥

यह करील पर भँवर के लुब्धायमान होने की बड़ी ही मनोहारिणी अन्योक्ति है पढ़िये और दाद दीजिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मद्रासप्रान्त में हिन्दी

मद्रास प्रान्त में हिन्दी को आशातीत सफलता हुई है। इस प्रान्त ने महात्माजी की आज्ञा को शिरोधार्य्य कर के हिन्दी को राष्ट्र-भाषा के रूप में स्वीकार कर लिया है। कुछ लोगों का कथन है कि राष्ट्र भाषा का राजनीतिक कार्यों से कुछ संबन्ध नहीं है। परन्तु इसका प्रचार राष्ट्रीय आन्दोलन के साथ-साथ हुआ है। आजकल भी कांग्रेस के ही आदमी अधिकतर हिन्दी सीखते हैं।

अब इस प्रान्त में हिन्दी के संबंध में किसी को मदभेद नहीं है। असहयोग के शिथिल पड़ जाने से हिन्दी का कार्य भी शिथिल पड़ गया है।

आन्ध्र प्रान्तों में तो म्युनिस्पल और डिस्ट्रिक्ट बोर्डों के अपनाने से कार्य चल भी रहा है। अन्यत्र दशा शोचनीय है। नेताओं का ध्यान भी इस ओर नहीं है।

अतः सम्मेलन को इस संबंध में क्या करना चाहिये ?

यहां पर श्रीसत्यमूर्ति जी (स्वराजिष्ट नेता) के प्रयत्न से मद्रास विश्वविद्यालय में हिन्दी को स्थान मिल गया है। अतः मेट्रिक और इंटरमिजियट के विद्यार्थियों के लिये यह ऐच्छिक विषय के रूप में पढ़ायी जाती है। परन्तु एस. एल. सी. परीक्षा गवर्नमेंट की है। उसमें हिन्दी को अभी तक स्थान प्राप्त नहीं है।

इस प्रान्त में अधिकांश विद्यार्थी S.S.L.C. परीक्षा में ही सम्मिलित होते हैं। मेट्रिक में बहुत कम, फिर कालेज में सबके सब विद्यार्थी S.S.L.C. पास करके ही जाते हैं। और वहां हिन्दी की पढ़ाई का कोई प्रबंध नहीं है। अतः चाहने पर भी कालेज में हिन्दी नहीं ले सकते। फिर भी इस वर्ष ५-६ विद्यार्थी बैठ रहे हैं। उनके लिये पाठ्य-पुस्तकें भी नियत कर दी गयी हैं। परन्तु वह संख्या दाल में नमक के बराबर भी नहीं है। जहां प्रतिवर्ष १०००० विद्यार्थी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

S.S.L.C. में बैठते हैं वहां ५-६ विद्यार्थी किस गिनती में हैं। अतः हमें इससे सतुन्ष्ट न होना चाहिये। और S.S.L.C. में हिन्दी को स्थान दिलाने का प्रयत्न करना चाहिये।

अधिकारियों से पूछने पर विदित हुआ कि वे प्रान्त की भाषा न होने से हिन्दी को स्वीकार नहीं करते। परन्तु अंग्रेज़ी इस प्रान्त में किस की मातृ भाषा है। जिस पर लाखों रुपया पानी की तरह बहाया जा रहा है। परन्तु बृटिशराज्य होने से ऐसा नहीं पूछ सकते। गवर्नमेंट की शंकाओं का उत्तर देने से वह अवश्य हिन्दी को स्थान देगी।

इस प्रान्त में बहुत से उत्तर-भारत से मारवाड़ी आदि लोग आकर व्यापार के लिये बस गये हैं: जिनकी मातृभाषा हिन्दी है। प्रत्येक शहर में आपको मारवाड़ी मिलेंगे। जिनके बच्चों की शिक्षा का कोई प्रबंध नहीं है, यद्यपि वे लोग भी टैक्स देते हैं। अतः उनके लिये हिन्दी का प्रबंध अवश्य होना चाहिये। यहां के मारवाड़ियों में अभी पर्याप्त जाग्रति नहीं है। इनमें जाग्रति की बड़ी आवश्यकता है। तब इनकी ओर से एक डेपुटेशन डाइरेक्टर महोदय की सेवा में भेजा जाय; ताकि कलकत्ता, बम्बई विश्वविद्यालयों की भांति यहां भी हिन्दी को स्थान मिल जाय। कालेजों के प्रिंसिपिल्स और स्कूलों के हैडमास्टरों से भी मिलकर आन्दोलन बढ़ाना चाहिये।

बहुत से मदरासी पुरुष उत्तरी भारत के आगरा, लखनऊ, प्रयाग, काशी, दिल्ली, लाहौर, बम्बई और कलकत्ते आदि नगरों में रोज़गार के लिये जाते-आते रहते हैं; अतः उन के लिये भी हिन्दी की अत्यंत आवश्यकता है।

गवर्नमेंण्ट ने मुसलमानों की क़ौमी ज़बान 'उर्दू' के लिये जब प्रबंध किया हुआ है, तब हिन्दुओं की भाषा अथवा देश की भाषा हिन्दी का भी अवश्य प्रबंध करना चाहिये। यह हिन्दुओं की धार्मिक भाषा है। इस प्रान्त के लोग हिन्दी की आवश्यकताको समझते हैं। उत्तरी भारत के धुरन्धर विद्वान श्रीबाबू भगवानदासजी जैसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सज्जनों को इस समय मद्रास के दैनिक अंग्रेज़ी पत्रों में लेख लिखने चाहिये।

हिन्दी कवियों और साहित्य के विषय में भी लेख लिखना चाहिये। मद्रास के प्रसिद्ध पत्र 'हिन्दू,' 'स्वराज्य' 'स्वदेश-मित्रम्' 'आन्ध्र-पत्रिका' 'डेली-एक्स-प्रेस', 'न्यु-इंडिया,' और 'मद्रास-मेल' हैं।

इन में लेख लिखने का प्रबंध कीजिये। मद्रास में S.S.L.C. कक्षा में हिन्दी को प्रवेश कराने से ही अच्छा प्रचार हो सकता है। कुछ उत्तरी भारत से अंग्रेज़ी के विद्वान भी यहां दौरा लगावें तो बहुत जाग्रति हो सकती है।

आर्य-समाजों और हिन्दू-सभाओं से भी इस कार्य में पर्याप्त सहायता मिल सकती है। आशा है आप इस ओर विशेष ध्यान देंगे की कृपा करेंगे; तभी हिन्दी को अपना उचित स्थान दिलाने में समर्थ हो सकेंगे। प्रयत्न से सफलता होती ही है।

एक तामिल-प्रान्तीय हिन्दी-भक्त

अखिल-भारत-वर्षीय हिन्दी-अध्यापक सम्मेलन

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के सोलहवें अधिवेशन के अवसर पर वृन्दाबन में सम्मेलन से प्रसिद्ध कार्य्य कर्त्ता देश-भक्त अध्यापक रामरत्न जी के सभापतित्व में अध्यापक-सम्मेलन की बैठक हुई। अनेक गण्यमान्य साहित्य-सेवियों के अतिरिक्त युक्त-प्रदेश, बिहार, पंजाब और मध्य प्रदेश के अनेक अध्यापक तथा अध्यापक-कार्य्य में रुचि रखने वाले बहुत से सज्जन सम्मिलित हुए। एक स्थायी संगठन की आयोजना हुई। पदाधिकारी उस समय तथा बाद में एक वर्ष के लिये इस प्रकार चुने गये :—

सभापति—देवी हेमन्त कुमारी चौधरानी, पटियाला।

उपसभापति—पं० रामचन्द्र भार्गव मथुरा।

पं० रघुवर प्रसाद द्विवेदी जबलपुर।

महा महोपध्याय शिवदत्त शास्त्री, लाहौर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बा० बद्रीनाथ वर्मा, एम-ए०, पटना।
बा० कन्हैया लाल बी० ए०, अजमेर।

प्रधान मंत्री—अध्यापक हरिकृष्ण राय, "विशारद" बैरिया, बलिया।

सहायक मंत्री—हर मुख्य प्रान्त से इस प्रकार चुने गये।

युक्त-प्रदेश—पं० रघुबर दयालु मिश्र, विशारद, काशी।
विहार—मौलाना लतीफ़ हुसेन, मुज़फ्फरपुर।
राजपूताना—पं० अयोध्या प्रसाद, शर्मा, बीकानेर।
मध्यप्रदेश—पं० भगवत प्रसाद गंगेले, हरदा।
मद्रास—पं० हृषीकेश शर्मा त्रिपिलीकेन मद्रास।
बंगाल—पं० रामशङ्कर त्रिपाठी, स्वतंत्र कार्य्यालय कलकत्ता।

कोषाध्यक्ष—पं० कमलाकर द्विवेदी, एम-ए. डिप्टी कलेक्टर, बलिया,

आय-व्यय-परीक्षक—साहित्य रत्न पं० श्री कृष्ण दत्त पालीवाल एम-ए०

पदाधिकारियों के अतिरिक्त १०१ सदस्यों की स्थायी-समिति रहेगी, जिनका चुनाव इस वर्ष समाचार-पत्रों में विज्ञप्ति निकालकर हर प्रान्त के प्रधान स्थान में एक साधारण सभा करके होगा, प्रान्तवार सदस्यों की संख्या इस प्रकार होगीः—

बंगाल—६	मद्रास—४
विहार—१५	बम्बई—६
संयुक्त प्रान्त—२५	ब्रह्मा—४
राजपूताना—११	आसाम—२
पंजाब—१०	
मध्यप्रदेश—१५	

स्थायी-समिति के सदस्यों और पदाधिकारियों को सम्मेलन का सदस्य बनना आवश्यक होगा, सदस्य शुल्क एक रुपया वार्षिक देने पर सम्मेलन के उद्देश्यों से सहानुभूति रखने वाला हर एक मनुष्य सदस्य बन सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्देश्य और नियमों का ढांचा तैयार करने के लिये प्रयागस्थ ५ सज्जनों की एक उपसमिति बना दी गयी है।

अध्यापक सम्मेलन का अगला अधिवेशन हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के साथ भरत पुर में होना निश्चित हुआ है।

१—प्रान्तीय मंत्रियों से प्रार्थना है, कि अपने-अपने प्रान्त के सदस्यों को प्रान्त के किसी मुख्य स्थान में साधारण सभा करके चुन लें; और उनके नाम प्रधान मंत्री के पास शीघ्र भेजने की कृपा करें।

२—समस्त-हिन्दी प्रेमी अध्यापकों से प्रार्थना है कि अभी से सम्मेलन के सदस्य बनाना प्रारम्भ कर दें और उनकी सूचना तथा शुल्क प्रधान मंत्री के पास भेज दें, नियम स्वीकृत हो जाने पर छपा हुआ फार्म पीछे से भरवा लिया जायगा।

३—उपसमिति से प्रार्थना की गई है कि शीघ्र नियमावली का ढाँचा तैयार करके भेजे। पूरी समिति बन जाने पर सदस्यों के पास राय के लिये भेजा जायगा और स्थायी समिति की बैठक में स्वीकृत हो कर अगले वर्ष भरतपुर अधिवेशन तक उसके अनुसार कार्य होगा। भरतपुर सम्मेलन में नियमावली पेश होगी, और उसपर आवश्यक संशोधन होगा। स्वीकृत होने पर उसका अन्तिम रूप समझा जावेगा।

हरिकृष्ण राय "विशारद"

प्रधान-मंत्री-बैरिया, बलिया

नोट—इसमें कुछ संदेह नहीं कि अध्यापकों द्वारा हिन्दी का बहुत उपकार हुआ है; इस संगठन के हो जाने से भविष्य में और भी अधिक सुशृंखलित तथा नियमित रूप से होने की आशा है; दो अध्यापक-मण्डल और दोनों अखिल भारतीय होने से क्या स्थिति होगी, विचारणीय है। क्या संचालकगण ध्यान देंगे।

सम्पादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादकीय

स्टाम्पों में हिन्दी

गत मास में हम इस विषय की सूचना अपने पाठकों को दे चुके हैं। अभी हाल में हमारे पास एक टाइप किया हुआ पत्र इसी संबंध में एक विहारी सज्जन ने भेजा है, तदर्थ धन्यवाद है; उसका सारांश हम नीचे देते हैं—

कुंवर गङ्गानन्द सिंह जी महोदय एम. ए. एम. एल. ए. (श्रीनगर-पुर्नियां) ने १३ मार्च सन् १९२५ ई० को बड़ी व्यवस्थापक सभा में स्टाम्पों में हिन्दी को स्थान न देकर सरकार ने जो भूल की थी; इसका संशोधन कराने के लिये नागरी लिपि और हिन्दी भाषा की श्रेष्ठता दिखलाते हुए एक प्रभावशाली भाषण दिया। कई मुसलमान मेम्बरों ने अपने स्वभावानुसार इसका घोर विरोध किया। परन्तु कुँवर महोदय ने उन सबका मुँह तोड़ उत्तर देकर विरोधियों को चुप करा दिया।

माननीय बासिल ब्लैकेट महोदय ने कुमर सा० के भाषण का उत्तर देते हुए आपकी इस मांग को स्वीकार किया, और २२ अप्रल सन् १९२६ ई० के गज़ट में आज्ञा पत्र प्रकाशित कर दिया।

हमें हर्ष है कि सर्कार ने अपनी भूल स्वीकार कर उचित संशोधन कर दिया।

इस परिश्रम के लिये कुमर सा० हिन्दी-प्रेमियों के धन्यवाद के पात्र हैं। हम उनकी इस सफलता पर सहर्ष बधाई देते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आशा है इसी प्रकार अन्य माननीय मेम्बर भी अपने कर्त्तव्य का पालन कर, हिन्दी प्रेमियों को अनुगृहीत करते रहेंगे।

ग्वालियर राज्य में शिक्षण-सप्ताह

जयाजी प्रताप से हमें यह जानकर हर्ष हुआ कि ग्वालियर राज्य में शिक्षा दिन प्रति दिन उन्नति पर है। अभी शिक्षण-सप्ताह मनाया गया था; जिसमें बड़े-बड़े विद्वानों के भाषण हुए और निबंध पढ़े गये। शिक्षा सम्बन्धी प्रदर्शिनी भी हुई थी। शिक्षा में उन्नति देने के लिये एक मिडिल स्कूल को हाई स्कूल और उज्जैन हाई स्कूल को इण्टर मिडियट कालेज कर दिया है।

शिक्षा-विभाग का यह कार्य प्रशंसनीय और अंगरेज़ी राज्यतक को अनुकरणीय है। पिछड़ी जातियों को शिक्षा देने के लिये विशेष आयोजन किया जा रहा है। उन्हें देश-विदेश में अध्ययन के लिये छात्रवृत्तियां दी जायँगी। तथा राजपूत छात्रों के लिये राजपूत हितकारिणी सभा की सफलता में राज्य की ओर से ४० प्राइमरी स्कूल खोले जा रहे हैं।

सब डिप्टी इन्सपैक्टर का हिंदी द्वेष

सहयोगी हिन्दी संसार लिखता है कि सुलतानपुर सब डिप्टी-इन्सपेक्टर हामिदहुसैन ने प्राइमरी स्कूल दिखौली के प्रधानाध्यापक पर हिन्दी में रजिस्टर आदि भरने पर बहुत धमकाया और जुर्माना किया। तथा उर्दू में भरने को कहा।

इस संबन्ध में हम पूर्व ही कुछ अपने विचार प्रकट कर चुके हैं। इन अत्याचारों के बन्द होने के लिये अति शीघ्र कार्य करने की आवश्यकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन के कार्यक्रम में सुधार की आवश्यकता

इसमें कोई सन्देह नहीं; सम्मेलन को साहित्यिक बनाने की बड़ी आवश्यकता है।

कुछ वर्ष पूर्व सं० १९८१ वि० में इसके विचारार्थ एक सब कमेटी भी बनी थी। परन्तु उसका कथन कार्य रूप में परिणत न हो सका।

मेरेविचार से सम्मेलन के कार्य-क्रम में अधिक परिवर्तन की आवश्यकता है।

इसे अन्य भाषा-भाषीप्रान्तों की भाँति कई विभागों में बाँट देना चाहिये।

प्रबंध-विभाग को मुख्य सम्मेलन माना जाय; इसमें सभापति का भाषण, प्रचार, प्रस्ताव, धन संग्रह आदि बातों पर विचार किया जाय।

(१) साहित्य-परिषद्, (२) इतिहास-संशोधन-परिषद् (३) विज्ञान-परिषद (४) दार्शनिक-परिषद (५) अध्यापक-सम्मेलन, (६) कविसम्मेलन, (७) प्रदर्शिनी, (८) सम्पादक-सम्मेलन आदि को भी सम्मेलन के साथ किया जाय, परन्तु इनका प्रबंध तत्संबंधी सभाओं पर ही छोड़ दिया जाय। साहित्य-सम्मेलन से यथा संभव सहायता दे दी जाया करे। नं० १ व २ को भी सम्मेलन का प्रधान अँग माना जाय तो अच्छा है।

प्रस्तावों की सूची अधिक न होने पावे।

कम से कम १० निबंध अवश्य पढ़े जाया करें।

भिन्न-भिन्न परिषदों तथा सम्मेलनों के अलग-अलग सभापति चुने जाया करें।

ये सम्मेलन भी प्रधान सभापति की भांति अपने-अपने सभापति पूर्व से ही चुन लिया करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य-दरबार, का भी आयोजन होना चाहिये। जिसमें विवादग्रस्त विषयों पर विचार हो। अभिनय, कवि-दरबार आदि का भी आयोजन होना चाहिये। आशा है विद्वत् समाज अपनी सम्मति प्रदान कर अनुग्रहीत करेगा।

सिन्ध में देवनागरी आन्दोलन।

पं० जयचन्द्र जी विद्यालङ्कार प्रचारक सम्मेलन, प्रयाग ने सरस्वती में उक्त शीर्षक एक लेख प्रकाशित किया है।

आपने प्रान्तिक भाषाओं से देवनागरी का संबंध निर्धारित करते हुए सिन्धी भाषा को अरबी अक्षरों में लिखे जाने की त्रुटियों का दिग्दर्शन कराया है।

वहां पहिले सिन्धी लिपि ही प्रचलित थी; जो कि देवनागरी का ही रूपान्तर है। परन्तु कुछ दिनों से अरबी की आज्ञा प्रचारित हो गयी है; जिनसे वहाँ के हिन्दुओं को अत्यन्त कष्ट होने लगा है। अब भी वहां के कुछ ब्राह्मणों ने सिन्धी लिपि को अपना रक्खा है।

स्वामी गोविन्दानन्द जी ने हिन्दू संस्कृति और हिन्दी साहित्य के लिये बहुत आन्दोलन किया है।

पं० लोकराम-विष्णु शर्मा ने वहाँ का हिन्दू पत्र प्रथम सिन्धी भाषा और नागरी लिपि में निकाला था। पर न चल सका। तब अरबी लिपि करनी गयी। अब नागरी लिपि में भी एक संस्करण निकलता है।

इस समय फिर आन्दोलन प्रारंभ हुआ है। नागरी लिपि होने से एक लाभ यह भी होगा कि कच्छी लोग जिनकी भाषा सिन्धी से मिलती है। वे अरबी लिपि के स्थान में गुजराती पढ़ते हैं। यदि नागरी लिपि प्रचलित हो जाय तो वे भी सिन्धी भाषा स्वीकार कर लेंगे। विद्यालङ्कार जी ने अभी सिंध का दौरा लगाया था; वहां लोगों को हिन्दी सीखने के लिये उत्कट अभिलाषा है। कुछ सभाएं भी हुईं; तथा हैदराबाद देवनागरी मंडल स्थापित कर दिया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करांची में भी, ७ जनवरी को एक बड़ी सभा हुई। सिन्ध में हिन्दी-प्रचार-कार्यालय खोलने का प्रस्ताव पास हुआ। करांची में मारवाड़ी-समाज भी सहायता देने को प्रस्तुत है।

सिन्ध प्रान्तीय हिन्दू-सम्मेलन के अवसर पर, जो श्री युत जयकर के सभापतित्व में हुआ था। एक उपसमिति कुछ प्रोफ़ेसरों की बना दी गयी। जो देवनागरी सिन्धी में पाठ्य पुस्तकें तय्यार करें। कुछ कन्या पाठशालाओं में शिक्षण कार्य प्रारम्भ भी हो गया है।

बम्बई विश्व विद्यालय द्वारा हिन्दी को स्थान मिल जाने से सिंध में हिन्दी प्रचार को अधिक उत्तेजना मिलेगी।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय में हिन्दी का माध्यम

विश्व विद्यालयों में गणित, विज्ञान, दर्शन आदि सब विषय अंग्रेजी द्वारा पढ़ाये जाते हैं। विद्यार्थियों को मातृ-भाषा से भिन्न अंग्रेज़ी द्वारा शिक्षा देना भारत से भिन्न देशों में ढूंढने से भी न मिलेगा। यदि किसी विदेशी सज्जन के सम्मुख यह उल्लेख कर दिया जाय; तो वह क्या धारणा हमारे प्रति बनायेगा, कहने की आवश्यकता नहीं।

स्थानीय विश्वविद्यालय ने एक कदम आगे और भी बढ़ाया है; और वह हमारे भारतीयों की ही कृपा का फल है। वह यह कि—इस प्रान्त की मातृ-भाषा हिन्दी पढ़ाने के लिये अंग्रेजी का माध्यम रक्खा गया है। विशेषता यह है कि हिन्दी के दोनों प्रोफेसर श्रीयुत धीरेन्द्र वर्म्मा जी तथा पं० देवीप्रसाद जी शुक्ल साहित्य-सेवी, हिन्दी प्रेमी और सम्मेलन के सदस्य हैं।

ज्ञात नहीं इन दोनों महानुभावों ने इस अत्याचार को कैसे सहन कर लिया। मुझे एम. ए. के दो एक विद्यार्थी मिले; उन्होंने भी इसे अनुभव किया; तथा वे भी इसे अनुचित समझते हैं। कुछ सज्जन कहते हैं कि हिन्दी में शब्द नहीं है; अतः कठिनाई पड़ती है। परन्तु यह बहाना मात्र है। हिन्दू विश्वविद्यालय में कई वर्ष से हिन्दी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एम. ए. की शिक्षा हिन्दी के माध्यम द्वारा दी जारही है । लखनऊ और अलीगढ़ में भी वर्नाक्युलर ही मीडियम है । अतः उनके इस कथन में कुछ भी सार नहीं । यहां जर्मन, फ्रांस, स्वीडन आदि देशों के विद्यार्थी हिन्दी पढ़ने नहीं आते; फिर यह ढकोसला क्यों किया गया है । हम विश्व विद्यालय के अधिकारियों तथा प्रोफेसरों से साग्रह अनुरोध करते हैं कि वे इस अन्याय को अति शीघ्र दूर करने का प्रयत्न करें ।

टर्की में लिपि परिवर्तन

मैञ्चेस्टर गार्डियन के अभी हाल के वर्णन से विदित हुआ; कि अंगोरा पार्लियामेंट ने निश्चय कर लिया है; कि फारसी अक्षरों के स्थान में रोमन लिपि प्रयोग में लायी जाय ।

इसमें सन्देह नहीं फारसी लिपि अपूर्ण और दोष युक्त है । परन्तु टर्की एशियाई देश है । उसमें रोमन लिपि को स्थान देना उचित नहीं; वह किसी एशियाई लिपि को ग्रहण कर सकता है । और एशियाई लिपियों में नागरी-लिपि सर्वोत्तम है । यही नहीं दुनियां की तमाम लिपियों से सर्व श्रेष्ठ है । अतः टर्की को नागरी लिपि स्वीकार करना चाहिये आशा है श्री मान् राजा महेन्द्र प्रताप महोदय इधर ध्यान देने की कृपा करेंगे । अभी समय है । वहाँ पर इसका तजुर्बा किया जा रहा है । हिन्दी प्रेमियों को ध्यान देना चाहिये ।

हिन्दी साहित्य-विद्यालय, काशी

श्रीयुत लाला भगवानदीनजी के अनवरत परिश्रम से काशी का साहित्य-विद्यालय बहुत उत्तम कार्य कर रहा है । अब तक यह संस्था भिन्न-भिन्न संस्थाओं की छत्र-छाया में स्थान पाकर अपना कार्य चलाती रही । अब वहाँ के प्रतिष्ठित व्यक्तियों तथा प्रसिद्ध विद्वानों के नाम से एक लाख रुपये की एक अपील विद्यालय का भवन बनवाने के लिये हिन्दी भाषा-भाषी रईसों, जमींदारों और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दाताओं से की है। इसकी विशेषता यही होगी; कि इसमें साहित्य की उच्चकोटि की शिक्षा निशुल्क दी जाया करेगी। इसके सम्पूर्ण कार्य-कर्ता प्रोफेसर आदि अवैतनिक होंगे। जिसके लिये वहां के साहित्यिक धुरंधर विद्वानों ने अभी से अपने नाम लिखा दिये हैं। कई महानुभाव तो उसमें बहुत दिनों से अध्यापन कार्य कर रहे हैं।

प्रत्येक हिन्दी-हितैषी और साहित्य-प्रेमी को इसमें योग देना चाहिये। आशा है धनी-मानी, सेठ-साहूकार, जमींदार-रईस, राजा-महाराजा सब उदारता से इसमें सहायता प्रदान करेंगे।

यह संस्था सम्मेलन से संबद्ध है; तथा उससे सहायता भी दी जाती है।

दानी महाशयगण, लाला भगवानदीन जी तथा रायकृष्णजी रईस काशी के पते से धन की सहायता भेज सकते हैं।

अधिकारियों द्वारा हिन्दी की अवहेलना

हमारे पास सम्मन के दो हिन्दी पर्त उर्दू लिपि में भरे हुए आये हैं; इनमें एक खां बहादुर शेख तमीरुद्दीन खां साहब मजिस्ट्रेट दर्जा अव्वल और दूसरा मिस्टर आर० हँडू साहब स्पेशल मजिस्ट्रेट दर्जा दोयम के हस्ताक्षरों से भेजे गये हैं। जब इतने बड़े जिम्मेदार अधिकारी सर्कारी आज्ञा की अवहेलना करते हैं; तो साधारण लोगों को प्रोत्साहन होना स्वाभाविक है।

हम ज्ञात करना चाहते हैं; कि इन्होंने ऐसा किसकी आज्ञा से किया? क्या उच्च अधिकारी इस सम्बन्ध में उचित निराकरण करने का कष्ट उठावेंगे।

साथ में हम कौंसिल के मेम्बरों से भी निवेदन करते हैं कि वे भी इस विषय पर विशेष प्रभाव डालने का प्रयत्न करें। मुख्यतः बाबू मङ्गलालजी वकील और पं० श्रीकृष्णदत्त जी पालीवाल से अनुरोध है; कि वे इस विषय को कौंसिल में उठावें और हिन्दी का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपमान करने वालों को । त मार्ग पर लाने का प्रयत्न करें। ज्यों-ज्यों हिन्दी का विस्तार हो रहा है, त्यों-त्यों ऐसे लोग और भी कड़ाई करते जाते हैं। और प्रान्त की मातृ भाषा को नीचा दिखाना चाहते हैं।

प्रेम महाविद्यालय

पुरातन 'छात्र-समिति' प्रेम-महा-विद्यालय, वृन्दावन की सन् १९२४-२५ को वार्षिक रिपोर्ट प्रकाशित हुई है। यह विद्यालय देश का बहुत अच्छा कार्य कर रहा है। इस प्रान्त में एक मात्र यही ऐसी संस्था है; जो दस्तकारी आदि की उच्च कोटि की शिक्षा देती है।

इस संस्था के प्रधान बाबू नारायणदासजी और मंत्री नलिनी कान्त मुकर्जी हैं। इस रिपोर्ट में लगभग १५० विद्यार्थियों के पते दिये हैं, जो कि भिन्न-भिन्न स्थानों में सफलता पूर्वक उच्च श्रेणी का कार्य कर रहे है।

इस समिति ने सन् २३ से २४ तक ५१ विद्यार्थियों की धन से सहायता की; इसके अतिरिक्त दीन छात्रों का भी कोष है; जिससे १६ छात्रों को सहायता प्राप्त हुई।

इसके प्रिंसिपल होकर गिड़वानीजी महोदय आ रहे हैं। वायस प्रिंसिपल बाबू शिवशरणसिंह फाटक वाले हैं; जो कई वर्ष से कार्य कर रहे हैं।

हम हृदय से इसकी उन्नति के अभिलाषी हैं।

कोपरेटिव सोसाइटी

सहयोग समितियों का कुछ दिनों से भारत में भी प्रचार हो रहा है; अन्य प्रान्तों में तो इस की दशा कुछ संतोषजनक भी है। परन्तु संयुक्त-प्रदेश में अभी तक इनको कुछ भी सफलता नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिली। कई स्थानों पर मेरा निजका अनुभव भी इसी प्रकार का है।

अभी हाल में एक पम्फलेट इसी संबंध में आदरणीय पं० गुरुसेवकजी उपाध्याय असिस्टेंट रजिस्ट्रार कोपरेटिव सोसाइटीज़ प्रयाग द्वारा प्राप्त हुआ है। स्थानाभाव से पूरा लेख पत्रिका में देने में असमर्थ हैं। अतः पाठकों को सारांश पर ही संतोष करना चाहिये; अब तक हिन्दी में इसका साहित्य नाम मात्र को भी नहीं है। उपाध्यायजी इसे 'पंचायती-सभाओं' नाम देना अधिक उपयुक्त समझते हैं और इसके द्वारा देशाद्धार का उपाय मानते हैं। करीब-करीब बात भी ठीक है।

प्रथम आपने कृषकों की दशा का वर्णन करते हुए ज़मींदार—काश्तकार के संबंध का उल्लेख किया है। इसकी उन्नति के लिये दोनों में मेल और प्रेम की बड़ी आवश्यकता बतलायी है।

ग्रामों में मजदूरों की न्यूनता और पैदावार की कमी के कारण बड़ी उत्तमता से दरशाये हैं।

सहयोग न रहने से जो हानियां हो रही हैं उनका चित्रण भी अच्छा किया है।

गवर्नमेंट के ग्राम्य-सुधार के लिये किये गये उपायों की अपूर्णता तथा उसके प्राचीन-पद्धति का अनुसरण करने का भी उल्लेख किया है।

संगठन के लिये यूरोप, अमेरिका और जापान का उदाहरण हमारे सम्मुख रक्खा है।

आगे चलकर महाजन के कड़े ब्याज लेने का कारण, उससे हानि तथा पंचायती सभाओं के लाभ वर्णन किये हैं। तथा उसका विधान भी बतलाया है। इस संबंध में जापान के एक धनी का उल्लेख किया है कि उसने इन सभाओं के द्वारा किस प्रकार अपने देश के किसानों को ऋण-मुक्त कराया।

मुसलमानों को भी सूद से बचने का यही उपाय बतलाया है। क्योंकि इनमें मुनाफ़ा बांटा जाता है। सूद नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसके द्वारा किफायत शारी के ढंग भी बतलाये या वर्तें जाकर उन्नति की जा सकती है। जिससे बरबादी से बच सकते हैं।

झगड़े निपटाने की पंचायत अलग बनाकर आपसी बखेड़े भी इसी सहयोग से सुगमता में निपटा सकते हैं।

आपने अन्य देशों की तुलना करते हुए ज़मीन की उत्पादन शक्ति, बढ़ाने के उपाय बतलाये हैं; जिससे बेकारी दूर होना भी सुगम है। पशुपालन और उनकी नस्लें बढ़ाने के उपाय बतलाये हैं। देहातों के सुधार की आवश्यकता पर आपने बहुत ज़ोर दिया है। इसके लिये दो साधन मुख्य माने हैं—शिक्षित नवयुवकों और अध्यापकों द्वारा यह कार्य ग्राम-ग्राम में प्रचलित किया जा सकता है। तथा प्रचार बढ़ाया जा सकता है।

इससे विद्यार्थियों में स्काउट आन्दोलन से भी सहायता ली जा सकती है। इसके द्वारा शिक्षित गण नौकरी की ओर व्याकुल हो कर जाने की अपेक्षा अपने-अपने घरों पर ही कार्य कर सकते हैं। चरित्र-सुधार, सफ़ाई, आपत्ति में सहायता आदि कार्य सुगमता से किये जा सकते हैं।

अन्त में अध्यापकों व नवयुवकों को किस प्रकार कार्य करना चाहिये? बतला कर उपाध्याय जी ने निबंध समाप्त कर दिया है।

उपाध्यायजी ने यूरोप के कई देशों स्काटलैंड, डेन मार्क, इटली आदि में बहुत दिनों तक भ्रमण कर और वहां से ज्ञान प्राप्त कर के प्रान्त की सहयोग-समितियों का कार्य हाथ में लिया है। आशा है आप के द्वारा इस प्रान्त में समितियों को बहुत लाभ पहुँचेगा।

आपने अंग्रेज़ी में इस संबंध की एक उत्तम पुस्तक लिखी है। हमें पूर्ण आशा है कि हिन्दी में भी पंचायती-सभाओं पर एक उत्तम पुस्तक लिखने की कृपा करेंगे।

इस प्रान्त की समितियों की जांच के लिये अभी हाल में कमीशन बैठा था। उसकी रिपोर्ट अभी प्रकाशित नहीं हुई है। उसमें संयुक्त-प्रान्तीय सोसाइटियों के रजिस्ट्रार महोदय श्रद्धेय पं० श्यामबिहारीजी मिश्र भी थे। आशा है आप के द्वारा उसमें कुछ मौलिक सुधार अवश्य किये गये होंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी-जगत्

डिस्ट्रिक्ट बोर्ड फ़तेहपुर ध्यान दे !

डिस्ट्रिक्ट बोर्ड फतेहपुर ने एक प्रस्ताव पास किया था कि बोर्ड का कुल काम हिन्दी में हुआ करे। हिन्दी में कुल कार्य होना प्रारम्भ भी हो गया था; किन्तु कुछ समय के पश्चात् फिर अधिकतया वे काम उर्दू में ही निकलने लगे हैं। सालाना-कागज़ात के जोहि कुल उर्दू में ही छपे थे—एक कागज़ में तो खास ताकीद था कि उर्दू में उसकी ख़ानापुरी होनी चाहिए। बोर्ड को अपने प्रस्ताव को इस प्रकार पददलित होने से बचाना चाहिए। हम श्री० पं० विश्वम्भर नाथ जी का भी ध्यान—जिनका कि यह प्रस्ताव था—इस ओर आकर्षित करते हैं।

हिन्दी-अध्यापक-मण्डल।

पटियाले के हिन्दी-प्रेमियों का उद्योग।

१७ मई को सनातनधर्म संस्कृत इंगलिश हाईस्कूल पटियाला में हिन्दी अध्यापकों की एक समिति की बैठक हुई। हेमन्त कुमारी चौधरानी [मुख्याध्यापिका विक्टोरिया गर्ल्स स्कूल]सभानेत्री नियत हुईं, इन्होंने अपने भाषण में हिंदी 'अध्यापक-मण्डल" स्थापन करने का प्रस्ताव किया, जो सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ। इस मण्डल की स्थायी सभानेत्री का पद भी श्री मती जी को ही दिया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तत्पश्चात् श्रीयुत ला० गोरालाल बी० ए० बी० टी० मुख्याध्यापक स० ध० हाईस्कूल, प्रोफेसर माधव शर्मा शास्त्री, देवकी नन्दन शास्त्री, श्री० दुर्गादत्त शर्मा आदि सज्जनों ने हिंदी की प्रशंसा पर भाषण दिये।

इसके पश्चात् स० ध० हाई स्कूल के मुख्याध्यापक ने सूचना दी कि हम ने हिंदी प्रचार के लिये सायंकाल के ५॥ बजे से ६॥ बजे तक दूसरों स्कूलों के लड़कों तथा अन्य लोगों को निःशुल्क हिंदी पढ़ाने का प्रबन्ध किया है।

—देवकीनन्दन शास्त्री
मन्त्री हिंदी अध्यापक मण्डल,
पटियाला।

मद्रास प्रान्तीय हिन्दी परीक्षा फल सारिणी

परीक्षा		प्राथमिक	प्रवेशिका	राष्ट्रभाषा
सशुल्क आवेदनपत्र	"	१८०	६३	३१
उपस्थित	...	१६२	६०	२८
उत्तीर्ण हुए	...	११८	५४	१४

पुरस्कार

१. राष्ट्रभाषा :—आन्ध्र प्रान्त से सर्व प्रथम क. सं. १३ अ० वेंकटरमणय्या (गुडिवाड़ा) को एक सुवर्णपदक दिया जायगा।

२. प्रवेशिका :—क. सं. ८. के० पद्मनाभ पिल्ला (केरल-कुट्टमालूर) ३८. श्री० सौ० विमला देवी पंजीकर बी० ए० (कर्नाटक-धारवाड़) ४७. वेंकटप्पराय (तेनावली-आन्ध्र) ५८. अ० वेंकटरामन बी० ए० (तामिल-त्रिचिनापल्ली) को सर्वप्रथम आने के कारण १५.रु० का पुरस्कार दिया जायगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३. प्राथमिकः—३२. डी० गंगाधर ब्रह्मानंद (वीरवासरम-आन्ध्र) ४१. सौ० रुक्मिणिअम्मा बी० ए० (आनर्स) (त्रिवेण्ड्रम-केरल) ८६. के गोपालन (कुंभकोणम-तामिल) १२० एम० वी० रामस्वामी अय्यंगार (बेंगलोर-कर्नाटक) को सर्वप्रथम आने के कारण १०) रु० का पुरस्कार दिया जायगा।

हृषीकेश शर्मा,

परीक्षा-मंत्री

हिन्दी सम्पादक समिति

(विचारार्थ)

१—इस समिति का नाम हिन्दी सम्पादक समिति होगा। २—समिति के उद्देश्यः—

अ—हिन्दी समाचार पत्रों के सम्पादकों, लेखकों और सञ्चालकों में परस्पर सहयोग स्थापित करना।

ब—देश के लाभकारी आन्दोलनों में हिन्दी पत्रों की सम्मिलित शक्ति का प्रयोग करना।

स—बिपदग्रस्त सम्पादकों की सहाबता करना।

द—हिन्दी पत्र सम्पादन कला की उन्नति के लिये प्रयत्न करना—

व्याख्यानों द्वारा, पुस्तक प्रकाशक द्वारा, उपयुक्त सूचनाओं द्वारा

३—हिन्दी पत्रों के लिये एक (News agency) स्थापित करना और भिन्न भिन्न विषयों पर हिन्दी पत्रों की सम्मतियों को अन्य भाषाओं के पत्रों को भेजना। ४—प्रत्येक लेखक, सम्पादक तथा पत्र सञ्चालक ३) वार्षिक देने पर इसके सदस्य बन सकेंगे। ५—समिति के वार्षिक अधिवेशन हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के वार्षिक अधिवेशनों के साथ हुआ करेंगे। ६—स्थायी समिति २० सदस्यों की होगी; जो वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर निर्वाचित हुआ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करेंगे। ७—समिति का कार्यालय प्रधान तथा मन्त्री की सुविधा के अनुसार किसी केन्द्र स्थान में रहेगा।

नोट—इस समिति का सङ्गठन ५० सदस्य होने पर साधारण अधिवेशन द्वारा किसी स्थल पर किया जायगा।

नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ
बनारसीदास चतुर्वेदी

इण्टर मीजियेट परीक्षा में देशी भाषा

हैदराबाद के हेड मास्टर असोसियेशन की प्रार्थना

हैदराबाद के हेड मास्टर असोसियेशन ने बम्बई विश्व-विद्यालय के पास अपना एक प्रतिनिधि भेजा है और इस बात पर जोर दिया है कि फर्स्ट आर्ट और इंटरमिजियेट आर्ट परीक्षाओं में दूसरी भाषा का स्थान देशी भाषाओं को भी दिया जाय।

दिल्ली में हिन्दी को अर्द्धचन्द्र।

कुंवर मदनसिंह आज में लिखते हैं, एक दिन मैंने हकीमजी के यहाँ एक पत्र हिन्दी में लिखकर भेजा; किन्तु वह यह कहकर लौटा दिया गया; कि यह हिन्दी है। फतेहपुरी के पास के डाकखाने में 'आज' को एक रजिस्ट्री करने के लिये लिफाफा भेजा, डाकखाने वालों ने यह कहकर लिफाफा लौटा दिया कि इस पर हिन्दी में पता लिखा है। फिर चाँदनी चौक के डाकखाने से लिफाफा भेजा गया। दिल्ली में इस प्रकार हिन्दी को अर्द्धचन्द्र पड़ते देखकर किस राष्ट्र-भाषा प्रेमी को दुःख न होगा।

हाईस्कूलों में हिन्दी

युक्तप्रान्त के हाईस्कूल व इण्टरमीडियट बोर्ड ने अंग्रेजी को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छोड़कर शेष विषय हिन्दी या अंग्रेजी द्वारा पढ़ाने की आज्ञा प्रचारित की है। कुछ अदूरदर्शी लोग इसका विरोध कर रहे हैं। सुना गया है इनमें अधिकांश अन्य भाषा-भाषी ही हैं। इसी को कहते हैं कि जिस थाली में खाय, उसी में छेद करें। इस नीचता का यही दंड मिलना चाहिये कि आन्दोलन कर उन्हें सर्विस से हटवा दें।

ऐसे लोगों का अंग्रेज़ी निर्बल होजाने का बहाना व्यर्थ है। बंगाल में यह प्रचलन कई वर्ष से है। और वहां वालों की अंग्रेजी इस प्रान्त वालों से कहीं उत्तम है, हिन्दी में कोर्स के लिये पर्याप्त पुस्तकें मिल सकती हैं। मेरे विचार से केवल हिन्दी मीडियम रखना ही पर्याप्त होगा। अंग्रेजी इस देश की भाषा नहीं है। राज-भाषा को मातृ-भाषा से नीचे स्थान मिलना ही चाहिये।

राष्ट्रीय हिन्दी-मन्दिर

जबलपुर का पंचम वार्षिकोत्सव श्रीयुत बाबू शिवप्रसादजी गुप्त के सभापतित्व में २८-२६ अप्रैल को सानन्द समाप्त हो गया नागपुर विश्वविद्यालय तथा अन्य इण्टर मीडिएट कालेजों में हिन्दी को स्थान देने के प्रस्ताव पास हुए।

दुगड्डा में कवि-सम्मेलन

इधर दुगड्डा में पिछले दिनों बड़ी धूम रही। एक कवि-सम्मेलन भी २ मई की रात में पं० रत्नाम्बरदत्त चन्दोला सम्मेलन के स्थायी-समिति के सदस्य के सभापतित्व में हुआ; कई विद्वानों के भाषण भी हुए थे।

हिन्दू विश्व विद्यालय काशी

... से हिन्दी लेकर एम. ए. परीक्षा निम्नलिखित सज्जनों ने पास की—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(१) श्रीयुत व्रजनाथ दुबे (२) कन्हैयालाल वर्मा (३) रमेशदत्त पाठक (४) श्री धरसिंह (५) रामकृपाल मिश्र।

डीडवाणा हिन्दी पुस्तकालय

सुचारु रूप से चल रहा है इससे लगभग २००० मनुष्यों ने लाभ उठाया। पुस्तकों की ८०० जिल्द हैं। १५ समाचार पत्र व पत्रिकाएं आते हैं।

उत्सव शीघ्र ही मनाया जायगा।

—छगनलाल जोशी

नागरी लिपि में सुधार की आवश्यकता

इङ्गलैंड के १५,००० अङ्गरेज़ी भाषा-प्रेमियों ने अपने हस्ताक्षर से एक प्रार्थना पत्र प्रधान मन्त्री मि० बाल्डविन को देकर, अङ्गरेजी भाषा के उच्चारण सुधारने के लिये एक रायल कमीशन की नियुक्ति की बात कही है।

यद्यपि नागरी अंक व अक्षर पूर्ण और निर्दोष है; फिर भी इन अक्षरों में सुधार की अत्यन्त आवश्यकता है। अदालतों के प्रयोग में आने योग्य शीघ्रता से प्रत्येक व्यक्ति के लिखने योग्य, लिपि होनी चाहिये। आशा है विद्वत्समाज इस पर कुछ प्रकाश डालेगा।

श्री नागरी-प्रचारिणी-सभा, बाढ़ का तृतीय वार्षिकोत्सव

पटना न्यूकालेज के प्रोफेसर पं० रामदीन पाण्डेय एम० ए० बी० टी० साहित्योपाध्याय की अध्यक्षता में ता० २४ जनवरी सन् १९२६ ई० को सानन्द समाप्त हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्वाचित सभापति वयोवृद्ध भारतेन्दु के समकालीन पं० विजयानन्दजी त्रिपाठी थे। जिनकी आकस्मिक मृत्यु इसी दिन पटने में हो गयी थी। जिसके संबन्ध में सभा ने अत्यन्त दुखित भावसे खड़े होकर शोक सूचक प्रस्ताव पास किया।

फिर सभापति ने अपना सार गर्भित भाषण पढ़ा। स्थानीय मिडिल स्कूल के विद्यार्थियों ने ललित कविताएँ सुनायी। छपा हुआ कार्य विवरण बांटा गया; जिसमें वहां के पुस्तकालय, वाचनालय, श्री कालीप्रसाद पारितोषिक, तथा रूपस के परमानन्द पुस्तकालय का विस्तृत विवरण दिया हुआ था।

श्रीयुत बाबू परमेश्वरीप्रसादजी वर्मा, कालीप्रसादजी दत्त तथा पं० रामस्वरूपजी चतुर्वेदी काव्यतीर्थ के व्याख्यान हुए।

बाबू परमेश्वरप्रसादजी ने सभा पर जो ऋण था, उसके चुका देने का बचन दिया। और अधिवेशन सानन्द समाप्त हुआ।

अधिवेशन के उपलक्ष में रात्रि को 'भक्त चन्द्रहास' नामक नाटक खेला गया जिसे लोगों ने बहुत पसन्द किया।

× × ×

फाजलका का विवरण

साधू आश्रम पुस्तकालय फाजलका का सं० १९८२ वि० का कार्य विवरण प्रकाशित हुआ है।

यह पुस्तकालय अच्छा कार्य कर रहा है इसमें २४५० पुस्तकें हैं। ३०४० पुस्तकें पुस्तकालय से बाहर पढ़ने को गयीं। मंत्रीजी लिखते हैं लोगों में उपन्यास और नाटक ही अधिक पढ़े गये। अन्य उत्तम पुस्तकों की ओर रुचि कम देखी जाती है। कुल पुस्तकों की जिल्द बँधी हुई हैं।

स्वामी केशवानन्दजी के उद्योग से ८०० पुस्तकें गीता की मंगवा कर बटवायी गयीं। इस वर्ष ६१५-)॥ आय और ७४१≈)॥ व्यय हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसके मन्त्री गौरीशङ्करजी और प्रधान स्वामी केशवानन्दजी का प्रयत्न सराहनीय है।

× × ×

दाहिमा ब्राह्मण सभा

अखिल भारतवर्षीय श्री दाहिमा ब्राह्मण सभा का, असाढ़ वदि १ सं० ८२ से भाद्र पद सुदि १५ सं० १९८२ तक का, त्रैमासिक आय-व्यय विवरण आय-व्यय परीक्षक द्वारा जंचवा कर प्रकाशित हुआ है।

रोकड़ शेष ३९६२=) ११ पाई है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकावलोकन

पण्डित जी—मूल लेखक श्री शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय; अनुवादक पं० रूपनारायणजी पांडेय, कविरत्न । प्रकाशक इन्डियन प्रेस, इलाहाबाद । पृष्ठ-संख्या लगभग २००, सजिल्द प्रति का मूल्य १॥)

इलाहाबाद के इन्डियन-प्रेस ने शरद ग्रन्थावली प्रकाशित कर हिन्दी-पाठकों को शरद बाबू के उपन्यासों के रसास्वादन का जो सुअवसर प्रदान किया है। उसके लिए इण्डियन प्रेस के स्वामी सचमुच धन्यवादार्ह हैं। उपर्युक्त उपन्यास इसी ग्रन्थावली का प्रथम प्रसून है। इसमें मातृभक्ति, मातृ-स्नेह तथा स्त्रियोचित मान का अच्छा चित्रण किया गया है। एक ओर कुसुम स्त्रियोचित मान दिखलाती है और दूसरी ओर उसका पति वृन्दाबन मातृ-भक्ति के भावों से प्रेरित होकर उसे ठुकरा देता है। पर इन दोनों प्रतिद्वन्दी भावों के भीतर बड़े मज़े की बात यह है कि प्रेम के भाव दोनों ओर मौन भाषा में एक दूसरे पर व्यक्त होते रहते हैं, दोनों उसे अनुभव भी करते हैं, और फिर भी तनातनी में आकर मिलते नहीं। इन प्रतिद्वन्दी भावों में, दो स्थलों पर बड़ी निष्ठुरता प्रदर्शित की गई है। स्त्री-पुरुष के प्रतिद्वन्दी भावों में हम प्रायः ऐसी निष्ठुरता देखा करते हैं; वास्तव में शरद बाबू की लेखनी में कमाल है। उन्होंने कुसुम और वृन्दावन के परस्पर विरोधी भावों को दिखलाते हुए भी एक को दूसरे से अलग नहीं किया और अन्त में दोनों हृदयों का स्पन्दन एक ही स्थान पर केन्द्री भूत कर दिया है। उपन्यास प्रेमियों को इसे अवश्य पढ़ना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़ी दीदी—लेखक, अनुवादक और प्रकाशक पूर्ववत्। पृष्ठ-संख्या १०१, सजिल्द प्रति का मूल्य १)

यह उपन्यास भी शरद बाबू की ही कृति है। इसमें सुरेन्द्रनाथ नाम के एक एम० ए० पास युवक की सरलता तथा उसके प्रति माधवी के मौन प्रेम चित्रण करने में शरद बाबू ने सचमुच कमाल किया है।

यद्यपि हम धड़ा-धड़ बंगला उपन्यासों के अनुवाद निकालने के समर्थक नहीं हैं। तथापि जो सत्य है, सुन्दर है, उसकी प्रशंसा करनी ही पड़ेगी। उक्त ग्रन्थों का अनुवाद प्रकाशित करने से भाषा के साहित्य की गौरव-वृद्धि भले ही न हो; पर विविध भाषाओं के उच्च साहित्य से परिचय प्राप्त करने के लिए उनके उच्च कोटि के ग्रन्थों के अनुवाद प्रकाशित करना आवश्यक है। इस दृष्टि से शरद-ग्रंथावली का हम सहर्ष स्वागत करते हैं।

भ० प्र० वाजपेयी।

विद्यापति—महाकवि विद्यापति से हिन्दी जगत को परिचय कराने की आवश्यकता नहीं। इस पुस्तक में उन्हीं हिन्दी-कोकिल का जीवन-चरित्र बड़े अन्वेषण के साथ लिखा गया है।

विद्यापति के समय का निरूपण आलोचनात्मक ढंग पर, अत्युत्तम रीति से किया गया है। इसके पढ़ने से कई नवीन बातें महाकवि विद्यापति के सम्बन्ध की ज्ञात हो सकती हैं। यद्यपि यह ४५ पृष्ठ की एक छोटी सी पुस्तिका है, तथापि इसमें उनके जीवन की सभी मुख्य-मुख्य ज्ञातव्य बातें आ गयी हैं। अतः विस्तृत जीवनी लिखने के लिये पर्याप्त सामिग्री प्रदान करती है। इसके रचयिता श्री पं० रामवृक्ष शर्मा जी ने विद्यापति कवि पर तुलनात्मक समालोचना ग्रंथ लिखने की भी सूचना दी है।

पुस्तक बड़े काम की और संग्रह योग्य है। साहित्य-सेवियों के लिये आनन्द की वस्तु है।

छपाई, सफाई, टाइटिल पेज सभी उत्तम हैं। मूल्य ।) हिन्दी-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक भंडार, लहरिया सराय (दरभंगा) की चारु-चरित-माला में प्रकाशित हुई है।

अधिकार—इस नाम का एक ४० पृष्ठ का प्रहसन श्रीयुत पराग एम० ए० द्वारा रचा गया है और हिन्दी ग्रंथ भंडार कार्यालय बनारस से प्रकाशित है। मूल्य ।) है।

इस प्रहसन में, शिवचरण नामक एक व्यक्ति ने धन के लालच से अपने विवाहित शिक्षित पुत्र जगदम्बा प्रसाद का दूसरा विवाह, प्रथम स्त्री की मौजूदगी में एक धनी और लालची सेठ की लड़की से कराने का प्रयत्न करने के दुष्परिणाम दिखलाये हैं।

जिसके परिणाम में जगदम्बाप्रसाद, उसकी प्रथम सुशीला स्त्री विमला, तथा नव वधू अहिल्या को मृत्यु के मुख में जाना पड़ा।

और अन्त में शिव चरण को भी घर बार छोड़ कर निकल जाना पड़ा।

यथा स्थान सरस्वती से उद्धृत प्रसिद्ध कवियों की कविताएँ देने से पुस्तक और रोचक बन गयी है। प्रहसन रोचक, शिक्षाप्रद और उपादेय है।

देश भक्त राजा महेन्द्र प्रताप जी की संक्षिप्त जीवनी—यह एक छोटी सी ८ पृष्ठ की जीवनी वैद्य बालमकुन्द वर्मा वृन्दावन द्वारा प्रकाशित हुई है।

मूल्य अमूल्य प्रेम। राजा साहब प्रेम धर्म के उपासक हैं। उन्हीं का संक्षिप्त चरित्र जो कभी-कभी पत्रों में निकलता रहा है सारांश रूप में दे दिया गया है।

चाँद—स्त्रियोपयोगी सर्वोच्च सचित्र मासिक पत्रिका, चाँद कार्यालय प्रयाग से निकलती है। इस के सम्पादक व प्रकाशक श्री रामरखसिंह सहगल हैं वार्षिक मूल्य ६॥) है। छपाई, सफाई, कागज़ सब बढ़िया है।

लेख और कविताएँ उत्तम हैं पं० शिवसहाय चतुर्वेदीजी का सती प्रथा का रक्त-रंजित इतिहास अच्छा निकल रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तथा पं० लक्ष्मीप्रसादजी द्विवेदी कृत 'स्त्री उसकी काँति और सत्ता' भी अच्छा लेख है।

हम हृदय से इसकी उन्नति के अभिलाषी हैं। आशा है हिन्दी प्रेमी इसे अपनायेंगे।

कादम्बरी—नामक द्विमासिक पत्रिका इसी मास से सरस्वती के आकार में रसिक-समाज, कानपुर से श्रीयुत पं० रामाज्ञा द्विवेदी 'समीर' के सम्पादकत्व में सचित्र प्रकाशित हुई है। टाइटिल पेज पर स्व० पूर्ण कवि का चित्र दिया है। भीतर रत्नेशजी व भानुजी के भी दो चित्र हैं। पृष्ठ संख्या ४८, वार्षिक मूल्य २) है। पत्रिका का यह प्रथम अंक है कई लेख और कविताएं सुपाठ्य और उत्तम हैं। मुख्यतः ग्राम्य कविता, और बेताल की डाल शीर्षक लेख बहुत अच्छे हैं। खोज संबंधी सामिग्री अच्छी है। कई प्राचीन कवियों के जीवन पर भी अच्छा प्रकाश डाला गया है। पत्रिका होनहार प्रतीत होती है। अच्छा हो समीर जी कानपुर के कलह-प्रिय वायु मंडल से ऊंचे उठे रहें। हम इस की उन्नति के अभिलाषी हैं।

विभूति—नामक मासिक पत्रिका महन्त शिवगुलाम भारती के सम्पादकत्व में रजादेपुर मठ, पो० सगरी, जि० आजमगढ़ से गत मास से प्रकाशित होने लगी है।

सरस्वती के आकार की पृष्ठ संख्या ४० और मूल्य ३) रु० वार्षिक है।

पत्र उदार विचार का होनहार प्रतीत होता है। ऊपर भूतनाथ 'शंकर' का भव्य रंगीन चित्र है।

लेख और कविताएं उत्तम है। अधिकांश कथाएं पौराणिक ढंग पर रोचक रीति से कही गयी हैं। 'युधिष्ठिर—यक्ष संवाद, शीर्षक लेख तथा 'आजमगढ़ जाग' कविता अच्छी है। भाषा में कहीं—कहीं बिहारीपन है। हम हृदय से इस की उन्नति के अभिलाषी हैं।

"कीचक वध नाटक" सी० पी० गजट में सूचना प्रकाशित हुई है। कि सरकार ने श्रीयुक्त खाडिलकर के कीचक वध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नामक नाटककी प्रतियां जब्त करनेका जो हुक्म जारी किया था उसे उसने रद्द कर दिया। १९१० ई० में सी० पी० सरकारने यह नाटक जब्त किया था। अब महाराष्ट्र नाटक मंडल में उक्त नाटक खेल जा रहा है। गत शनिवार को होम मेम्बर आनरेबल मि० ताम्बे भी नाटक देखने गये थे।

मराठी साहित्य में पुस्तकें

अभी हाल में मराठी भाषा की वाङ्मय-सूची प्रकाशित हुई है। सन् १८१० से १९१७ तक १०७ वर्ष में २०००० के लगभग पुस्तकें प्रकाशित हुईं। जिनमें सबसे अधिक नाटक ८५८, काव्य ७८०, जीवन चरित ३९८, उपन्यास ६४६, गल्प ५२३, इतिहास २२८, भूगोल २३५, यात्रा वर्णन १२८, खेल ७२, कला २७, धंधे ५३, वैद्यक २९१, कृषि ७४, संगीत ६५, भाषा-शास्त्र २३०, भौतिक विज्ञान १४१, नीति ३२४, मानवेतिहासिक अथवा शास्त्र ७९, इत्यादि—

क्या कोई संस्था हिन्दी में इस प्रकार का आयोजन करने का कष्ट उठावेगी। एक डाइरेक्टरी की अत्यन्त आवश्यकता है राजपूताना वाले कुछ उद्योग कर रहे हैं। अच्छा हो अन्य प्रान्त वाले भी इसी प्रकार का आयोजन कर डालें, तो यह अभाव सुगमता से दूर हो सकता है। हर्ष की बात है कि मरहठी में अनुवादों की संख्या कम है। ज्ञात नहीं हिन्दी वालों के सिर पर क्यों इसका भूत सवार है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन-समाचार

सप्तदश हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, भरतपुर के प्रकाशन मन्त्री ने नं० १० की सूचना अभी प्रकाशित की है। उसमें सहायकों की अत्यन्त आवश्यकता बतलायी है जो राजपूताने में भ्रमण कर सकें।

अजमेर के सम्बन्ध में गतांक में लिखा जा चुका है कि श्रीयुत ओझा जी महाराज की अध्यक्षता में अच्छा कार्य हो रहा है। चौधरी रामनारायणजी ने भी अत्यन्त परिश्रम किया था परन्तु वे जैपुर में कष्ट उठा रहे हैं। राहतजी अनवरत परिश्रम कर रहे हैं।

जोधपुर में श्रीयुत रेऊजी, पं० सुन्दरलाल, राय सा० बाबू जयलाल, प्रो० नारायण प्रसाद, आदि डा० ओंकारसिंहजी की प्रधानता में अच्छा कार्य कर रहे हैं। अधिकारीजी से अजमेर के वकीलों ने हिन्दी में कार्य करने की प्रतिज्ञा की है।

श्रद्धेय ओझाजी की अधिकारी जी ने भूरि-भूरि प्रशंसा की है।

नसीराबाद में दोनों पुस्तकालयों के कार्य कर्ता संलग्नता से कार्य कर रहे हैं।

परन्तु अधिकारीजी अस्वस्थ होकर वापिस आगये हैं। अतः हिन्दी-प्रेमियों को, मुख्यतः राजपूताना निवासियों को योग देने के लिये उद्यत रहना चाहिये। और आगे बढ़कर हाथ बटाना चाहिये।

जाट सभा के सभापति की विज्ञप्ति

राजस्थान जाट क्षत्रिय सभा के प्रधान कुंवर रतनसिंहजी ने एक विज्ञप्ति पत्रों में प्रकाशित की है। जिसमें कहा है कि राजपूताना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निवासी तथा अन्य हिन्दी-प्रेमियों को बिना किसी भेद-भाव के इसमें योग देना चाहिये। प्रत्येक प्रकार से सम्मेलन को सफल बनाना सब का परम कर्तव्य है।

पञ्जाब में हिन्दी प्रचार

श्रीयुत पं० जयचन्द्र विद्यालंकार और श्रीमती पारवती देवीजी ने पंजाब में दौरा लगाया। रावलपिंडी में श्री विद्वद्वर्य पं० दीनदयालजी शर्मा के सभापतित्व में भाषण हुए और देवनागरी प्रचारिणी सभा स्थापित हुई।

फिर दोनों सज्जन बटाला पहुँचे और वहां भी नागरी लिपि व हिन्दी-भाषा की उपयोगिता पर ४००० की उपस्थिति में भाषण हुए। यहां सफलता की अच्छी आशा है।

श्रीमती पार्वती देवीजी ने स्त्रियों में भी एक व्याख्यान दिया।

पंजाब प्रान्तीय सम्मेलन

पंजाब प्रान्तीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की तय्यारियां होरही थी। पं० जयचन्द्र विद्यालङ्कार ने लोगों से सम्मिलित होने के लिये अपील भी पत्रों में निकाली थी।

पं० प्रभूदयाल जी उपदेशक सम्मेलन प्रयाग और पं० लक्ष्मीनारायणजी प्रतिनिधि व स्वागत समिति के सदस्य बनाने के लिए दौरा लगा रहे थे।

परन्तु कई कारणों से सम्मेलन पहले मई से जून के लिये और अब २३। २४ अक्टूबर तक के लिये हटा दिया गया है।

फीरोज़पुर आदि स्थानों से तो प्रतिनिधि भी चुने जा चुके हैं। पत्रों में पदको पुरस्कारों व समस्याओं की सूचना भी दी जा चुकी है। आशा है पंजाब प्रान्तीय हिन्दी-प्रेमी लाहौर सम्मेलन को पूर्ण तथा सफल बनाने का प्रयत्न करेंगे। अब समय भी पर्याप्त मिल गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षा के लिये प्रस्ताव

श्रीयुत पं० दयाशंकरजी द्विवेदी प्रोफेसर अर्थशास्त्र लखनऊ विश्वविद्यालय ने कुछ प्रस्ताव प्रकाशनार्थ भेजे हैं—

(१) प्रथमा के वैकल्पिक विषयों में अर्थ शास्त्र को स्थान दिया जाय।

पाठ्य पुस्तकें

श्रीयुत भगवानदास केला कृत 'भारतीय अर्थशास्त्र';
विषय—उत्पत्ति, उपयोग

(२) मध्यमा—इसमें दो प्रश्न पत्र होने चाहियेः—

(१) प्रथम प्रश्न पत्र में—
वितरण, कर प्रणाली, कृषि, और उद्योग धन्धे

(२) द्वितीय प्रश्न पत्र में—
विनिमय, व्यापार, रुपया-पैसा, कागज़ी रुपया और बैंक

उत्तमा में ६ प्रश्न पत्र होने उचित है :—

प्रश्नपत्र प्रथम—प्राचीन अर्थशास्त्र
" द्वितीय—भारतीय अर्थशास्त्र
" तृतीय—(अ) साख
" (ब) भारत का आर्थिक इतिहास
" चतुर्थ—साम्यवाद, बोल्शेविज्म इत्यादि
" पंचम—राजनीति, शास्त्र व्यवस्था
" षष्टम—निबंध

नोट—द्विवेदीजी ने उत्तमा के अर्थशास्त्र संबंधी पाठ्यक्रम के संबंध में विस्तृत लेख लिखने का विचार किया है। आशा है शीघ्र आपके विचार जनता के समक्ष आवेंगे।

—सम्पादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अदालतों में हिन्दी प्रचार

तारीख़ १ जनवरी से २३ अप्रैल सन् १९२६ ई० तक की कुल अर्ज़ियों का ब्यौरा जो प्रयाग की अदालत में, सम्मेलन से नियुक्त लेखक पं० सृष्टिनारायण द्वारा दी गयीं—

इस्मनवीसी	सम्मन	रुक़ाइन्दुल तलब	ज्वाइंट मजिस्ट्रेट के इजलास में
२२	१६०	४	१२
बेदख़ली वइजाफ़ा लगान के मुक़दमा में जवाब दावा		नोटिस	वापसी दस्तावेज़
८		६	१८
मुआइना मिसिल	दरख़्वास्त नक़ल माल व फौजदारी इत्यादि		डि० बोर्ड
१०	६५		६
वकालत नामा	मुख़्तारनामा ख़ास		वाजवः नम्बर साबिक़
२४	६		२

कुल जोड़ ३८० }

इन दिनों में ३२ दिन अदालत बन्द रही।

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग,

"हिन्दी विद्यापीठ के लिए विद्यार्थियों की आवश्यकता"

यह बात तो अब हिन्दी-संसार से छिपी नहीं है कि हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन ने अपने हिन्दी-विद्यापीठ में प्रथमा तथा मध्यमा के पाठ्यक्रम के अनुसार साहित्य, इतिहास, गणित, भूगोल, कृषिशास्त्र, वनस्पति शास्त्र, विज्ञान एवं अन्यान्य अनेक प्रकार की औद्योगिक और अर्थकारी कलाओं और विषयों के शिक्षण का कार्य आरम्भ कर दिया है। विद्यापीठ का स्थान प्रयाग नगर के निकट, कालिन्दी कूल पर, महेवा गाँव में है। यह स्थान अत्यन्त रमणीक और स्वास्थ्य कर है। विद्यार्थियों के रहने के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक सुन्दर छात्रावास भी है। सभी प्रकार की शिक्षा निःशुल्क दी जाती है। होनहार, सदाचारी, प्रतिभाशाली और स्वस्थ विद्यार्थियों को छात्र-वृत्ति भी देने का प्रबन्ध है। विद्यार्थियों के भोजनादि के प्रबन्ध के लिए अभिभावकों को १०) मासिक व्यय देना पड़ता है। अन्य बातों के विषय में जानकारी प्राप्त करने के लिए निम्नाङ्कित पते से पत्र-व्यवहार करना चाहिए।

चतुर्वेदी द्वारकाप्रसाद शर्म्मा

व्यवस्थापक

हिन्दी-विद्यापीठ, हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन,

इलाहाबाद

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग

सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि ग्रीष्मावकाश के उपलक्ष्य में हिन्दी-विद्यापीठ का वार्षिकावकाश १५ मई से ३० जून तक मनाया जायगा। इन दिनों में विद्यालय सर्वथा बन्द रहेगा। जो विद्यार्थी अवकाश पर जाना चाहेंगे, जा सकेंगे। साथ ही जो विद्यार्थी हिन्दी-विद्यापीठ में ही निवास करके इस अवकाश में अपनी परीक्षाओं की तैयारी करते हुए शारीरिक उन्नति के ऊपर विशेष ध्यान देना चाहेंगे, उनके लिए हिन्दी-विद्यापीठ में आवश्यक सुविधाओं का प्रबन्ध रहेगा। कुछ उपाध्याय महोदय इस अवकाश में भी विद्यापीठ में ही निवास करते हुए विद्यार्थियों को आगामी परीक्षा में पूर्ण सफलता प्राप्त कराने के लिए शिक्षा-सम्बन्धिनी-सहायता देते रहेंगे। १ जुलाई को विद्यापीठ पुनः खुल जायगा और शिक्षा का कार्य पूर्ण उत्साह के साथ आरम्भ हो जायगा। १ जुलाई से ही वर्ष का आरम्भ माना जायगा, अतः उक्त समय पर नवीन विद्यार्थियों का विद्यापीठ में प्रवेश भी हो सकेगा। राष्ट्र-भाषा के माध्यम के द्वारा सभी विषयों की उच्च शिक्षा प्राप्त करने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के अभिलाषी विद्यार्थियों तथा उनके अभिभावकों को १ जुलाई के प्रथम ही कार्यालय से पत्र-व्यवहार करके अपने-अपने विद्यार्थियों को विद्यापीठ में भेज देना चाहिए।

चतुर्वेदी द्वारकाप्रसाद शर्म्मा
व्यवस्थापक
हिन्दी-विद्यापीठ, हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन,
प्रयाग

स्फुट विषय

काव्यानन्द

(१)

"गुलाब की"

लहक लही है लोनी लता लागि लोयन सो,
चहक चली है चंचरीक चित चाव की।
बहक वही है नीति शीतल सुगंध पौन,
जहक जगी है तेज ताब आफताब की।
भहक भगी है भय भूरि प्रजा वृन्दन की,
धहक धँसी है धाक धीरता सिताब की।
गहक गनीमन की ठसक मिटी है सबै,
दहक दिशान दशौं महक गुलाब की।

अम्बिकाप्रसाद भट्ट "अंबिकेश"
राज-कवि (रीवाँ)

(२)

"नैनन निहारिये"

रम्भापत्र आसन सुबैठि कै मनावै ईश,
साधन विलोकि जासु सिद्ध सब वारिये,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"श्रीहरि" प्रभूत घनसार की विभूति भाल,
माल एक एकावली कण्ठ मध्य धारिये ॥
मीलित नयन बामपाणि पै कपोल चारु,
चित्रपट चित्रित सुचित्र सी विचारिये ।
बैठी, लाल ! मौन ह्वै तमाल आलबाल बीच,
योगिनी अनोखी नेकु नैनन निहारिये ॥
मञ्जुल मृणाल सों मृदुल भुजमाल त्यागि,
कौन भाँति सेलो हा, नवेली गले धारिये,
गोकुल-गलीन में गोबिन्द-प्रेम गीत गाय,
नीरस विराग-राग कैसे धौं उचारिये
"श्रीहरि" सनेही को संयोग सुख भूलि कैसे,
योगिनी बनैंगी निज चित्त तो विचारिये ।
कोटि काम सुन्दर अनूप-श्याम रूप पेखि,
काहि अब ऊधो इन नैनन निहारिये ॥

—"श्रीहरि"

(३)

चित्रकूट-यात्रा

जबलपुर से लौटते हुए हमें कुछ आत्मीयजनों के साथ चित्रकूट में भ्रमण करने का अवसर मिला। नयागांव राज्य के तहसीलदार साहब मुंशी शारदाप्रसादजी 'रसेन्द्र' से इस यात्रा में बहुत सहायता प्राप्त हुई। आप बड़े साहित्य-सेवी, कवि और सहृदय सज्जन हैं। आपके द्वारा कई विद्वान्, तपस्विय के दर्शनों का भी सौभाग्य प्राप्त हुआ। कामदानाथ, पयस्वनी के किनारे के घाट व मंदिर, हनुमान् धारा, सीता-रसोई, प्रमोद-वन और स्फटिक-शिला आदि प्रसिद्ध तथा दर्शनीय स्थानों में भी आप साथ थे। काव्यानन्द भी अच्छा रहा। हनुमान-धारा के ऊपर बन-फल-भोजन के अवसर पर मुंशी जी ने यह छंद-रचना की,—

चित्रकूट पैसुनी के पार हनुमान धारा,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर्वत है न्यारा सुखसारा होत आये तें।
बजरंग मूरति पै गिरत अटूट धारा,
करत पहारा पाप वा जल नहाये तें॥
सोभित 'रसेन्दु' सिय-रसोई ता ऊपर है,
विपिन में तेंदू, बेल, आँवला सोहाये तें।
करौंदा मकोय हैं कटाई, समुदाई फल,
मिटत विकार दोई-चार-चार* खाये तें॥

हिन्दी

सूर ने सागर तें तुलसी ने जो मानस तें नगरासि लई है।
भूषन भूषन भाव बिहारी ने सूक्ष्म सुकैसव दीनी नई है।
चंद तें आज्ञु लगे बर लालन मातहिं जो बर भेंट दई है।
लेहु न 'मान' सबै बर मातु तें हिन्दी सो हिन्दुत्व-भाव-मई है॥

रघुबरदयालु मिश्र विशारद 'मान' इटावा

आवश्यक सूचना

परीक्षा-विभाग में प्रायः ऐसे अनेक पत्र नित्य आते हैं, जिनमें न तो इस कार्यालय के भेजे हुए पत्रों के विषयों का हवाला रहता है और न उनकी तिथि तथा संख्या का ही उनमें कुछ उल्लेख होता है। अर्थ-विभाग में भी इसी प्रकार जो विद्यार्थी परीक्षा शुल्क मनीआर्डर द्वारा भेजते हैं, उनमें से अधिकांश मनीआर्डरफ़ार्म के कूपन में अपना पूर्ण पता तक नहीं लिखते। ऐसे महानुभावों को हमें यह सूचित करते हुए खेद है कि उनके पत्रों पर शीघ्र उचित कार्रवाई करने में हम सर्वथा असमर्थ हैं।

परीक्षा-मंत्री
हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग

---

*चार=चिरौंजी का फल जिसकी गुठली में से चिरौंजी निकलती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ उत्तमोत्तम सस्ती पुस्तकें

सरल-शरीर-विज्ञान—यह सचित्र पुस्तक मध्यमा परीक्षा के उन परीक्षार्थियों के लिए बड़े काम की है जो उसके वैकल्पिक विषयों में शरीर-विज्ञान लेकर बैठते हैं। पृष्ठ संख्या १६८, सुन्दर रेशमी जिल्द मूल्य ॥।)

महात्मा टालस्टाय के विचार—रशियन ऋषि महात्मा टालस्टाय संसार के उन महान् व्यक्तियों में से थे जो अपनी अलौकिक प्रतिभा से संसार के विचारों में बड़ा उलट-फेर कर जाते हैं। इन्हीं महात्मा टालस्टाय के युगान्तरकारी विचारों का दिग्दर्शन इस पुस्तक में बड़ी प्राञ्जल भाषा में किया गया है। पृष्ठ-संख्या १२८, मूल्य ।-)

सनयाटसेन—चीन देश के उद्धारक डाक्टर सनयाटसेन का यह जीवन चरित्र निर्बलों में बल, निराशों में आशा, मृतकों में जीवन, देशद्रोहियों में देश-प्रेम और अकर्मण्यों में कर्मण्यता फूकने वाला है। पृष्ठ-संख्या ११२, मूल्य ।)

सञ्जीवनी—इसमें मुर्दा दिल में जान डालने वाली २८ कविताएँ संग्रहीत हैं। ये कविताएँ कैसी हैं, इस विषय में इतना ही लिखना पर्य्याप्त होगा, वे सब कानपुर के काव्य-प्रेमी बाबू बेनीमाधवजी खन्ना द्वारा पुरस्कृत हो चुकी हैं। पृष्ठ-संख्या १४४, मूल्य ।-)

इतना तो जानो—इसमें स्वदेशी, ग्राम-पंचायत, अस्पृश्यता, हिन्दू-मुसलिम-ऐक्य, अदालत और पंच आदि भारतीय जीवन के महत्व-पूर्ण प्रश्नों पर प्रकाश डाला गया है। मूल पुस्तक, जिसका यह हिन्दी-अनुवाद है, श्रीयुत महादेव हरिभाई देसाई की लिखी हुई है। पृष्ठ-संख्या १५० मूल्य ।-)

महात्मा गांधी के निजी पत्र—इस पुस्तक में महात्माजी के उन पत्रों का संग्रह है जो इन्होंने समय-समय पर अपने कुटुम्बियों और मित्रों को लिखे हैं। पत्र क्या हैं—जीवन के पथ-प्रदर्शक हैं। महात्माजी के जीवन का रहस्य समझने के अभिलाषी युवकों को तो इसे अवश्य पढ़ना चाहिए। पृष्ठ-संख्या १२८, मूल्य ।-)

तेरहवें हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की स्वागत-कारिणी-समिति के सभापति की हैसियत से दिया गया श्रीमान् पं० महावीरप्रसादजी द्विवेदी का भाषण पुस्तकाकार छप कर तैयार है। पृष्ठ-संख्या ८० मूल्य ≡)

साहित्य-मंत्री

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग

मुद्रक—दीवान वंशधारीलाल, हिन्दी-साहित्य प्रेस, प्रयाग।
प्रकाशक—हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यापारियों के लिये सुअवसर

साहित्य-सम्मेलन के साहित्य-विभाग ने सम्मेलन पत्रिका में विज्ञापन लेने का निश्चय कर लिया है। जो सज्जन इसमें विज्ञापन देना चाहें, सम्मेलन के साहित्य-मंत्री से पत्र-व्यवहार करें। यह पत्रिका बड़े बड़े रईसों, राजाओं, सेठ-साहूकारों, अधिकारियों, महाराजाओं और विद्वानों के हाथ में जाती है। अतः इसमें विज्ञापन देने से बहुत लाभ हो सकता है। अश्लील और कुरुचि-पूर्ण विज्ञापन प्रकाशित नहीं किये जायँगे।

व्यापारियों को चाहिये कि इस सुअवसर को हाथ से न जाने दें और इससे यथोचित लाभ उठावें। पुस्तक-विक्रेताओं के लिए तो यह अपूर्व अवसर है। यह एक रजिस्टर्ड अखिल भारत-वर्षीय संस्था का मुख-पत्र है। अतः इसमें प्रकाशित बातों का मान भी अधिक है। सर्व-साधारण इसे आदर की दृष्टि से देखते हैं। इसमें विज्ञापन देने से बिक्री की अधिक आशा है।

लक्ष्मीधर वाजपेयी

साहित्य-मन्त्री

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग

सम्मेलन-परीक्षार्थियों को एक सुअवसर

जो परीक्षार्थी संवत् १९८३ वि० की सम्मेलन-परीक्षा में आजमगढ़ केन्द्र से परीक्षा में बैठेंगे, उनका परीक्षा-शुल्क आजमगढ़ के रईस श्रीमान् रायबहादुर बाबू मुकुन्दलाल जी देंगे। सम्मेलन परीक्षाओं से प्रेम रखनेवाले परीक्षार्थियों को रायबहादुर साहब के हिन्दी-प्रेम से लाभ उठाना चाहिए।

परीक्षा-मंत्री

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चैत्र-वैशाख सम्वत् १९९६

सम्मेलन पत्रिका

[भाग २६, संख्या ८, ९]

संपादक
श्री रामकुमार वर्मा, एम्० ए०,
साहित्य मंत्री

हिन्दी साहित्य सम्मेलन
प्रयाग

वार्षिक
1)

एक प्रति ≈)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

१—सूर का शृंगार [श्री गौरीशंकर त्रिपाठी एम० ए०] ... १
२—हिन्दी संसार [श्री जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल, वैद्य, संग्रह मन्त्री] १०
३—प्राप्ति स्वीकार " " ... १८
४—दिल्ली-हिन्दी-परिषद् ... २७
५—परिशिष्ट ... २९
६—परीक्षाफल ... ३५
७—संवत् १९९५ की पदक सूची ... १३२
८—हिन्दी-विश्व-विद्यालय (संवत् १९९५ की परीक्षाएँ) ... १३३
९—परीक्षकों के वक्तव्यों का सारांश ... १४२
१०—उत्तर पुस्तकों के पुनर्वार निरीक्षण का परीक्षा फल ... १४८
११—विविध विषय ... १५१
१२—सम्पादकीय दृष्टिकोण ... १६०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं। किन्तु कोरे साहित्यिक इस योजना को सफल बनाने में कृतकार्य होंगे या नहीं इसमें हमें सन्देह है। इसके लिये कोई ऐसा साहित्यिक सामने आना चाहिये जो केवल कल्पना और तरंग के बल नहीं, किन्तु वास्तविकता को समझता हुआ व्यापार-कला में भी प्रवीण हो। केवल सिद्धान्त के बल नहीं, किन्तु प्रत्यक्ष अनुभव और कार्यकुशलता का भी संयोग कर इसमें जुटना चाहिये।

हिन्दुस्तानी राष्ट्र भाषा हो—कुछ दिन पहले दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा का पदवी-दान-समारम्भ हुआ था। उसमें दीक्षान्त-भाषण करते हुए श्रीमती सरोजनी नायडू ने कहा कि हिन्दुस्तान की एकता और आज़ादी के लिये एक ज़बान की सख्त ज़रूरत है। एक ज़माने में यूरोप में 'लिंग्वाफ्रांका' बनाकर इङ्गलैण्ड, रूस, स्वीजरलैण्ड और स्पेन को मिलाया गया था। यूरोप की एक सभ्यता बनाने के विचार से किसी कौम ने उसके विरोध में सत्याग्रह नहीं किया था। किसी ने यह नहीं कहा कि फ्रेंचके प्रचारसे हमारी ज़बानको नुक़सान होगा। संगीतमय भाषा वाले इटली के किसी विद्वान् ने यह आवाज़ नहीं उठायी कि इससे हमारी ज़बान मर जायगी। आज अगर इतनी मुख्तलिफ ज़बानों के रहते हुए हिन्दुस्तान में एक क़ौमी ज़बान फैलायी जा रही है तो क्या यह कोई गुनाह है? ज़बान के मामले में उत्तर और दक्षिण, हिन्दू और मुसलमान कोई हस्ती नहीं रखते। उत्तर के लोगों में बहुत से ऐसे मुसलमान मिलेंगे जो संस्कृत जानते हैं, कबीर और मीराबाई के गीत गाते हैं।

आज फ़जलुलहक साहब को खौफ है कि बंगाल में हिन्दुस्तानी के प्रचार से उर्दू पर हमला किया जा रहा है। मगर घर में बँगला बोलने वाले फ़जलुलहक़ साहब को मैं इतमीनान दिला देना चाहती हूँ कि इससे उर्दू का कोई नुक़सान नहीं है। रोजमर्रा के लिये हमें सरल भाषा चाहिये। भले ही साहित्य के लिये हम बड़े बड़े लफ़्ज़ोंवाली भाषा सीख सकते हैं। मगर हिन्दुस्तानी में हिन्दी-उर्दू जैसा कोई फ़र्क नहीं है। हिन्दी विरोध आन्दोलन तो राजनैतिक है, जो राजगोपालाचारी जी के सिर पर मारने के लिये एक हथियार का काम दे रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज़बान किसी एक क़ौम की चीज़ नहीं है, ज़बान तो दिल की होती है। मैं चाहती हूँ कि दिल्ली के मैदान में आन्ध्र-तामिल और केरल के भाई जाकर अपने दिल के ख्यालात वहाँ के लोगोंको समझावें। ज़बान दिल की भी है। अगर हमें एक से बोलना है तो अंगरेज़ी से काम चल सकता है, लेकिन अगर आप लाखों और करोड़ों से बोलना चाहते हैं तो अंगरेज़ी से काम नहीं चलेगा। यूरोप की तरह हमें भी एक क़ौमी ज़बान को अपनाना है। नक़शे में देखें तो हिन्दुस्तान के सब से ज़्यादा हिस्से में हिन्दी बोली जाती है। अगर हम "कामनसेंस" से काम लें तब भी हमें पता चलेगा कि हमारी क़ौमी ज़बान हिन्दी-हिन्दुस्तानी हो सकती है। यहाँ हिन्दी-उर्दू का झगड़ा महज लफ़्ज़ों का है। हम लोग असलियत पर कभी नहीं झगड़ते हैं, बल्कि लफ़्ज़ों पर ही मर मिटते हैं। ये हिन्दुस्तानी का विरोध करने वाले अपनी नाक कटा रहे हैं और भाई तुम अपनी ज़बान लेकर अलग हो जाओगे तो किसका बिगड़ेगा, तरक़्क़ी की नदी में नहीं बह पाओगे। हिन्दुस्तान के मुख्तलिफ़ दिलों को मिलाओ, तभी तुम्हारी डिग्री मुबारक होगी, तभी यह ज़बान अमृत होगी। "एक बोली से एक दिल होगा। एक दिल से ही एक कोशिश होगी। एक कोशिश से ही एक क़िस्मत होगी और वह क़िस्मत ही आज़ादी है।"

मद्रास में हिन्दुस्तानी स्कूल—मद्रास सरकार अपने प्रान्त में हिन्दुस्तानी की शिक्षा के लिये ज़ोरदार प्रयत्न कर रही है। पिछले साल इस काम के लिये उसने १०० स्कूल खोले थे। इस वर्ष प्रान्त के विभिन्न भागों में अनिवार्य रूप से हिन्दुस्तानी भाषा की शिक्षा के लिये १०० नये माध्यमिक स्कूल और खोल रही है। यदि इसी प्रकार अन्य अहिन्दी प्रान्तों में भी सरकार प्रयत्नशील हो तो इस दिशा में शीघ्र सफलता मिल सकती है।

विलायती सतह तोड़ दो—"वर्तमान" के सम्पादक महोदय ने एक लेख लिखकर दिखलाया है कि अब विलायती सतह तोड़ देनी चाहिये और राष्ट्र-जीवन में भाषा का महत्त्व बढ़ाना चाहिये। आपका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहना है कि किसी भी देश का और समाज का साहित्य उस देश और समाज का अवलम्ब है। साहित्य में इतिहास का सार रहता है। वह संचित धन है, राष्ट्रों और जातियों का मूल्य उसी के हिसाब में आंका जाता है। साहित्य के हाथ में जातियों को नष्ट करने और जातियों को जीवित रखने की शक्तियाँ हैं। मानव समाज के जीवन में आज एक जागरण-युग का उदयकाल है। अब वैयक्तिक या सामूहिक सत्ता का आतङ्कमय अनुशासन मानव-समाज को अधिक काल तक दाब कर नहीं चल सकता। आवश्यकता ने मानव जाति को परस्पर निकट ला दिया है। उस सांस्कृतिक विकास का साधन और माध्यम है साहित्य। भारत में ऐसे नवीन साहित्य की आवश्यकता है जिससे देश की सब जातियों और श्रेणियाँ में सांस्कृतिक स्फूर्ति जागे। पृथक भाव कम हो, मेल बढ़े। हितविरोध के मध्य हितैक्य स्थापित हो।...मनुष्य जाति का ऐक्य साहित्य द्वारा सम्भव और सम्पन्न होगा। वर्तमान की मर्यादाएं हैं, पर साहित्य उनके पार भी देखता है और इसलिये वर्तमान को वह सदा भविष्य की ओर गतिशील रखता है। भारतीय समाज में अंगरेज़ी के कारण वर्गभेद उत्पन्न हुआ है और मानव-सम्बन्ध कृत्रिम और शिथिल बने हैं। समाज में एक ऐसी विलायती सतह बन गयी है जो ऊपर होकर जीवन के प्राकृतिक विकास को रोकती है और राजनीति उस शहर वाली सतह पर रहकर अपने आपमें व्यस्त है कि देहात में बसने वाला भारत अछूता सूखने को छूट गया है।...ऐसी स्थिति में अगर भारतीय भाषा और भारतीय साहित्य द्वारा देश के अन्तरंग सांस्कृतिक ऐक्य को सचेत करने का प्रयत्न न किया जायगा तो समस्याएँ बढ़ेंगी और विच्छेद बढ़ेगा। इसमें देश का अनिष्ट है। इस कामके लिये सब से उपयोगी साधन साहित्य है। क्योंकि साहित्य किसी बाहरी शक्ति के सहारे नहीं, केवल हार्दिक सद्भावना के बल पर लोकमत की सच्ची ताक़त को जगाता है। साहित्य सम्मेलन ने जो अनुकूलता राष्ट्रीय महासभा के प्रति स्थापित की है और दक्षिण भारत में जो हिन्दी-प्रचार की योजना काम में लायी जा रही है वह बहुत महत्वपूर्ण है। दक्षिण भारत की चार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भिन्न भिन्न भाषा-भाषी जातियाँ आज हिन्दी के अध्याय में एकीभूत हुई हैं और वे सामूहिक रूप में उसी हिन्दी के माध्यम से उत्तर भारत से एकीभूत हो रही हैं। हिन्दी द्वारा देश को एकता की ओर ले जाने का यह उदाहरण हमें प्रोत्साहित करता है। हिन्दी में लेखक और पाठक जिस गति से बढ़ रहे हैं, साहित्य-सौष्ठव और तेज उस गति से नहीं बढ़ रहा है।

जैन सभा में राष्ट्र भाषा—सेण्ट टामस पहाड़ के वर्धमान जैन युवक के जलसे तथा महावीर जयन्ती के अवसर पर मद्रास के कानून मन्त्री डाक्टर बी० सुब्बारायन ने तामिल भाषा में बोलते हुए कहा कि यदि हम लोगों को संयुक्त और स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में रहना है तो इस देश भर के लिये एक साधारण भाषा होनी ही चाहिये। इस बात में तनिक भी सन्देह नहीं कि हिन्दुस्तानी ही वह भाषा हो सकती है। क्योंकि इस देश के अधिक आदमी उस भाषा को जानते हैं। हिन्दुस्तानी सीखने से तामिल भाषा को ज़रा भी नुकसान नहीं पहुँचेगा। दूसरे देशों में कोई न कोई विदेशी भाषा लाज़िमी तौर पर पढ़नी पड़ती है। इंगलैंड के स्कूलों में फ्रांसीसी या जर्मनी भाषा अनिवार्य रूप से सीखनी पड़ती है। मद्रासी लोग अंग्रेज़ी जैसी विदेशी भाषा सीखने में नाम पैदा कर चुके हैं; फिर उन्हें हिन्दुस्तानी सीखने में क्या कठिनाई पड़ सकती है?

पहाड़ीजी का स्वर्गवास—हिन्दी के सुप्रसिद्ध कहानी लेखक श्री राम प्रसाद घिल्डियाल "पहाड़ी" का अभी २६ वर्ष की युवावस्था में ही स्वर्गवास हो जाने का दुःखदायी समाचार मिला है। आप यद्यपि एक सम्पन्न घराने के युवक थे तथापि आपने साहित्य सेवा का मार्ग स्वीकार किया जिसमें सदा आर्थिक कष्ट ही प्रायः रहता है। उसी आर्थिक कष्ट के कारण और आत्माभिमान के वश घर से सहायता न लेने के कारण आपका जीवन अव्यवस्थित रहता था और आप चिन्ताओं के शिकार बने रहते थे। आपको हृद्रोग था; किन्तु उसकी समुचित चिकित्सा आप न करा सके। सन् १९३० से आपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी में लिखना आरम्भ किया था और इस बीच में ही कहानी लिखने में आपने अच्छी ख्याति प्राप्त कर ली थी। आपकी कहानियां एक नयी शैली की होती थीं। कुछ उपन्यास भी आपने लिखे हैं; किन्तु वे अभी अप्रकाशित हैं। हिन्दी को आप से बहुत आशाएँ थीं; किन्तु शोक है कि असमय में ही आपका जीवन-पुष्प सूख गया।

अदालत में नागरी—बांदा की हिन्दी साहित्य-सभा अदालतों में नागरी लिपि का प्रचार करने का प्रयत्न कर रही है। नगरमें और अन्यत्र भी नागरी प्रचारक पुस्तकालय और दयानन्द वाचनालयके सहयोगसे तथा साहित्यिक बैठकों द्वारा हिन्दी प्रचार कर रही है। बुन्देलखण्ड हिन्दी साहित्य-सम्मेलन कराने का भी यह उद्योग कर रही है। मन्त्री मुंशी मथुरा प्रसादजी इसके लिये अधिक प्रयत्नशील हैं।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन—पण्डित नारायण दत्त पाण्डेय एम० ए०, एल-एल० बी० ने "प्रभात" में हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सम्बन्ध में एक लेख लिखकर उसका दिग्दर्शन कराया है। उनका कथन है कि संक्षेप में हिन्दी भाषा तथा साहित्य का उत्थान और हिन्दी तथा देवनागरी का प्रचार इन दो उद्देश्यों को लेकर सम्मेलन की स्थापना हुई थी। आज सम्मेलन गर्व के साथ कह सकता है कि इन दोनों उद्देश्यों की पूर्ति में उसे आशातीत सफलता प्राप्त हुई है और आगे के लिये भविष्य और भी अधिक उज्ज्वल दीखता है। आज दिन सम्मेलन एक बहुत बड़ी सजीव संस्था है। स्थायी समिति, साहित्य-समिति, प्रचार समिति और संग्रह समित के कार्यकलापों का वर्णन करते हुए आपने लिखा है कि संग्रहालय की पूर्ति के लिये संग्रह समिति बराबर प्रयत्नशील है।...संग्रहालय की पुस्तक संख्या तथा अन्यान्य संग्रहणीय वस्तुओं की वृद्धि के लिये हिन्दी प्रेमी जनता और हिन्दी प्रकाशकों तथा पत्र-पत्रिकाओं की सहायता अपेक्षित हैं।...राष्ट्र-भाषा प्रचार के प्रयत्नों के फलस्वरूप आज दिन सुदूर दक्षिण, बंगाल तथा आसाम ऐसे प्रान्तों में भी हिन्दी-विदों की संख्या बढ़ती जा रही है।...सम्मेलन के कार्यक्रम का सब से महत्वपूर्ण अंग सम्मेलन-परीक्षाओं का संचालन है। इत्यादि।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरिजन और हिन्दी—मद्रास में स्वामी सहजानन्द जी के सभापतित्व में हरिजनों की एक सभा हुई। उसमें अन्य प्रस्तावों के साथ यह प्रस्ताव भी पास हुआ कि "हरिजनों की उन्नति के लिये प्रान्तीय सरकार जो सुविधाएँ दे रही है और जो कार्य कर रही है यह सभा उसकी प्रशंसा करती है और धन्यवाद देती है। यह सभा इस सम्बन्ध में प्रधान मन्त्री माननीय श्री राजगोपालाचार्य के प्रति अनुग्रह प्रकट करती है।" आगे कहा गया है कि "राष्ट्रीय एकता के लिये हिन्दी का अध्ययन करने का जो प्रचार कांग्रेस ने किया है, उसकी सुविधा हरिजनों को भी दी जाय। हरिजनों की इस सभा का दृढ़ विश्वास है कि हिन्दी को अनिवार्य बनाने से हमारे गौरव पूर्ण मातृभाषा तामिल को कोई क्षति नहीं पहुँचेगी।" आगे हरिजन शब्द को स्वीकार कर कहा गया है कि "सभा कुछ बहके हुए लोगों के विचार की निन्दा करती है।" आखिर असलियत कब तक छिपेगी। हिन्दी द्वारा जो राष्ट्रीयता की सुविधा मद्रासियों को मिलने वाली है उसका महत्व वे इसी प्रकार समझ जायँगे। स्वामी सहजानन्द जी और हरिजनों को धन्यवाद।

हिन्दी की पुस्तकें—अक्टूबर, नवम्बर और दिसम्बर तीन महीनों में संयुक्त प्रान्त में कुल ६८२ पुस्तकें प्रकाशित हुईं। इनमें से ४६२ केवल हिन्दी की थीं, ५७ अंग्रेजी की, ५५ उर्दू की तथा १०८ अन्य भाषाओं की। हिन्दी की पुस्तकों में २३९ कविता सम्बन्धी हैं।

संयुक्त प्रान्त की शिक्षा—संयुक्त प्रान्त में पिछले साल विद्यार्थियों की संख्या १५८३९१५ थी। इस वर्ष १६२०७२२ हो गयी। गत वर्ष शिक्षण संस्थाएं २२५६३ थी। इस वर्ष घटकर २२४०८ हो गयी हैं। आबादी के विचार से पौने छः सैकड़ा बालक शिक्षा पाते हैं। बालिकाओं का औसत एक सैकड़ा से थोड़ा अधिक है। शिक्षा में इस वर्ष ४४१७८३ रुपया खर्च हुआ। संयुक्तप्रान्त के पाचों विश्वविद्यालयों में १३६२१ विद्यार्थी थे। विश्वविद्यालयों में शिक्षा पानेवाली लड़कियों की संख्या बढ़ रही है। सरकारी रिपोर्ट में कालेजों की अनुशासन-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हीनता की आलोचना की गयी है। प्रारम्भिक शिक्षा पाने वाले विद्यार्थियों की संख्या १२२११८२ थी। इन पर ८८२४१२९ रुपये ख़र्च किये गये। इस प्रान्त के ३५७ स्थानों में शिक्षा अनिवार्य की गयी है। लड़कियों की शिक्षा के लिये २३०४ संस्थाएं थीं जिनमें १४४९९८ लड़कियाँ शिक्षा पाती रहीं। ऐंग्लो इण्डियन और यूरोपियन शिक्षार्थी ६९९९ थे, परन्तु इनके लिये खर्च २६०५५९६ रुपया हुआ। हरिजन विद्यार्थियों की संख्या १६६६३५ थी। साधारण व्यय के अतिरिक्त छात्रवृत्त आदि में इनके लिये २४१३२८ रुपये अधिक व्यय हुए। काशी संस्कृत कालेज के परीक्षार्थी ७१९ और फ़ारसी के परीक्षार्थी ९६३ थे।

स्वर्गीय लाला हरदयालु की सम्मति—देश भक्त लाला हरदयालु का अभी हाल में ही अमेरिका में स्वर्गवास हो गया है। स्वर्गवास के पहले अपने देश के भविष्य के सम्बन्ध में अपने विचार लिपि-बद्ध कर दिये थ। भाषा के सम्बन्ध में आप लिखते हैं, "जो शुभ काम हिन्दी साहित्य सम्मेलन साहित्य के विषय में कर रहा है वही काम राजनीति के क्षेत्र में अब आरम्भ कर दो।...हिन्दी साहित्य सम्मेलन राष्ट्रीय सम्मेलन का एक विभाग हो जाय। पूर्ण राष्ट्रीय पतों के बिना निरे साहित्य से क्या लाभ है? क्या हिन्दी भाषा गुलामी की भाषा है या रहेगी?......राष्ट्रीय शिक्षा भी यथाशक्ति दी जाय। राष्ट्रीय सभा में केवल साहित्य, इतिहास, उत्सव, जनता की आर्थिक और राजनैतिक स्थिति, राष्ट्रीय शिक्षा तथा सरकार के अत्याचार के प्रतिकूल प्रचार इत्यादि प्रश्नों ही पर विचार होना चाहिये।......अब तो मातृभाषा द्वारा अपना सच्चा जातीय सम्मेलन करो। बुनियादें रखो, फिर स्वराज्य-मन्दिर बनेगा, समय हमारा साथी है।......विविध भाषाएँ बोलकर बड़ी सर्वभारतीय "कांग्रेस" करना मूर्खता है, यह केवल गड़बड़ है। इससे प्राकृतिक एवं गहरी देशभक्ति कभी उत्पन्न नहीं होगी। प्रत्येक हिन्दू अपनी भाषा और मातृभूमि से प्रेम रखे। यह मेरे विचार हैं। हिन्दी भाषी सज्जन गुणदोष की परीक्षा करें; सम्भव है कि मैं भूल पर होऊँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राप्ति स्वीकार

(लेखक जगन्नाथप्रसाद शुक्ल वैद्य, संग्रह मन्त्री)

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के संग्रहालय के लिये निम्नलिखित प्रकाशकों से नीचे लिखी हुई पुस्तकें प्राप्त हुई हैं। प्रेषकों को इस कृपा के लिये अनेक धन्यवाद !

त्रिपुरी का इतिहास—इस वर्ष की राष्ट्रीय महासभा जबलपुर के पास तेवर ग्राम में हुई थी जो पुरानी त्रिपुरी का भग्नावशेष है। त्रिपुरी बहुत प्राचीन बस्ती है। जब त्रिपुरासुर का भगवान् शंकर ने वध किया और उसकी राजधानी जला डाली तब दैत्यों ने त्रिपुरी में आकर शरण ली और यहीं पुरी बसाकर बस गये। रावण के प्रसिद्ध प्रतिद्वन्दी सहस्रार्जुन भी यहीं का राजा थे। हैहय वंश का यहाँ सदियों साम्राज्य रहा है और अन्त में गोंड नरेशों ने यहां राज्य किया है। अकबर के सूबेदार और सेनापति आसफ़खां से लोहा लेनेवाली वीर नारी दुर्गावती यहों की अधीश्वरी थीं। इसका पूर्ण इतिहास बहुत खोज के बाद सिक्कों, ताम्रपत्रों और शिला-लेखों के आधार पर श्रीयुक्त व्याहार राजेन्द्र सिंह जी और श्रीयुक्त विजय बहादुर श्रीवास्तव ने लिखा है। यह त्रिपुरो का ही नहीं, दक्षिण कोशल, चेदि राज्य और गोंडवाने का अच्छा इतिहास है। अपनी स्वतन्त्र खोज से लेखकों ने पुस्तक का महत्व बढ़ा दिया है। प्राचीन महलों, शिला-स्तम्भों और प्राप्त मूर्तियों के चित्रों से पुस्तक और भी अच्छी हो गयी है। डेढ़ रुपये में पुस्तक मानसमन्दिर जबलपुर से प्राप्त होगी।

सेठ गोविन्ददास—इस वर्ष की राष्ट्रीय महासभा के स्वागताध्यक्ष त्यागमूर्ति सेठ गोविन्ददास जी थे। आप जबलपुर के सुप्रसिद्ध राजा गोकुलदास के पौत्र अथच बहुत ही धनी घर के कुमार हैं। किन्तु राष्ट्र-सेवा के पीछे आपने त्यागमय जीवन स्वीकार किया है। आप राजनीतिक पुरुष ही नहीं, सुप्रसिद्ध साहित्य प्रेमी भी हैं। इस पुस्तक में इन्हीं सेठजी का पूर्ण जीवन-चरित्र दिया गया है। चरित्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की लेखिका स्वयं उनकी विदुषी पुत्री श्रीमती रत्नकुमारी देवी काव्यतीर्थ हैं। इसमें आपके भिन्न-भिन्न अवसरों के चित्र, रचित ग्रन्थों का आभास तथा कार्यकलाप के साथ ही कुछ महत्वपूर्ण भाषणों के अंश दिये गये हैं और अपने पूज्य पिता जी को आपने जो त्याग पत्र लिखकर दिया है वह भी दिया गया है। पुस्तक महाकोशल साहित्य-मन्दिर गोपाल बाग जबलपुर से मिलेगी।

सोने का जाल—"सोने का जाल" सहित इसमें १० कहानियां हैं। लेखक श्री राजेश्वरप्रसाद सिंह हैं। भाषा सुधरी हुई, भाव निखरे हुए, वर्णन शैली फड़कती हुई, किन्तु आदर्शसीमा के अन्तर्गत है। कहानियां जानदार हैं; अपना उद्देश्य साफ बता देती हैं। दाम १।), पता भारती भण्डार, लीडर प्रेस, प्रयाग।

कमबख़्ती की मार—नौ कहानियों के संग्रह की पुस्तक है। लेखक हैं सुप्रसिद्ध हास्यरस के लेखक श्रीयुक्त जी० पी० श्रीवास्तव। सभी कहानियां इस ढंग से मँजी हुई हँसी से भरी हैं और ऐसे स्वाभाविक क्रम से सजी हुई हैं कि बरबस हँसी आये बिना नहीं रहती और स्वाभाविकता से वे दूर नहीं जा पातीं। हास्य शिष्ट है। यही नहीं. प्रत्येक कहानी अपनी उठान, अपनी चाल और अपनी समाप्ति बिलकुल ही निराले प्रकार की रखती है। बीच में पाठकों को कहीं पर भी भाँपने नहीं देती कि धारा किस ओर जा रही है। दाम १), मिलने का पता भारती भण्डार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद।

श्री गुरु गोविन्दसिंह—यह सिखों के दसवें गुरु श्रीगोविन्द सिंह जी महाराज का जीवन चरित्र है। जीवन चरित्र की सामग्रियों की खोज और उनका उपयोग कर यह लिखा गया है। सिख इतिहास-माला का यह तृतीय पुष्प है। डाक्टर सरदार जसवन्तसिंह एम० बी० बी० एस० इसके लेखक और प्रकाशक हैं। इन्हीं से डेढ़ रुपये में जनरलगंज मथुरा के पते पर पुस्तक प्राप्त होती है। गुरु गोविन्द सिंह का विलक्षण जीवन चरित्र, सिख पन्थ और जाति का निर्माण, सिक्खों में वीरता फूंकने की अद्भुतकला, एक गुरु होते हुए और किसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राज्य के अधिकारी न होते हुए भी हज़ारों की फ़ौज रखने, युद्ध करने आदि में उनकी कुशलता, साथ ही गुरु के योग्य उनकी धार्मिक निष्ठा आदि का चित्रण इसमें अच्छी तरह हुआ है। जहाँ राम, कृष्ण, शंकर, शिवाजी आदि से तुलना की गयी है, वहां उस ढङ्ग से आलोचना न होने पर भी गुरु साहब की सर्व-श्रेष्ठता प्रतिपादित हो सकती थी। अन्त में गुरु साहब की कुछ रचनाओं की बानगी भी दी गयी है, जिससे विदित होता है उनमें किस प्रकार अखिल गुणों का निवास था।

सूर-सुषमा—महात्मा सूरदास के सूरसागर से १५१ पद छांटकर विद्यार्थियों के उपयोग के लिये पण्डित नन्ददुलारे बाजपेयी ने इस संग्रह का सम्पादन किया है। भूमिका में काव्य की पूर्वी और पश्चिमी विचार-धारा की आलोचनात्मक चर्चा, भक्ति का रहस्य तथा सूरदास और उनके काव्य का महत्त्व खूबी से दिखलाया गया है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से विचार कर जगत की सत्यता और मानव शरीर की महत्ता प्रतिपादित की गयी है। अध्यापकों को सुझाया गया है कि अपने भक्त-काव्य का शिक्षण अपनी देशी परिपाटी के अनुसार करें। पुस्तक एक रुपये में काशी नागरी प्रचारिणी सभा से मिलेगी।

सेठ गोविन्ददास के नाटक—मध्यप्रदेश के काँग्रेसी नेता सेठ गोविन्ददास जी केवल एक प्रसिद्ध पूंजीपति के त्यागवीर सुपुत्र और राजनैतिक अगुवा ही नहीं, एक अच्छे साहित्यिक, कवि, उपन्यासकार और नाटककार भी हैं। इस पुस्तक में उन्हीं के नाटकों की आलोचनात्मक चर्चा है। लेखिका उन्हीं की सुपुत्री श्रीमती रत्नकुमारी देवी काव्यतीर्थ हैं। पुस्तक १।) में प्रकाशक, महाकोशल-साहित्य-मन्दिर, गोपाल बाग़, जबलपुर से मिलती है।

लिपि-कला—पण्डित गौरीशंकर भट्ट लिपि-कला-कुशल सुलेखाचार्य हैं। आप विविध भाँति से चित्रविचित्र अक्षर बनाने में सिद्धहस्त हैं। आप तरह तरह के मोनोग्राम भी तैयार करते हैं। इस पुस्तक में उन्हीं सब का नमूना है। उन्हीं से चार आने में अक्षर विज्ञान कार्या-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कय, मसवानपुर, कानपुर के पते से पुस्तक मिलती है।

झलक—इसमें श्रीयुक्त वेनीमाधव शर्मा ने पण्डित अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' जी की जीवन-घटना की १५ स्मृतियों को लेकर उनका चरित्र-चित्रण, स्वभाव-दर्शन, कीर्तिकलाप और साहित्यिक गवेषणा आदि का परिचय दिया है। ढङ्ग आकर्षक और औपन्यासिक है। इस तरह की कृतियों की बड़ी आवश्यकता है। दाम ॥), मिलने का पता, पण्डित प्रभुदयाल शर्मा, शर्मन प्रेस, इटावा।

बाल-कवितावली—कविसम्राट् पण्डित अयोध्या सिंह उपाध्याय जी ने इसमें बालकों के मनोविनोद के लिये अनेक बिषयों की कविता रचकर संग्रह की है। कविता सरल, वात्सल्य-रस-पूर्ण और मन-भावनी है। पुस्तक ॥) में शान्ति प्रेस, इटावा से प्राप्त होगी।

कुमाऊं का साह वंश—कुमाऊं डिवीजन में "साह" लोगों की अच्छी बस्ती है। वहां का व्यापार और व्यवसाय अधिकांश इन्हीं लोगों के हाथ में है। अब तक इन्हें लोग वैश्यवर्म में समझते थे; किन्तु डाक्टर नन्दलाल साह इस पुस्तक में यह सिद्ध करते हैं कि यह "साह" साहु शब्द का द्योतक नहीं, बल्कि "शाह" शासन करने वाले का द्योतक है। वैश्यों में मांस-भोजन विधेय नहीं, किन्तु इस जाति में मांस खाया जाता है। वैश्य अधिकतर वैष्णव या जैन होते हैं, किन्तु साह लोग प्रायः शाक्त होते हैं। पुस्तक आठ आने में कैपटन नन्दलाल शाह एम० डी०, लखनऊ से प्राप्त होगी।

विचार सुमनावली—स्वामी कैलाशानन्द जी ने इस पुस्तक में छोटी छोटी सवा दो सौ सूक्तियां सरल भाषा में दी हैं। यह सूक्तियां अनेक विषयों पर हैं और सुबोधप्रद हैं; सबके देखने योग्य हैं। पुस्तक आठ आने में स्वामी जी से भीकन गांव, इन्दौर स्टेट से मिलेगी।

स्वास्थ्य के नुसखे—प्रयाग से श्रीयुक्त बालेश्वरप्रसाद सिंह "जीवन-सखा" नामक मासिक पत्र निकालते हैं। इसमें प्राकृतिक चिकित्सा और स्वास्थ्य-संरक्षण की बातें आया करती हैं। ये नुसखे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी उसी की देन हैं। श्रीयुक्त पं० ब्रजभूषण मिश्र एम० ए० इसके लेखक हैं। प्राकृतिक चिकित्सा की इसमें सरल विधि वर्णित है। ≈)॥ में प्राकृतिक स्वास्थ्यगृह, ३० बाई का बाग, इलाहाबाद से पुस्तक मिलेगी।

नवजीवन संचार—मैथिल ब्राह्मणों के लिये सामाजिक और धार्मिक कवियों की इसमें संक्षिप्त में शिक्षा दी गयी है। स्थान स्थान पर भजन और श्लोक देकर विषय आकर्षक बनाये गये हैं। पं० रघुनाथ प्रसाद पुरोहित इसके लेखक हैं और उन्हीं से मैथिल व्यापार कम्पनी, नगरा, अजमेर के पते पर पुस्तक ≡) में मिलती है।

मैसूर में--श्रीयुत गुरुनाथ शर्मा जी ने मैसूर राज्य के भौगोलिक, ऐतिहासिक तथा राजनैतिक विवरण का इसमें अच्छा समावेश किया है। इससे वहां की शिक्षा, व्यवसाय, धन्धे, कृषि, न्याय आदि का परिचय हो जाता है। शर्मा जी का यह उद्योग प्रशंसनीय है। आप उधर के ही निवासी होने के कारण इसके लिखने के अधिकारी हैं। दक्षिण प्रान्त की जानने योग्य बातों का आप लोगों के द्वारा इधरवालों को किसी तरह परिचय होता रहे यह अभीष्ट है। परन्तु प्रयत्न करके भाषा हिन्दुस्तानी बनाने का उद्योग करने से वह न तो सुगम हिन्दी ही रहती और न सफल हिन्दुस्तानी ही हो पाती है। यदि स्वाभाविक उठान के साथ लिखा जाय तो वह भाषा श्लाध्य होगी। सचित्र पुस्तक का १) दाम सस्ता है। मिलने का पता "देशीराज्य साहित्य मन्दिर" मद्रास है।

लोक-साहित्य-माला—दिल्ली के सस्ता-साहित्य-मण्डल ने लोक-साहित्य-माला नाम की ग्रन्थावली निकालना आरम्भ किया है। इसकी पांच पुस्तकें संग्रहालय को प्राप्त हुई हैं। इनमें पहली 'गावों की कहानी' है। सतयुग के समय से गावों की रचना और व्यवस्था कैसे आरम्भ हुई, फिर त्रेता, द्वापर और कलियुग में किस प्रकार उनकी व्यवस्था और स्थिति रही; चाणक्य के समय तक उनकी स्थिति कैसी रही; फिर धीरे धीरे परिवर्तन होते हुए मुसलमानी काल पार कर कम्पनी के समय में और महारानी विक्टोरिया के समय तक वे किस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दशा में आ पहुँचे; इधर किसानों की बरबादी किस प्रकार हुई; तथा अन्य देशों के मुकाबिले हमारी खेती कैसी दशा में है—इन सब बातों का वर्णन इस पुस्तक में किया गया है। लेखक स्वर्गीय रामदास गौड़ हैं। भाषा सरल और वर्णन विद्वत्तापूर्ण तथा सप्रमाण है। आजकल ग्रामोत्थान-आन्दोलन के समय बड़े काम की चीज़ है। मूल्य ॥)

माला की दूसरी पुस्तक 'महाभारत के पात्र' नाम की है। महाभारत के कर्ण, पांचाली और दुर्योधन के व्याज से एक प्रकार महाभारत की कथा का इसमें दिग्दर्शन होगया है। लेखक के वर्णन की दृष्टि है कि महाभारत ऐसे रूप में जनसाधारण के सामने रक्खा जाय कि आधुनिक युग उसमें अनुकूलता देख सके और उससे सन्तोष तथा मार्ग-दर्शन भी प्राप्त हो सके। महाभारत के एक एक पात्र पर हृदयाकर्षक विवेचन किया जाय। वर्णन करने का ढङ्ग अपना हो, पर रङ्ग वही बना रहे। बच्चों के लिये वह कहानी का मजा दे, युवकों को क्रान्ति का दर्शन कराये, वृद्धों को विवेचना शक्ति को आहार दे। अवश्य ही लेखक को इसमें सफलता मिली है। मूल लेखक हैं श्रीयुक्त आचार्य नानाभाई जी और अनुवादक श्रीयुक्त बृहस्पति उपाध्याय जी। मूल्य ॥)

तीसरी पुस्तक 'सन्तवाणी' है। श्रीयुत वियोगी हरि जी ने उन्नीस बीस विषयों पर कबीर, नानक, जायसी, दादू, रैदास, रामानन्द आदि सन्तों की वाणियाँ संग्रह कर उनका भाव लिखते हुए यह उत्तम संग्रह बनाया है। अनेक धार्मिक, सामाजिक और व्यावहारिक विषयों की गुत्थी इससे सुलझती है। बड़े काम की चीज है। दाम ॥)

चौथी पुस्तक 'अंग्रेजी राज में हमारी आर्थिक दशा' नाम की है। मूल लेखक श्रीयुत डाक्टर जैनुलअहमद और अनुवादक श्रीयुक्त कृष्णचन्द्र विद्यालंकार है। ब्रिटिश औपनिवेशिक नीति, ईस्ट इण्डिया कम्पनी की नीति, घरेलूधन्धों का नाश, खेती का व्यापारी-करण, व्यावसायिक विकास का विनाश, भारत में ब्रिटिश पूंजी, किसानों की समस्या, साम्यवादी नीति के आर्थिक परिणाम, भारत की आर्थिक स्वतन्त्रता, आमदनी पर जनता का नियन्त्रण, प्रान्तों की आर्थिक-स्वतन्त्रता, नये विधान में प्रान्तों की आर्थिक स्थिति तथा उपसंहार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषयों को लेकर अनेक आवश्यक वस्तुओं का इसमें अच्छा विवेचन हुआ है। आजकल के समय में सभी को इन विषयों की जानकारी होना आवश्यक है। दाम ।)

पांचवीं पुस्तक 'लोक-जीवन' है, और लेखक हैं श्रीयुक्त काका कालेलकर जी। संसार में मनुष्यों को किन समस्याओं से पाला पड़ता है और उनसे किस प्रकार निबटना चाहिये, गुत्थियों को इसमें मनोरंजक ढंग से सुलझाया गया है। आधुनिक समय की समस्याएँ इसमें विशेषता से सुलझायी गयी हैं। पुस्तक सब के पढ़ने योग्य है। दाम ।)

ऊपर की पांचों पुस्तकें सस्ता-साहित्य-मण्डल दिल्ली से प्राप्त होंगी।

नवजीवन-माला—दिल्ली के सस्ता-साहित्य-मण्डल ने नवजीवन-माला नाम से दस पुस्तकों का एक सेट तैयार किया है। इनमें से छः के लेखक तो महात्मा गांधी हैं, सातवीं के प्रिंस क्रोपाटकिन, आठवीं के भदन्त आनन्द कौसल्यायन, नवीं के डॉ० जैनुल आबदीन अहमद हैं और दसवीं के आचार्य विनोबा हैं। ये सभी पुस्तिकाएं छोटे आकार की डबल क्राउन, ३२ पेजी हैं। पहली पुस्तक 'गीता बोध' है। इसमें गीता के कठिन विषयों को भी बहुत सरल भाषा और सरल पद्धति में समझाने का महात्मा जी ने प्रयत्न किया है। अठारहों अध्यायों का मर्म बड़ी खूबी से समझाया गया है। मूल्य –)॥ आना।

दूसरी पुस्तक 'मंगल प्रभात' है। इसमें सत्याग्रह आश्रम में पालनीय व्रतोंका विवेचन किया गया है। इस प्रकार सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अस्वाद, अस्तेय, अपरिग्रह, अभय, अस्पृश्यता-निवारण, कायिक परिश्रम, सर्वधर्मसमभाव, नम्रता, स्वदेशी, स्वदेशव्रत की आवश्यकता तथा परिशिष्ठ में आश्रम की नियमावली में इन विषयों पर जो लिखा है उसका उल्लेख किया गया है। महात्मा जी यरवदा जेल से प्रति मंगलवार को इन्हें लिख कर भेजा करते थे। इसलिये इसका 'मङ्गल प्रभात' नाम पड़ा है। दाम –)॥

तीसरी पुस्तक 'अनासक्तियोग' अर्थात् श्रीमद्भगवद्गीता का महात्मा जी द्वारा किया हुआ हिन्दी अनुवाद है। बीच-बीच में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टिप्पणियों द्वारा कठिन स्थानों का मर्म खोल दिया गया है। अवतार के सम्बन्ध में महात्मा जी कहते हैं, ईश्वर की अगम माया अपना काम करती ही रहती है। यही अवतार या ईश्वर का जन्म है। वस्तुत: ईश्वर के जन्म लेने की क्रिया होती ही नहीं। इसी तरह देवता का अर्थ ईश्वर की अंश-रूपिणी शक्ति कह कर मनुष्य, भाफ, बिजली आदि को देवता बतलाया गया है। साकार और निराकार की गुत्थी बड़ी उत्तमता से सुलझा दी गयी है।

चौथी पुस्तक 'सर्वोदय' है। स्वर्गीय जान रस्किन के 'अन्टु दी लास्ट' का महात्मा जी ने अनुवाद किया है। साधारणत: पश्चिमी लोग अल्प-संख्यकों को हानि पहुँचा कर भी बहु-संख्यक लोगों को लाभ पहुंचाना मनुष्य का कर्तव्य समझते हैं; किन्तु यह लेखक भारतीय संस्कृति के अनुसार जिसमें सब का कल्याण हो, सब को सुख हो उसे ही सुख या सर्वोदय मानता है। इसमें सच्चाई की जड़, दौलत की नसें, अदल इंसाफ, सत्य क्या है और उपसंहार शीर्षक विषयों पर विचार हुआ है। दाम =)

पांचवी पुस्तक 'नवयुवकों से दो बातें' नाम की है और रूस के प्रिंस क्रोपाटकिन इसके लेखक हैं। इसमें प्रस्तावना, डाक्टर, वैज्ञानिक, वकील, इञ्जीनियर, शिक्षक, कला-विशारद, क्या करना चाहिये, श्रमजीवी आन्दोलन, महत्वाकांक्षी नेता, नया मार्ग, गरीब श्रेणी वाले और स्त्रियाँ शीर्षक १३ विषयों पर विचार हुआ है। दाम =)

छठी पुस्तक 'हिन्द-स्वराज्य' है। इसे भी महात्मा जी ने लिखा है। स्वराज्य के सम्बन्ध में महात्मा जी के विचारों और सिद्धान्तों का इसमें अच्छी तरह सुलझाव किया गया है। कांग्रेस और उसके अधिकारी से लेकर २० शीर्षकों में इस सम्बन्ध की सभी बातों का विचार हुआ है। दाम ≡)

सातवीं पुस्तक 'छूतछात की माया' है। पुस्तक का विषय नाम से ही प्रकट है। इस समस्या का सुलझाव किस प्रकार हो सकता है इसका संक्षेप में विवेचन है। दाम =)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आठवीं पुस्तक 'हमारे किसानों का सवाल' है। इसमें धरती का भार, गावों की गरीबी, किसानों की कर्जदारी, जमीन का बन्दोबस्त और उपसंहार शीर्षकों पर विषय-विचार हुआ है। भूमिका-लेखक पं० जवाहरलाल नेहरू हैं। दाम =)

नवीं पुस्तक 'ग्रामसेवा' महात्मा गांधी की लिखी है। इसमें गावों का आरोग्य, गाँव या घूरे, उपले या खाद, गाँव के रोग, कुएँ और तालाब, गाँवों के रास्ते, किसानों की दशा का सुधार, एक ग्राम सेवक के प्रश्न तथा भय की भावना विषयों पर विचार हुआ है। दाम –)

दसवीं पुस्तक 'खादी और गादी की लड़ाई' आचार्य विनोबा ने लिखी है। इसमें खादी और गादी, निर्दोष दान का प्रतीक, श्रमदेव की उपासना, राष्ट्रीय अर्थ शास्त्र, न्यायारम्भ, कताई याग, स्वाध्याय, वृत्त-शाखा न्याय, सेवा व्यक्ति की : भक्ति समाज की, तथा ग्राम सेवा और ग्राम धर्म विषयों पर ऊहापोह हुआ है। दाम =)

प्रसाद—किरितपुर छत्तीसगढ़ की श्रीमती सरस्वती देवी की २२ कविताओं का इसमें सग्रह है। कविताएँ अच्छी हैं। छत्तीसगढ़ के कविता-रसिक पांडेय परिवार की आप पुत्री हैं। दाम ।), पता पं० गोकुल प्रसाद तिवारी, डौंडी लोहारा, सी० पी०।

सुभाषचन्द्र बोस—'वीर अर्जुन' के सहकारी सम्पादक पण्डित रमेशचन्द्र आर्य ने राष्ट्रपति सुभाषचन्द्र बोस का जीवन चरित्र लिखा है। उनकी जीवन सम्बन्धी घटनाओं और उनके विचारों का इसमें अच्छी तरह उल्लेख हुआ है। दाम ।=)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिल्ली-हिन्दी-परिषद्

कुछ ही दिन पहिले दिल्ली में "हिन्दी-परिषद्" नामक एक नई संस्था ने जन्म लिया है। अप्रेल १४, १५, १६ का परिषद् का प्रथम अधिवेशन रामजस कॉलेज, दरियागंज, दिल्ली में हुआ। परिषद् के मुख्य संयोजक श्री जैनेन्द्रकुमार जी थे। उनके अतिरिक्त सर्वश्री 'अज्ञेय', चन्द्रगुप्त, हरदत्त शर्मा, गुप्ता जी (प्रिंसिपल रामजस कालेज), श्रीमती सत्यवती इत्यादि भी परिषद् के आयोजन में विशेष उत्साहशील थे। प्रतिनिधियों में सर्वश्री काका कालेलकर, मशरूवाला, हीरालाल जी खन्ना, आनन्द कौशल्यायन, हजारीप्रसाद द्विवेदी, सियारामशरण गुप्त, चतुरसेन शास्त्री, महेन्द्र, कुसुमाकर, अश्क प्रभृति सज्जन उपस्थित थे। स्वर्गीय श्री प्रेमचन्द्र जी की धर्मपत्नी श्रीमती शिवरानी जी भी मौजूद थीं।

परिषद् की तीन दिन की छः सात बैठकों में प्रायः उद्देश्य तथा विधान सम्बन्धी चर्चा ही चालू रही। संस्था का 'हिन्दी परिषद्' नाम निश्चित हुआ; उसके जीवन के लिए वैधानिक नियम गढ़े गए; और जीवन के निम्नलिखित उद्देश्य निश्चित हुये :—

"(१) मानव जाति की एकता और उसके सांस्कृतिक विकास में निष्ठा रखने वाले और उस ओर प्रयत्नशील साहित्यिकों के लिए केन्द्र उपस्थित करना।

(२) हिन्दी माध्यम द्वारा भारतीय लोक-जीवन को उस आदर्श की ओर सजग रखना।

(३) उक्त आदर्श के पोषक साहित्य का निर्माण, प्रोत्साहन और प्रचार।"

कुछ सज्जनों को इस बात पर आपत्ति थी कि सम्मेलन के होते हुये एक नई संस्था के स्थापना की क्या आवश्यकता है। किन्तु अल्पमत के कारण उन्हें अपनी आपत्ति का गला घोंट कर रह जाना पड़ा। कुछ सज्जनों को यह आवश्यक जान पड़ा कि परिषद् सम्मेलन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से सम्बद्ध हो कर सम्मेलन की देख रेख में कार्य करे। अन्य कतिपय सज्जनों को यह विचार रुचता न था। अन्त को समझौता निम्न लिखित प्रस्ताव के रूप में हुआ—

"यह आवश्यक है कि हिन्दी का सर्वांगीण विकास करने के उद्देश्य से स्थापित और दीर्घकाल से काम करते आने वाले हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का सम्बन्ध और सहयोग परिषद् को प्राप्त हो और इस निमित्त सम्मेलन से विचार-विनिमय करने का अधिकार अध्यक्ष, मंत्री और श्री हीरालाल खन्ना को दिया जाय।"

परिषद् के अधिकारियों का निर्वाचन अभी नहीं हुआ है। फिलहाल काम चलाने के लिए तीन सदस्यों की एक समिति बनी है, जिसके संयोजक श्री जैनेन्द्र जी हैं।

परिषद् के उद्देश्य ऊँचे हैं; संयोजकों में उत्साह तथा सेवा-भाव है; साहित्यिकों का सहयोग है। ऐसी दशा में पूर्ण आशा है कि परिषद् अच्छी प्रकार फूलेगा फलेगा।

नारायण दत्त पाण्डे,

एम० ए०, एल-एल०बी०।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिशिष्ट

साहित्य-समिति का छठा अधिवेशन

साहित्य समिति की छठी बैठक रविवार, वैशाख ३ संवत् १९९६, तारीख १६ अप्रैल ३९ को ८ बजे सबेरे श्री लक्ष्मीधर वाजपेयी के सभापतित्व में सम्मेलन कार्यालय में हुई। पिछली बैठक की कार्यवाही स्वीकृत हो जाने के अनन्तर

१—साहित्य-मंत्री ने डा० रामकुमार सक्सेना द्वारा 'प्रारम्भिक प्राणि-विज्ञान' नामक पुस्तक लिखवाने का प्रश्न उपस्थित किया और पुस्तक के लिए ब्लाक आदि का तखमीना जो प्रेस से मँगाया था उपस्थित किया। सर्व सम्मति से निश्चय हुआ कि पुस्तक लिखवाई जाय। साथ ही यह भी निश्चय हुआ कि यदि पुस्तक हाई स्कूल के लिए स्वीकृत हो जाय और उसके उर्दू संस्करण की आवश्यकता पड़े तो उर्दू संस्करण किसी दूसरे प्रकाशक को दिया जाय और मूल संस्करण की छपाई आदि का पूरा व्यय उस प्रकाशक से ले लिया जाय।

२—साहित्य-मन्त्री ने श्री दयाशङ्कर दुबे का, उत्तमा परीक्षा के लिए कविवर चन्द का संग्रह प्रकाशित करने के निमित्त पत्र उपस्थित किया। सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि श्री नरोत्तम दास स्वामी एम० ए० से इस संग्रह-कार्य के लिए निवेदन किया जाय।

३—साहित्य-मन्त्री ने श्री गोपाल दामोदर तामस्कर द्वारा लिखित 'साहित्य शास्त्र' नामक पुस्तक के प्रकाशन का विषय उपस्थित करते हुए सुश्री चन्द्रावती त्रिपाठी की सम्मति पढ़ सुनाई। निश्चय हुआ कि पुस्तक लेखक को लौटा दी जाय और लिख दिया जाय कि समिति इसे प्रकाशित करने में असमर्थ है। दूसरी पुस्तक "भारतीय नागरिक के अधिकार और कर्तव्य" के सम्बन्ध में निश्चय हुआ कि यह पुस्तक विशेषज्ञ की सम्मति सहित अगली समिति में उपस्थित की जाय।

रामकुमार वर्मा.
साहित्य मन्त्री।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षा समिति का चौथा अधिवेशन

परीक्षा समिति का चौथा अधिवेशन रविवार, चैत्र सौर २६, तदनुसार ता० ९ अप्रैल सन् १९३९ को सायंकाल ४ बजे से पं० लक्ष्मीधर जी वाजपेयी के सभापतित्व में हुआ।

१—पिछले अधिवेशन की कार्यवाही स्वीकृत हो जाने के अनन्तर परीक्षा मन्त्री ने शीघ्र लिपि विशारद परीक्षा की परीक्षारम्भ की तिथि निश्चित करने और उसके नियमों में परिवर्तन करने के सम्बन्ध में श्री ऋषिलाल जी अग्रवाल का पत्र विचारार्थ उपस्थित किया। सर्व सम्मति से परीक्षारम्भ की तिथि सोमवार, ज्येष्ठ शुक्ल ४, तदनुसार ता० २२ मई सन् १९३९ निश्चित हुई और नियमों में नीचे लिखे अनुसार परिवर्तन स्वीकार हुए:—

(क) नियमावली के नियम ७ में 'अनुवाद में केवल चार प्रतिशत अशुद्धियाँ क्षम्य होंगी' के स्थान पर 'अनुवाद में केवल दस प्रतिशत अशुद्धियां क्षम्य होंगी' रखा जाय।

(ख) नियमावली के नियम ७ में 'अनुवाद के लिए एक घण्टा दिया जायगा' के स्थान पर 'अनुवाद के लिए ढाई घण्टा दिया जायगा' कर दिया जाय।

२—परीक्षा मंत्री द्वारा संवत् ९६ की शीघ्र लिपि विशारद परीक्षा के परीक्षकों के निर्वाचन का विषय उपस्थित किये जाने पर समिति ने उक्त परीक्षा के लिए परीक्षकों का निर्वाचन किया।

३—परीक्षा मंत्री ने संवत् १९९७ (सन १९४०) की सम्मेलन परीक्षाओं की परीक्षारम्भ की तिथि निश्चित कर देने का विषय उपस्थित किया। सर्व सम्मति से परीक्षारम्भ की तिथि शनिवार कार्तिक शुक्ल १०, तदनुसार ता० ९ नवम्बर सन १९४० निश्चित हुई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४—परीक्षा मंत्री ने नवीन केन्द्र स्थापित कराने के प्रार्थना-पत्र विचारार्थ उपस्थित किये। सर्वसम्मति से नीचे लिखे स्थानों में परीक्षा केन्द्र स्वीकार किये गए:—

(१) भटगमा (पूर्णियां)	प्रथमा
(२) नानपारा (बहराइच)	प्रथमा + मध्यमा
(३) जन्दाहा (मुजफ्फरपुर)	,,
(४) बगड़	प्रथमा
(५) मोलासर	,,

जयपुर तथा लाहौर में उत्तमा परीक्षा के केन्द्र स्थापित करने के सम्बन्ध में निश्चय हुआ कि जयपुर के लिए प्रिंसिपल महाराजा कालेज जयपुर और लाहौर के लिए श्री एल० सी० जैन या डा० लक्ष्मणस्वरूप या डा० सूर्यकान्त जी डी० एस-सी० व्यवस्थापन कार्य करना स्वीकार करें तो उन दोनों स्थानों में उत्तमा परीक्षा के केन्द्र स्थापित कर दिये जायँ। यह भी निश्चय हुआ कि संवत् १९९६ (सन् १९३९) के लिए नवीन केन्द्र स्थापित कराने के जितने आवेदन पत्र आवें उनका निर्णय श्री परीक्षा मंत्री स्वयं कर लें।

५—परीक्षा मंत्री ने संवत् १९९३ की मध्यमा परीक्षा के धर्म शास्त्र विषय में १ अङ्क से अनुत्तीर्ण परीक्षार्थ श्री बासुदेव सिंह का प्रार्थना पत्र (कलकत्ता केन्द्र के व्यवस्थापक की सिफारिश सहित) उपस्थित किया जिसमें परीक्षार्थी ने परीक्षा समिति से १ कृपाङ्क देकर उत्तीर्ण करने की प्रार्थना की थी। सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि विशेष परिस्थिति में परीक्षार्थी को १ कृपाङ्क देकर उत्तीर्ण किया जाय।

६—परीक्षा मंत्री ने प्रयाग महिला विद्यापीठ की विदुषी (आनर्स) परीक्षा में उत्तीर्ण परीक्षार्थिनी श्रीमती शकुन्तला देवी को उत्तमा में सम्मिलित होने के अधिकार देने का विषय उपस्थित किया। सर्व सम्मति से परीक्षार्थिनी को उत्तमा में सम्मिलित होने का अधिकार दिया गया।

७—परीक्षा मंत्री ने बिहार की आचार्य तथा संस्कृत कालेज काशी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की शास्त्री परीक्षा में उत्तीर्ण परीक्षार्थी श्री जगल्लाल शर्मा का प्रार्थना पत्र उपस्थित किया जिसमें उन्होंने परीक्षा समिति से उत्तमा में सम्मिलित होने का अधिकार मांगा था। सर्वसम्मति से परीक्षार्थी को उत्तमा परीक्षा में सम्मिलित होने का अधिकार दिया गया।

८—परीक्षा मंत्री ने उत्तमा परीक्षा के परीक्षार्थी श्री अग्रदूत जी की राजनीति विषयक निबन्ध सूची विचारार्थ उपस्थित की। सर्व सम्मति से निश्चय हुआ कि परीक्षार्थी को लिखा जाय कि वह विस्तृत निबन्ध सूची बना कर भेजे। जो सूची भेजी है वह पर्याप्त नहीं है। सूची पर विचार करने के लिए निम्न लिखित निर्णायक भी निर्वाचित किये गए:—

१ श्री डा० तारा चन्द जी प्रयाग वि० वि०
२ ,, अवध बिहारी लाल ,, ,, ,,

९—परीक्षा मंत्री ने प्रथमा में सम्मिलित हुये बिना मध्यमा का अधिकार चाहने वाले परीक्षार्थियों के प्रार्थना पत्र विचारार्थ उपस्थित किये। सर्वसम्मति से निम्न लिखित परीक्षार्थियों को मध्यमा में सम्मिलित होने का अधिकार दिया गया:—

(१) श्री भगवान दास चौहान बड़मेर
(२) ,, जगदीश नारायण शर्मा ,,

श्री बाबूलाल श्रीवास्तव का प्रार्थना पत्र अस्वीकृत हुआ।

यह भी निश्चय हुआ कि परीक्षा मंत्री को इस प्रकार के प्रार्थना पत्रों पर निर्णय देने का अधिकार दिया जाय।

१०—परीक्षा मंत्री ने सूचित किया कि विवरण पत्रिका के अध्याय १ के नियम ६ के नोट ३ के अनुसार परीक्षा समिति को अधिकार है कि किसी विशेष परिस्थिति में वह किसी भी परीक्षार्थी से आधा शुल्क लेकर उसे परीक्षा में सम्मिलित होने का अधिकार दे दे। इस प्रकार के प्रार्थना पत्रों का आना अब शीघ्र ही आरम्भ होगा। परन्तु निकट भविष्य में परीक्षा समिति की कोई बैठक होने की सम्भावना नहीं है। सर्व सम्मति से परीक्षा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंत्री को अधिकार दिया गया कि इस प्रकार के प्रार्थना पत्रों पर वे स्वयं निर्णय कर लें।

११—परीक्षा मंत्री ने श्री हरि प्रसाद तिवारी विशारद का वह प्रस्ताव उपस्थित किया जिसमें उन्होंने स्थायी परीक्षकों को एक प्रमाण पत्र देने के लिए लिखा था। सर्वसम्मति से उनका प्रस्ताव अस्वीकृत किया गया।

१२—परीक्षा मंत्री ने हिन्दी विद्यापीठ महेवा (प्रयाग) के व्यय के सम्बन्ध में ता० ३० नवम्बर तक के लिए १०००) के बजट का ब्यौरा (प्रस्ताव रूप में) नीचे लिखे अनुसार उपस्थित किया:—

प्रधानाध्यापक	३००)
सहायक अध्यापक	१७५)
छात्र वृत्ति	३६०)
चपरासी	८०)
साइकिल	२५)
मरम्मत	३०)
अन्य आवश्यक व्यय	३०)
	१०००)

सर्व सम्मति से खर्च का यह ब्यौरा स्वीकृत हुआ और निश्चय हुआ कि ३० नवम्बर सन् १९३९ तक के लिये प्रधानाध्यापक के पद पर 'साहित्यरत्न' पं० भगीरथ प्रसाद जी दीक्षित की नियुक्ति की जाय। सहायक अध्यापक की नियुक्ति परीक्षा मन्त्री और प्रधानाध्यापक मिल कर करलें।

चपरासी के स्थान पर श्री महानारायण १०) मासिक पर नियुक्त किये जायँ। यह भी निश्चय हुआ कि विद्यापीठ का कार्य १ मई सन् १९३९ से नियम पूर्वक चलाया जाय।

१३—श्री भगवती प्रसाद जी बाजपेयी के प्रस्ताव करने और भगीरथ प्रसाद जी दीक्षित के अनुमोदन करने पर सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह परीक्षा समिति हिन्दी-विश्व-विद्यालय-परिषद् से सिफ़ारिश करती है कि साहित्य-महोपाध्याय परीक्षा के जो नियम स्वीकार हो चुके हैं उन्हें वह कार्य रूप में परिणत करने का प्रयत्न करे। परीक्षा समिति विश्व-विद्यालय-परिषद् से यह भी सिफ़ारिश करती है कि उक्त परीक्षा के नियमों में वह निम्न-लिखित नियम भी जोड़ दे:—

परीक्षा समिति को अधिकार होगा कि किसी व्यक्ति की विशेष योग्यता देखकर उसे इस परीक्षा में सम्मिलित होने का अधिकार दे दे।

दया शंकर दुबे,
परीक्षा मंत्री।
ता० १०-४-३९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग
के
हिन्दी-विश्व-विद्यालय की

संवत् १९९५ (सन् १९३८) की परीक्षाओं का परीक्षाफल

उत्तमा परीक्षा (साहित्यरत्न) विषय—हिन्दी-साहित्य

क्रम संख्या	रत्न संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
१	३४५	श्री हरचरण शर्मा	आगरा	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड) १७५
२	३४६	" बाल कृष्ण व्यास	"	" " १६८
३	३४७	" बलदेव प्रसाद शर्मा	"	" " १६१
६	३५०	" किशोरी शरण लिटौरिया	"	द्वितीय श्रेणी ३८६
७	३५१	" जगदीश नारायण त्रिपाठी	"	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड) १६४
११	३५५	" जयदेव गुप्त	"	द्वितीय श्रेणी ४७४
१२	३५६	" दिवाकर दत्त शर्मा विद्यार्थी	"	" ३६१
१४	३५८	" नारायण दास रावत	"	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड) १६६
१७	३६१	" भोलानाथ चतुर्वेदी	"	द्वितीय श्रेणी ४१६
१९	३६३	" मुंशीलाल पटैरिया	"	" ४३७
२२	२३८	" श्याम सुन्दर मिश्र	"	" ४०१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	रत्न संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
२५	३६८	श्री भट्ट मुकुन्द चक्रवर्ती	आगरा	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड) १७७
२७	३७०	,, रामकुमार 'राम'	,,	द्वितीय श्रेणी ३७९
२८	२३७	,, बाबूराम वर्मा 'कञ्ज'	,,	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड) १६१
२९	३७१	,, वीरेन्द्र सिंह चौहान	,,	द्वितीय श्रेणी ४६६
३०	३७२	,, शिवराम सिंह कुशवाह	,	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड) १७०
३१	३७३	,, देवी राम गुप्त	,,	द्वितीय श्रेणी ४०८
३२	३७४	,, पद्म सिंह शर्मा	,,	प्रथम श्रेणी ५४५ [वि० यो० निबन्ध]
३६	३७८	,, गोपाल प्रसाद व्यास	,,	द्वितीय श्रेणी ४११
३७	३७९	,, विद्या भूषण अग्रवाल	,,	प्रथम श्रेणी ५६१ [वि०यो०प्रथम पत्र)
३९	३८१	,, थान सिंह विद्यार्थी	,,	द्वितीय श्रेणी ३७९
४१	३८३	श्रीमती शीलवती गुप्त	,,	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड) २०२
४२	२४६	श्री लज्जा राम वंसल	,,	,, १७३
४४	३८५	,, तारा सिंह धाकरे	,,	द्वितीय श्रेणी ४६०
४५	३८६	,, गोपाल शङ्कर नागर 'माधव'	,,	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड) १६७
४७	३८८	,, अतर सिंह 'नरेन्द्र'	,,	द्वितीय श्रेणी ३६९
४८	३८९	,, बाबू सिंह	,,	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड) १८४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	रत्न संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
५३	३९४	श्री राम नारायण शङ्कधार	आगरा	द्वितीय श्रेणी ३९५
५६	३९७	,, सिद्धेश्वर नाथ श्रीवास्तव	,,	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड) १७१
५७	३९८	,, राम कृष्ण भारती	,,	द्वितीय श्रेणी ४८३
६१	४०२	,, शङ्कर लाल मेहरोत्रा	इन्दौर	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड) १६३
६८	४०८	श्री ब्रह्मदत्त त्रिवेदी	,,	द्वितीय श्रेणी ३८३
७०	४१०	,, कृष्ण दत्त खाण्डल	,,	,, ३९०
७२	४१२	,, गोविन्द राम	,,	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड) १६८
७४	४१४	,, सुख नन्दन प्रसाद	,,	द्वितीय श्रेणी ३६८
७६	४१६	,, मन्ना लाल गङ्गवाल	,,	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड २२९
७८	४१८	,, फतेचन्द जैन	,,	,, ,, १६७
७९	४१९	,, द्वारिका प्रसाद पांडे	,,	द्वितीय श्रेणी ४४६
८१	४२१	,, महेन्द्रनाथ नागर	,,	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड) १६९
८३	४२३	,, नन्दलाल कांसलीवाल	,,	उत्तीर्ण प्रथम खण्ड १७७
८६	४२६	,, चाँदमल पालठ्या	,,	द्वितीय श्रेणी ४५०
८९	४२८	,, श्यामसुन्दर द्विवेदी	,,	,, ४७३
९२	४३१	,, शिवनाथ दुबे	काशी (ट्रेनिंग कालेज)	,, ३६८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	रत्न संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
९६	४३५	श्री जङ्ग बहादुर मिश्र	काशी ट्रेनिङ्ग कालेज)	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड) १९७
९८	४३७	" रामनक्षत्र मिश्र	"	" " २१४
९९	४३८	" राजनेति सिंह	"	द्वितीय श्रेणी ४१८
१००	४३९	" काशीनाथ उपाध्याय	"	" ४१२
१०३	४४२	" अवधनारायण धर द्विवेदी	"	" ३८०
१०९	४४८	" बलदेवप्रसाद शुक्ल	"	" ३८० (वि.यो.आधु०पद्य)
११०	४४९	" विश्वनाथ लाल	"	द्वितीय श्रेणी ४४८
१११	४५०	' ओम्प्रकाश गुप्त	"	" ३६८
११२	४५१	" सिंहासन राय	"	" ३६१
११३	४५२	" कपिलेश्वर झा	प्रयाग	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड) १७९
११४	४५३	" रामनारायण शर्मा	"	द्वितीयश्रेणी ४९९
११७	४५६	सुश्री कुमारी सुशीला 'प्रभाकर'	"	" ४०१
११८	४५७	श्री देवनारायण कंवर 'किसलय'	"	" ४४५
११९	४५८	" हरि शर्म्मा	"	" ३८८
१२०	४५९	" कृष्णदत्त त्रिपाठी	"	" ४३५ (वि०यो०आधु०पद्य)
१२२	४६१	" प्रभुदयाल अग्निहोत्री	"	" ४९५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	रत्न संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
१२४	४६३	श्री रामनन्दन प्रसाद वर्मा	प्रयाग	द्वितीय श्रेणी ३८२
१२६	४६५	,, लक्ष्मीनारायण टण्डन 'प्रेमी'	,,	,, ४३८
१२९	४६७	,, सोनेलाल मिश्र	,,	,, ४१९
१३०	४६८	,, हरीहर गौड़	,,	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड) २१९
१३१	४६९	,, दिनेश नारायण उपाध्याय	,,	द्वितीय श्रेणी ३९४
१३२	४७०	,, काशी प्रसाद	,,	,, ४१५
१३४	३४३	,, विश्वनाथ प्रसाद द्विवेदी	,,	,, ३८६
१३५	४७२	,, बटुकनाथ शर्म्मा	,,	,, ३६९
१३६	४७३	श्रीमती भागीरथी पोद्दार	,,	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड) १९५
१३९	४७६	श्री गणेश प्रसाद सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी ४१६
१४०	४७७	,, बैजनाथ चतुर्वेदी	,,	,, ४५१
१४१	४७८	,, मिश्रीमल मेहता	,,	,, ४६८
१४२	४७९	,, रामलग्न वर्मा	,,	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड) १६४
१४८	४८५	,, सीताराम रावत (कुशल)	,,	द्वितीय श्रेणी ४४१
१५१	४८८	,, हरेशचन्द्र अग्रवाल	,,	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड) १७७
१५५	४९२	,, दशरथ राव विद्यार्थी	,,	द्वितीय श्रेणी ३८६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	रत्न संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
१५६	४९३	श्री रामचरण शर्मा	प्रयाग	द्वितीय श्रेणी ४१४
१५७	४९४	,, पी० बालकृष्ण	,,	,, ४७३
१५८	४९५	,, सी० एन० गोविन्द	,,	,, ४०८
१६२	४९९	,, भगवती प्रसाद शुक्ल	,,	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड) १९०
१६४	५०१	सुश्री कुमारी अनुसूया देवी	,,	द्वितीय श्रेणी ४९०
१६५	५०२	,, कुमारी कलावती	,,	,, ४६३
१६७	५०४	श्री देवनारायण सिंह	,,	,, ४५४
१६९	५०६	,, रघुराज सिंह राठौर	,,	,, ४५०
१७१	५०८	,, जगतनारायण 'अरविन्द'	,,	,, ४३३
१७७	५१४	,, गिरिजा प्रसाद त्रिपाठी	,,	,, ३८५
१७९	५१६	,, यज्ञनारायण मिश्र	,,	,, ४४२
१८२	५१९	,, श्रीकृष्ण गुप्त	,,	,, ३६२
१९०	५२७	,, गोपाल नारायण मिश्र	,,	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड) १६७
१९१	५२८	,, रघुवंश पाण्डेय	,,	द्वितीय श्रेणी ३५३

उत्तमा-परीक्षा (साहित्य-रत्न) विषय—संस्कृत

१९३	५३०	श्री महेश प्रसाद सिंह	प्रयाग	द्वितीय श्रेणी ३९१
१९५	५३२	सुश्री कुमारी वेदवती	,,	,, ४७९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	रत्न संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१९६	५३३	श्री गोपालदास गङ्गा	प्रयाग	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड) २२६

उत्तमा-परीक्षा (आयुर्वेदरत्न) विषय—वैद्यक

क्रम संख्या	रत्न संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१९७	५३४	श्री ददनराम द्विवेदी	प्रयाग	द्वितीय श्रेणी ४३७
१९८	५३५	" हरिश्चन्द्र शुक्ल	"	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड) २२७
१९९	५३६	" श्री कान्त शास्त्री	"	" २२२

उत्तमा-परीक्षा (विज्ञानरत्न) विषय—कृषिशास्त्र

क्रम संख्या	रत्न संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
२००	५३७	श्री जैराम सिंह	प्रयाग	द्वितीय श्रेणी ४२४

उत्तमा-परीक्षा (साहित्यरत्न) विषय—राजनीति

क्रम संख्या	रत्न संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
२०४	५४१	श्री दत्त शर्मा 'सुमन'	प्रयाग	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड) १६८

वैद्य विशारद-परीक्षा

३	श्रीमती कौसाबाई	इटावा	तृतीय श्रेणी ४१३
५	श्री गोपीचन्द जैन	"	द्वितीय श्रेणी ५०५ [वि०या०रसशास्त्र]
१४	" चन्द्रभानु शर्म्मा	कान्धला	तृतीय श्रेणी ३५८
१८	" दामोदर प्रसाद शर्म्मा	जयपुर	विभाजित प्रणाली के अनुसार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
१९	श्री शिवदयालु शर्म्मा	जबलपुर	विभाजित प्रणाली के अनुसार
२६	" हरिप्रसाद त्रिवेदी	प्रयाग (सम्मेलन)	" "
२७	" राम कैलाश मिश्र	"	द्वितीय श्रेणी ४९७ (वि०यो० स्वा०वि०)
२८	" सहदेव वर्म्मा	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार
३०	" जयनारायण वैद्य	"	" "
३७	" जयशङ्कर शर्म्मा	बीकानेर	" "
३८	" भारद्वाज श्रीधर शर्म्मा	भरतपुर	" "
४२	" महाराज किशोर	रानीपुर (झांसी)	" "
४९	" सेवक राम गुप्त	सीतापुर	" "
५३	" रामचन्द्र 'प्रफुल्ल'	सूरजगढ़	" "
५५	" मेनराम	हैदराबाद (सिन्ध)	" "

कृषि-विशारद परीक्षा

१	श्री ब्रज नारायण सक्सेना	कानपुर (एस०डी. कॉ.)	द्वितीय श्रेणी ३६५
२	" छोटेलाल कटियार	"	" ३८३
३	" गिरिजाशङ्कर लाल	गढ़मलपुर	तृतीय श्रेणी २६५
६	" बृन्दा प्रसाद सिंह	पड़रौना	" ३१६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
७	श्री श्रीराम	प्रयाग (सम्मेलन)	तृतीय श्रेणी २९७
८	„ सोनेलाल मण्डल	पाठिया	„ ३१३
९	„ बा० नाथूसिंह रावत	बुलन्द शहर	„ ३०७
११	„ कु० सुरेन्द्रसिंह चौहान	„	„ २७३
१२	„ ब्रह्मदेवलाल दास	मदनपुर	„ २८९
१५	„ लल्लूराम गुप्त	सीतापुर	„ ३००

मध्यमा परीक्षा

क्रम संख्या	विस्तार संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
१	३३३८	श्री० भूपेन्द्रनाथ त्रिपाठी	अजमतगढ़	तृतीय श्रेणी ३२५
४	३३४१	„ केवल दुबे	„	„ ३३३
५	३३४२	„ महीधर	अजमेर	„ ३४२
६	३३४३	„ हरदयाल वर्म्मा	„	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
९	३३४६	„ दत्तप्रसाद सुशील	अमृतसर	द्वितीय श्रेणी ४०२
१०	३३४७	सुश्री सुवर्णकुमारी उपनाम वेदवती	„	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
१३	३३५०	„ सरस्वती खुराना 'प्रभाकर'	„	„
१४	३३५१	श्रीमती निर्मला कुमारी	„	„
१५	३३५२	श्रीमती कौशल्या अरोड़ा	„	„

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	विशारद संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
१६	३३५३	श्री विद्यासागर 'निराला'	अमृतसर	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
१७	३३५४	श्रीमती मिस प्रेमप्रकाश	,,	,,
१९	३३५६	श्री हरेकृष्ण झा	अयोध्यागञ्ज	तृतीय श्रेणी ३५९
२०	३३५७	,, नारायण झा	,,	(अध्याय ३ नियम ७) के अनुसार
२१	३३५८	,, अयोध्याप्रसाद वैष्णव	अल्मोड़ा	तृतीय श्रेणी ३५०
२२	३३५९	,, लक्ष्मीलाल साह	,,	,, ३३९
२३	३३६०	,, दयाकृष्ण वैष्णव	,,	प्रथम श्रेणी ४८१ [वि० यो० संस्कृत]
२५	३३६२	,, बंशीधर पन्त	,,	तृतीय श्रेणी ३२८
२६	३३६३	,, केशवदत्त पन्त	,,	,, ३२३
३०	३३६७	,, किशन बिहारी सिंह	,,	,, ३८४
३१	३३६८	,, तुलाराम उपाध्याय	,,	,, ३०९
३२	३३६९	,, नौबतराम सारस्वत	अलीगढ़	द्वितीय श्रेणी ४०४
३६	३३७३	,, नत्थीमल शर्मा	,,	तृतीय श्रेणी ३३४
४०	३३७७	,, हरस्वरूप नागर	,,	द्वितीय श्रेणी ४१६
४६	३३८३	,, लखनलाल सिंह	आगरा	विभाजित प्रणाली के अनुसार
४७	३३८४	,, बैजनाथसिंह विद्यार्थी	,,	प्रथम श्रेणी ४८२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	विशारद संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
४८	३३८	श्री मेवाराम त्रिवेदी	आगरा	तृतीय श्रेणी ३२५
४९	३३८६	" भोगीलाल मिश्र	"	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
५१	३३८८	" बासुदेव सिंह	"	तृतीय श्रेणी ३७०
५२	३३८९	" हरिमोहन रावत	"	द्वितीय श्रेणी ४२०
५६	३३९३	" राधा वल्लभ अग्रवाल	"	उत्तीर्ण ३१९
५७	३३९४	" रघुवीर सिंह वर्मा	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार
५९	३३९६	" बंगालीराम शर्मा	"	" "
६२	३३९९	" बैजनाथ शर्मा	"	तृतीय श्रेणी ३४४
६३	३४००	" भीमसिंह शास्त्री	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार
६७	३४०४	" देवनारायण गौतम	"	तृतीय श्रेणी ३७८
६९	३४०६	" बृजवासीलाल श्रीवास्तव	"	द्वितीय श्रेणी ४१३
७०	३४०७	" कल्याणचन्द जैन	"	तृतीय श्रेणी ३६८
७२	३४०९	" शिवराम	"	" ३४१
७५	३४१२	" बद्रीप्रसाद आर्य	"	द्वितीय श्रेणी ४२२
७८	३४१५	" रोशनलाल गुप्त	"	तृतीय श्रेणी ३६०
७९	३४१६	" राजेन्द्रनाथ मिश्र	"	" ३८४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	विशारद संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
८०	३४१७	श्री रघुनाथ प्रसाद गौतम	आगरा	द्वितीय श्रेणी ४११
८१	३४१८	,, रामशरण माध्वाचार्य	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
८२	३४२०	,, वृजमोहन पुरोहित	,,	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
८५	३४२२	,, मायाशंकर शर्मा	,,	द्वितीय श्रेणी ४६३
८६	३४२३	,, अवध बिहारी लाल शुक्ल	,,	तृतीय श्रेणी ३५५
८७	३४२४	,, सुरेन्द्र कुमार कुलश्रेष्ठ	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
९३	३४३०	,, साहब दीन सिंह	आज़मगढ़	तृतीय श्रेणी ३६२
९४	३४३१	,, लाजर जेमन रणजीत	,,	,, ३२४
९६	३४३३	,, सीताराम	आबूरोड	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
९९	३४३६	,, गया प्रसाद गुप्त	इटावा	तृतीय श्रेणी ३७२
१००	३४३७	,, सूरजमल गर्ग	इन्दौर	द्वितीय श्रेणी ४४६
१०१	३४३८	,, सुरेन्द्र सिंह वर्मा	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१०३	३४४०	,, राम प्रसाद चौधरी	,,	द्वितीय श्रेणी ४१३
१०५	३४४२	श्रीमती चन्द्रप्रभा देवी मोदी	,,	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
१०८	३४४५	श्री भैरव लाल	,,	तृतीय श्रेणी ३६५
१११	३४४८	श्री धन्य कुमार जैन	,,	,, ३८५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	विशारद संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
१२०	३४५७	श्री गङ्गाकिशोर बाजपेयी	इन्दौर	तृतीय श्रेणी ३३५
१३०	३४६७	,, कमलेश्वर राम	ईशीपुर	,, ३७१
१४२	३४८२	,, नानानाथ उपनाम मोतीनाथ योगी	उदयपुर(हि० विद्यापीठ)	,, ३२१
१४७	३४८४	,, अर्जुन लाल मेहता	,,	,, ३५६
१४८	३४८५	,, विपिन बिहारी बाजपेयी	,,	द्वितीय श्रेणी ४०९
१५८	३४९५	,, राजेन्द्र शिवराम बाघमारे	उरई	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१६३	३५००	,, रामसेवक शर्मा	,,	,, ,,
१७३	३५१०	,, भगवानदास बैरागी	कटनी	द्वितीय श्रेणी ४४० [वि०यो० गणित]
१७४	३५११	,, वंशगोपाल दुबे	,,	तृतीय श्रेणी ३४०
१७७	३५१४	,, राममुनि मिश्र	कटया	,, ३८३
१७८	३५१५	,, गंगाधर दत्तोपाध्याय	,,	द्वितीय श्रेणी ४४७
१७९	३५१६	,, सत्यनारायण त्रिपाठी	,,	तृतीय श्रेणी ३९४
१८०	३५१७	,, राम सोहाग सिंह	कदमकुआ	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
१८४	३५२१	,, प्यारेलाल वर्मा	कन्नौद	तृतीय श्रेणी ३३३
१८८	३५२५	,, पोलुसकोन्सतन तिनुस तापनो एस०जे०	करसियांग	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
१९२	३५२९	,, व्रिज भूषण मिश्र	कर्वी	द्वितीय श्रेणी ४१६ [वि० यो० संस्कृत]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

क्रम संख्या	प्रार्थी संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
१९४	३५३१	श्री कालूराम	कराँची	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
१९६	३·३३	श्रीमती प्रतिभा देवी	कलकत्ता (कुमारसभा)	तृतीय श्रेणी ३५७
२०१	३५३८	,, मनोरमा देवी	कलकत्ता (तु०सा.वि.)	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
२०३	३५४:	श्री लोकनाथ सिंह	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
२११	३५४८	,, केदारनाथ तिवारी	,,	तृतीय श्रेणी ३५७
२१२	३५४९	,, कुंजबिहारी सिंह	,,	,, ३७३
२१३	३५५०	,, बद्रीनारायण सिंह	,,	,, ३२६
२१५	३५५२	,, सूबेदार सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी ४१६
२१७	३५५४	,, राममूर्ति राय	,,	तृतीय श्रेणी ३८२
२२०	३५५७	,, रमापतिराम शर्मा	,,	,, ३६१
२२१	३५५८	,, बलराम शर्मा	,,	,, ३४३
२२२	३५५९	,, बैजनाथ सिंह	,,	,, ३७३
२२३	३५६०	,, रामसमुझ तिवारी	,,	द्वितीय श्रेणी ४३८
२२५	३५६२	,, सरयूप्रसाद तिवारी	,,	तृतीय श्रेणी ३३७
२२९	३५६६	,, शिवध्यान सिंह	,,	,, ३४४
२३१	३५६८	,, महेशप्रसाद गुप्त	,,	,, ३५०

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	विज्ञप्ति संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
२३३	३५७०	श्री यमुनाप्रसाद चौबे	कलकत्ता (तु.स०वि०)	तृतीय श्रेणी ३६३
२३४	३५७१	,, रूपनारायण डालमिया	कलकत्ता(माहेश्वरीवि०)	,, ३३४
२३५	३५७२	,, रामनिवास ढंढारिया	,,	,, ३४९
२३६	३५७३	,, प्रवेशचन्द्र चतुर्वेदी	,,	,, ३६९
२३७	३५७४	,, हरिप्रसाद माहेश्वरी	,,	द्वितीय श्रेणी ४७३
२३८	३५७५	,, हरिशङ्करनाथ द्विवेदी	,,	,, ४४२
२३९	३५७६	,, श्रीनारायण शर्मा	,,	तृतीय श्रेणी ३७०
२४२	३५७९	,, सुखबीर सिंह	कान्धला	द्वितीय श्रेणी ४२८
२४४	३५८१	,, हरनारायण यादव	कानपुर(डी० ए०वी०का०)	तृतीय श्रेणी ३५९
२४५	३५८२	,, जगपाल सिंह राठौर	,,	द्वितीय श्रेणी ४३९
२५०	३५८७	,, श्रीकान्त गुप्ता	,,	तृतीय श्रेणी ३७९
२५१	३५८८	,, रामेश्वर शर्मा 'रमेश'	,,	,, ३९८
२५४	३५९१	,, शिवनारायण बाजपेयी	,,	,, ३३०
२५५	३५९२	,, भगवत दयाल श्रीवास्तव	,,	,, ३३५
२५७	३५९४	,, सुमिरनलाल मिश्र	,,	,, ३२३
२५९	३५९६	,, रामस्वरूप शर्मा	,,	,, ३८२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	विज्ञप्ति संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
२६०	३५९७	श्री श्यामदेव दीक्षित	कानपुर(डी० ए०वी०का०)	तृतीय श्रेणी ३९९
२६१	३५९८	" ओ३म् प्रकाश मीतल	"	द्वितीय श्रेणी ४३१
२६४	३६०१	" रघुनाथसिंह चतुर्वेदी	कानपुर(एस. डी० का०)	तृतीय श्रेणी ३७२
२६५	३६०२	" बाबूराम शुक्ल	"	द्वितीय श्रेणी ४७१
२६६	३६०३	" रामयज्ञ द्विवेदी	"	" ४४७
२६७	३६०४	" रामयतनसिंह	"	" ४७१
२६८	३६०५	" लक्ष्मण प्रसाद	"	उत्तीर्ण ३०८
२६९	३६०६	" सुनहरीलाल शर्मा	"	" ३१६
२७१	३६०८	" प्रह्लाददास कांकानी	"	द्वितीय श्रेणी ४३७
२७२	३६०९	" उल्फत राम गुप्त	"	तृतीय श्रेणी ३९८
२७३	३६१०	" मुहम्मद अब्बास	कालाकाँकर	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
२७४	३६११	श्रीमती किशोरी देवी डालिया	काशी	"
२७८	३६१५	श्री उमाशङ्कर शुक्ल	"	तृतीय श्रेणी ३२६
२७९	३६१६	" शम्भूनाथ उपाध्याय	"	द्वितीय श्रेणी ४१४
२८०	३६१७	" रामचन्द्र सिंह	"	तृतीय श्रेणी ३८३
२८१	३६१८	" देवनाथ मिश्र	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	विज्ञप्ति संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
२८२	३६१९	श्री संकठा प्रसाद शुक्ल	काशी	तृतीयश्रेणी ३४९
२८६	३६२३	,, मनोहरलाल	,,	द्वितीय श्रेणी ४२०
२८९	३६२६	,, दयाशंकर प्रसाद	,,	तृतीय श्रेणी ३४०
२९२	३६२९	,, गौरीशंकर सिंह	,,	,, ३५१
२९६	३६३३	,, मारकण्डेय ओझा	,,	,, ३६४
२९७	३६३४	,, लालिताप्रसाद	,,	उत्तीर्ण ३१२
२९८	३६३५	,, ब्रजमोहनदास अग्रवाल	,,	तृतीय श्रेणी ३४३
३००	३६३७	,, रामलखन पाण्डेय	,,	उत्तीर्ण ३०९
३०२	३६३९	,, बद्री पाठक	,,	तृतीय श्रेणी ३८९
३०४	३६४१	,, रमाकान्त त्रिपाठी	,,	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
३०६	३६४३	,, मथुरानन्द सिंह	,,	,,
३१०	३६४७	,, रघुनाथ सिंह	,,	तृतीय श्रेणी ३५९
३११	३६४८	,, हरवंश सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी ४४७
३१२	३६४९	,, लक्ष्मीशङ्कर सिंह	,,	,, ४२१
३१४	३६५१	,, शंकरप्रसाद त्रिपाठी	,,	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
३१५	३६५२	,, दानबहादुर सिंह	,,	तृतीय श्रेणी ३४६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	विभागीय संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
३१६	३६५३	श्री राजेन्द्रलाल	काशी	तृतीय श्रेणी ३७८
३१७	३६५४	" रामकरण शर्मा	"	" ३२३
३१९	३६५६	" बालेश्वर पाण्डेय	"	" ३५६
३२५	३६६२	" रामनरेश पांडेय	"	" ३५०
३२६	३६६३	" सम्पूर्णानन्द श्रीवास्तव	"	" ३३४
३२८	३६६५	" द्विजेन्द्रनाथ मिश्र	"	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
३३३	३६७०	" अक्षयबर राम	"	तृतीय श्रेणी ३४४
३३४	३६७१	" रामशंकर मिश्र	"	" ३९७
३३६	३६७३	" रघुनाथ उपाध्याय	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार
३३७	३६७४	" राजेन्द्रकुमार चतुर्वेदी	काशी (उदय प्र० का०)	तृतीय श्रेणी ३८८
३३८	३६७५	" महातम मिश्र	"	" ३७६
३३९	३६७६	" सागर सिंह नागर	"	" ३९५
३४०	३६७७	" हरिनाथ सिंह	"	" ३७९
३४१	३६७८	" श्रीराम सिंह	"	" ३९७
३४२	३६७९	" सुफेर सिंह	"	" ३६५
३४३	३६८०	" शम्भूनाथ तिवारी	"	द्वितीय श्रेणी ४५८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	विशारद संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
३४४	३६८१	श्री उदयभान सिंह	काशी (उदय प्र० का०)	तृतीय श्रेणी ३७१
३४५	३६८२	,, तुलसीनारायण सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी ४११
३४६	३६८३	,, नागेश्वर प्र० शाही	,,	तृतीय श्रेणी ३५८
३४७	३६८४	,, सूर्य्यनाथ सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी ४६२ [विशेष यो० ग०]
३४८	३६८५	,, व्रजभूषण सिंह	,,	तृतीय श्रेणी ३९८
३४९	३६८६	,, भरतसिंह	,,	द्वितीय श्रेणी ४२८
३५०	३६८७	,, राजवन्त सिंह	,,	तृतीय श्रेणी ३९४
३५१	३६८८	,, विश्वनाथ पाण्डेय	काशी (ओ० का०)	,, ,, ३९८
३५४	३६९१	,, परमानन्द पाण्डेय	,,	द्वितीय श्रेणी ४३४
३५८	३६९५	,, घनश्याम त्रिपाठी	,,	तृतीय श्रेणी ३९९
३५९	३६९६	,, छविनाथ त्रिपाठी	,,	,, ,, ३७९
३६०	३६९७	,, कमलाकान्त ज्योतिषी	,,	,, ,, ३२४
३६१	३६९८	,, शिवशंकर शर्मा	,,	,, ,, ३६४
३६५	३७०२	,, शिवप्रसाद द्विवेदी	,,	,, ,, ३९८
३६८	३७०५	,, बदरीदत्त पन्त	,,	द्वितीय श्रेणी ४०३
३७१	३७०८	,, धनानन्द जोशी	,,	,, ,, ४२३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	क्रमांक संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
३७३	३७१०	श्री श्रीधर द्विवेदी	काशी (ओ० का०)	तृतीय श्रेणी ३२४
३७५	३७१२	,, हरीहर प्रसाद उपाध्याय	,,	,, ,, ३८६
३७७	३७१४	,, विद्याधर शुक्ल	किशोरगञ्ज	,, ,, ३७६
३७८	३७१५	,, भोलानाथ सिंह	,,	तृतीय श्रेणी ३७७
३८३	३७२०	,, रमाशंकर पन्डा	कुन्ती	विभाजित प्रणाली के अनुसार
३८४	३७२१	,, दौलतराम भक्त	,,	तृतीय श्रेणी ३४२
३९१	३७२८	,, सुन्दरलाल कन्जोलिया	कोटा (भारतेंदु समिति)	,, ,, ३६६
३९४	३७३१	,, श्री नारायणदास	,,	,, ,, ३३७
३९७	३७३४	,, गणेश सिंह	,,	,, ,, ३८२
३९८	३७३५	,, लक्ष्मीनारायण	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
३९९	३७३६	,, सुरेन्द्रनाथ चौधरी	खगड़िया	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
४००	३७३७	,, रामजी सिंह शर्मा 'प्रेमी प्रवासी'	,,	तृतीय श्रेणी ३९९
४०५	३७४२	,, ब्रह्मदत्त दुबे	खरगोन	विभाजित प्रणाली के अनुसार
४१५	३७५२	,, होडल प्रसाद शर्मा	खैर (बी०ए० वी० स्कूल)	तृतीय श्रेणी ४०१
४१६	३७५३	,, भूदेव शर्मा	,,	उत्तीर्ण ३१८
४२०	३७५७	,, सांवल सहाय शर्मा रावल	,,	तृतीय श्रेणी ३७५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	निर्णायक संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
४२१	३७५८	श्री देवदत्त शर्मा कौशिक	वैर (बी०ए० वी० स्कूल)	तृतीय श्रेणी ३७९
४२३	३७६०	" त्रिलोकीनाथ	खोपापार	विभाजित प्रणाली के अनुसार
४२५	३७६२	" नन्दूप्रसाद शुक्ल	"	तृतीय श्रेणी ३३३
४२६	३७६३	" रामबचन	"	" ३७६
४२७	३७६४	" कल्पनाथ मिश्र	"	" ३२१
४२८	३७६५	" राम शङ्करप्रसाद	"	" ३४६
४२९	३७६६	" जगदीश	"	" ३३१
४३२	३७६९	" राधाकृष्ण सिह	गड़वार	" ३२२
४३३	३७७०	" श्याम सुन्दर झा	गढ़बनेली	" ३२०
४३४	३७७१	" आनन्दी ठाकुर	"	" ३९८
४३५	३७७२	" लक्ष्मणलाल	गढ़मलपुर	उत्तीर्ण २९७
४३७	३७७४	" रामजी लाल विद्यार्थी	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार
४३८	३७७५	" सरयू पाण्डेय	"	" "
४४९	३७८६	" श्रीराम मिश्र	गोरखपुर	तृतीय श्रेणी ३५७
४५०	३७८७	" रामकृपालु पाण्डेय	"	द्वितीय श्रेणी ४०८
४५५	३७९२	" चण्डीप्रसाद सिंह	"	तृतीय श्रेणी ३७९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	विशारद संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
४६५	३८०२	श्री गुलजारीलाल जैन	गौहाटी	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
४७१	३८०८	,, रामनारायण जोशी	चुरू (ऋषि-कुल	द्वितीय श्रेणी (विशेष योग्यता सं०) ४४४
४७२	३८०९	,, ज्ञानप्रकाश शर्मा	छतरपुर	तृतीय श्रेणी ३२७
४७४	३८११	,, बैकुण्ठनारायण सिंह	छपरा	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
४७६	३८१३	,, एल० डी० सावरकर	छिन्दवाड़ा	,,
४७७	३८१४	,, ताप्ती प्रसाद वैद्य	,,	तृतीय श्रेणी ३८७
४८१	३८१८	,, कल्याणचन्द्र नागौरी	छोटीसादड़ी	,, ३७७
४८२	३८१९	,, सुभाषचन्द्र वर्मा 'रसाल'	,,	,, ३९६
४८३	३८२०	,, रत्नकुमार मेहता जैन 'रत्नेश'	,,	,, ३३६
४८४	३८२१	,, मदनकुमार 'दिनकर' मेहता	,,	,, ३४५
४८५	३८२२	,, केशरी किशोर 'केशव'	,,	,, ३३०
४८६	३८२३	,, कन्हैया लाल दक 'नीरज'	,,	,, ३५६
४८७	३८२४	,, घीसालाल नागौरी	,,	द्वितीय श्रेणी ४२७
४९१	३८२८	,, कोटमूर्ति रामाराव	जगदलपुर	तृतीय श्रेणी ३६१
४९५	३८३२	,, रघुबर प्रसाद उपाध्याय	जबलपुर	,, ३७८
४९६	३८३३	,, रामगोपाल श्रीवास्तव	,,	,, ३६३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	विशारद संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
४९८	३८३५	श्री विजय बहादुर श्रीवास्तव	जबलपुर	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार उत्तीर्ण ३१८
४९९	३८३६	,, रामलोचन दुबे	,,	
५०१	३८३८	श्रीमती महताब देवी	जयपुर	तृतीय श्रेणी ३३८
५०३	३८४०	श्री हरिहर भाट	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
५०५	३८४२	,, छगनलाल जैन (कमल कुमार)	,,	तृतीय श्रेणी ३७०
५०६	३८४३	,, व्रजमोहन शर्मा	,,	,, ३९८
५१४	३८५१	,, गणपति लाल जोशी	जावद	द्वितीय श्रेणी [वि० यो० संस्कृत] ४४१
५२१	३८५८	,, बलजीत सिंह	जौनपुर	विभाजित प्रणाली के अनुसार
५२७	३८६४	श्रीमती सावित्री देवी श्रीवास्तव	,,	उत्तीर्ण ३१७
५२९	३८६६	श्री राधेश्याम पंडा	झांसी	तृतीय श्रेणी ३४५
५३१	३८६८	,, भय्यालाल शर्मा	,,	द्वितीय श्रेणी ४५७
५३२	३८६९	,, शिवनन्दन सिंह	,,	तृतीय श्रेणी ३६७
५३६	३८७३	,, बलवन्त सिंह शर्मा	,,	,, ३५९
५३७	३८७४	,, भूदेव झा	,,	,, ३७६
५४२	३८७९	,, कृष्ण शेखर सिंह	झुंझनू	,, ३९३
५४३	३८८०	,, वीर बहादुर भार्गव	,,	,, ३५३

८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	विशारद संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
५४४	३८८१	श्री शिवचन्द्र शर्मा	झुंझनू	तृतीय श्रेणी ३९९
५४५	३८८२	,, महेन्द्र शर्मा	,,	द्वितीय श्रेणी ४५०
५४६	३८८३	,, रामचन्द द्विवेदी	टांडा	तृतीय श्रेणी ३२३
५४८	३८८५	,, नागेश्वर तिवारी	डालटेन गंज	द्वितीय श्रेणी ४३५
५५४	३८९१	,, नागेश्वर पाण्डेय	डुमराँव	तृतीय श्रेणी ३५७
५५५	३८९२	,, राम निवास त्रिपाठी	,,	,, ३७४
५५६	३८९३	,, रामेश्वर प्रसाद सिंह	,,	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
५५८	३८९५	,, देवी शरण शुक्ल	ढिंगवस	द्वितीय श्रेणी ४१८
५६०	३८९७	,, सरयूदीन द्विवेदी	,,	तृतीय श्रेणी ३२२
५६९	३९०६	,, जगदीश पांडेय	तिलौथू	उत्तीर्ण ३१६
५७१	३९०८	,, अम्बिका तिवारी	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
५७२	३९०९	,, बलराम त्रिपाठी	दानापुर	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
५७४	३९११	,, मदन बिहारी वर्मा	दार्जिलिंग	तृतीय श्रेणी ३५६
५७५	३९१२	,, ब्रह्मदेव उपाध्याय	,,	,, ३६५
५७६	३९१३	,, जयमंगल सिंह	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
५८३	३९२०	श्रीमती पुष्पा देवी	देवबन्द	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	विशारद संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
५८८	३९२५	श्री दिवाकर मणि त्रिपाठी	देवरिया	तृतीय श्रेणी ३४६
५८९	३९२६	,, सूर्य बली	,,	,, ३३९
५९१	३९२८	,, विभूती राव	,,	,, ३६१
५९२	३९२९	,, श्यामलाल राय	,,	,, ३९२
५९५	३९३२	,, वंशदेव मिश्र	,,	द्वितीय श्रेणी ४२९
५९६	३९३३	,, श्याम बिहारी पाण्डेय	,,	उत्तीर्ण ३११
५९७	३९३४	श्रीमती सुशीला देवी कपूर	देहरा दून (कन्या गु०)	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
५९८	३९३५	,, सत्यवती कपूर	,,	,,
५९९	३९३६	,, निर्मला गांधी	,,	,,
६१०	३९४७	श्री नागेश्वर झा	धमदाहा	द्वितीय श्रेणी ४३४
६११	३९४८	,, जगदीश मिश्र	,,	तृतीय श्रेणी ३९४
६१२	३९४९	,, वासुदेव लाल	,,	,, ३७८
६१४	३९५१	,, बाबू राव कुमठेकर	धारवाड़	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
६१५	३९५२	,, एन० योगा नरसैय्या	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
६१८	३९५५	,, सत्यनारायण चतुर्वेदी	धूसी	द्वितीय श्रेणी ४२१
६३६	३९७३	,, मोहनलाल व्यास	नाथ द्वारा	तृतीय श्रेणी ३७३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	विशारद संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
६३८	३९७४	श्री बंशीलाल	नाथ द्वारा	तृतीय श्रेणी ३९२
६३९	३९७६	" बालमुकुन्द	नारायणगढ़	विभाजित प्रणाली के अनुसार
६४६	३९८३	" कृष्ण कुमार लालसिंह	निरंजनपुर (नि०न०हा०)	प्रथम श्रेणी ४८७ [विशेष यो० ग०]
६४९	३९८६	" कैलाश बिहारी	"	द्वितीय श्रेणी ४४७ [विशेष यो० ग०]
६५०	३९८७	" गंगा प्रसाद	"	द्वितीय श्रेणी ४७५ [विशेष यो० ग०]
६५४	३९९१	" भुवनेश्वर ओझा	"	तृतीय श्रेणी ३५५
६६४	४००१	" राम नारायण चौबे	पटनाकालेज	" ३९५
६६६	४००३	" यमुनाप्रसाद सिंह यादव	"	" ३६८
६६८	४००५	" राज नारायण शर्मा	"	प्रथम श्रेणी ५२१ [विशेष यो० ग०]
६६९	४००६	" रामखेलावन पाण्डेय	"	द्वितीय श्रेणी ४२५
६७५	४०१२	" पूजाप्रसाद मिश्र	पड़रौना	तृतीय श्रेणी ३४८
६७७	४०१४	" रमापति सिंह	"	" ३३७
६७८	४०१५	" सिद्धनाथ ओझा	"	" ३३२
६८०	४०१७	" रामकिशोर लाल	"	" ३२६
६८५	४०२२	" रघुबीर	परसागढ़	" ३५०
६८७	४०२४	" जगत नारायण मिश्र	प्रयाग (दारागंज)	उत्तीर्ण ३१९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	रजिस्टर संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
६८८	४०२५	श्रीमती कामिनी कौल	प्रयाग (दारागंज)	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
६८९	४०२६	श्री आनन्द स्वरूप श्रीवास्तव	,,	द्वितीय श्रेणी ४०५
६९०	४०२९	,, रमाकान्त त्रिपाठी	,,	उत्तीर्ण ३१६
६९४	४०३१	,, रामानन्द गोयल	प्रयाग(सम्मेलन का०)	तृतीय श्रेणी ३९३
६९५	४०३२	,, राधेकृष्ण गुप्त	,,	द्वितीय श्रेणी ४५४
६९६	४०३३	,, फूलबदन सिंह	,,	,, ४३०
६९८	४०३५	,, वीरेन्द्र दत्त तिवारी	,,	अध्याय ३ नियम
६९९	४०३६	,, देवेन्द्र दत्त तिवारी	,,	७ के अनुसार द्वितीय श्रेणी ४६९
७०५	४०४१	,, केशव प्रसाद वर्मा	,,	तृतीय श्रेणी ३९०
७०६	४०४३	,, वीर बहादुर सिंह 'विप्र'	,,	,, ३७७
७०८	४०४५	,, उमादत्त द्विवेदी	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
७१०	४०४७	,, रामसेवक सकसेना	,,	उत्तीर्ण ३१३
७१३	४०५०	,, राम नारायण लाल	,,	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
७१८	४०५५	,, पौहारी शरण शर्मा	,,	द्वितीय श्रेणी ४००
७२०	४०५७	,, श्रोत्रिय वीरेन्द्र चन्द्र शर्मा	,,	तृतीय श्रेणी ३९५
७२२	४०५९	,, श्रीनन्द पाण्डेय	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	विशारद संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
७२३	४०६०	श्री रामबली सिंह	प्रयाग(सम्मेलन का०)	द्वितीय श्रेणी ४१०
७२५	४०६२	,, रमेन्द्र कुमार	,,	तृतीय श्रेणी ३५९
७२६	४०६३	,, सुरेश चन्द्र त्रिपाठी	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
७२७	४०६४	,, बाबूलाल गोविल	,,	द्वितीय श्रेणी ४५५
७२८	४०६५	श्रीमती कृष्णा कुमारी	,,	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
७३०	४०६७	,, श्रीकान्त त्रिपाठी	,,	तृतीय श्रेणी ३८९
७३२	४०६९	,, राम किशोर त्रिपाठी	,,	,, ३४८
७३३	४०७०	,, भगवती प्रसाद भट्ट	,,	उत्तीर्ण ३१४
७३५	४०७२	,, सिद्ध नारायण तिवारी	,,	तृतीय श्रेणी ३८९
७३७	४०७४	,, शिव गणेश पाण्डेय	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
७३८	४०७५	,, शिवधान सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी ४४४
७४१	४०७८	,, चन्द्र प्रकाश आर० भटनागर	,,	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
७४३	४०८०	,, राधा कृष्ण बोहरा	,,	तृतीय श्रेणी ३८२
७४६	४०८३	,, रङ्ग बहादुर सिंह	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
७४९	४०८६	,, रामवृक्ष चतुर्वेदी	,,	उत्तीर्ण ३१४
७५०	४०८७	,, विश्वेश्वर नारायण	,,	द्वितीय श्रेणी ४४५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	विज्ञापक संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
७५१	४०८८	श्री हरिहर बक्स सिंह	प्रयाग सं० का०	तृतीय श्रेणी ३३७
७५३	४०९०	,, बुद्धदेव पाण्डेय	”	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
७५६	४०९३	,, सच्चिदानन्द सिंह	”	विभाजित प्रणाली के अनुसार
७६०	४०९७	,, शोभाकान्त पाठक	प्रसन्डों	तृतीय श्रेणी ३८३
७७१	४१०८	” बाबूराम माहेश्वरी	पाढ़म	तृतीय श्रेणी ३३७
७७२	४१०९	कुमारी रामबेटी शर्मा	”	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
७७५	४११२	” मेवाराम शर्मा	”	तृतीय श्रेणी ३४२
७७७	४११४	” कुमार नारायण	पिलानी	” ” ३५८
७७८	४११५	” सीतारामशर्मा	”	” ” ३६३
७७९	४११६	,, भगवत दयाल शर्मा	”	” ” ३४७
७८४	४१२१	,, मूलचन्द्र	पोहरी (आद०वि०)	विभाजित प्रणाली के अनुसार
७८७	४१२४	,, रतीराम विद्यार्थी	”	”
७८९	४१२६	,, रामचन्द्र रावें जगताप	”	”
७९२	४१२९	,, सदाशिव बिहारी लाल बाजपेयी	गोहरी (सर्व हितैषी वि०)	उत्तीर्ण ३१५
७९३	४१३०	,, माता प्रसाद त्रिपाठी 'महेश'	”	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
७९७	४१३४	,, करुणा शङ्करशुक्ल	फर्रुखाबाद	तृतीय श्रेणी ३६६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	विशारद संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
८०१	४१३८	श्री दफेदार सिंह राठौर	फर्रुखाबाद	तृतीय श्रेणी ३३२
८०२	४१३९	" शीशराम यादव	"	" ३४७
८०४	४१४१	" रामस्वरूप शर्मा	"	" ३४४
८०९	४१४६	" रमाशंकर दीक्षित	फिरोजाबाद (रामाइ. स्कू)	" ३७३
८१०	४१४७	" सूरतसहायलाल	फैजाबाद (सर० वि.)	" ३४२
८११	४१४८	" ओ३म् प्रकाश	"	" ३३०
८१२	४१४९	" हरीप्रसाद अग्रवाल	"	" ३८७
८१३	४१५०	" कन्नौजीलाल शुक्ल	"	" ३९६
८१४	४१५१	" रमानन्द बख्शी	"	" ३५८
८१७	४१५४	" रघुवंश	"	" ३४९
८१८	४१५५	" रामरक्षा त्रिपाठी	"	द्वितीय श्रेणी ४१६
८२०	४१५७	" बैजनाथ प्रसाद दुबे	"	तृतीय श्रेणी ३४३
८२१	४१५८	" रामनरेश उपाध्याय	"	द्वितीय श्रेणी ४२३
८२३	४१६०	" लालमोहर राय	बक्सर	विभाजित प्रणाली के अनुसार
८२४	४१६१	" रमापति लाल	"	"
८२५	४१६२	" श्रीनिवास राय	"	तृतीय श्रेणी ३३०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	विशारद संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
८२६	४१६३	श्री बद्रीप्रसाद शर्मा	बड़मेर	तृतीय श्रेणी ३५०
८२७	४१६४	" प्रभुलाल जोशी	"	द्वितीय श्रेणी ४२३
८३१	४१६८	" रामकुमार गुप्त	बदायूँ	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
८३३	४१७०	" वृजबिहारी यादव	बनमनखी	तृतीय श्रेणी ३८४
८३६	४१७३	" मंगनीप्रसाद सिंह	"	" ३४२
८३७	४१७४	" चन्द्रिकाप्रसाद सिंह	"	" ३९८
८३९	४१७६	" भूदेव दास	"	" ३५७
८४०	४१७७	" महानन्द सिंह	"	" ३६३
८४२	४१७९	" सत्यदेव लाल	"	द्वितीय श्रेणी ४०१
८४४	४१८१	" मारकंडे सिंह	बम्बई (मारवाड़ी वि०)	" ४३१
८४५	४१८२	" कुमारी मैनावती भाटे	"	" ४२३
८४६	४१८३	श्रीमती सोनाबाई	"	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
८५५	४१९२	श्री दाऊद	ब्यावर	विभाजित प्रणाली के अनुसार
८६०	४१९७	" इन्द्रदेव सिंह यादव	बरहज	तृतीय श्रेणी ३४५
८६२	४१९९	" विन्ध्येश्वरी प्रसाद	"	उत्तीर्ण ३१७
८६३	४२००	" जगदीश	"	तृतीय श्रेणी ३७१

९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	विशारद संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
८६४	४२०१	श्री चन्द्रमणि त्रिपाठी	बरहज	तृतीय श्रेणी ३२३
८६६	४२०३	,, गिरिजा शङ्कर	,,	,, ३६६
८६७	४२०४	,, बलदेव तिवारी	,,	उत्तीर्ण ३१०
८६८	४२०५	,, झेंगर प्रसाद	,,	तृतीय श्रेणी ३५६
८६९	४२०६	,, श्याम नारायण	,,	उत्तीर्ण ३०८
८७०	४२०७	,, कन्हैया लाल त्रिपाठी 'हृदय'	,,	तृतीय श्रेणी ३६३
८७१	४२०८	,, दूधनाथ सिंह	,,	,, ३७५
८७२	४२०९	,, वासुदेव लाल	,,	,, ३२१
८७३	४२१०	,, रामप्रसाद	,,	,, ३८४
८७४	४२११	,, अंगिरामणि त्रिपाठी	,,	,, ३२५
८७८	४२१५	,, सकलदीप सिंह	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
८८१	४२१८	,, लाल बाबू द्विवेदी (उपनाम बाबूराम द्विवेदी)	,,	तृतीय श्रेणी ३५१
८८२	४२१९	,, दीनबन्धु विद्यार्थी	,,	,, ३४६
८८९	४२२६	,, त्रिलोकीनाथ द्विवेदी	,,	,, ३५८
८९१	४२२८	,, रामप्रसाद सिंह	,,	,, ३८२
८९२	४२२९	,, बेचनराय	,,	द्वितीय श्रेणी ४०५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	विशारद संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
९३	४२३०	श्री नृसिंह मिश्र	बरहज	तृतीय श्रेणी ३५०
९४	४२३१	,, विश्वनाथ लाल	,,	,, ३३२
९५	४२३२	,, जगन्नाथ सिंह	,,	,, ३५१
९६	४२३३	,, विश्वनाथ यादव	,,	,, ३९४
९८	४२३५	,, दामोदर चतुर्वेदी	,,	,, ३७३
९९	४२३६	,, शिवनन्दन भगत	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१००	४२३७	,, माताप्रसाद	,,	उत्तीर्ण ३१८
१०२	४२३९	कुमारी विद्यावती देवी	बरेली(स० वि० हा०)	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१०३	४२४०	श्री बद्रीप्रसाद शर्मा	,,	तृतीय श्रेणी ३२४
१०४	४२४१	,, ओम् प्रकाशसिंह	,,	,, ३६७
१०६	४२४३	,, मोहनलाल	,,	,, ३३७
१०९	४२४६	,, धरणीधर मिश्र	बलवड्डा	,, ३३९
११७	४२५४	,, शिवशरण पांडे	बलरामपुर	,, ३८६
१२३	४२६०	,, भूशनप्रसाद	,,	,, ३५१
१२६	४२६३	,, रामकुमार लाल	बस्ती	,, ३७२
१४४	४२८१	,, महादेव झा	बहदुरा	,, ३९९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	विशारद संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
९४५	४२८२	श्री नन्दन प्रसाद झा	बहदुरा	तृतीय श्रेणी ३५०
९४६	४२८३	,, भोला झा	,,	,, ३९९
९४७	४२८४	,, शिवधन मिश्र	,,	,, ३७३
९४८	४२८५	,, परमेश्वरप्रसाद सिंह	,,	,, ३९७
९५६	४२९३	,, धनुषधारी सिंह	,,	,, ३८१
९५७	४२९४	,, रामकृष्ण सहाय	,,	द्वितीय श्रेणी ४२५
९६२	४२९९	,, मुन्शीदयाल सिंह	बांदी	विभाजित प्रणाली के अनुसार
९७७	४३१४	,, विद्याधर पांडिया	बीकानेर	,, ,,
९७९	४३१६	,, प्रयाग नारायण गो०	,,	तृतीय श्रेणी ३४६
९८३	४३२०	,, विन्दमूरि आंजनेय शर्मा	बैजबाड़ा	विभाजित प्रणाली के अनुसार
९८५	४३२२	,, मदन लाल चौबे	बैतूल	तृतीय श्रेणी ३९९
९८६	४३२३	,, जगदीश नारायण चौधरी	भगवानपुर	,, ३४२
९८८	४३२५	,, रामेश्वर प्रसाद	,,	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
९८९	४३२६	,, जगदीश पांडेय	,,	द्वितीय श्रेणी ४५६ (वि० यो० गणित)
९९०	४३२७	,, शिवनाथ प्रसाद	,,	द्वितीय श्रेणी ४६०
१०१३	४३५०	,, नवनीतलाल नागर	मथुरा (गो० हि०वि०पी०	तृतीय श्रेणी ३६६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	विशारद संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
१०१४	४३५१	श्री नाथूराम	मथुरा (गो० हि० वि०पी.)	द्वितीय श्रेणी ४४१
१०१५	४३५२	,, बल्देव दास अग्रवाल	,,	,, ४०६
१०१६	४३५३	,, दीपचन्द शर्मा	,,	तृतीय श्रेणी ३४०
१०१९	४३५६	,, केशवदेव 'प्रताप'	,,	द्वितीय श्रेणी ४००
१०२०	४३५७	,, किशोरवर्मा 'श्रीश'	,,	तृतीय श्रेणी ३४०
१०२१	४३५८	,, हरप्रसाद शर्मा	,,	,, ३६६
१०२२	४३५९	,, श्रीनाथमुखरैय्या द्विवेदी	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१०२३	४३६०	,, किशनसिंह वैदिक	,,	तृतीय श्रेणी ३७१
१०२४	४३६१	,, बाबूलाल अग्रवाल	,,	द्वितीय श्रेणी ४७३
१०२५	४३६२	,, बरसानेलाल चतुर्वेदी	,,	तृतीय श्रेणी ३२३
१०२६	४३६३	,, रेवतीरंजन सिनहा	,,	,, ३५९
१०३२	४३६९	,, गौरीशंकर शर्मा	,,	,, ३२८
१०३९	४३७:	,, गोपालदत्त शर्मा	,,	द्वितीय श्रेणी ४३० (वि० योग्यता सं०)
१०४०	४३७७	,, मुरारीलाल मिश्र	,,	तृतीय श्रेणी ३२९
१०४१	४३७८	,, लज्जाराम ललाम	,,	,, ३५८
१०४२	४३७९	,, नारायण प्रसाद शर्मा	,,	,, ३६२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	विशारद संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
१०४३	४३८०	श्री रघुनाथ सिंह शर्मा	मथुरा (गो० हि० वि० पीठ)	तृतीय श्रेणी ३२०
१०४६	४३८३	,, तारकेश्वर सिंह	महदेवा	,, ३४७
१०४७	४३८४	,, शुकदेव पोद्दार	,,	,, ३४६
१०५०	४३८७	,, अशर्फीलाल मण्डल	,,	,, ३३८
१०५१	४३८८	,, भुवनेश्वर सिंह	,,	,, ३४७
१०५५	४३९२	,, मांगीलाल 'निरञ्जन'	मांगरोल	,, ३१३
१०६२	४३९९	,, दुबरी दुबे	मुंगरा बादशाहपुर	द्वितीय श्रेणी ४२९
१०६३	४४००	,, अम्बिका सिंह	,,	तृतीय श्रेणी ३६३
१०६४	४४०१	,, देवीप्रसाद पाण्डेय	,,	,, ३२३
१०६८	४४०५	,, शुगनचन्द्र शर्मा	मुजफ्फर नगर	,, ३५०
१०६९	४४०६	,, देवदत्त	,,	,, ३८२
१०७१	४४०८	,, देवीदत्त शर्मा	मुजफ्फरपुर (सुहृद्संघ)	द्वितीय श्रेणी ४३२
१०८१	४४१८	,, कमल मोहन	मुरादाबाद	तृतीय श्रेणी ३७६
१०८८	४४२५	श्रीमती उषारानी	मेरठ	द्वितीय श्रेणी ४०५
१०८९	४४२६	श्री ब्र० नारायणदेव रङ्क-बन्धु	,,	तृतीय श्रेणी ३३९
१०९६	४४३३	,, सिश्रीलाल शाक्य	मैनपुरी	विभाजित प्रणाली के अनुसार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	निर्णायक संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
१०९८	४४३५	श्री कृष्णपदारथ सिंह 'मंजुल'	मोरसण्ड	तृतीय श्रेणी ३५१
१०९९	४४३६	,, योगेन्द्रप्रसाद सिंह	,,	प्रथम श्रेणी ५१८ [वि० यो० गणित]
११०४	४४४१	,, चन्द्रशेखरशर्मा बोगड़	रतनगढ़	तृतीय श्रेणी ३२३
११०५	४४४२	,, जगन्नाथ प्रसाद शर्मा गौड़	,,	,, ३४२
११०६	४४४३	,, मोतीलाल पारीक	,,	,, ३४०
११०८	४४४५	,, चन्द्रशेखर	रतलाम	द्वितीय श्रेणी ४३०
१११०	४४४७	,, मनवीर राय	रतसंड	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१११२	४४४९	,, श्रीकृष्णराम	,,	तृतीय श्रेणी ३८७
१११३	४४५०	,, रामउछाह सिंह	,,	,, ३६९
१११४	४४५१	,, रामानन्द उपाध्याय	,,	,, ३५८
११२५	४४६२	,, बालकृष्णराव ढोक	राजनांदगांव	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
११३१	४४६८	,, चन्द्रभाल मोदी	रानीगंज (बदवान)	द्वितीय श्रेणी ४१७ [वि०यो०गणित]
११३२	४४६९	,, विभूतिप्रसाद शर्मा	,,	,, ४६६
११३५	४४७२	,, सत्यनारायण राय शर्मा	रानीपुर (आज़मगढ़)	तृतीय श्रेणी ३७२
११३६	४४७३	,, सुखदेव प्रसाद यादव	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
११३८	४४७५	,, सत्यदेव द्विवेदी	,,	,, ,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	विशारद संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
११४०	४४७७	श्री गुंडोदासो कंपली	रायगढ़	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
११४३	४४८०	श्रीमतीशकुन्तला नवरे	रायपुर	,,
११४८	४४८५	श्री हरीशंकर श्रीवास्तव	रीवाँ (बाल समिति)	द्वितीय श्रेणी ४११
११५०	४४८७	,, सत्यदेव पाण्डेय	,,	तृतीय श्रेणी ३५७
११६६	४५०३	,, आदित्यप्रकाश मिश्र	लखनऊ	,, ३८४
११६७	४५०४	,, विष्णुदत्त अवस्थी	,,	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
११६८	४५०५	,, शिवबक्स मिश्र	,,	तृतीय श्रेणी ३५७
११६९	४५०६	,, भजनलाल वर्मा	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
११७०	४५०७	,, रामनाथ तिवारी	,,	तृतीय श्रेणी ३५२
११७३	४५१०	,, सुखमङ्गल शुक्ल	,,	,, ३७०
११७४	४५११	,, जगदीशप्रसाद श्रीवास्तव	,,	,, ३४३
११७७	४५१४	,, रणबीर सेठ	,,	द्वितीय श्रेणी ४१७
११७८	४५१५	,, जयदेवसिंह मेहरा	,,	तृतीय श्रेणी ३३१
११८०	४५१७	,, जगदीश नारायण भटनागर	,,	द्वितीय श्रेणी ४२४
११८३	४५२०	,, लक्ष्मीकान्त त्रिपाठी	,,	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
११८६	४५२३	,, त्रिवेणीदत्त त्रिपाठी	लखीमपुर	विभाजित प्रणाली के अनुसार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	विशारद संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
११८७	४५२४	श्री रुक्मेश शर्मा अग्निहोत्री	लखीमपुर	तृतीय श्रेणी ३५५
११८९	४५२६	,, हरद्वारी लाल शुक्ल	,,	,, ,, ३५२
११९१	४५२८	,, हृदय नारायन टंडन	,,	,, ,, ३३०
११९२	४५२९	,, कुबेरनाथ द्विवेदी	,,	प्रथम श्रेणी ४९५ (वि० योग्यता वै०)
११९५	४५३२	श्रीमती कृष्णकुमारी शर्मा	लश्कर	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
११९६	४५३३	श्री महावीरप्रसाद सक्सेना	,,	उत्तीर्ण ३१९
११९८	४५३५	,, जगन्नाथ प्रसाद शर्मा	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१२०१	४५३८	,, क्षमाधर बाजपेयी	,,	तृतीय श्रेणी ३८०
१२०३	४५४०	,, जगदम्बा प्रसाद श्रीवास्तव	,,	,, ,, ३९०
१२०४	४५४१	,, रघुवीर सहाय सक्सेना	,,	द्वितीय श्रेणी ४५८
१२०६	४५४३	,, मुरारीलाल झा	,,	,, ,, ४१२
१२०७	४५४४	,, रामचन्द्र व्यास	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१२११	४५४८	,, गिरिवर लाल	,,	तृतीय श्रेणी ३८७
१२१४	४५५१	,, दामोदर लाल पुरोहित	लक्ष्मण गढ़	,, ,, ३३०
१२१६	४५५३	,, सीताराम जोशी	,,	द्वितीय श्रेणी ४४७
१२१९	४५५६	,, महावीर मिश्र	,,	तृतीय श्रेणी ३६९
१२२४	४५६१	,, ठाकुर रामशरण शर्मा	लहेरिया सराय	विभाजित प्रणाली के अनुसार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	विशारद संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
१२२९	४५६६	श्री चन्द्रदत्त पन्त	लाहौर (ला० राय भ०)	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
१२३०	४५६७	,, के० गोविन्द हरीदास	,,	,,
१२३५	४५७२	,, एम० एस० कल्याण सुन्दरम्	,,	,,
१२३८	४५७५	,, चाँदमल अग्रवाल 'चन्द्र'	वर्धा	,,
१२३९	४५७६	,, खूबीलाल	,,	द्वितीय श्रेणी ४२७
१२४०	४५७७	,, श्यामलाल	,,	तृतीय श्रेणी ३६०
१२४१	४५७८	,, बाबूराम शास्त्री	वृन्दाबन	द्वितीय श्रेणी ४२३
१२४२	४५७९	,, ज्ञानबन कश्यप	,,	,, ४३३
१२४५	४५८२	,, वीरेन्द्रप्रसाद शर्मा	वैद्यनाथ-धाम (गुरु०)	,, ४०३
१२४६	४५८३	,, ब्रह्मचारी शङ्कर दत्त	वैद्यनाथ-धाम (ब्रह्म०)	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१२४८	४५८५	,, एम० नागेश्वरराय	वैद्यनाथधाम (सा० वि०)	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
१२४९	४५८६	,, शशिशेखर राजहंस	,,	तृतीय श्रेणी ३९२
१२५०	४५८७	,, गोरेलाल झा	,,	,, ३४७
१२५६	४५९३	,, शिवनारायण लाल मिश्र	शाहजहांपुर	,, ३६२
१२५७	४५९४	,, चन्द्रप्रकाश	शिकारपुर (डी०ए०स्कू०)	द्वितीय श्रेणी ४४२
१२५८	४५९५	,, महेन्द्रपाल गुप्त	,,	प्रथम श्रेणी ५०० (वि० यो० ग०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	विशारद संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
१२५९	४५९६	श्री छेदालाल	शिकारपुर (डी०ए० इं० स्कूल)	द्वितीय श्रेणी ४१४
१२६०	४५९७	,, अनोखेलाल शर्मा	,,	,, ४२९
१२६२	४५९९	,, नानकचन्द मिश्र	,,	,, ४७०
१२६३	४६००	,, चन्द्रपाल सिंह	शिकोहाबाद	तृतीय श्रेणी ३२०
१२६७	४६०४	,, रामचन्द्रसिंह राणा	श्रीमुखपुर	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१२६८	४६०५	,, रामनारायण सिंह	,,	तृतीय श्रेणी ३३६
१२७६	४६१३	,, मौजीसिंह	सड्डीहा	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१२७८	४६१५	,, सरयूप्रसाद मिश्र	सतना	तृतीय श्रेणी ३८३
१२७९	४६१६	,, गोकुल प्रसाद	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१२८१	४६१८	,, हरकेश पांडेय	सारनाथ	तृतीय श्रेणी ३२४
१२८३	४६२०	,, रामखेलावन मिश्र	सिंगरामऊ	द्वितीय श्रेणी ४३८
१२८७	४६२४	,, ललताप्रसाद दुबे	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१२८९	४६२६	,, रामलषण-तिवारी	सिरसा	तृतीय श्रेणी ३५९
१२९०	४६२७	,, जगन्नाथ प्रसाद अग्निहोत्री	,,	द्वितीय श्रेणी ४३८
१२९४	४६३१	,, शारदाप्रसाद पाठक	सीतापुर	उत्तीर्ण ३१५
१२९५	४६३२	,, आनन्द बिहारी लाल माथुर	,,	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	विशारद संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१३००	४६३७	श्री प्रतापनारायण झा	सुपौल	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
१३०२	४६३९	,, उदयकान्त झा	सुरसण्ड	तृतीय श्रेणी ३९४
१३०३	४६४०	श्रीमती सावित्री देवी	सुहवल	,, ३८९
१३०५	४६४२	श्री सुदामा राय	,,	द्वितीय श्रेणी ४०७
१३०७	४६४४	,, बैकुण्ठनाथराय शर्मा	,,	,, ४३८
१३०९	४६४६	,, सुद्धेश्वर शर्मा	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१३११	४६४८	,, शिवमूर्तिसिंह	,,	,,
१३१२	४६४९	,, विश्वम्भरलाल गुरु	सूरजगढ़	तृतीय श्रेणी ३९०
१३१४	४६५१	,, जगदीश शुक्ल 'काव्यतीर्थ'	सूरजपुरा	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
१३२३	४६६०	,, रामकृष्ण सिंह झा	सेवदह	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१३२५	४६६२	,, रामबरण सिंह 'सारथी'	,,	,,
१३३२	४६६९	,, राजकुमार सिंह	सोनकच्छ(एवी एमस्कूल)	तृतीय श्रेणी ३१३
१३३४	४६७१	,, बाबूराव जोशी	,,	,, ३४३
१३३७	४६७४	,, सहदेव प्रसाद	सोराम	,, ३३७
१३३८	४६७५	,, रामयश पाण्डेय	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१३३९	४६७६	,, चन्द्र किशोर	,,	द्वितीय श्रेणी ४२७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	विशारद संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
१३४०	४६७७	श्री लाल कमलेश्वर सिंह	सोराम	तृतीय श्रेणी ३५८
१३४१	४६७८	,, राजबहादुर सिंह	,,	,, ३२७
१३४२	४६७९	,, लाल बहादुर सिंह	,,	,, ३६५
१३४६	४६८३	,, राम सुन्दर मिश्र	,,	,, ३९१
१३४९	४६८६	,, मन्नीलाल अवस्थी	हरदोई	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१३५०	४६८७	,, राम शंकर मिश्र	,,	तृतीय श्रेणी ३३४
१३५१	४६८८	,, राम सनेही बाजपेयी	,,	,, ३४४
१३५३	४६९०	,, हरिनन्दन सिंह	हवेली (खड़गपुर)	,, ३८६
१३५५	४६९२	,, महात्मा प्रसाद द्विवेदी	हाटा	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१३५८	४६९५	,, बिन्ध्याचल प्रसाद श्रीवास्तव	,,	,,
१३५९	४६९६	,, होतीलाल शर्मा	हाथरस	तृतीय श्रेणी ३७९
१३६०	४६९७	,, रामचन्द्र गुप्त	,,	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
१३६१	४६९८	,, परमानन्द शर्मा	,,	तृतीय श्रेणी ३७८
१३६२	४६९९	,, रामजी पाण्डेय	हिराज पट्टी	,, ३४८
१३६४	४७०१	,, जानकीनाथ त्रिपाठी	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१३६५	४७०२	,, रघुराज किशोर नारायण सिंह शर्मा	,,	तृतीय श्रेणी ३७८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	विशारद संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
१३६६	४७०३	श्री परमहंस मिश्र	हिराज पट्टी	द्वितीय श्रेणी ४२९
१३६७	४७०४	,, रामकृष्ण पांडेय	,,	,, ४१३
१३६८	४७०५	,, द्वारिका त्रिपाठी	,,	,, ४२७ [वि० यो० सं०]
१३७१	४७०८	,, यमुना त्रिपाठी	,,	तृतीय श्रेणी ३६०
१३७२	४७०९	,, यदुनन्दन राय	,,	द्वितीय श्रेणी ४६५
१३७३	४७१०	,, सूर्य किशोर पाण्डेय	प्रयाग (सं० का०)	तृतीय श्रेणी ३२९
१३७४	४७११	,, रामलषण शुक्ल	,,	,, ३७९
१३७५	४७१२	,, शिवमूर्ति मिश्र	,,	,, ३६०
१३७६	४७१३	,, चन्द्रशेखर द्विवेदी	,,	,, ३४२
१३७७	४७१४	,, पारसनाथ राय	,,	,, ३२८
१३७८	४७१६	,, महेशचन्द्र	चान्दपुर	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१३७९	४७१५	,, कमलवास प्रसाद वर्मा	प्रयाग (सं० का०)	,,

प्रथमा परीक्षा

१४	श्री मुलायम सिंह	अनूप शहर	तृतीय श्रेणी ३०४
१५	,, नौनिहाल सिंह	,,	,, २८४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
१९	श्री ओम् प्रकाश माथुर	अमरोहा	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
२०	,, दया नारायण टंडन	,,	,,
२२	,, महाबीर प्रसाद	,,	,,
२३	,, हरचरन दास	,,	,,
२४	,, सुधाकर	,,	,,
२५	,, भूषण शरण	,,	,,
२६	,, सोहनलाल	,,	,,
२७	,, राम सिंह	,,	,,
२८	,, समर पाल सिंह	,,	,,
२९	,, मदन मोहनलाल कृष्णात्रेय	,,	,,
३०	श्रीमती सौभाग्यवती	,,	,,
३१	कुमारी मिथिलेश कुमारी गुप्त	,,	,,
३२	श्री कमलेश्वर भगत	अयोध्यागंज	,,
३४	,, उमाकान्त झा	,,	,,
३५	,, देवकी भवानी पन्त	अलमोड़ा	,,
३६	श्रीमती विमला देवी वार्ष्णेय	अलीगढ़	,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
३७	श्रीमती शकुन्तला देवी	अलीगढ़	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
३८	" उर्मिला देवी वार्ष्णेय	"	"
३९	श्री चिरंजी लाल शर्मा	"	द्वितीय श्रेणी ३८१
४०	" गिरधारी लाल	"	प्रथम श्रेणी ४९६ [वि० यो० ग० सं०]
४१	कुमारी सरला देवी मिश्र	"	द्वितीय श्रेणी ३६९
४२	श्री बाबूलाल नवजवान	"	" ३१६
४४	" टीकाराम गुप्त	आगरा	तृतीय श्रेणी ३१४
५०	" सालिक राम	"	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
५१	" डालचन्द	"	"
५२	" महेन्द्र सिंह	"	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
५३	" लाखन सिंह	"	"
५४	" टीकमचन्द	"	"
५५	" अतर सिंह	"	"
५६	" रणधीर सिंह	"	"
६०	" विशम्भरनाथ	"	"
६१	" नत्थीलाल	"	"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
६२	श्री बाबूलाल शर्मा	आगरा	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
६३	,, द्वारिका प्रसाद शर्मा	,,	,,
६४	,, फूलचन्द कुलश्रेष्ठ	,,	,,
६७	श्रीमती सुरेन्द्रवती रावत	,,	,,
६९	श्री ब्रह्मचारी दशरथ	आज़मगढ़	विभाजित प्रणाली के अनुसार
७५	,, मांगीलाल जोशी	इन्दौर	तृतीय श्रेणी २८३
७६	श्रीमती गायत्री देवी	,,	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
७९	श्री नन्दन लाल	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
८१	,, दत्तात्रय क़ानूनगो	,,	द्वितीय श्रेणी ३४० [वि० यो० ग०]
८३	,, लक्ष्मण दुबे	,,	तृतीय श्रेणी २६८
८४	,, कन्हैय्यालाल जैन	,,	द्वितीय श्रेणी ३२१
८८	,, जगन्नाथ शर्मा	,,	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
९१	,, सौदागर राम	इशीपुर	,,
९२	,, धर्मपाल पोद्दार	,,	द्वितीय श्रेणी ३५६
९३	कुमारी रतिदेवी	,,	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
९४	श्री लक्ष्मण दास	,,	,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
९५	श्री बङ्गाली राम	ईशीपुर	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
९६	" मेदीराम	"	"
९७	" जगन्नाथ राम	"	"
९८	" रामदेव प्रसाद गौड़	उज्जैन	"
१०३	" जीतमल्ल शर्मा	उदय पुर (सा० वि०)	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१०६	" हीरालाल नाहर	उदयपुर (हि० वि० पी०)	द्वितीय श्रेणी ३२१
११०	" पुरुषोत्तम मेनारिया	"	" ३१८
११३	" प्रभाकर दिनकर खरे	उरई	तृतीय श्रेणी २९४
११४	" बाबूराम	"	" २९४
११६	" चतुर्गुण राय	एकमा	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
११७	" जमशेद जी	कटनी	"
११८	" धर्मदास जैन	"	"
११९	" बद्रीप्रसाद दुबे	"	"
१२०	" धर्मभूषण गर्ग	"	"
१२१	" मुलायम चन्द	"	"
१२२	" भगवानदास	"	"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
१२४	श्री बांके बिहारी	कटनी	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
१३२	,, राम बिलास राय	कड़सर	,,
१३४	,, परशुराम शर्मा	कदम कुआं	द्वितीय श्रेणी ३१९
१३५	,, अवधेश कुमार सिंह	,,	तृतीय श्रेणी २७७
१३६	,, सनातन शर्मा	,,	द्वितीय श्रेणी ४०५
१३७	,, रामेश्वर जोशी	कन्नौज	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
१३८	कुमारी शारदा देवी वर्मा	करछना	,,
१३९	श्री इकबाली प्रसाद त्रिपाठी	,,	,,
१४४	,, दुर्गा प्रसाद काकानी	करसियांग	,,
१४५	,, चाँद महम्मद	करांची	द्वितीय श्रेणी ४०५
१४६	,, सूर्यनारायण मिश्र	,,	,, ३३२
१४८	,, रामकृपाल द्विवेदी	,,	,, ३७२
१५०	,, विजेन्द्र कुमार जैन	,,	तृतीय श्रेणी २९२
१५६	,, कल्याण प्रसाद शर्मा	करौली	द्वितीय श्रेणी ३९७
१५९	,, नन्द किशोर तिवारी	कलकत्ता (तु० सा० वि०)	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
१६०	,, सीताराम मेहरा	,,	,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
१६२	श्री बल्लभ दास मेहता	कलकत्ता (माहेश्वरी वि०)	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
१६३	,, बुधमल दूगड़	,,	,,
१६४	,, चिरंजीव लाल शर्मा	,,	,,
१६८	,, सूरज रतन चाण्डक	,,	,,
१७१	,, चन्द्रभाल शुक्ल	,,	,,
१७२	,, मानिक लाल डागा	,,	,,
१७४	,, विजयपाल सिंह	,,	तृतीय श्रेणी ३१०
१७७	,, रामस्वरूप पोद्दार	,,	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
१७९	,, गौरीशङ्कर पालरीवाला	,,	,,
१८०	,, ब्रजेन्द्रनाथ राय	,,	,,
१८५	,, अक्षय कुमार शर्मा	,,	,,
१८६	,, हेमचन्द्र जैन	कान्धला	द्वितीय श्रेणी ३६६
१९१	,, उमाशंकर अवस्थी	कानपुर (डी० ए०बी० का०)	,, ३२२
१९५	,, रामगोपाल सक्सेना	कायमगञ्ज	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
१९६	,, पृथ्वीपाल	,,	,,
१९८	,, मातादीन सिंहानिया	काशी	,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सक्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
२००	श्री गोपालदास	काशी	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
२०१	" केदारनाथ सेठ	"	"
२०२	" हरिप्रसाद गुप्त	"	"
२०३	" भागवत प्रसाद डनाक	"	"
२०४	" शिवसागर मिश्र	"	"
२०५	" त्रिगुणानन्द पाण्डेय	"	द्वितीय श्रेणी ३७१
२०६	" हरिकृष्ण शर्मा	"	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
२०७	कुमारी ललिता कुमारी	"	द्वितीय श्रेणी ३२२
२१०	श्रीमती शशिकला व्यास	"	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
२११	श्री उदयनारायण सिंह	काशी (उदय प्र० कालेज)	द्वितीय श्रेणी ३७१
२१२	" कमला प्रसाद सिंह	"	तृतीय श्रेणी ३०७
२१४	कुमारी चन्द्रप्रभा वर्मा	काशी (आरि० कालेज)	द्वितीय श्रेणी ३६६
२१५	श्री युगुल किशोर द्विवेदी	किशोरगंज	तृतीय श्रेणी ३०८
२१६	" भुजंगी ठाकुर	कुआंगढ़ी	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
२१७	" चिन्तलाल झा	"	"
२१८	" दिलीप नारायण सिंह	"	"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
२१९	श्री उग्रमोहन झा 'धवल'	कुआँगढ़ी	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
२२०	,, शशिनाथ झा	,,	,,
२२१	,, भैरवसिंह	कुकड़ेश्वर	,,
२२७	,, रामराज प्रसाद द्विवेदी	कुशीनगर	,,
२३०	,, विश्वनाथ मिश्र	कोआथ	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
२३१	,, रामकृपाल सिंह	,,	,,
२३२	,, देवनारायण पाण्डेय	,,	,,
२३३	,, मुनीप्रसाद सिंह	,,	,,
२३४	,, जगदीश कुमार वर्मा	,,	,,
२३५	,, खेदन प्रसाद	,,	,,
२३६	,, महेन्द्र तिवारी	,,	,,
२३७	,, विश्वनाथ पाण्डेय	,,	,,
२३८	,, जगनारायण प्रसाद सिन्हा	,,	,,
२३९	,, चन्द्रमौल प्रसाद सिंह	,,	,,
२४०	,, प्रभुदयाल भारद्वाज आचार्य	कोटा (भारतेन्दु समिति)	द्वितीय श्रेणी २२९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
२४२	श्री रामेश्वरप्रसाद सिंह	खगडिया	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
२४३	,, रघुनन्दन प्रसाद सिंह	,,	,,
२४५	,, रामप्रसाद द्विवेदी	खुजनेर	,,
२४६	,, हरप्रसाद श्रीवास्तव	,,	,,
२४८	,, गुलाबदत्त	गगहा	तृतीय श्रेणी ३०२
२५१	,, रामसागर प्रसाद सिंह	गंगेया	द्वितीय श्रेणी ३५४
२५२	,, सोनेलाल राय	,,	तृतीय श्रेणी २९८
२५३	,, केशव तिवारी	गढ़वार	द्वितीय श्रेणी ४११
२५४	,, रामनरेश गोसाईं	,,	तृतीय श्रेणी २९७
२५५	,, राजदेव सिंह	,,	,, २८३
२५७	,, रामाज्ञा सिंह	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
२५८	,, बुद्धूराम	,,	तृतीय श्रेणी २७४
२५९	,, गणेशप्रसाद	,,	द्वितीय श्रेणी ३५२
२६१	,, सुदर्शन सिंह	,,	,, ३६६
२६२	,, सुरेन्द्रनाथ सिंह	,,	,, ३१९
२७१	,, सीताराम वर्मा	गया	,, ३३४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
२७२	कुमारी सावित्री देवी	गया	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
२७६	श्री हरगोविन्द वर्मा	गाड़रवारा	”
२७९	” वीरसेन जैन	गोहद	तृतीय श्रेणी ३१०
२८०	” जयनारायण	”	” २८९
२८६	” दयाराम वर्मा	”	” ३१३
२८७	” जगदम्बाप्रसाद शर्मा 'आर्य'	”	” २९४
२९२	” वीरेन्द्रसिंह वर्मा	”	तृतीय श्रेणी २७२
३०२	” केशवदेव भीमराजका	चिड़ावा	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
३०३	” भिखारी लाल शर्मा	”	”
३०५	” बनवारी लाल केडिया	”	द्वितीय श्रेणी ४००
३०७	” इन्द्रचन्द्र हिमतरामका	”	तृतीय श्रेणी २८७
३०८	” महावीरप्रसाद चौरासिया	”	” २७२
३१०	” रामसागर सिंह शर्मा	चिरौरा	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
३११	” रामप्रसाद सिंह	”	”
३१३	” रामजी लाल जालान	चुरू (ऋषिकुल)	विभाजित प्रणाली के अनुसार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
३१४	श्री सत्यनारायण काबरा	चुरू (ऋषिकुल)	विभाजित प्रणाली के अनुसार
३१५	" देवदत्त सिंह	छपरा	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
३१७	" रामरणविजय नारायण सिंह	"	"
३१९	" नर्मदाप्रसाद सिंह	"	"
३२०	" कमलदेव नारायण	"	"
३२१	" धर्मनाथ प्रसाद	"	"
३२३	" गोस्वामी श्यामानन्द गिरि	"	"
३२४	" बांकेलाल	"	"
३२६	" रामानुज मिश्र	"	"
३२७	" रामप्यारे पाण्डेय	छीते पट्टी	द्वितीय श्रेणी ३४५
३२८	" शिवनारायण त्रिपाठी	"	" ४०५
३२९	" रामराज सिंह	"	" ३२८
३३१	" शिवकुमार त्रिपाठी	"	तृतीय श्रेणी २६६
३३२	" रामचन्द्र सिंह	"	द्वितीय श्रेणी ४१७ [वि० यो० गणित]
३३३	" चन्द्रभूषण मिश्र	"	द्वितीय श्रेणी ३८६ [वि० यो० गणित]
३३४	" जयकर्ण सिंह	"	द्वितीय श्रेणी ३७२ [वि०यो० गणित]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
३३६	श्री नीलाम्बर कृष्ण	जगदलपुर	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
३३७	,, गोपीनाथ दास पटनायक	,,	,,
३३९	,, छबिनाथ ठाकुर	,,	,,
३४०	,, त्रिलोकी नाथ अग्रवाल	,,	,,
३४१	,, अनिल कुमार गुप्ता	,,	,,
३४६	,, श्यामा चरण दुबे	जबलपुर	,,
३४७	,, हीरालाल	,,	,,
३४९	,, जगदीशचन्द्र बसु	जयपुर	द्वितीय श्रेणी ४०४ [वि० यो० ग०]
३५९	,, रामनारायन सिंह	जौनपुर	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
३६०	,, देवमूर्ति सिंह	,,	,,
३६२	,, शारदा प्रसाद मिश्र	झाझा	,,
३६३	,, धनेश्वर सिंह 'धीर'	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
३६४	,, मुकुटधारी प्रसाद 'मुकुट'	,,	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
३६५	,, देवी सहाय सक्सेना	झांसी	तृतीय श्रेणी ३०३
३६७	कुमारी मालती देवी	झालरापाटन	विभाजित प्रणाली के अनुसार
३६८	श्री मांगीलाल	,,	द्वितीय श्रेणी ३८७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
३६९	कुमारी बिमला देवी	झालरापाटन	द्वितीय श्रेणी ३९८ [विशेष यो० ग०]
३७५	श्री वृजमोहन लाल	टांडा	द्वितीय श्रेणी ३८९
३७६	,, ऋषिकेश मिश्र	,,	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
३७८	,, श्यामजी	,,	द्वितीय श्रेणी ४०२ [विशेष यो० ग०]
३७९	,, कदम लाल पोद्दार	टीकापट्टी	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
३८०	,, रामप्रसाद	,,	,,
३८१	,, जयप्रकाश सिंह	,,	,,
३८२	श्रीमती प्रतिभा देवी रतूड़ी	टेहरी	विभाजित प्रणाली के अनुसार
३८५	,, रामाधार उपाध्याय	डिब्रूगढ़	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
३८८	,, अवधेश कुमार ओझा	डुमरांव	,,
३८९	,, धनुषधारी सिंह	डेहरी आन-सोन	द्वितीय श्रेणी ३३७
३९०	,, प्रभुनाथ राम	,,	,, ३३०
३९१	,, मोहन राम	,,	,, ३६६
३९२	,, राम नन्दन राम	,,	,, ३३९
३९३	,, राम सेवक राम	,,	,, ३९४
३९४	,, शंभु शरण	,,	द्वितीय श्रेणी ३४५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
३९६	श्री कवल सिंह यादव	तिलोथू	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
३९७	" अयोध्या प्रसाद	"	"
३९८	" चन्द्रिका राम	"	"
३९९	" परशुराम सिंह	"	"
४००	" देववंश सहाय	"	"
४०२	" सत्यनारायण लाल	"	तृतीय श्रेणी ३०८
४०३	" महेश्वरी प्रसाद सिंह	"	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
४०४	" जीउत राम	"	"
४०६	" रामधारी तिवारी	"	तृतीय श्रेणी ३०२
४०७	" रामगोपाल श्रीवास्तव	दबोह	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
४०८	" चेतराम श्रीवास्तव	"	तृतीय श्रेणी २८८
४१०	" दयाराम श्रीवास्तव	"	" २८५
४११	" पन्नालाल श्रीवास्तव	"	" २६१
४१४	" तुलसीदास गुप्त	"	द्वितीय श्रेणी ३४८
४१६	" मथुरा प्रसाद वर्मा	दलसिंह सराय	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
४१७	" युगेश्वर प्रसाद शर्मा	दार्जिलिंग	"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
४१९	श्री रामचन्द्र	दिल्ली (बिड़ला हाई स्कूल)	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
४२०	,, हनवन्त सिंह बौल्या	,,	,,
४२३	,, ईश्वर दयाल गुप्त	,,	,,
४२४	,, ज्ञानचन्द कौशिश	,,	,,
४२५	,, शिवराम मिश्र	,,	,,
४३१	,, जगन्नाथ प्रसाद तिवारी	दुर्ग (सी० पी०)	,,
४३२	,, कृष्ण सिंह वर्मा	,,	,,
४३३	,, शिशिरचन्द्र जैन	देव बन्द	द्वितीय श्रेणी ३२२
४३५	कुमारी लक्ष्मी देवी	,,	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
४३७	श्री सुदामा प्रसाद	देवरिया	द्वितीय श्रेणी ३१८
४४१	,, नन्द किशोर राय	,,	तृतीय श्रेणी २७९
४४३	,, खुशहाल चन्द्र	देहरादून (डी० ए० वी० का०)	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
४४४	,, नत्था सिंह कश्यप	,,	,,
४४५	,, शिव प्रसाद गोयल	,,	,,
४४६	,, खुशहाल सिंह रावत	,,	,,
४४७	,, चित्रकृष्ण गैरोला	,,	,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
४४८	श्री भगवती प्रसाद कोटनाला	देहरादून (डी० ए० वी० का०)	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
४५१	,, आत्मा राम	,,	,,
४५२	,, बलवन्त सिंह गोसाईं	,,	,,
४५४	,, अंकुर मिश्र	धमौरा	,,
४५५	,, एकनाथ मिश्र	,,	,,
४५६	,, चन्द्र किशोर मिश्र	,,	,,
४५७	,, काशीनाथ मिश्र	धूसी	,,
४५८	,, श्याम लाल	धौलपुर	विभाजित प्रणाली के अनुसार
४६७	,, मुरारी लाल शर्मा	,,	तृतीय श्रेणी २७९
४६८	,, रामचरन दास	नजीबाबाद	द्वितीय श्रेणी ३१७ [वि० यो० ग०]
४७०	,, गोपीचन्द्र शर्मा	,,	द्वितीय श्रेणी ३६४ [वि० यो० ग०]
४७१	,, नारायणदास चान्डक	नरकटियागंज	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
४७२	,, रघुनाथ उपाध्याय	,,	,,
४७४	,, गिरिराज प्रसाद शर्मा	नवलगढ़	,,
४७५	,, शुभकरण पुजारी	,,	,,
४७६	,, सत्यनारायण जीवराजका	,,	,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
४७८	श्री राधेश्याम मुरारका	नवलगढ़	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
४७९	,, रामस्वरूप मिश्र	,,	,,
४८३	,, मथुरा मिश्र	नवादा	तृतीय श्रेणी २७१
४८५	,, चन्द्रिका मिश्र	,,	,, ३०७
४८७	,, जमुना प्रसाद	नागौद	द्वितीय श्रेणी ३४४ [वि० यो० ग०]
४९०	,, जगत नारायण श्रीवास्तव	,,	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
४९१	,, कृष्ण प्रसाद	,,	,,
४९३	,, माधव दास	,,	,,
४९५	,, मक्खन ठाकुर	निरंजन पुर	,,
४९६	,, भगवान दास	,,	,,
४९७	,, बद्रीनारायण सिंह	,,	,,
४९८	,, छोटे नारायण सिंह	,,	,,
४९९	,, राजीराम ठाकुर	,,	,,
५००	,, प्रकाश यादव	,,	,,
५०१	,, विश्वनाथ प्रसाद	,,	,,
५०२	,, गिरजा लाल	,,	,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
५०३	श्री सच्चिदानन्द शर्मा	निरंजनपुर	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
५०४	" राघो मौआर	"	"
५०५	" नागेश्वर	निसरपुर	विभाजित प्रणाली के अनुसार
५०६	" भगवती बख्श सिंह	नीबी	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
५०७	" सत्य नारायण सिंह	"	"
५०८	" विराट सिंह	"	"
५०९	" चन्द्र कुमार	"	"
५१०	" गुरु दयाल	"	"
५११	" रामदत्त प्रसाद	पचरूखी	"
५१२	" अखिलेश्वरी द्विवेदी	पटना कालेज	द्वितीय श्रेणी ३३६
५१५	" शिवनारायण पाठक	पड़रौना	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
५१६	" गोरख प्रसाद	"	"
५१८	" रामसिंगार ओझा	"	"
५१९	" विन्ध्यवासिनी पाण्डेय	"	"
५२०	" राम अनुज सिंह	"	"
५२१	" राम दरशन सिंह	"	"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
५२२	श्री रामसूरत मल्ल	पड़रौना	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
५२३	,, विद्यादीन तिवारी	,,	,,
५२४	,, रणछोर प्रसाद	पन्ना	द्वितीय श्रेणी ३४८
५२५	,, ज्वालाप्रसाद श्रीवास्तव	,,	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
५२६	,, बुद्धूलाल	,,	द्वितीय श्रेणी ३४३
५२८	,, लक्ष्मीप्रसाद जड़िया	,,	तृतीय श्रेणी २७६
५२९	,, भावती प्रसाद खरे	,,	द्वितीय श्रेणी ३३४
५३०	,, रघुवंश कुमार सिंह	,,	,, ३८४
५३२	,, मथुराप्रसाद साह	परसागढ़	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
५३३	,, जनार्दनप्रसाद श्रीवास्तव	,,	द्वितीय श्रेणी ३४६
५३४	,, धर्मनाथ प्रसाद	,,	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
५३५	,, स्वामीनाथ प्रसाद	,,	द्वितीय श्रेणी ३२४
५४९	,, केदारनाथ गुप्ता	प्रयाग (दारागञ्ज)	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
५५०	,, काशीप्रसाद जायसवाल	,,	,,
५५१	,, महादेव प्रसाद गुप्ता	,,	,,
५५२	,, लल्लूराम गुप्त	,,	,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
५५४	श्री लालजी	प्रयाग (दारागंज)	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
५५५	" बालकृष्ण तिवारी	"	"
५५६	" मनबोध नारायण	"	"
५५७	" राधेलाल हैहय	"	"
५५८	" राजेश्वर प्रसाद सिंह	"	"
५५९	" राधिका प्रसाद भटनागर	प्रयाग (सम्मेलन कार्यालय)	"
५६०	" राजेन्द्र नाथ शर्मा	"	"
५६४	" रामचन्द्र मिश्र	"	"
५६५	कुमारी रामरानी चड्ढा	"	"
५६८	श्री आनन्दी सिंह	प्रसण्डो	"
५७०	" सहदेव सिंह	"	"
५७२	" सीताराम बाजोरिया	"	"
५७४	" मोतीलाल सिंह	"	"
५७६	" अजबलाल यादव	पोठिया	"
५७७	" विश्वनाथ शाह	"	"
५७८	" दीपनारायण पोद्दार	"	"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
५८०	श्री जगदीशप्रसाद राय शर्मा	पोठिया	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
५८१	,, गौरीशङ्कर पञ्चवेदी	पोहरी (आ० वि०)	,,
५८३	,, भारतसुमन त्रिवेदी	,,	,,
५८४	,, श्यामराव धुवेकर	,,	,,
५८५	,, रघुनन्दन शर्मा	,,	,,
५८६	,, विश्वम्भर दयाल शर्मा	,,	,,
५८७	,, शान्तिकुमार दीक्षित	,,	द्वितीय श्रेणी ३७२
५८८	,, रामप्रसाद शर्मा	,,	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
५८९	,, गोपीलाल शर्मा	,,	,,
५९०	,, गोपालशरण शर्मा	,,	,,
५९१	,, कन्हैयालाल गुप्त	,,	,,
५९३	,, चिन्हलाल गुप्त	पोहरी (स० हि० वि०)	,,
५९५	,, धीरज सिंह कुशवाह	,,	द्वितीय श्रेणी ३१७
५९६	,, अलाउद्दीन अहमद	,,	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
५९७	,, मथुरा प्रसाद	,,	,,
५९८	,, हरिगोपाल शुक्ल	,,	,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
५९९	श्री जानकी प्रसाद वर्मा	पोहरी (सर्व हि० वि०)	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
६०१	,, दारोगाप्रसाद यादव	फतुहा	,,
६०२	,, कालीचरन प्रसाद	,,	,,
६०४	,, रामवृक्ष यादव	,,	,,
६०५	,, ठा० पारथ सिंह	फर्रुखाबाद	,,
६०६	,, मौलवी अबुल हुसन (जौहर)	,,	,,
६०९	,, सौभाग्यमल जैन	बखतगढ़	विभाजित प्रणाली के अनुसार
६१२	,, श्याम स्वरूप शर्मा	बगड़ (जयपुर)	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
६१४	,, सुखदेव शर्मा	,,	
६१६	,, देवराज मिश्र	,,	,,
६१७	,, रामसिंह जाट	,,	द्वितीय श्रेणी ३६०
			अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
६१८	,, रामसूरत सिंह जाट	,,	द्वितीय श्रेणी ३४३
६२२	,, बंशीलाल शर्मा	,,	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
६२३	,, सत्यनारायण चौमुवाल	,,	,,
६२५	,, शङ्करलाल त्रिवेदी	बड़नगर	द्वितीय श्रेणी ३४७
६२६	,, ज्ञान प्रकाश	,,	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
६२८	श्री कमलाकरविष्णु पंत पेंडसे	बड़नगर	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
६२९	" श्री निवास (मस्तराम)	"	"
६३०	" मोहनलाल गुप्ता	"	तृतीय श्रेणी २६८
६३१	" विहारी लाल अग्निहोत्री	"	द्वितीय श्रेणी ३३२
६३२	" कमलडास लट्ठधारी	"	तृतीय श्रेणी २७९
६३३	कु० अञ्जना देवी लूम्बा	"	द्वितीय श्रणी ३४०
६३५	श्री चन्द्रदत्त चौधरी	बड़वानी	" ३१५
६३६	" गेन्दालाल	"	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
६३७	" मांगीलाल	"	द्वितीय श्रेणी ३३०
६३८	" रामचन्द्र	"	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
६३९	" बसन्तराम जोशी	"	"
६४२	श्रीमती गोदावरी	बड़हरा	"
६४३	श्री चेत नारायण तिवारी	"	"
६४४	" अनूप लाल पोद्दार	"	"
६४५	" रामप्रसाद ततमा	"	"
६४६	श्रीमती कान्ती देवी	बदायूं	"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
६४७	श्री बनारसीप्रसाद शर्मा	बन्शीपुर	द्वितीय श्रेणी ४०२ [वि० यो० ग०]
६४९	,, कृष्णकान्त मिश्र	,,	द्वितीय श्रेणी ३३५
६५०	श्रीमती ललिता बाई	बम्बई (मारवाड़ीवि०)	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
६५३	श्री यदुनाथ प्रसाद त्रिपाठी	बम्बई (हि० म० वि०)	द्वितीय श्रेणी ३१६
६५६	,, गजानन गंगाधर मराठे	बरहज	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
६६०	,, कमलेश्वरी सिंह	बलबड्डा	,,
६६१	,, महाबीर प्रसाद सिंह	बहदुरा	प्रथम श्रेणी ४२७ [वि० यो० धर्म०]
६६३	,, सुधाकर महाराज	,,	द्वितीय श्रेणी ३४१
६६४	,, नेमधारी राय	,,	,, ३३५
६६७	,, योगेन्द्रनाथ मिश्र	,,	,, ४१६
६६८	,, रामासेश्वर सिंह	,,	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
६६९	,, विनय कुमार	बाघी	,,
६७०	,, विन्देश्वरी प्रसाद सिंह	बाढ़	,,
६७१	,, रामनन्दन प्रसाद सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी ३७० [वि० यो० ग०]
६७३	,, शकलदीप सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी ३३६
६७४	,, मुन्शी साव	,,	,, ३३९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
६७७	श्रीमती सुखरानी देवी विश्वकर्मा	बांदा	द्वितीय श्रेणी ३३५
६७८	श्री महेश्वरी दीन शर्मा	"	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
६७९	" इन्द्र वर्मा कुलश्रेष्ठ	"	द्वितीय श्रेणी ३८३ [वि० यो० ग०]
६८१	" बेनीमाधो मिश्र	बिलासपुर	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
६८२	" अर्जुनप्रसाद पोद्दार	"	"
६८३	" शङ्करलाल गुप्त	"	"
६८४	" हरिराम गुप्त	बिसाऊ	द्वितीय श्रेणी ३३६
६८५	" सत्यनारायण गुप्त	"	तृतीय श्रेणी २६९
६८६	" किशनलाल वर्मा	"	द्वितीय श्रेणी ३४४
६८७	" वृद्धिचन्द शर्मा	"	" ३१७
६८८	" बनवारी लाल गुप्त	"	" ३२५
६८९	" वासुदेव शरण	बिहार शरीफ	तृतीय श्रेणी २९२
६९१	" शिवलाल पांडे	बीकानेर	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
६९३	" भगवान दत्त गोस्वामी	"	"
६९७	" सीताराम सिंह	बेगूसराय	द्वितीय श्रेणी ३६५
७००	" आदिनाथ झा	"	द्वितीय श्रेणी ४०७ वि० यो० ग०]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
७०२	श्री राम रघुवीर प्रसाद सिंह	बेगूसराय	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
७०३	,, वैद्यनाथ प्रसाद अग्रवाल	,,	,,
७०४	,, राजेश्वर प्रसाद सिंह	,,	,,
७०५	,, वाल्मीकि प्रसाद	,,	,,
७११	,, चन्द्र चूड़ सिंह	बैतूल	,,
७१२	श्रीमती सुशीला बाई	,,	,,
७१४	श्री भागचन्द्र नायक	,,	,,
७१६	,, केसरीचन्द जोशी	,,	,,
७१८	,, रघुनाथ प्रसाद मिश्र	,,	,,
७१९	,, शम्भूलाल परधान	,,	,,
७२२	,, चन्द्रदीप पाण्डेय	भगवानपुर	द्वितीय श्रेणी ३९५
७२३	,, रामसेवक सिंह	भरसर	तृतीय श्रेणी २९२
७२४	,, भुवनेश्वर झा	भागलपुर	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
७२९	,, मोहनलाल	भिण्डर (मेवाड़)	तृतीय श्रेणी ३१२
७३०	,, नर्मदाप्रसाद भाव सार	भेलसा	द्वितीय श्रेणी ३२४ [वि० यो० ग०]
७३१	,, बद्रीप्रसाद शर्मा	,,	,, ३९८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
७३२	श्री भगवानदास धीरन	भेलसा	द्वितीय श्रेणी ३९४ [वि० यो० गणित]
७३३	,, भागचन्द्र भंडारी	,,	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
७३४	,, हरिशङ्कर सक्सेना	,	,,
७३५	,, शम्भुदयाल शर्मा	,,	,,
७३६	,, गोबर्द्धनदास मेहता	,,	,,
७३७	,, गोबरधनदास अग्रवाल	भोपाल	तृतीय श्रेणी २८८
७३८	,, घनश्यामदास अग्रवाल	,,	,, २९५
७३९	,, बालकृष्णदास गहोई	,,	तृतीय श्रेणी २८३
७४८	कुमारी सुमित्रा देवी	,,	,, २८९
७५०	श्री चन्द्रमौलि मिश्र	,,	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
७५२	,, द्वारिकाप्रसाद शर्मा	मथुरा (गो० हि० वि० पीठ)	,,
७५३	,, महाबीरप्रसाद शर्मा	,,	,,
७५४	,, देवीशरण	,,	,,
७५५	,, हरचरण दास	,,	,,
७५६	,, हरचरनलाल शर्मा	,,	,,
७५७	,, शङ्करलाल	,,	,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
७५८	श्री भीखाराम	मथुरा (गो० हि० वि० पीठ)	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
७५९	" लक्ष्मीनारायण	"	"
७६०	" नत्थीलाल शर्मा खैमारिया	"	"
७६१	" सीताराम शर्मा	"	"
७६२	" मनोहरलाल शर्मा	"	"
७६३	" रामसिंह शर्मा	"	"
७६४	" रामचरन सारस्वत	"	"
७६५	" बाबूलाल वर्मा	"	"
७६६	" प्रभुदयाल वर्मा	"	"
७६७	" वीरेन्द्रपाल सिंह	"	"
७६८	" ओंकार सिंह वर्मा	"	"
७६९	" बेनीमाधव गुप्ता	"	"
७७०	" सतीशचन्द्र गुप्ता	"	"
७७१	" भगवतीप्रसाद शर्मा	"	"
७७२	" बाबूलाल शर्मा	"	"
७७३	" गङ्गाप्रसाद शर्मा	"	"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
७७४	श्री नत्थीलाल शर्मा	मथुरा (गो० हि० वि० पीठ)	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
७७५	,, प्रेम सिंह शर्मा	,,	,,
७७६	,, रामजी लाल शर्मा	,,	,,
७७७	,, हरनारायण शर्मा	,,	,,
७७८	,, राम प्रसाद शर्मा	,,	,,
७७९	,, चुन्नामल शर्मा	,,	,,
७८०	,, दुलीचन्द शर्मा	,,	,,
७८१	,, राधेश्याम	,,	,,
७८२	,, लोकाराम	,,	,,
७८३	,, फागू मण्डल	मदनपुर	,,
७८४	,, उचित लाल सरदार	,,	,,
७८५	,, हृदय लाल सरदार	,,	,,
७८६	,, पुलकित मिश्र	,,	,,
७८७	,, अनूप लाल सरदार	,,	,,
७८८	,, वृजभूषण शर्मा	मद्रास	द्वितीय श्रेणी ३१५
७८९	श्रीमती विद्या देवी	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
७९०	श्री सूर्यकान्त झा	मधुबनी (दरभंगा)	द्वितीय श्रेणी ३८४
७९१	श्री सत्यदेव मिश्र	,,	तृतीय श्रेणी २९५
७९२	,, कुमर नायक	,,	द्वितीय श्रेणी ३८१ [वि० यो० ग०]
७९३	,, मगलू सिंह	मधीपुरा	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
७९४	,, महावीर प्रसाद मंडल	,,	,,
७९५	,, देवनन्दन दत्त	,,	,,
८००	,, यमुना प्रसाद सिंह	महदेवा	,,
८०१	,, जगदीप चौधरी	,,	,,
८०२	,, हरिप्रसाद सिंह	,,	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
८०३	,, लालजी सिंह ठाकुर	महमूदाबाद	द्वितीय श्रेणी ३७४
८०४	,, प्रयाग नारायण मिश्र	,,	तृतीय श्रेणी ३०४
८०५	,, लाल बिहारी तिवारी	,,	द्वितीय श्रेणी ३३१ [विशेष यो० ग०]
८१०	,, मुकुन्द बिहारी लाल	,,	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
८११	,, जगदीश प्रसाद	,,	,,
८१२	,, बाबूराम	,,	,,
८१३	,, जगदेव सिंह	,,	तृतीय श्रेणी २५८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
८१५	श्री श्रीकृष्ण सिंह	महाराजगंज	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
८१६	,, केदारनाथ सिंह	,,	,,
८१७	,, मुनि प्रसाद पाण्डेय	,,	,,
८१८	,, प्रद्युम्न सिंह	,,	,,
८१९	,, परशुराम सिंह	,,	,,
८२०	,, जगत नारायण सिंह	,,	,,
८२१	,, केशव नारायण सिंह	,,	,,
८२२	,, आदित्य नारायण सिंह	,,	,,
८२३	,, राम औतार सिंह	,,	,,
८२४	,, सदानन्द शर्मा	,,	,,
८२५	,, वंशीधर ओझा	,,	,,
८२६	,, आद्या शरण पाण्डेय	,,	,,
८२७	,, रामलग्न सिंह	,,	,,
८२८	,, दुखन रावत	,,	,,
८२९	,, सच्चितानन्द पाण्डेय	,,	,,
८३०	,, पारसनाथ लाल	,,	,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
८३१	श्री भोलासिंह	महराजगज	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
८३२	,, लक्ष्मण प्रसाद	,,	,,
८३४	,, जानकी लाल	महिरपुर	तृतीय श्रेणी ३१०
८४०	,, वासुदेव	,,	,, २९९
८४१	,, कन्हैया लाल	,,	तृतीय श्रेणी २९७
८४२	,, रामचन्द्र	,,	द्वितीय श्रेणी ३३६ [वि० यो० स्वास्थ्य]
८४३	,, नन्दलाल	,,	द्वितीय श्रेणी ३४४
८४४	,, धूलीलाल शर्मा	मांगरोल	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
८४५	,, दुलीचन्द शर्मा	,,	,,
८४६	,, राजेन्द्र नारायण द्विवेदी	,,	तृतीय श्रेणी २९९
८४९	,, रामनारायण गुप्ता	,,	,, २७४
८५३	,, नर नारायण पाठक	मुंगरा बादशाह पुर	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
८५५	,, लाल बहादुर उपाध्याय	,,	,,
८५६	,, पारसनाथ तिवारी	,,	,,
८५७	,, धर्म किशोर लाल	,,	,,
८५८	,, बंशीधर पाण्डेय	,,	,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
८५९	श्री मुनिराज सिंह	मुंगरा बाद-शाह पुर	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
८६०	" राजाराम मिश्र	"	"
८६१	" रामखेलावन गुप्त	"	"
८६२	" अवध नरेश सिंह	"	"
८६३	" सूबेदार सिंह	"	"
८६४	" शोभनाथ तिवारी	"	"
८६६	कुमारी शारदा देवी अग्रवाल	मुंगेर	द्वितीय श्रेणी ३६४ [वि० यो० स्वास्थ्य]
८६७	" सीतादेवी	"	द्वितीय श्रेणी ३२६
८६९	श्रीमती भगवती देवी	मुजफ्फरनगर	द्वितीय श्रेणी ३३७ [वि० यो०स्वास्थ्य]
८७१	श्री युगुल प्रसाद श्रीवास्तव	मुजफ्फरपुर (सुहृद संघ)	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
८७३	कुमारी विमला देवी	मुरादाबाद	द्वितीय श्रेणी ३६४
८७४	श्री मांगीलाल दाधीच	मेड़ता सिटी	" ३२३
८७७	" रामेश्वर जोशी पारीक	"	द्वितीय श्रेणी ३७१ [वि० यो० संस्कृत]
८७९	" धनराज जोशी	"	तृतीय श्रेणी ३१३
८८०	" लालचन्द पुरोहित	"	द्वितीय श्रेणी ३४१
८८२	" मुनीश्वर पाठक	"	द्वितीय श्रेणी ३७८ [विशेष यो० सं०]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
८८३	कुमारी सरलादेवी रस्तोगी	मेरठ	द्वितीय श्रेणी ३६८
८८४	" निर्मला	"	प्रथम श्रेणी ४४४
८८५	" विन्दुमती रघुवंशी	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार
८८६	श्री पुरुषोत्तम सिंह	मेहदी बागान	तृतीय श्रेणी ३०२
८८७	" राम सिंहासन प्रसाद	"	द्वितीय श्रेणी ३३०
८८८	" राम लक्ष्मण सिंह	मोरसण्ड	[वि० यो० सं०] अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
८८९	" हरिवंश प्रसाद सिंह	"	"
८९०	" रामचन्द्र सिंह	"	"
८९१	" रामानन्त सिंह	रकसौल	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
८९२	" कंचन प्रसाद राय	"	"
८९३	" विन्देश्वरी प्रसाद	"	"
८९५	" शीतल प्रसाद शुक्ल	रंगून	"
८९८	" रामेश्वर प्रसाद पांडिया	रतनगढ़	द्वितीय श्रेणी ३२१
८९९	" भागीरथ गुप्त	"	तृतीय श्रेणी २६५
९००	" वासुदेव जोशी	"	विभाजित प्रणाली के अनुसार
९०६	" काशीनाथ शुक्ल	रतसण्ड	द्वितीय श्रेणी ३५५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
९०७	श्री अम्बिका सिंह	रतसण्ड	तृतीय श्रेणी ३०६
९०८	,, ब्रजभूषण लाल श्रीवास्तव	,,	,, ३०३
९०९	,, ब्रह्मानन्द	,,	द्वितीय श्रेणी ३६३
९१०	,, गुलाब नवी	,,	,, ४०६ [विशेष यो० ग०]
९११	,, पंचानन सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी ३५५ [विशेष यो० ग०]
९१२	,, दुर्गाशंकर शर्मा	राजगढ़	द्वितीय श्रेणी ३२५ [विशेष यो० स्वा०]
९१४	,, रामनारायण चौरसिया	,,	तृतीय श्रेणी ३००
९२१	,, कुँवरतेज सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी ३१५
९२२	,, कुँवर केसरी सिंह	,,	तृतीय श्रेणी २८०
९२५	,, कन्हैयालाल पन्चोली	,,	,, २९४
९२७	,, वंकटलाल गुप्त	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
९३२	,, गोकुल प्रसाद त्रिपाठी	,,	प्रथम श्रेणी ४३४ [विशेष यो० ग०]
९३५	,, जगन्नाथ प्रसाद दुबे	,,	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
९३६	,, कैलाश नारायण शर्मा	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
९३८	,, जसराज	रा[illegible]नांद गाँव	द्वितीय श्रेणी ४०३ [विशेष यो० ग०]
९३९	,, भीखू लाल	,,	द्वितीय श्रेणी ३४८ [विशेष यो० ग०]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
९४१	श्री सन्तन भगवान मिश्र	राजनांदगांव	तृतीय श्रेणी २९४
९४३	,, नथमल झुनझुनवाला	रानीगंज (बर्दवान)	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
९४४	,, पुरुषोत्तम प्रसाद सराफ	,,	,,
९४५	,, सत्यनाराण खेतान	,,	,,
९४६	,, बैजनाथ सराफ	,,	,,
९४७	,, काशीराम क्याल	,,	,,
९४८	,, जगदीशनारायण चौबे	,,	,,
९४९	,, रेवती प्रसाद शर्मा	,,	,,
९५०	,, रघुनाथ राय स्वर्णकार	,,	,,
९५१	,, नाथूराम	रानीपुर (झाँसी)	,,
९५२	,, बेनीप्रसाद	,,	,,
९५३	,, रामनारायण	,,	,,
९५४	,, घनश्याम	रामपुरा	,,
९५५	,, छगनलाल	,,	,,
९५६	,, मोहनलाल	,,	,,
९५७	,, ब्रजलाल	,,	,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
९५८	श्री कुंज बिहारी	रामपुरा	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
९५९	कुमारी सुमित्रा बाई	,,	,,
९६१	,, सावित्री बाई	,,	,,
९६२	,, मोहन बाई	,,	,,
९६५	श्री गजानन्द	रींगस	,,
९६६	,, काशीनाथ शुक्ल	,,	,,
९६८	,, रामराज सिंह	रींवाँ (बालसमिति)	द्वितीय श्रेणी ३१५
९६९	,, रामनिवास त्रिपाठी	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
९७५	,, नन्दकिशोर दीक्षित	लखनऊ	द्वितीय श्रेणी ३७८ [वि० यो० सं०]
९७६	श्रीमती सावित्री देवी श्रीवास्तवा	,,	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
९७७	श्री शिवनाथ सिंह	लखावटी	प्रथम श्रेणी ४४३ [वि० यो० ग०, सं०]
९७८	,, बालमुकुन्द शर्मा	,,	द्वितीय श्रेणी ३८८ [वि० यो० ग०]
९७९	,, सजनसिंह	,,	द्वितीय श्रेणी ३९४ [वि० यो० ग०]
९८०	,, रघुनाथ सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी ३९३ [वि० यो० ग०]
९८१	,, रामप्रकाश अग्रवाल	,,	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
९८२	,, जयप्रकाश अग्रवाल	,,	द्वितीय श्रेणी ३५१ [वि० यो० गणित]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
९८४	श्री देवकी नन्दन भट्ट	लश्कर	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
९८५	श्रीमती कमलादेवी भटनागर	,,	,,
९८६	श्री मायाराम वर्मा	,,	,,
९८७	,, बृजबिहारी लाल श्रीवास्तव	,,	,,
९८८	,, जनार्दन मुकुन्द अग्निहोत्री	,,	,,
९८९	,, विक्रम सिंह चौहान	,,	प्रथम श्रेणी ४३३ [वि० यो० ग०]
९९०	श्रीमती गुल्लो देवी	,,	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
९९२	श्री गिरिधारी लाल शर्मा	,,	द्वितीय श्रेणी ३४७
९९७	,, राजकृष्ण तिवारी	लहेरिया सराय	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
९९८	,, रामसूरत ठाकुर	,,	,,
१०००	,, सरयू सिंह	लालगञ्ज	,,
१००२	श्रीमती राधादेवी गोइनका	वर्धा	,,
१००४	श्री प्रकाशचन्द्र दुबे	,,	द्वितीय श्रेणी ३२३
१००६	,, मुरलीधर व्यास	,,	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
१००७	,, ओम्प्रकाश केला	बृन्दाबन	,,
१००८	कुमारी दुर्गा देवी	,,	तृतीय श्रेणी २८९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
१००९	कुमारी सुकान्ती देवी	वृन्दाबन	तृतीय श्रेणी २७०
१०१०	श्री दुर्योधन वर्मा	,,	द्वितीय श्रेणी ३१७
१०१२	,, मुन्नालाल गुप्ता	,,	तृतीय श्रेणी २९५
१०१५	,, विरंचिवांछित पद मुखर्जी	वैद्यनाथ धाम (सा० वि०)	,, २३९
१०१६	,, रंगाराव	,,	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
१०१७	,, युगुल झा	शकरपुरा (मुंगेर)	,,
१०१८	,, गोपाल सिंह	,,	,,
१०२३	श्रीमती कालिन्द्री बाई	शाजापुर	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१०२४	,, गीता बाई	,,	,,
१०२५	श्री रामरतन शर्मा	शिकारपुर	प्रथम श्रेणी ४८० [वि० यो० ग० ड्रा०]
१०२६	,, लायकराम	,,	द्वितीय श्रेणी ३७८ [वि० यो० ग० ड्रा०]
१०२७	,, महावीर सहाय शुक्ल	शिकोहाबाद	द्वितीय श्रेणी ४०४ [वि० यो० ग०]
१०२८	,, राजेन्द्रकुमार दुबे	,,	तृतीय श्रेणी ३०६
१०२९	,, शम्भूनाथ महेश्वरी	,,	द्वितीय श्रेणी ३४५
१०३०	,, रूपकिशोर जैन	,,	द्वितीय श्रेणी ४१५ [वि० यो० ग०]
१०३१	,, केशवलाल	,,	द्वितीय श्रेणी ३६३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
१०३३	श्रीमती कृष्णमुरारी माहेश्वरी	शिकोहाबाद	द्वितीय श्रेणी ४०६
१०३४	श्री महेश प्रसाद गहरामा	"	" ३४५
१०३७	" दुखमोचन दत्त	सड्डीहा	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
१०३८	" व्रजपाल शरण गुप्त	सम्भल	"
१०३९	" रामसरन	सारनाथ	"
१०४०	" करुणा सामनेर	"	"
१०४१	" रामदुलार सिंह	सिंगरामऊ	प्रथम श्रेणी ४६२ [वि० यो० ग०]
१०४२	" गायत्री प्रसाद द्विवेदी	"	द्वितीय श्रेणी ३२०
१०४३	" रामकृपाल तिवारी	"	" ४०५
१०४४	" कृपाशङ्कर सिंह	"	द्वितीय श्रेणी ३७१ [वि० यो० ग०]
१०४५	" गिरजा शङ्कर पाण्डेय	"	द्वितीय श्रेणी ३६४ [वि० यो० ग०]
१०४६	" बासदेव सिंह	"	द्वितीय श्रेणी ४०४
१०४७	" रामप्रीति त्रिपाठी	"	प्रथम श्रेणी ४६५ [वि० यो० ग०]
१०४९	" श्रीनाथ सिंह	"	द्वितीय श्रेणी ३४२
१०५०	" उदितनारायण मिश्र	"	द्वितीय श्रेणी ४०० [वि० यो० धर्म०]
१०५१	" कपिल नाथ सिंह	"	द्वितीय श्रेणी ३६३ [वि० यो० ग०]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
१०५२	श्री उदयराज शुक्ल	सिंगरामऊ	तृतीय श्रेणी ३००
१०५३	,, रामचरित्र मिश्र	,,	,, २९०
१०५५	,, वैजनाथ प्रसाद	,,	द्वितीय श्रेणी ३५९
१०५६	,, रामतीर्थ सिंह	,,	,, ३८१
१०५७	,, श्रीनाथ त्रिपाठी	,,	,, ३३८
१०५८	,, पारसनाथ सिंह	,,	,, ३७१
१०५९	,, दूधनाथ चतुर्वेदी	,,	प्रथम श्रेणी ४४१
१०६०	,, माताभीख सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी ३५३
१०६१	,, रामचन्द्र	सिरसा (प्रयाग)	द्वितीय श्रेणी २९५
१०६२	,, वैद्यनाथ प्रसाद द्विवेदी	,,	,, २७७
१०६३	,, रामयज्ञ	,,	,, ३०९
१०६४	,, शिवबरन	,,	,, २८८
१०६५	,, विश्वनाथ प्रसाद श्रीवास्तव	,,	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
१०६९	,, राजनारायण मिश्र	,,	तृतीय श्रेणी ३१०
१०७१	,, रामशिरोमणि मिश्र	,,	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
१०७२	,, बून्दी सिंह	सिलाव	,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
१०७३	श्री बाबूराम सिंह	सिलाव	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
१०७४	" अवध विहारी श्रीवास्तव	सिवनी (छिन्दवाड़ा)	"
१०७६	" लक्ष्मीनारायण भार्गव	"	"
१०७८	" पूरनलाल शर्मा	"	"
१०७९	" जयनारायण त्रिपाठी	"	"
१०८०	" प्रफुल्लचन्द्र पारिख	"	"
१०८२	" लक्ष्मीनारायण	सिवनी (मालवा)	"
१०८३	" तुलसीराम गनोरे	"	"
१०८५	" गौरी शङ्कर पटेल	"	"
१०८६	" राधेशरण अग्रवाल	"	"
१०८७	" हरनारायण दुबे	"	"
१०८८	" हरीप्रसाद अग्रवाल	"	"
१०८९	" राम नारायण तारे	"	"
१०९०	" विष्णुप्रसाद रिछारिया	"	"
१०९१	" रामलाल सोहरोत	"	"
१०९२	" राधेश्याम कोटवाला	"	"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
१०९३	श्री जनकप्रसाद कसेरा	सिवनी (मालवा)	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
१०९४	,, श्रीराम प्लेज़र वोट	,,	,,
१०९५	,, मानकचन्द कोठारी	,,	,,
११००	,, शिव भगवान कावरा	सीकर	,,
११०१	,, भगवानदास	,,	,,
११०२	,, मकेश्वरनाथ तिवारी	सीताकुण्ड	तृतीय श्रेणी २९३
११०५	कुमारी बिपुला देवी	सीतापुर	द्वितीय श्रेणी ३६९ [वि० यो० ग०]
११०६	,, सरला देवी	,,	द्वितीय श्रेणी ३६२ [वि० यो० ग०]
११०७	श्रीमती प्रेममई देवी	सीवान	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
११०८	श्री देवचन्द्र शुक्ल	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
११११	,, प्रियरंजन प्रसाद वर्मा	,,	तृतीय श्रेणी २१६
१११४	,, टोढ़ीराम दीक्षित	सुखेड़ा	द्वितीय श्रेणी ३२५
१११५	,, भगवान दास गुप्त	,,	तृतीय श्रेणी ३०८
१११६	,, राम नारायण पंडित		,, ३०६
१११७	,, नन्दीपति सिंह	सुगौली	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
१११८	,, बाबू राम बहादुर सिंह	,,	,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
११२०	श्री शिवपूजन राय	सुरही (बलिया)	तृतीय श्रेणी २७४
११२१	,, सहजानन्द राय	,,	द्वितीय श्रेणी ३२४
११२३	,, इन्द्रदेव राय	,,	तृतीय श्रेणी ३११
११२४	,, इन्द्रदेव राय	,,	,, २८५
११२५	,, सत्य नारायण सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी ३५५ [वि० यो० ग०]
११२६	,, द्विजनाथ राय	,,	द्वितीय श्रेणी ४१३ [वि० यो० ग०]
११२७	,, केदारनाथ राय	,,	द्वितीय श्रेणी ४०७ [वि० यो० ग०]
११२९	,, रामप्यारे राम गौड़	,,	द्वितीय श्रेणी ३९० [वि० यो० ग०]
११३०	कुमारी रामप्यारी देवी शर्मा	,,	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
११३१	श्री बजरंगी राम जायसवाल	सुहवल	द्वितीय श्रेणी ३२३
११३२	,, काशीनाथ तिवारी	,,	,, ३३२
११३३	,, सूरजप्रसाद गुप्ता	,,	तृतीय श्रेणी २९३
११३४	,, कमलाप्रसाद राय	,,	,, २८६
११३५	,, दोकड़ी सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी ३३८
११३६	,, राम अवतार तिवारी	,,	,, ३४५
११३७	,, भगवती उपाध्याय	,,	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
११३९	श्री जीऊत प्रसाद यादव	सुहवल	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
११४०	,, हृदय प्रसाद राय	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
११४१	,, उमाकान्त भारद्वाज	सूरजगढ़	,,
११४२	,, हरिदेव पाण्डेय	,,	,,
११४३	,, बिहारीलाल जोशी	,,	,,
११४७	,, वासुदेव सिंह	सेवदह	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
११४८	,, रामचन्द्र सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी ३१९
११५२	,, शिवनन्दन प्रसाद सिंह	,,	तृतीय श्रेणी ३०६ [वि० यो० गणित]
११५३	,, अर्जुन सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी ३५७ (वि० यो० गणित)
११५४	,, श्यामनन्दन प्रसाद	,,	तृतीय श्रेणी २९५
११५५	,, किशोरी प्रसाद सिंह	,,	,, २८७
११५६	,, राजेन्द्रप्रसाद सिंह	,,	,, २९४
११५७	,, रामबली सिंह	,,	,, २७२
११५८	,, कालीप्रसाद वर्मा	,,	द्वितीय श्रेणी ३२९
११५९	,, रामलषण सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी ३३१ (वि० यो० गणित)
११६१	,, रामवृक्ष सिंह	,,	द्वितीय श्रेणी ३५८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
११६२	श्री रामलषण सिंह ठाकुर	सेवदह	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
११६३	,, यदुनन्दन सिंह	,,	,,
११६४	,, बालेश्वर चौधरी	,,	,,
११६५	,, विशेश्वर प्रसाद सिंह	,,	,,
११६६	,, बनारस चौधरी	,,	,,
११६७	,, चन्देश्वर चौधरी	,,	,,
११६८	,, यदुनन्दन चौधरी	,,	,,
११६९	,, नन्दकिशोर सिंह	,,	,,
११७१	,, रामकिशोर सिंह	,,	,,
११७२	,, गजाधर प्रसाद सिंह	,,	,,
११७४	,, वैद्यनाथ सिंह	,,	,,
११७५	,, ढुनमुन सिंह	,,	,,
११७८	,, रामयत्न महतो	,,	,,
११७९	,, रामप्रिया सिंह	,,	,,
११८०	,, हरीफलाल सिंह	,,	,,
११८१	,, रामबरन सिंह	,,	,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
११८२	श्री छोटेलाल सिंह	सेवदह	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
११८३	" कामताप्रसाद सिंह	"	"
११८४	" लक्ष्मीकान्त सिंह 'कान्त'	"	"
११८५	कुमारी शैल बाला	"	"
११८६	श्री सीताराम	"	"
११८७	" लक्ष्मीनारायण वर्मा	सोनकच्छ	द्वितीय श्रेणी ३३५
११९१	" सय्यद मेहदी हसन	ए.वी.एम.स्कूल "	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
११९२	" रतनलाल	"	"
११९३	" हबीब खां	"	"
११९४	" चतुर्भुज	"	"
११९५	" बद्रीप्रसाद	"	"
११९६	" दत्तात्रय बिबलकर	"	तृतीय श्रेणी ३१३
१२००	" कालूराम चमार	हंड़िया प्रयाग	" २९६
१२०१	" नोखईराम अहीर	"	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
१२०२	" राधे श्याम पाण्डेय	"	"
१२०३	" किशोरीलाल कुशवाहा	"	द्वितीय श्रेणी ३२० [वि० यो० ग०]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
१२०४	श्री राम अभिलाष मिश्र	हंडिया (प्रयाग)	द्वितीय श्रेणी ३३४ [विशेष यो० ग०]
१२०७	,, राम अभिलाष मिश्र	,,	तृतीय श्रेणी २९४
१२१०	,, मेवालाल तिवारी	हरचन्दखेड़ा	,, ३००
१२११	,, राम सेवक अवस्थी	,,	द्वितीय श्रेणी ३३८ [वि० यो० ग०]
१२१२	,, वंशगोपाल सिह चौहान	,,	द्वितीय श्रेणी ३१६ [वि० यो० ग०]
१२१३	,, बंशीधर द्विवेदी	,,	द्वितीय श्रेणी ३४० [वि० यो० ग०]
१२१६	,, दयाशंकर	,,	द्वितीय श्रेणी ३५४ [वि० यो० ग०]
१२१७	कुमारी कलावती	,,	द्वितीय श्रेणी ३५१
१२२३	श्री उमाशंकर पांडे	हरदा	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
१२२४	,, शंकर लाल	,,	,,
१२२५	,, हरी शंकर	,,	,,
१२२६	,, काशीनाथ	,,	,,
१२२७	,, बृजमोहन शर्मा	,,	,,
१२२८	,, सुरेन्द्र प्रकाश अवस्थी	,,	,,
१२२९	,, प्रजापति	हरनाहा टोला	,,
१२३०	,, परमेष्ठी	,,	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
१२३२	श्रीमती लोपमुद्रादेवी	हरनाहा टोला	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१२३३	श्री लालजी सिंह	हवेलीखड़गपुर	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
१२३४	,, आनन्दी सिंह	,,	,,
१२३६	,, मिश्री झा	,,	,,
१२३७	,, ईश्वरदत्त चौधरी	,,	,,
१२३९	,, जयनारायण सिंह	,,	,,
१२४०	,, विशेश्वर राय	,,	,,
१२४५	,, नागेश्वर प्रसाद सिंह	,,	,,
१२४६	,, बृजमोहन ठाकुर	,,	,,
१२४७	,, कमलेश्वरी मंडल	,,	,,
१२४८	,, उपेन्द्रढेक	,,	,,
१२५०	,, द्वारका प्रसाद सिंह	,,	,,
१२५१	,, श्यामलाल उपाध्याय	हाथरस	द्वितीय श्रेणी ३६१ [वि० यो० गणित]
१२५२	,, राजेन्द्र कुमार शर्मा	,,	तृतीय श्रेणी ३०१
१२५५	,, चोखेलाल शर्मा	,,	द्वितीय श्रेणी ३९४ [वि० यो० ग०]
१२५६	,, नेत्रपाल सिंह राजपूत	,,	द्वितीय श्रेणी ३१८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
१२५७	श्री द्वारिका प्रसाद पाठक	हाथरस	प्रथम श्रेणी ४३०
१२५८	„ कुंवरपाल सिंह राजपूत	„	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
१२५९	„ रघुवीर शरण	हापुड़	द्वितीय श्रेणी ३४५
१२६०	„ गोविन्द राम	„	तृतीय श्रेणी २७५
१२६१	„ राम प्रकाश सिंघल	„	द्वितीय श्रेणी ३२८
१२६३	„ लाल सिंह	„	तृतीय श्रेणी २८२
१२६४	„ श्याम सुन्दर स्वामी	„	द्वितीय श्रेणी ४१४ [वि०यो०ग०स्वा०]
१२६६	„ ओ३म् प्रकाश मीतल	„	द्वितीय श्रेणी ४१३ [विशेष यो० ग०]
१२६७	„ धर्मवीर सिंह	„	द्वितीय श्रेणी ३८७ [विशेष यो० ग०]
१२६८	„ कैलाश चन्द्र	„	द्वितीय श्रेणी ३२२
१२६९	„ मामराज सिंह	„	द्वितीय श्रेणी ४१९ [वि० यो० गणित]
१२७०	„ हरीराम शर्मा	„	तृतीय श्रेणी २७१
१२७१	„ जगदीश शरण	„	द्वितीय श्रेणी ३६२
१२७२	„ त्रिवेदी अम्बा शङ्कर	हैदराबाद (धन० पा०)	विभाजित प्रणाली के अनुसार
१२७५	„ द्विवेदी छगन लाल शर्मा सहित्यसेवी	„	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
१२७६	„ नरोत्तम	हैदराबाद (ना० रा० आ०)	„

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्ताङ्क
१२७८	श्री गदाधर सिंह	गया	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
१२७९	” त्रिवेणी प्रसाद	गोरियाकोठी	”
१२८०	” उपेन्द्र किशोर	”	”
१२८१	” रघुबीर सिंह	”	”
१२८२	” जीत बहादुर सिंह	”	”
१२८३	” विक्रमादित्य सिंह	”	”
१२८४	” रामचन्द्र सिंह	”	”
१२८५	” अखिलेश्वर प्रसाद	”	”
१२८६	” वशिष्ठ नारायण सिंह	”	”
१२८७	” लाल बहादुर सिंह	”	”
१२८८	श्रीमती जमुना कुँवर	”	”

मुनीमी परीक्षा

४	श्री मेघराज बोथरा	ओसियां	तृतीय श्रेणी १४१
७	” किशन लाल बरड़िया	”	” १५१
९	” चौधरी प्रसाद गुप्त	गाड़रवारा	अध्याय ७ नियम ६ के अनुसार
१२	” कन्हैया लाल मेहता	छोटी सादड़ी	तृतीय श्रेणी १५२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्रामांक
१७	श्री ज्येष्ठमल जैन	जालौर	तृतीय श्रेणी १७३
१८	,, बाबूलाल जैन	,,	द्वितीय श्रेणी १९९ [वि० यो० गणित]
१९	,, ऋषभचन्द्र जैन	,,	तृतीय श्रेणी १५८
२१	,, धर्मचन्द जैन	,,	द्वितीय श्रेणी २१३
२२	,, त्रिलोकचन्द्र जैन	,,	प्रथम श्रेणी २५० [वि० यो० गणित]
२३	,, शङ्करलाल जैन	,,	तृतीय श्रेणी १६२
२४	,, गुलाबचन्द्र जैन	,,	,, १७६
२५	,, मदनलाल आमेरिया	जैपुर	,, १६७
२६	,, राधेश्याम शर्मा	,,	अध्याय ७ नियम ६ के अनुसार
२७	,, श्यामसुन्दर केदावत	,,	,,
२८	,, नानगराम जैन	,,	विभाजित प्रणाली के अनुसार
३०	,, हरिनन्दन प्रसाद	झाझा	तृतीय श्रेणी १६०
३१	,, बजरङ्गलाल शर्मा	नवलगढ़	अध्याय ७ नियम ६ के अनुसार
३३	,, हरिप्रसाद वर्मा	नसीराबाद	,,
३४	,, श्यामसुन्दर शर्मा	,,	,,
३६	,, फजल करीम	नागोद	,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी तथा प्राप्तांक
३७	श्री भगवती प्रसाद गुप्त	प्रयाग	प्रथम श्रेणी २८१ ['व० यो० सा०]
३८	,, पीसूलाल सिसौदिया	ब्यावर	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
३९	,, चम्पालाल कर्णावट	भोपालगढ़	द्वितीय श्रेणी २२५ [वि० यो० ग०]
४०	,, किशनलाल ओसवाल	,,	तृतीय श्रेणी १७६
४२	,, राजमल ओसवाल	,,	द्वितीय श्रेणी २०३ [वि० यो० ग०]
४७	,, बालमुकुन्द शर्मा	सुखेड़ा	तृतीय श्रेणी १४३
४८	,, लक्ष्मीनारायण नन्दवाना	,,	,, १५८
४९	,, मोहनलाल खत्री	,,	,, १५४

आरायज़ नवीसी परीक्षा

१	श्री प्रभुदयाल तिवारी	राजनाँदगाँव	द्वितीय श्रेणी २११

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संवत् १९९५ की पदक सूची

संवत् १९९५ (सन् १९३८) की परीक्षाओं के परीक्षाफल के अनुसार निम्नलिखित परीक्षार्थियों को पदक दिये जायँगे:—

उत्तमा परीक्षा

श्रीधर पदक (स्वर्ण)—क्रम सं० ३७ श्री विद्या भूषण अग्रवाल, केन्द्र आगरा।

मोहन लाल चौबे पदक (रौप्य)—क्रम सं० ८९ श्री श्याम सुन्दर द्विवेदी, केन्द्र इन्दौर।

मध्यमा परीक्षा

भट्ट पदक (स्वर्ण)—क्रम सं० ६६८ श्री राज नारायण शर्मा, केन्द्र पटना कालेज।

मध्य भारत हिन्दी-साहित्य समिति पदक (रौप्य)—क्रम सं० १०० श्री सूरजमल गर्ग, केन्द्र इन्दौर।

श्रीमती भगवान देवी बाजोरिया पदक (स्वर्ण)—क्रम सं० ८४५ कु० मैनावती माटे, केन्द्र बम्बई।

आगरा नागरी प्रचारणी सभा पदक (रौप्य)—क्रम सं० ४७ श्री बैजनाथसिंह विद्यार्थी, केन्द्र आगरा।

त्रिलोकी नाथ वर्मा पदक (रौप्य)—क्रम सं० १३३९ श्री चन्द्र किशोर, केन्द्र सोराम।

भारतेन्दु पदक (रौप्य)—क्रम सं० ३९७ श्री गणेश सिंह, केन्द्र कोटा।

प्रथमा परीक्षा

पूर्ण पदक (स्वर्ण)—क्रम सं० ४० श्री गिरधारीलाल, केन्द्र अलीगढ़।

ज्ञानवती पदक (स्वर्ण)—क्रम स० ८८४ सुश्री निर्मला देवी, केन्द्र मेरठ।

शिव देवी पदक (रौप्य)—क्रम सं० ३४० श्री दत्तात्रेय, क़ानूनगो, केन्द्र इन्दौर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विजयेन्द्र पदक (रौप्य)—क्रम सं० ९३२ श्री गोकुल प्रसाद त्रिपाठी, केन्द्र राजगढ़।

हनुमन्त पदक (रौप्य)—क्रम सं० ६४ श्री फूलचन्द कुलश्रेष्ठ, केन्द्र आगरा।

भारतेन्दु पदक (रौप्य)—क्रम सं० २४० श्री प्रभुलाल भारद्वाज आचार्य, केन्द्र कोटा।

वैद्य विशारद परीक्षा

आयुर्वेद प्रचारणी सभा पदक—क्रम संख्या ५ श्री गोपीचन्द जैन, केन्द्र इटावा।

दयाशङ्कर दुबे
परीक्षा मंत्री

हिन्दी-विश्व-विद्यालय
की
संवत् १९९५ की परीक्षाएँ

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य भिन्न भिन्न उपायों से सर्व मान्य राष्ट्र भाषा हिन्दी का प्रचार करना और उसके साहित्य को सब प्रकार से समुन्नत करना है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए सम्मेलन द्वारा संस्थापित हिन्दी विश्व-विद्यालय की ओर से उत्तमा, मध्यमा, प्रथमा, वैद्य विशारद, कृषि विशारद, शीघ्र लिपि विशारद, मुनीमी, आरायज्ञ नवीसी और राष्ट्र भाषा प्रचार इत्यादि परीक्षाएँ ली जाती हैं। उत्तमा और मध्यमा परीक्षाओं में उत्तीर्ण परीक्षार्थियों को क्रमशः रत्न और विशारद की उपाधियाँ दी जाती हैं। इन परीक्षाओं की एक विशेषता यह है कि ये हिन्दी माध्यम द्वारा ही ली जाती हैं। अतः अँग्रेज़ी न जानने वाले व्यक्तियों को भी इन परीक्षाओं में उत्तीर्ण होकर अपनी योग्यता बढ़ाने का सुअवसर प्राप्त होता है।

राष्ट्र भाषा प्रचार परीक्षाओं की व्यवस्था परीक्षा समिति की उपसमिति द्वारा वर्धा से होती है। इन परीक्षाओं को छोड़कर इस वर्ष हिन्दी-विश्व-विद्यालय की समस्त परीक्षाएँ तारीख २९ अक्टूबर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन् १९३८ को आरम्भ होकर तारीख़ ५ नवम्बर सन् १९३८ को समाप्त हुई। परीक्षा फल पर विचार करने के लिए परीक्षा-समिति की बैठक तारीख २ फ़रवरी सन् १९३९ को हुई। चार परीक्षकों के यहां से उनकी अस्वस्थता के कारण परीक्षा फल हमें विलम्ब से प्राप्त हुआ। अतः उसके प्रकाशन में आवश्यकता से अधिक विलम्ब हो गया और उसे हम ४ फ़रवरी सन् १९३९ को प्रकाशित कर सके। राष्ट्र भाषा परीक्षाओं को छोड़कर संवत् १९९४ में सम्मेलन परीक्षाओं में सम्मिलित होने वाले परीक्षार्थियों की संख्या २५२४ थी। इस वर्ष संवत् १९९५ के परीक्षार्थियों की संख्या ३००९ रही। गत वर्ष परीक्षा शुल्क की आय ११०९४)॥। थी। इस वर्ष शुल्क की आय १५१२७) रही। संवत् १९८२ तक तो प्रति वर्ष कुछ न कुछ वृद्धि होती ही रही किन्तु संवत् १९८३ से परीक्षार्थियों की संख्या में आशातीत वृद्धि हुई है। संवत १९८३ से लगाकर संवत् १९९५ तक के परीक्षार्थियों की संख्या हम पाठकों की जानकारी के लिए नीचे दे रहे हैं। इसी से पाठकों को परीक्षाओं की प्रगति का भलीभांति ज्ञान हो जायगा:—

संवत्	परीक्षार्थियों की संख्या	
	जितने आवेदन पत्र आये	जो सम्मिलित हुए
१९८३	१५५६	१०३५
१९८४	२०५६	१३२६
१९८५	२३६६	१४३५
१९८६	२४५८	१६९२
१९८७	१७८३	१२६९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संवत्	परीक्षार्थियों की संख्या	
	जितने आवेदन पत्र आये	जो सम्मिलित हुए
१९८८	१४७१	११६६
१९८९	१३७०	१११६
१९९०	१४१९	१२३१
१९९१	१५३५	१३१८
१९९२	१६५९	१४४९
१९९३	२०४७	१७७३
१९९४	२५२४	२०२८
१९९५	३००९	२४१७

इस कोष्टक के देखने से स्पष्ट है कि परीक्षार्थियों की संख्या और परीक्षा शुल्क में जैसी वृद्धि सम्वत् १९९५ में हुई है वैसी सम्मेलन के इतिहास में कभी भी नहीं हुई। इसका मुख्य कारण यह है कि सम्मेलन परीक्षाओं के प्रचार के लिए इस वर्ष सब प्रकार के उपायों से उद्योग किया गया। इस कार्य में हिन्दी समाचार पत्रों के सम्पादकों ने भी गतवर्ष से भी अधिक हमारी सहायता की। परीक्षा विभाग से जो सूचनाएँ प्रकाशनार्थ उनके पास भेजी गईं उन्होंने अपने पत्र में उन्हें सहर्ष स्थान देने की कृपा की। इस कृपा के लिए सम्मेलन की ओर से हम उन्हें अनेक धन्यवाद देते हैं और आशा करते हैं कि वे इसी प्रकार की कृपा भविष्य में करते रहेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संवत् १९९५ में ३००९ परीक्षार्थियों में से २४१७ परीक्षार्थी परीक्षाओं में सम्मिलित हुए और १४०९ उत्तीर्ण हुए। भिन्न-भिन्न परीक्षाओं के परीक्षार्थियों की संख्या नीचे लिखे अनुसार थी:—

परीक्षा	आवेदन पत्र आये	सम्मिलित हुए	उत्तीर्ण	प्रतिशत
उत्तमा	२११	१४६	९७	६६
मध्यमा	१३८१	१०८६	५६५	५२
प्रथमा	१२८९	१०७७	६९३	६४
वैद्य विशारद	५९	५२	१५	२८
कृषि विशारद	१६	१३	१०	७६
मुनीमी	५२	४२	२८	६६
आरायज़ नवीसी	१	१	१	१००
	३००९	२४१७	१४०९	५८

सब परीक्षाओं में मिला कर इस वर्ष ५८ प्रतिशत परीक्षार्थी उत्तीर्ण हुए हैं। परीक्षाओं के स्टैण्डर्ड को ऊँचा रखते हुये जितना उत्तम परीक्षाफल गत तीन वर्षों से हो रहा है उतना पिछले वर्षों में कभी नहीं रहा। इसका मुख्य कारण केवल यही है कि गत तीन वर्षों से परीक्षाओं के प्रचार के लिए प्रत्येक उपाय से ध्यान दिया जा रहा है। उत्तमा-परीक्षा में भी जितने अधिक परीक्षार्थी गत तीन वर्षों से सम्मिलित हो रहे हैं और जितना अच्छा परीक्षा-फल गत तीन वर्षों से हो रहा है उतना कभी नहीं हुआ। हमें यह सूचित करते हुए हर्ष होता है कि इस वर्ष सम्मेलन की मध्यमा परीक्षा यू० पी० के इन्टर-मी० बोर्ड द्वारा सम्मानित हो चुकी है। अर्थात् मध्यमा परीक्षा में उत्तीर्ण परीक्षार्थी यू० पी० बोर्ड की हाई स्कूल परीक्षा केवल अंग्रेजी विषय लेकर दे सकेंगे। अतः परीक्षार्थियों को अधिकाधिक संख्या में सम्मिलित होकर सम्मेलन परीक्षाओं के प्रचार कार्य में हमारा हाथ बँटाना चाहिये।

उत्तमा परीक्षा के भारतवर्ष भर में ५ केन्द्र हैं। आगरा, इन्दौर,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काशी, प्रयाग और वर्धा। आगरा तथा इन्दौर में तो परीक्षार्थियों की शिक्षा का उत्तम प्रबन्ध पहिले ही से था। पिछले तीन वर्षों से प्रयाग में भी परीक्षा के दिनों में परीक्षार्थियों की सुविधा के लिए भिन्न भिन्न विषयों के व्याख्यान कराये जाते हैं। प्रयाग से ३ मील दूर हिन्दी विद्यापीठ महेवा में इस वर्ष २५ अप्रैल से मध्यमा और उत्तमा की पढ़ाई का प्रबन्ध किया गया है।

उत्तमा परीक्षा में पहिले निबन्ध लिखने का प्रतिबन्ध था। संवत् १९८४ से यह प्रतिबन्ध हटा दिया गया है। संवत् १९८४ तक केवल वे ही परीक्षार्थी इस परीक्षा में सम्मिलित हो सकते थे जो सम्मेलन की विशारद परीक्षा उत्तीर्ण होते थे। अब उन परीक्षार्थियों को भी इस परीक्षा में सम्मिलित होने का अधिकार दिया जाता है जो भारतीय विश्व-विद्यालयों से हिन्दी लेकर बी० ए० अथवा किसी भी विषय में एम० ए० उत्तीर्ण होते हैं। अतः इस सुविधा के कारण परीक्षार्थियों की संख्या में और भी वृद्धि हो गई है। अब हिन्दी प्रभाकर और आचार्य परीक्षा उत्तीर्ण विद्यार्थियों को भी ये सुविधाएँ दे दी गई हैं। हम उत्तमा परीक्षा का स्टैंडर्ड ऊँचा बनाए रखने का पूर्ण प्रयत्न कर रहे हैं। युक्तप्रांत की सरकार द्वारा उसे एम० ए० के बराबर स्वीकार किये जाने के लिये प्रयत्न जारी है। नीचे दिये हुए अंकों से पाठकों को विदित होगा कि प्रारम्भ से गत दस वर्षों में उत्तमा परीक्षा के परीक्षार्थियों की संख्या में किस प्रकार वृद्धि हुई है।

संवत्	परीक्षार्थियों की संख्या
१९८४	३२
१९८५	२९
१९८६	५४
१९८७	२५
१९८८	३७
१९८९	४१
१९९०	३८

१८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संवत्	परीक्षार्थियों की संख्या
१९९१	४८
१९९२	७३
१९९३	९४
१९९४	११०
१९९५	२११

परीक्षा केन्द्रों की संख्या में भी बराबर वृद्धि हो रही है। संवत् १९८४ से लगाकर संवत् १९९५ तक में परीक्षा केन्द्रों की संख्या में क्रमशः जो वृद्धि हुई है उसकी तालिका नीचे दी गई है:—

संवत्	केन्द्रों की संख्या
१९८४	१९०
१९८५	२२०
१९८६	२८०
१९८७	२७२
१९८८	२६७
१९८९	२५५
१९९०	२५१
१९९१	२५७
१९९२	२५७
१९९३	४१०
१९९४	५३४
१९९५	५६२

इस वर्ष केन्द्रों की संख्या और भी अधिक होती, यदि वे ७० केन्द्र न तोड़ दियेगए होते जिनमें गत दो वर्षों से पांच से कम विद्यार्थी सम्मिलित हुए। उपर्युक्त तालिका से पाठकों को विदित हो जायगा कि परीक्षा केन्द्र भी इस वर्ष पिछले वर्षों की अपेक्षा अधिक संख्या में स्थापित हुए हैं। इस वर्ष केन्द्रों की संख्या बढ़ाने का भी विशेष रूप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से प्रयत्न किया गया था। हम आशा करते हैं कि इस वर्ष के समाप्त होने तक केन्द्रों की संख्या में अधिक वृद्धि होगी।

प्रत्येक प्रान्त के अनुसार इस समय परीक्षा केन्द्रों की संख्या नीचे लिखे अनुसार है :—

संयुक्त प्रान्त	२११	केन्द्र
विहार	१४४	,,
मध्य प्रान्त	५१	,,
बङ्गाल	७	,,
मद्रास	६	,,
आसाम	२	,,
ब्रम्हा	१	,,
पञ्जाब	७	,,
बम्बई	५	,,

मध्य भारत

इन्दौर राज्य	४८	,,
ग्वालियर राज्य	२२	,,
बड़नगर, रीवां और भोपाल	१२	,,

राजपूताना

बीकानेर राज्य	१०	,,
जयपुर राज्य	१०	,,
झालावाड़	३	,,
अन्यराज्य	२३	,,

केन्द्रों की तालिका से स्पष्ट है कि अभी भारत के कई प्रान्त और देशी राज्यों में सम्मेलन परीक्षाओं के केन्द्र स्थापित कर उनके प्रचार की बहुत आवश्यकता है। यह तभी हो सकता है जब भिन्न-भिन्न प्रान्तों के हिन्दी प्रेमी सज्जन इस कार्य में हमारी यथेष्ठ सहायता करें। इस वर्ष के लिए नवीन केन्द्र स्थापित कराने की अन्तिम तिथि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३१ जुलाई सन् १९३९ है। जो सज्जन सम्मेलन परीक्षाओं के इस प्रचार कार्य में हमारी सहायता करना चाहते हैं वे यथासम्भव शीघ्र ही हमें लिख कर केन्द्र स्थापन के लिए आवेदन-पत्र का फ़ार्म मँगा लें। यहां हम यह भी लिख देना आवश्यक समझते हैं कि सम्मेलन परीक्षाओं के केन्द्र अब किसी प्रतिष्ठित स्कूल या कालेज में उसके प्रधानाध्यापक की अध्यक्षता में ही स्थापित किये जाते हैं। अतः आवेदन फ़ार्म भरते समय प्रार्थियों को इसका ध्यान रखना चाहिये।

परीक्षा केन्द्रों का सञ्चालन और उनकी सुव्यवस्था केन्द्र व्यवस्थापकों की कार्य तत्परता पर ही निर्भर रहती है। पाठकों से यह छिपा नहीं है कि व्यवस्थापकों का कार्य कितना महत्वपूर्ण होता है। प्रश्नपत्रों को परीक्षा-भवन में ठीक समय में खोलना, उत्तर पुस्तकों को समयानुसार यथास्थान भेजना और परीक्षा-भवन में परीक्षार्थियों को अनुचित सहायता न लेने देना व्यवस्थापक के मुख्य कर्तव्य हैं। मुझे यह सूचित करते हुए हर्ष होता है कि हमारे व्यवस्थापकों ने अपने उत्तरदायित्व को भली भांति निबाहा है। इसके लिए मैं उन्हें परीक्षा समिति की ओर से अनेक धन्यवाद देता हूँ।

गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी ३९ केन्द्रों में निरीक्षक भेजकर परीक्षा केन्द्रों का निरीक्षण कराया गया था। जिन केन्द्रों में त्रुटियां पाई गई थीं वे परीक्षा समिति के आदेशानुसार तोड़ दिये गए हैं।

हमारे परीक्षकों ने भी बड़ी तत्परता और लगन के साथ इस वर्ष हमारी सहायता की है। परीक्षक का कार्य कितना उत्तरदायित्व पूर्ण, कठिन और नीरस होता है उसे वे ही सज्जन जानते हैं जिन्होंने कभी इस कार्य को किया है। हमारे परीक्षकों ने अवैतनिक रूप से जिस तत्परता और लगन के साथ हमारी सहायता की है उसके लिए हम उनके कृतज्ञ हैं और परीक्षा समिति की ओर से उन्हें अनेक धन्यवाद देते हैं। इस वर्ष 'तुलसी दर्शन' नामक पुस्तक प्रत्येक परीक्षक को भेंट रूप में दी गई है। कुछ परीक्षकों ने अपनी रिपोर्ट में परीक्षार्थियों का ध्यान कुछ ख़ास ख़ास बातों की ओर आकर्षित किया है। परीक्षार्थियों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की सुविधा और जानकारी के लिए हम उनका सारांश इसी पत्रिका के अगले पृष्ठ में प्रकाशित कर रहे हैं।

सम्मेलन की ओर से हिन्दी विद्यापीठ में पढ़ाई की व्यवस्था

सर्व साधारण को सूचित करते हुए हमें अत्यन्त हर्ष होता है कि महेवा-विद्यापीठ, प्रयाग, महेवा के प्रसिद्ध आश्रम में फिर से खुल गया है। यह आश्रम ६० एकड़ भूमि में यमुना नदी के दाहिने किनारे पर अवस्थित है। इसकी प्राकृतिक छटा अत्यन्त मनोहर एवं दर्शनीय है। उपाध्यायों तथा विद्यार्थियों के रहने के लिए सुन्दर आवास बने हुये हैं। ता० २५ अप्रैल सन् १९३९ ई० से मध्यमा और उत्तमा कक्षाएँ खोल दी गई हैं। नियमित पढ़ाई प्रारम्भ हो गई है। स्कूलों और कालेजों के विद्यार्थियों के अध्ययन के लिए यह बहुत सुन्दर अवसर है। वे विद्यापीठ आश्रम में रहकर अपने ज्ञान की वृद्धि करें तथा शुद्ध जलवायु द्वारा अपने स्वास्थ्य का सुधार करते हुए 'विशारद' और 'रत्न' उपाधियां प्राप्त करने का उद्योग करें।

दयाशङ्कर दुबे
परीक्षा मन्त्री।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी-विश्व-विद्यालय
के
परीक्षकों के वक्तव्यों का सारांश

सवत १९९५ की हिन्दी-विश्व-विद्यालय की परीक्षाओं के परीक्षकों ने उत्तर पुस्तकों के जांचने के बाद उत्तरों के सम्बन्ध में अपनी जो सम्मतियां हमारे पास लिख भेजी हैं उनका सारांश परीक्षार्थियों की सुविधा के लिए नीचे दिया जाता है ;—

उत्तमा (साहित्य)

अधिकांश परीक्षार्थियों के उत्तरों में भाषा सम्बन्धी अशुद्धियाँ हैं। बहुत से परीक्षार्थियों में यह भ्रम भरा रहता है कि जितने ही अधिक पृष्ठ रंगे जायँगे उतना ही अधिक लाभ होगा। इसीसे वे कहीं कहीं अनावश्यक विस्तार करते हैं और जहां अधिक स्पष्टता के लिए अधिक लिखने की आवश्यकता होती है वहां अति संक्षेप में ही काम निकालना चाहते हैं। काशी केन्द्र के परीक्षार्थियों ने लिङ्ग और बचन की अशुद्धियां बहुत की हैं। "ये महोदय बहुत से लेख लिखे", "हरिश्चन्द्र जी ने अपने मातृ भाषा को गर्त में देखा और उसे उच्च आसन पर विराजित करने के लिए प्रतिज्ञा किया", "इनकी शैली का छाप लक्षित होता है" आदि बातें बहुत खटकती हैं।

किसी कवि के विशेष अध्ययन करने का तात्पर्य यह है कि अध्ययन करने वाला उसकी लिखी सभी पुस्तकों से परिचित है और उन पुस्तकों के शुद्ध अर्थ के अतिरिक्त वह उनके सम्बन्ध की भीतरी और बाहरी सभी बातों से परिचित है। पर ऐसा नहीं हुआ।

भाषा लिखने में प्रान्तीय दोषों का निवारण आवश्यक है। निबन्ध लिखने में परीक्षार्थियों को नीचे लिखी बातों का ध्यान रखना चाहिये:—

(१) निबन्ध के विषय पर पूर्ण रूप से विचार कर लिखना प्रारम्भ करना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२) अनावश्यक बातों को लिख कर निबन्ध के आकार को बढ़ाने से हानि की अधिक सम्भावना रहती है।

(३) लेख तथा व्याकरण की अशुद्धि परीक्षक की दृष्टि में बहुत खटकती है।

(४) निबन्ध के प्रवाह और क्रम का पूर्णतया ध्यान रखना चाहिये।

(५) निबन्ध समाप्त हो जाने पर समय निकाल कर उसे फिर पढ़ना नितान्त आवश्यक तथा हितकर होता है।

(६) निबन्ध की कलेवर वृद्धि से परीक्षा में अङ्क नहीं मिला करते। भाव, भाषा, शैली इत्यादि पर बराबर ध्यान देना चाहिये।

मध्यमा परीक्षा

साहित्य १—(१) बहुत से परीक्षार्थी विषय का ज्ञान रहने पर भी अपने भावों को क्रमबद्ध एवं शुद्ध भाषा में अभिव्यक्त नहीं कर सकते हैं।

(२) भाव वाचक (विशेष कर तत्सम) संज्ञाओं का व्यवहार बहुत से परीक्षार्थी नहीं जानते जिससे उनकी रचनाएँ भद्दी जान पड़ती हैं। उदाहरणार्थ, बहुतों ने ऐसे शब्दों का प्रचुर प्रयोग किया:—साहित्यता, बाहुल्यता; साफल्यता असलियत्व, वीरताई।

(३) अनेक परिचित शब्दों के विचित्र रूप देखने को मिले। यथा—श्रीष्टी (सृष्टि), सन्सकृत (संस्कृत) कृया (क्रिया), सुर्य्य, शीवाजी।

(४) "कि" और "की" के प्रयोगों में विद्यार्थियों ने अधिक भूलें की हैं।

(५) विराम का ज्ञान बहुतों को नहीं है। वे लिखते चले जाते हैं किन्तु एक वाक्य का अन्त तथा दूसरे का आरम्भ कहां से माना जाय इसका ध्यान उन्हें नहीं रहता।

साहित्य २—परीक्षार्थियों को प्रसंग और अर्थ लिखने का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ढंग अच्छी तरह से आना चाहिये। केवल पर्यायवाची शब्दों के रख देने से अर्थ नहीं निकलता। आलोचनात्मक ढंग के उत्तर भी लिखने आने चाहिये। उत्तरों में अनुचित और अनावश्यक विस्तार नहीं होना चाहिये।

साहित्य ३—वाङ्मय का अध्ययन बहुत ही न्यून था। अनेक परीक्षार्थियों ने तो आवश्यक प्रश्न ९ जो वाङ्मय के सम्बन्ध में था, छोड़ ही दिया है। इसी प्रकार 'भाषा' के स्थान पर परीक्षार्थियों ने 'साहित्य' समझ कर उत्तर लिखा है। भाषा और साहित्य का अलग अलग अध्ययन परीक्षार्थियों को करना आवश्यक है। अन्य उत्तर संतोषप्रद थे लेकिन उनकी बहुत सी सामग्री विषयान्तर की ओर थी।

उत्तर में परीक्षार्थियों ने वास्तविक ऐतिहासिक कारणों के अनुसन्धान के स्थान में अनुमान व अनर्गल कल्पनाओं का आश्रय लिया। भाषा संकीर्णता, व्याकरणाभाव, देशकालीन परिस्थितियों की क्रिया-प्रतिक्रिया पर पर्याप्त प्रकाश नहीं डाला गया।

साहित्य ४—लिपि और भाषा दो भिन्न चीजें हैं। इस सम्बन्ध में विद्यार्थियों का स्पष्ट चिंतन नहीं रहा है। परीक्षार्थियों को चाहिये कि प्रश्न-पत्र ध्यान से पढ़ें और अनर्गल विस्तार से बचकर ठीक ठीक उन बातों का उत्तर दें जिन्हें परीक्षक जानना चाहता है।

निबन्ध लिखने से पूर्व अधिकांश परीक्षार्थियों ने ढांचा नहीं बनाया। इसीलिए वे अपने उत्तर का क्रम ठीक नहीं कर सके।

इतिहास—ऐसा प्रतीत होता है कि परीक्षार्थी प्रश्नों को बिना ठीक ढङ्ग से समझे हुए ही उत्तर लिखने लग जाते हैं। इसलिये उत्तरों में कई अनावश्यक बातें आ जाती हैं और उनका कलेवर भी बढ़ जाता है। प्रश्नों के उत्तर विवेचनात्मक होने चाहिये।

अर्थ शास्त्र—परीक्षार्थियां ने अर्थ शास्त्र के विभागों का पारस्परिक सम्बन्ध अच्छी तरह नहीं समझाया। अधिकांश ने बिना कारण दिये ही छोटी मात्रा की उत्पत्ति को भारत के लिए अधिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपयुक्त माना है। कई परीक्षार्थी कुल नफा व असल नफा के भेद को नहीं समझ पाये।

कृषि शास्त्र-- संतोषप्रद उत्तर बहुत कम विद्यार्थियों ने दिये। वर्धा स्कीम तथा विद्या मन्दिर युक्तियों पर दो-चार विद्यार्थियों ने ही प्रकाश डाला है। अधिकांश विद्यार्थियों ने लिखा है कि हमारे कृषक खेती करना नहीं जानते। इसीलिए लाभ नहीं होता। परन्तु लाभ न होने के जो कारण हैं उनका उल्लेख बहुत कम विद्यार्थियों ने किया है।

राजनीति—प्रत्येक प्रश्न के उत्तर में अधिकांश आधुनिक राजनैतिक आन्दोलन की झलक है। और अनावश्यक बातों की भरमार है। उनमें विषय सम्बन्धी शास्त्रोक्त ज्ञान की बहुत कमी है। परीक्षार्थियों को पाठ्य ग्रन्थों का अध्ययन करना चाहिये। केवल वर्तमान पत्रों के आधार पर उत्तर लिखना हानिकारक है। उससे शास्त्र का पूरा ज्ञान नहीं हो सकता।

धर्म शास्त्र—अधिकांश विद्यार्थियों के उत्तर अप्रासंगिक और अनुपयुक्त हैं। किसी किसी ने तो कहानी लिखकर उत्तर पुस्तक के पृष्ठ भरने का प्रयत्न किया है। परीक्षार्थी ग्रन्थों का पूर्ण रूपेण अध्ययन नहीं करते।

संस्कृत--परीक्षार्थियों ने संधि, समास तथा व्याकरण की बहुत भूलें की हैं। अनुवाद करने तथा निबन्ध लिखने का अच्छा अभ्यास होना चाहिये।

अँग्रेज़ी—परीक्षार्थियों नें प्रश्नों का उत्तर संतोषप्रद लिखा है। पाठ्य-ग्रन्थों का अध्ययन ठीक ठीक होना चाहिये। Golden Treasury का अध्ययन बहुत कम विद्यार्थियों ने किया है। अतः वे यह नहीं लिख सके कि कौनसी कविता किस कवि की है।

वैद्यक—विद्यार्थियों ने पाठ्यग्रन्थों का अध्ययन भली भांति नहीं किया। उन्हें चाहिये कि एक प्रश्न का उत्तर जब समाप्त हो जाय तब दूसरे प्रश्न का उत्तर वे दूसरे पृष्ठ पर आरम्भ करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्योतिष—परीक्षार्थियों ने पाठ्यग्रन्थों का अध्ययन ध्यान से नहीं किया। जो प्रश्न पूछा जाता है उसका उत्तर नहीं दिया जाता। इधर-उधर की असम्बद्ध बातें लिखी जाती हैं।

गणित – अधिकांश विद्यार्थियों के उत्तर साधारणतः अच्छे हैं।

भूगोल—कुछ विद्यार्थी बहुत गंदा लिखते हैं। प्रश्न पत्र में पूछा गया है कुछ और लिखा है कुछ। प्रत्येक प्रश्न को समझ कर लिखने की कोशिश नहीं की गई। प्रत्येक प्रश्न के उत्तर में चित्र का देना आवश्यक था। परन्तु बहुत कम विद्यार्थियों ने ऐसा किया। कुछ विद्यार्थियों ने परीक्षक को संबोधित करके उत्तर लिखा है। ऐसा कार्य अवांछनीय है।

दर्शन—किसी भी परीक्षार्थी ने पाठ्य पुस्तकों का अध्ययन नहीं किया। इसी लिए इस विषय के दूसरे प्रश्न पत्र में ५३ विद्यार्थियों में केवल दो विद्यार्थी उत्तीर्ण हुए हैं।

वैद्य विशारद परीक्षा

परीक्षार्थी गण पुस्तकों का अध्ययन न करके मनगढ़न्त बातें बहुत लिखते हैं। भाषा की बहुत अशुद्धियां हैं।

कृषि विशारद परीक्षा

परीक्षार्थी सामयिक पत्र पत्रिकाओं का अध्ययन नहीं करते। अधिकांश परीक्षार्थियों ने पारिभाषिक शब्दों के अभिप्राय न समझ कर साधारण अर्थ में व्याख्या की है। किसी ने तुलनात्मक दृष्टि से उत्तर नहीं दिया।

प्रथमा परीक्षा

साहित्य १— परीक्षार्थी भावार्थ नहीं समझते। केवल शब्दार्थ लिखने का प्रयत्न करते हैं। अलङ्कार और छन्दों का ज्ञान बहुत कम विद्यार्थियों को है। अधिकांश परीक्षार्थी चरित्र-चित्रण करना जानते ही नहीं। केवल कहानी मात्र लिखते हैं। ह्रस्व और दीर्घ की गलती, 'ब' और 'व' की अशुद्धियां तथा विभक्तियों की भूलें अधिकांश परीक्षार्थियों ने की हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य २—पद व्याख्या का तात्पर्य बहुत छात्र नहीं जानते। प्रश्नों का नम्बर डालने में अधिकांश परीक्षार्थियों ने भूल की है। विराम-चिन्हों का भी ज्ञान बहुत कम परीक्षार्थियों को है।

साहित्य ३—निबन्ध में अनावश्यक बातें न होनी चाहिये। निबन्ध लिखने के पूर्व उसका ढांचा अधिकांश विद्यार्थियों ने नहीं बनाया। व्युत्पत्ति का ज्ञान बहुत कम विद्यार्थियों को है।

इतिहास—परीक्षार्थियों को प्रश्न अच्छी तरह पढ़कर समझना चाहिये। एक साधारण सा उत्तर बहुत बढ़ा कर लिखा गया है। ऐतिहासिक घटनाओं के वर्णन में भाषा, व्याकरण और भाव आदि में विशेष त्रुटियां पाई गई हैं।

भूगोल—भारत का मान-चित्र बनाने के अभ्यास की अधिक आवश्यकता है। परीक्षार्थी नगरों व नदियों के भौगोलिक स्थान मानचित्र में ठीक ठीक नहीं दिखाते। उत्तर आलोचनात्मक और विवेचनात्मक होने चाहिये।

गणित—विद्यार्थियों को प्रश्नों का उत्तर लिखने के पूर्व प्रश्नों का नम्बर अवश्य डाल देना चाहिये। क्रिया स्पष्ट, शुद्ध एवं आकर्षक होनी चाहिये।

राजनीति—विद्यार्थियों का ज्ञान बहुत ही संकुचित है। अपनी योजनाएँ देने में वे असमर्थ हैं। कुछ विद्यार्थियों ने बहुत ही भ्रमपूर्ण बातें लिखी हैं। भारत में कौन कौन से ऐसे नियम पास हुए हैं, जिनसे सामाजिक कुरीतियां दूर की जा सकती हैं, यह कोई भी विद्यार्थी नहीं जानता।

कृषिशास्त्र—विद्यार्थियों ने पाठ्यग्रन्थों का भलीभांति अध्ययन नहीं किया। कुछ विद्यार्थियों ने लिखा है कि खरबूजे के लिए 'ठंडी हवा और मटियार भूमि सब से अच्छी है।'

प्रान्तीय शब्दों की इतनी भरमार है कि परीक्षक स्वयं परीक्षार्थी हो जाता है।

दया शंकर दुबे,
परीक्षा मंत्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर पुस्तकों के पुनर्वार निरीक्षण

का

परीक्षाफल संवत् १९९५ (सन् १९३८)

संवत् १९९५ की उत्तर पुस्तकों के पुनर्वार निरीक्षण के अनुसार नीचे लिखे परीक्षार्थी उत्तीर्ण हुए हैं:—

उत्तमा परीक्षा

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी
३५	श्री रवीन्द्र सिंह	आगरा	उत्तीर्ण (प्रथम खण्ड)
१७८	,, मसुरियादीन पाण्डेय	प्रयाग	द्वितीय श्रेणी
२०७	श्रीमती सौ० शारदादेबी	वर्धा	,,

मध्यमा परीक्षा

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी
१९०	श्री चन्द्र भानु	कर्वी	तृतीय श्रेणी
२३२	,, राजदेव ओझा	कलकत्ता	,,
२४०	,, यू० डी० आर० मय्या	काकिनाडा	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार
३५३	,, विद्याधर शर्मा त्रिपाठी	काशी (ओरि० का०)	तृतीय श्रेणी
५४७	श्रीमती सावित्री देवी थपलियाल	टेहरी	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी
५८६	श्रीमती विमलादेवी	देवबन्द	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार उत्तीर्ण
६६५	श्री गणेश तिवारी	पटना कालेज	
६८४	,, दुर्गा तिवारी	परसागढ़	तृतीय श्रेणी
६९३	श्रीमती जनक नन्दिनी देवी	प्रयाग (दारागञ्ज)	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार उत्तीर्ण
७१६	,, सावित्री देवी	प्रयाग (सं० का०)	
७५२	श्री काशीप्रसाद शुक्ल	प्रयाग	तृतीय श्रेणी
७६३	,, षडानन ठाकुर	प्रसण्डो	,,
८०३	,, रामचन्द्र विद्यार्थी	फर्रुखाबाद	उत्तीर्ण
८३५	,, नरेन्द्रप्रसाद सिंह	बनमनखी	तृतीय श्रेणी
८७५	,, भगवान प्रसाद त्रिपाठी 'आज़ाद'	बरहज	,,
१२९१	,, के० नारायण इलयत	सिरसा	अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार

वैद्य विशारद परीक्षा

३९	श्री सूर्यबली द्विवेदी	मिर्जापुर	विभाजित प्रणाली के अनुसार
५६	,, प्रीतम दास शर्मा	हैदराबाद	तृतीय श्रेणी
५७	,, इन्द्र भाण शर्मा	,,	,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रथमा परीक्षा

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	केन्द्र	श्रेणी
१३३	श्री गणेश चौधरी	कड़सर	अध्याय २ नियम ५ के अनुसार
१२०६	" रामदीन	हण्डिया	द्वितीय श्रेणी
१२३१	श्रीमती कल्याण क्रीड़ा देवी	हरचन्द खेड़ा	विभाजित प्रणाली के अनुसार

दयाशङ्कर दुबे, एम० ए०, एल-एल० बी०,
परीक्षा मन्त्री,
(हिन्दी-विश्व विद्यालय)
हिन्दी-सहित्य-सम्मेलन, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विविध विषय

१—कवियों की सूची

सम्मेलन-पत्रिका भाग २६ संख्या ४-५ में विविध विषय के अन्तर्गत संख्या २ में कलकत्ता निवासी श्री नारायणदास बाजोरिया के प्रस्ताव के सम्बन्ध में एक विज्ञप्ति प्रकाशित की गई थी। उसके अनुसार सम्मेलन के संग्रहालय-भवन के बरामदे की दीवारों पर बीस तक प्राचीन कवियों के नाम उनकी उत्कृष्टतम पंक्तियों के साथ संगमरमर पत्थर पर अंकित कराकर लगवाने का विचार है। इस सम्बन्ध में कार्यसमिति के पास कवियों के सोलह नाम प्रस्तुत किये गए थे जिनमें कुछ आधुनिक कवियों के नाम भी थे। हिन्दी साहित्य के पारखियों से उसी विज्ञप्ति में प्रार्थना की गई थी कि वे २८ फ़रवरी तक जिन कवियों के नाम उचित समझें उन्हें प्रस्तावित करें। इस अवधि में कुछ सज्जनों ने कुछ नाम प्रस्तावित किए हैं। किन्तु अभी तक इस ओर हिन्दी के मान्य साहित्यिकों का ध्यान आकर्षित नहीं हुआ है। यह आवश्यक नहीं है कि जो सूची अभी तक बनी है उसमें कोई परिवर्तन नहीं होगा और नए नाम सम्मिलित नहीं किए जा सकेंगे। यद्यपि प्रस्ताव की भाषा में प्राचीन कवियों को सम्मिलित करने का ही विधान है, किन्तु अनेक साहित्यिकों ने आधुनिक कवियों के नाम भी प्रस्तावित किए हैं। इसीलिए सम्मेलन पत्रिका में प्रकाशित कवियों की सूची में आधुनिक कवियों के नाम भी जोड़ दिए गए हैं। २७ फ़रवरी के भारत में 'कवियों की सूची' शीर्षक लेख द्वारा सम्पादक ने हमारा ध्यान इस ओर आकर्षित किया है कि प्राचीन कवियों के साथ आधुनिक कवियों के नाम क्यों जोड़े गये और यदि प्राचीन कवियों की श्रेणी में आधुनिक कवियों को स्थान दिया जाय तो खड़ी बोली के छायावादी कवियों के नाम भी उसमें समाविष्ट हों। हम इस प्रस्ताव का स्वागत करते हैं, उसी प्रकार जैसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमने अन्य साहित्यिकों के प्रस्ताव को स्वीकार किया है। किन्तु यह अधिकार बाजोरिया जी के प्रस्ताव के अनुसार कार्यकारिणी समिति को होगा कि वह कवियों की सूची में आधुनिक कवियों को परिगणित करे या न करे। हिन्दी साहित्य के विद्वानों और प्रेमियों को तो यह पूर्णाधिकार ही है कि वे युक्तियों और तर्कों के आधार पर कवियों के नाम प्रस्तावित करें। इस सम्बन्ध में हिन्दी के विद्वान् एवं विशेषज्ञ ३१ जुलाई तक अपनी विज्ञप्ति या प्रस्ताव निम्नलिखित पते पर भेजने की कृपा करें।

साहित्य मन्त्री,
हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।

२—श्री जैन साहित्य सभा का पत्र

मान्यवर महोदय,

श्रीयुत नारायण दास जी बाजोरिया के प्रस्तावानुसार जो हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने संग्रहालय भवन के बरामदे की दीवारों पर बीस प्राचीन कवियों के नाम उनकी उत्कृष्टतम पंक्तियों सहित संगमरमर पर उत्कीर्ण करके लगाए जाने का निश्चय किया है उस सम्बन्ध में श्री जैन साहित्य सभा, मैनपुरी निम्नलिखित प्रस्ताव करती है :—

"बीस प्राचीन कवियों की सूची में जैन महाकवियों को भी स्थान दिया जावे और उनके नाम उनकी उत्कृष्टतम पंक्तियों सहित संगमरमर पर उत्कीर्ण करके सम्मेलन के संग्रहालय भवन की दीवारों पर लगाए जावें।"

साधारण कवियों को जाने दीजिए, परन्तु श्रीयुत बनारसीदास जी, भूधरदास जी, वृन्दावन जी, भैया भगवतीदास जी, दौलतराम जी, बुधजन जी और किशन सरीखे प्रतिभाशाली कवियों को उस सूची में स्थान नहीं मिला, यह कितने बड़े दुःख की बात है। सूची में दिए हुए कितने ही कवि ऐसे हैं जिनकी रचनाओं से हमारे उक्त कवियों की रचनाएँ किसी भी दृष्टिकोण से कम नहीं हैं वरन् उत्तम ही हैं। हिन्दी भाषा के अन्य कवियों ने बहुधा शृङ्गार पर ही अपनी रचनाएँ की हैं,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परन्तु हमारे जैन कवियों ने अध्यात्म जैसे कठिन एवं गहन विषय को अपनी रचनाओं के लिए चुना है और उसमें उन्होंने पूर्ण सफलता प्राप्त करके दिखलाई है। कविवर बनारसीदासजी का 'नाटक-समयसार', 'बनारसी विलास' तथा 'अर्द्धकथानक,' श्री भूधरदास जी का 'भूधर जैन शतक' एवं 'पार्श्वपुराण,' वृन्दावन जी का 'प्रवचनसार,' 'वृन्दावन विलास' तथा 'छन्दशतक,' भैया भगवतीदास का 'ब्रह्म विलास,' दौलतराम जी का 'छहढाला,' बुधजन जी की 'बुधजन सतसई' और किशन जी की 'किशन बावनी' हिन्दी साहित्य की अमर कृतियाँ हैं। उनकी कृतियाँ वास्तव में बहुत महत्त्व-पूर्ण हैं। मिश्र बन्धुओं ने अपने 'मिश्र बन्धु विनोद' में इन कवियों के काव्य की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है और उन्हें उच्च श्रेणी के कवि माना है। कहना न होगा उनकी विशेषताओं एवं योग्यताओं को स्वर्गीय आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी तथा विदेशी लेखक भी स्वीकार करते हैं:—

स्व० आचार्य द्विवेदी जी जून सन् १९२२ की सरस्वती में जैन साहित्य के विषय में लिखते हैं:—"अब भी जैन मन्दिरों में प्राचीन पुस्तकों के अनेकानेक भंडार विद्यमान हैं। ये ग्रंथ केवल जैन धर्म से ही सम्बन्ध नहीं रखते इनमें तत्त्व-चिन्ता, काव्य, नाटक, छन्द, अलंकार, कथा, कहानी और इतिहास आदि सभी से सम्बन्ध रखने वाले ग्रन्थ हैं जिनके उद्धार से जैनेतर जनों की भी ज्ञान वृद्धि एवं मनोरंजन हो सकता है। भारतवर्ष में एक जैन धर्म ही ऐसा धर्म है जिसके अनुयायी साधुओं और आचार्यों में से अनेक जनों ने धर्मोपदेश के साथ ही साथ अपना समस्त-जीवन ग्रन्थ रचना और ग्रन्थ संग्रह में खर्च कर दिया है।" इत्यादि।

Prof. F. E. Keay अपनी History of Hindi Literature (Heritage of India Series) में लिखते हैं:—

Page 84. "Banarasi Das (b.1586) was a follower of Jain religion. He lived at Jaunpur and died sometime after 1641. His works are full of religious teachings and

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

he is much admired as a poet. In his most famous work he gives an account of his own life."

Page 85. "Bhudhar Das (fl.1724) was a Jain who wrote works connected with the Jain religion.......He is considered to possess considerable power as a poet."

page 97. "A later Jain of considerable merit was Brindabān Ji (1791-1858)."

हिन्दी भाषा की जड़ जैन अपभ्रंश साहित्य में मिलती है। हिन्दी के आदि गद्य के दर्शन भी जैन ग्रन्थों में होते हैं। यहाँ कविवर बनारसीदास जी की कविता के कुछ नमूने दिए जाते हैं:—

गुण विचार शृँगार१, वीर२ उद्यम उदार रुख।
करुणा३ रस सम रीति, हास्य४ हिरदै उछाह सुख।
अष्ट करम दल मलन, रुद्र५ वर्त्तै तिहि थानक।
तन विलच्छ वीभत्स६, द्वंद दुख दशा भयानक७।
अदभुत८ अनंत बल चिंतवन, शांत९ सहज वैराग्द ध्रुव।
नव रस विलास परकाश तब, जब सुबोध घट प्रगट हुव॥

उपर्युक्त पद्य में आत्मा में ही नवरस अति सुन्दर रीति से घटित किए गए हैं। एक अन्य कविता देखिए:—

सकल करम खल दलन, कमठ सठ पवन कनक नग।
धवल परम पद रमन, जगत जन अमल कमल खग।
परमत जलधर पवन, सजल घन समतन समकर।
पर अघ रज हर जलद, सकल जन नत भव भयहर।
यमदलन नरकपद छयकरन, अगम अतट भव जल तरन।
वर सबल मदन वन हर दहन, जय जय परम अभय करन॥

कैसी उत्तम रचना है! क्या अजैन काव्यों में एवं समस्त हिन्दी संसार में ऐसी कविता मिलेगी?

क्या ही पदलालित्य अर्थगाम्भीर्य एवं अलंकारों से सुसज्जित कविता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीबनारसीदास जी तुलसीदास जी के समकालीन थे। गोस्वामी जी कविवर बनारसीदास जी पर अत्यन्त प्रेम एवं श्रद्धा रखते थे। एक बार गोस्वामी तुलसीदास जी ने अपनी रामायण की समालोचना के विषय में पूछा, तब कविवर ने उत्तर दियाः—

विराजै रामायण घट मांहि, भरमी होय मरम सो जानै।
मूरख मानै नाहिं विराजै रामायण घट मांहि। ॥१॥
आतम राम ज्ञान गुन लछमन, सीता सुमति समेत।
शुभ पयोग बानर दल मंडित, वर विवेक रण खेत। विराजै० ॥२॥
ध्यान धनुष टंकोर शोर सुनि, गई विषय दति भाग।
भई भस्म मिथ्या मत लंका, उठी धारणा आग। विराजै० ॥३॥
जरे अज्ञानभाव राक्षसकुल, लरे निकांछित सूर।
जूझे रागद्वेष सेनापति, संसै गढ़ चकचूर। विराजै० ॥४॥
विलखत कुंभकरण भव विभ्रम, पुलकित मन दरियाव।
थकित उदार वीर महिरावण, सेतु बंध समभाव। विराजै० ॥५॥
मूर्छित मन्दोदरी दुराशा, सजग चरन हनुमान।
घटी चतुर्गति परणति सेना, छुटे छपक गुणवान। विराजै० ॥६॥
निरखि सकति गुन चक्र सुदर्शन, उदय विभीषण दीन।
फिरै कबन्ध मोह रावण को, प्राण भाव सिरहीन। विराजै० ॥७॥
इह विधि सकल साधु घट अन्तर, होय सहज संग्राम।
यह व्यवहार दृष्टि रामायण, निहचै केवल राम। विराजै० ॥८॥

तुलसीदास जी इस आध्यात्मिक चातुर्य को देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुए और अपनी कविता को "किसी भी लायक नहीं" यह कहकर कविवर जी की भक्ति से "भक्ति विरदावली" नामक सुन्दर कविता बनाकर कविवर जी को प्रदान की।

भैया भगवतीदास जी के पास केशवदास जी ने 'रसिक प्रिया' समालोचनार्थ भेजी थी। उस पर उक्त कविवर जी ने निम्नलिखित कविता लिखकर वापिस करदीः—

बड़ी नीत लघु नीत करत है, बाय सरत बदबोय भरी।
फोड़ा बहुत फुन गुणी मंडित, सकल देह मनु रोग दरी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शोणित हाड़ मास मय मूरत, तापर रीझत घरी घरी।
ऐसी नारि निरखि कर केशव! 'रसिकप्रिया' तुम कहा करी॥

कुकवियों की निन्दा में भूधरदास जी कहते हैं:—

राग उदै जग अंध भयौ सहजै सब लोगन लाज गँवाई।
सीख बिना नर सीखत हैं बनिता सुख सेवन की सुघराई।
तापर और रचैं रस काव्य कहा कहियै तिनकी निठुराई।
अंध असूझन की अँखियान में झोंकत हैं रज राम दुहाई॥

कविवर वृन्दावन जी कहते हैं:—

तखन में रुचि परतीत जो न आई तो धौं,
कहा सिद्ध होत कीन्हें आगम पठापठी।
तथा परतीत प्रीत तत्त्व हू में आई पै न,
त्यागे राग द्वेष तौ तो होत है गठागठी।
तबै मोक्ष सुख वृन्द पाय है कदापि नाहि,
ताते तीनों* शुद्ध गहु छाँड़ि के हठाहठी।
जो तू इन तीन बिन मोक्ष सुख चाहै तौ तो,
सूत न कपास करै कोरी सों लठालठी॥

आशय यह है कि जैनियों की साहित्य-सेवा उपेक्षा की वस्तु नहीं है। और इसीलिए उत्कृष्ट श्रेणी के कवियों का सम्मान करना हिन्दी साहित्य सेवियों का परम कर्त्तव्य है। यद्यपि समय हो चुका है परन्तु हम तो भी आशा करते हैं कि आप महानुभाव उक्त प्रस्ताव पर निष्पक्ष भाव से विचार करेंगे और हमारे प्रस्ताव से सहमत होकर हमें कृतार्थ करेंगे। अन्त में उक्त सभा एक बार फिर अनुरोध करती है कि कविवर बनारसीदास जी, भूधरदास जी, वृन्दावन जी और भैया भगवतीदास जी से प्रतिभाशाली कवियों के स्मृति-चिन्ह उनकी उत्कृष्टतम पंक्तियों सहित सम्मेलन के संग्रहालय भवन की दीवारों पर लगाए जावें। उनकी उत्कृष्टतम पंक्तियों के संकलन के लिए जैन अथवा जैनेतर विद्वानों की एक समिति बनादी जावे जिससे यह महत्त्वपूर्ण कार्य शीघ्र ही समाप्त हो सके।

*तीनों = सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान, सम्यक चरित्र।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृपया उक्त प्रस्ताव पर हिन्दी-साहित्य सम्मेलन के निर्णय की सूचना भेजने का कष्ट कीजिएगा। कष्ट के लिए अनेक धन्यवाद।

८५, मिश्राना स्ट्रीट, विनीत—

ता० २४ अप्रैल १९३९ ई०। महताबचन्द्र जैन,

मंत्री।

३—एक आवश्यकीय निवेदन

बाँदा प्रान्त हिन्दी-साहित्य का एक प्राचीन केन्द्र स्थान है। हिन्दी भाषा के आदि कवि श्री गोस्वामी तुलसीदास जी इसी प्रान्त के निवासी थे। श्री पद्माकर जी आदि प्रसिद्ध कवि इसी प्रान्त में हुए हैं। नवाबी के जमाने में गुसाईं जी का कवि दरबार प्रसिद्ध रहा है।

सन् १९१३ ई० से स्थानीय हिन्दी-साहित्य-सभा अदालतों में नागरी लिपि का प्रचार तथा नगर में नागरी प्रचारक पुस्तकालय दयानन्द वाचनालय व साहित्यिक बैठकों द्वारा प्रचार कर रही है।

यह सभा निरन्तर कई वर्षों से बुन्देलखण्ड प्रान्तीय हिन्दी-साहित्य सम्मेलन कराने का विचार कर रही है परन्तु अभी तक सफल-मनोरथ नहीं हुई।

इस समय अनेकों बांदा प्रान्त निवासी बाँदा प्रान्त के अन्तर्गत तथा बाहर विभिन्न स्थानों में किसी न किसी रूप में साहित्य-सेवा कर रहे हैं और प्रतिष्ठित पदों पर सुशोभित हैं। यदि जन्मभूमि के नाते इन सभी महानुभावों का सहयोग प्राप्त हो जावे तो यह शुभ कार्य सरलता से सम्पन्न हो सकता है।

अस्तु समस्त भाषा-भाषी साहित्य प्रेमी व साहित्य सेवियों से सविनय नम्र निवेदन है कि इस शुभ कार्य के लिए अपने विचार अपने परिचय सहित शीघ्रातिशीघ्र भेजने की कृपा करें ताकि उसी आधार पर स्वागत समिति के संगठन पर विचार किया जावे।

निवेदक—

मथुरा प्रसाद 'मुन्शी',

मन्त्री, हिन्दी साहित्य सभा, बाँदा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४—घसीट की प्रथा

हापुड़ की हिन्दी-साहित्य-समिति ने १७ अप्रैल १९३९ को अपनी एक बैठक में निम्नलिखित प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकृत किया है:—

"इस समिति की राय में इस समय हिन्दी प्रचार के साथ साथ हिन्दी घसीट लिखने की प्रथा भी दिन प्रति दिन बढ़ रही है, जोकि नागरी लिपि की लोकप्रियता के लिए घातक सिद्ध होगी। अतः यह समिति साहित्य के परिडतों से अनुरोध करती है कि शीघ्रातिशीघ्र सामूहिक रूप से इसको रोकने के लिए प्रयत्न करें।"

५—समालोचना

[समालोचनार्थं पुस्तक की दो प्रतियाँ भेजने की कृपा करें। — सम्पादक]

मालवा में युगान्तर या अराजकतापूर्ण शताब्दी

लेखक-महाराज कुमार डा० रघुवीर सिंह जी एम० ए०, डी० लिट्० ।
प्र०—श्री मध्यभारत हिन्दी साहित्य समिति, इन्दौर ।

मूल्य सजिल्द ४॥)

जिस प्रकार भारतवर्ष के प्राचीन इतिहास की शोध श्री काशी प्रसाद जायसवाल ने, बंगाल के इतिहास का अन्वेषण श्री राखालदास बनर्जी ने किया, राजस्थान का इतिहास ओझा जी ने, महाराष्ट्र का इतिहास सर देसाई तथा राजवाड़े ने और महाकोशल का इतिहास रा० ब० हीरालाल ने खोज निकाला है उसी प्रकार मालवा के इतिहास पर सीतामऊ के विद्वान् राजकुमार रघुवीर सिंह जी ने नवीन प्रकाश डाला है। प्रस्तुत पुस्तक उसी का प्रमाण है। सत्रहवीं सदी से लेकर अठारहवीं सदी तक के काल को आपने अराजकतापूर्ण शताब्दी मानकर उसी के पूर्वकाल का विवरण इस खोजपूर्ण इतिहास ग्रन्थ में दिया है। भारतवर्ष के इतिहास में सचमुच में यह काल ऐसा ही था। इस समय मुगल शक्ति क्षीण हो रही थी, मराठा-शक्ति उठ रही थी और केन्द्रीय शक्ति के कमजोर होने तथा किसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवीन शक्तिशाली राज्य या व्यक्ति के पूर्ण समर्थ न होने के कारण इस काल में अराजकता और अव्यवस्था होना स्वाभाविक ही था। इस अव्यवस्थित काल में मालवा का क्या महत्त्व था, उसकी क्या स्थिति थी, तथा भारत के इतिहास में उसका क्या स्थान था—इन बातों को नवीन शोधों के प्रकाश में विद्वान् लेखक हमारे सामने लाये हैं। मालवा के उत्तर और दक्षिण के सैनिक तथा व्यापारिक मार्गों के मध्य में होने के कारण क्षीण होता हुआ मुगल साम्राज्य उठती हुई राजपूत ताकत और महत्त्वाकांक्षी मराठा शक्ति—सभी लोग उस पर अपना अधिकार कायम रखने को उत्सुक थे। और इसी संघर्ष का इतिहास इस शताब्दी का इतिहास है जिसमें मालवा सरीखा धनधान्य पूर्ण प्रान्त (जिसे तुलसीदास जी तक ने "मरु मालव महिदेव गवाला" वाली चौपाई में मरुभूमि के विरोध में रक्खा है) ऊजड़ हो गया।

लेखक महोदय ने प्रस्तुत पुस्तक के समय को तीन विभागों में विभक्त किया है :(१) मुगलकाल, (२) मुगल मराठा संघर्ष काल और (३) मराठा काल।

इन कालों के लिये आपने उपयुक्त मौलिक सामग्री (original sources) का पूरा पूरा उपयोग किया है। मुगलों के प्रभुत्व काल के लिये फ़ारसी ग्रन्थ "अखबारात" तथा 'अतकामे आलमगीरी' आदि का उपयोग किया है। जो ग्रन्थ प्रकाशित नहीं थे, स्वयं राजकुमार जी ने लन्दन म्यूज़ियम आदि सुदूर स्थानों से बड़े परिश्रम और लगन के साथ उनकी प्रतिलिपियां कराके मंगवाईं। इससे आपकी ऐतिहासिक खोज की तत्परता का पता लगता है। आपने इस काल के सम्बन्ध में मराठी तथा अंग्रेजी भाषा में राजवाड़े के खोजपूर्ण ग्रन्थों का केवल उपयोग ही नहीं किया किन्तु कहीं कहीं उनकी तिथियों की गलतियाँ भी बतलाई हैं। दूसरे काल के लिये फ़ारसी की अपेक्षा मौलिक मराठी ग्रन्थों का आपने अधिक उपयोग किया है क्योंकि उन्हीं से इसका विवरण प्राप्त हो सकता था। पारसनीस तथा राजवाड़े के "सिलेक्शन्स फ्राम दी पेशवा दफ़्तर" नामक अपूर्व संग्रह से भी पूरी सहायता ली गई है। तीसरे काल में जब मुगलों ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मालवा का शासनसूत्र मराठों को सौंप दिया, उस समय के लिये अधिक सामग्री आप को प्राप्त नहीं हुई; जो हुई भी वह एक-पक्षीय ही थी। इनमें व्यक्तिगत राज्यों और जमींदारों के दफ्तरों को छान-बीनकर जो विश्वसनीय सामग्री प्राप्त हो सकी वह भी आप ने ली।

अभी तक मालवा के इतिहास के लिये १०० वर्ष पहिले प्रकाशित सर जार्ज मालकम की "ए मेमॉयर आफ़ सेन्ट्रल इण्डिया" पुस्तक ही प्रामाणिक मानी जाती थी किन्तु राजकुमार जी ने अपनी खोजों के द्वारा इसमें भी अनेकों अशुद्धियाँ बतलाई हैं। गिरधर बहादुर और दयाबहादुर की मृत्यु संबन्धी विवाद जो कि बहुत दिनों से चला आता था, उसके सम्बन्ध में भी आपने यह सिद्ध कर दिया है कि दोनों घटनायें साथ ही साथ हुईं।

इस ग्रन्थ के प्रणयन में आपने कई महत्वपूर्ण देशी और विदेशी ऐतिहासिक ग्रन्थों का उपयोग कर मालवा के महत्वपूर्ण इतिहास पर एक नवीन प्रकाश डाला है। अपनी भूमिका में प्रसिद्ध इतिहास लेखक श्री यदुनाथ सरकार ने भी ग्रन्थ के ऐतिहासिक महत्व की प्रशंसा की है। हम भी राजकुमार जी को इस ४०० पृष्ठ के खोज पूर्ण ऐतिहासिक ग्रन्थ के लिए साधुवाद देते हैं। इसके सामयिक प्रकाशन तथा सुन्दर छपाई बँधाई के लिये इन्दौर की हिन्दी साहित्य समिति भी धन्यवाद की पात्र है।

—राजेन्द्र सिंह

महात्मा जी का महाव्रत

ले०—ब्योहार राजेन्द्रसिंह एम० एल० ए०,

प्र०—महा कोशल हरिजन सेवक संघ, जबलपुर। मूल्य नहीं लिखा।

महाभारत में कहा गया है "न भयः नाशनात् परम्" अर्थात् अनशन के बराबर दूसरा भय नहीं है। महात्मा गांधी जी ने इस तत्व

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को अपने जीवन में कई बार सिद्ध कर दिखाया है। सन् १९३२ में महात्मा गांधी जी ने हरिजनों के पृथक् निर्वाचन के विरोध में जो आजीवन उपवास का महाव्रत ठान लिया था उसी के वर्णन के विषय में यह पुस्तक लिखी गई है। श्री प्यारेलाल जी ने इस कहानी को रोचक भाषा में अँग्रेज़ी में लिखा था। उसी के आधार पर महाकोशल हरिजन सेवक संघ के उत्साही सभापति व्योहार राजेन्द्र सिंह जी ने इस पुस्तक को लिखा है। मूल पुस्तक से इस में विशेषता यह है कि इसमें गुरुवापूर सत्याग्रह तथा हरिजन आन्दोलन का क्रमबद्ध इतिहास दे दिया गया है। साथ ही भारत के सुप्रसिद्ध विद्वान् डाक्टर भगवानदास ने इस विषय का तान्त्रिक विवेचन अपनी विस्तृत भूमिका में करके पुस्तक के महत्व को बढ़ा दिया है। महा कोशल हरिजन सेवक संघ जबलपुर से ।।) में प्राप्य।

ग्रामों का आर्थिक पुनरुद्धार

ले०—व्योहार राजेन्द्रसिंह एम० एल० ए०,

प्र०—हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग। मूल्य १।)

यह पुस्तक भी ग्रामसुधार का तात्विक अध्ययन और क्रियात्मक अनुभव प्राप्तकर व्योहार राजेन्द्रसिंह जी ने लिखा है। पुस्तक लिखने में लेखक ने जितना भी तत्सम्बन्धी साहित्य अंग्रेज़ी तथा हिन्दी में मिल सका है उस सब का अध्ययन करके उपयोग किया है, जैसा कि प्रत्येक अध्याय के अन्त में दी हुई पुस्तक सूची से प्रकट होता है। ग्रामों की आर्थिक दुरवस्था तथा उसके पुनर्संगठन सम्बन्धी सभी पहलुओं पर पुस्तक में प्रकाश डाला गया है। कृषि, ग्रामोद्योग, खाद, सिंचाई, जंगल, गोपालन आदि सभी समस्याओं पर पूरी तरह विचार किया गया है। पुस्तक ग्राम पुस्तकालयों तथा ग्रामीण अर्थशास्त्र के पाठ्यक्रम में रखने योग्य है। हम हिन्दी साहित्य सम्मेलन को इस पुस्तक के सामयिक प्रकाशन के लिये धन्यवाद देते हैं।

नर्मदा प्रसाद खरे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी मराठी अनुवाद माला (द्वितीय पुष्प)—लेखक श्री गणेश अनन्त भिडे, श्री मल्हार लक्ष्मण कुलकर्णी, प्रकाशक हिन्दी प्रचार संघ, पूना २, पृष्ठ संख्या ४८, मूल्य पाँच आने।

अन्तर्भाषा बोध के लिए यह प्रयास प्रशंसनीय है। हमारे सामने इस माला का प्रथम पुष्प नहीं है। अतः हम इस द्वितीय पुष्प के शिक्षा क्रम के सबन्ध में कुछ कहने में असमर्थ हैं। इस पुस्तक में हिन्दी से मराठी और मराठी से हिन्दी अवतरणों के अभ्यास के प्रश्न हैं। पंखड़ियों का क्रम व्याकरण को भी दृष्टि में रखते हुए लिखा गया है। इस समय जब हिन्दी देश की राष्ट्र भाषा होने जा रही है, अन्तःप्रान्तीय भाषाओं को समझने समझाने के ऐसी रचनाओं का स्वागत होना चाहिए।

विचार सुमनावली—ले० स्वा० कैलासानन्द, प्र० वही, भीकन गाँव (इन्दौर स्टेट), पृष्ठ १६०, मूल्य आठ आने।

जीवन को भिन्न दृष्टिकोणों से देखने पर दार्शनिक एवं नीति-मूलक सिद्धान्तों का यह मौलिक संग्रह है। यह सुमनावली तीन क्यारियों में विभक्त है। प्रेम, सत्य और सेवा—इन्हें लेकर सूक्तियों के रूप में बड़े अच्छे विचार सजाये गए हैं जिनकी कुल संख्या १०११ है। इन विचारों को पढ़ कर हृदय में शान्ति मिलती है और जीवन की वास्तविकता का ज्ञान होता है। अनेक विचार तो उपदेश के रूप में हैं। स्वा० कैलासानन्द ने जीवन की परिस्थितियों पर विशेष मनन किया है और संसार से व्यथित मनुष्य इन परिस्थितियों के निरूपण में विशेष सुख और शान्ति प्राप्त कर सकता है।

विश्व-अशान्ति, योरप-शान्ति ?
नौकरशाही व महात्मा गांधी
अंग्रेज़ हुकूमत भारत देश
} लेखक-श्री राधाकृष्ण तोपनीवाल, प्रफुल्ल। प्रकाशक श्री राजस्थान हिन्दी उपासना-मन्दिर, अजमेर।

मूल्य क्रमशः ।ll, ‒), ‒)

इन तीनों पुस्तिकाओं में श्री प्रफुल्ल जी ने आधुनिक राजनीति को लक्ष्य में रखते हुए महात्मा गांधी के सिद्धान्तों की उपादेयिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिद्ध की है। सत्याग्रह और अहिंसा का प्रचार करते हुए लेखक ने अंग्रेजों के भारत में आने और उनकी कूटनीति के संबन्ध में अपने विचार प्रकट किए हैं। भाषा में आवेश अधिक है, तर्क और गांभीर्य कम। ऐसे छोटे छोटे ट्रैक्टों का प्रकाशन प्रचार के लिए अत्यन्त आवश्यक है, पर प्रफुल्ल जी से प्रार्थना है कि वे विषयों के प्रतिपादन में अधिक मर्यादा और गांभीर्य से काम लें।

जगदीश की झांकी—लेखक और प्रकाशक उपयुक्त, मूल्य ≈)॥

पुस्तिका में ईश्वर की पद्यबद्ध प्रार्थनाएँ हैं। पद्य अशुद्ध और दोष पूर्ण हैं। शायद भक्तजनों के पाठ के लिए ही इस पुस्तिका की रचना की गई है।

विश्वमंच का खिलाड़ी—लेखक और प्रकाशक उपयुक्त। मूल्य १॥), पृष्ठ संख्या १४८।

इस पुस्तक में संसार की उत्पत्ति, विकास और ह्रास पर लेखक ने अनेक घटनाओं और पौराणिक कथाओं का आधार लेते हुए प्रकाश डाला है। अर्थ योजना, प्राकृत ज्ञान, जग संस्थापन कार्य उत्थान, सौभाग्य शिखर और ह्रास बलवान शीर्षकों से लेखक ने अपनी बहुज्ञता का परिचय दिया है। पुस्तक ज्ञानवर्धक और मनोरंजक है।

—सुशील कुमारी

प्रभुमति के दोहे—ले० तथा प्र० श्री प्रभुदयाल अग्रवाल, सिकन्दराबादी, हापुड़ (ज़िला मेरठ), पृष्ठ संख्या १६२, मूल्य १)

यह पुस्तक नाम के प्रतिकूल गद्य में लिखी गई है और इसका विषय व्यापारिक शिक्षा है। व्यापार से सम्बन्ध रखने वाली सभी आवश्यक जानने योग्य बातों को सरल और सुबोध ढंग से लेखक ने स्पष्ट किया है। ऐसी दशा में जब बी० ए०, एम० ए० पास कर लेने के बाद भी कोई नौकरी नहीं मिलती, हमारे नवयुवकों को व्यापार और व्यवसाय की ओर दृष्टि डालनी चाहिए। उस क्षेत्र में कठिन से कठिन गणित और व्यावहारिक नियमों को हृदयंगम करने में यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक विशेष सहायक होगी। इसमें सभी सामग्री आवश्यक है किन्तु उसका वर्गीकरण वैज्ञानिक ढङ्ग से नहीं किया गया है। पुस्तक महाजनों और व्यापारियों के बहुत काम की है। हम इस उपादेय पुस्तक के लिए श्री प्रभुलाल जी को धन्यवाद देते हैं और आशा करते हैं कि वे हिन्दी साहित्य के इस विभाग की श्री वृद्धि भविष्य में अधिक वैज्ञानिक ढङ्ग से करेंगे।

कृष्णगीता - ले०—श्री दरबारीलाल सत्यभक्त। प्र० सत्याश्रम वर्धा, सी० पी०, पृष्ठ संख्या १३५। मूल्य बारह आने।

यह श्रीमद् भगवद्गीता का पद्यबद्ध भावानुवाद है। गीता के १८ अध्यायों के पर्याय इसमें केवल चौदह अध्याय ही हैं, किन्तु गीता के सभी सिद्धान्तों का स्पष्टीकरण इस ग्रन्थ में हो गया है। यह ग्रन्थ अनेक छंदों एव गीतों में लिखा गया है जिनसे भावों का स्पष्टीकरण स्पष्ट और आकर्षक हो गया है। श्री सत्यभक्त जी ने गीता रहस्य को अच्छी तरह समझ कर कृष्णगीता की रचना की है, इससे ग्रन्थ में कोई विषय अस्पष्ट नहीं रह पाया है। पद्यों और गीतों की भाषा अत्यन्त सरल और हृदयग्राही है। गीता प्रेमियों को यह ग्रन्थ अवश्य देखना चाहिए।

वैदिक संध्या — ले०-कविवर पं० श्री इच्छालाल शर्मा, कन्नौज। सं०—पं० रघुनाथ मिश्र पुरोहित, साहित्य मनीषी। प्र०—मैथिली हिन्दी साहित्य प्रकाशन विभाग, मैथिल बन्धु कार्यालय, अजमेर मूल्य ~)

इसमें वैदिक संध्या का हिन्दी में पद्यबद्ध अनुवाद है। पहले श्लोक दिया गया है, फिर हिन्दी में रूपान्तर। भाषा साधारण और पद्य अशुद्ध हैं। कहीं हरिगीतिका और कहीं गीतिका छन्दों का एक में मिला दिया गया है—जैसे—

एकान्त में आसन लगै लखि शुद्ध समय का ठाम है।
मिलने पै ईश्वर जीव के सन्धी का सन्ध्या नाम है॥
प्रात, सायं के समय, दिन रात का संयोग है।
यह ईश-भक्ति उपासना, करने का सुन्दर योग है॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आशा है, अगले संस्करण में ये अशुद्धियाँ दूर कर दी जायँगी।

१. तमग़े का दूसरा रुख—ले० स्वामी सहजानन्द सरस्वती
२. ज़मींदारी क्यों उठा दी जाय ? ले०—वही
३. बकाश्त की लड़ाई—ले० श्री यदुनन्दन शर्मा, श्री राहुल सांकृत्यायन, श्री कार्यानन्द

प्रकाशक प्रगतिशील पुस्तकालय बाँकीपुर, पटना

ये तीनों पुस्तिकाएँ प्रगतिशील पैम्फलैट सीरीज़ में प्रकाशित हुई हैं। पहली में कांग्रेस मंत्रि मण्डल ने किसानों के लिए क्या किया, दूसरी में ज़मींदारी उठा देने की आवश्यकता और तीसरी में रेवरा, बड़हिया और अमवारी के मोर्चे उनके संचालकों के शब्दों में लिपिबद्ध किये गए हैं। इन पुस्तिकाओं का आदर्श राजनीति में परिवर्तन लाना और साम्यवाद का प्रचार है।

भाषा स्वाभाविक और सरल है। किसानों में इनका प्रचार अधिक से अधिक होना चाहिये।

—चन्द्र प्रकाश वर्मा

हुँकार—ले०—श्री दिनकर प्र०—प्रगतिशील पुस्तकालय, बांकीपुर, पटना पृष्ठ संख्या १०६, मूल्य बारह आना, सजिल्द एक रुपया।

श्री दिनकर हिन्दी में नवीन युग के कवि हैं। उनकी वाणी में शक्ति का रूप है और उनके शब्दों में क्रान्ति का आक्रोश। उनकी कल्पना केवल प्रकृति के प्रांगण में क्रीड़ा करके ही शान्ति नहीं लेती, प्रत्युत वह जगत की वास्तविकता और जीवन की दुर्धर्षता के स्वेद जाल में प्रतिबिम्बित होती है। नवीन भारत के निर्माण का चित्र श्री दिनकर की कविता में है।

फेंकता हूँ, लो तोड़ मरोड़
अरी निष्ठुरे बीन के तार;
उठा चांदी का उज्ज्वल शंख,
फूँकता हूँ भैरव हुँकार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिल्ली के वैभव का चित्र कवि कृषकों की आँखों में देखता है:—

अंकित है कृषकों के दृग में तेरी निठुर कहानी,
दुखियों की कुटिया रो-रो कहती तेरी मनमानी।
औं, तेरा दृग-मद यह क्या है? क्या न खून बेकस का?
बोल बोल क्यों लजा रही, ओ कृषक मेध की रानी?

श्री दिनकर ने श्रमिकों और कृषकों के कंठ से अपनी कविता का शृंगार किया है, कहीं कहीं वे पूर्ण साम्यवादी भी हैं। श्री दिनकर की कविता का हमारे राष्ट्रीय साहित्य में विशेष स्थान है और उसका इस बात का समर्थन उनके 'हुंकार' नामक कविता-संग्रह से हुआ है।

—रामकुमार वर्मा

६—मुरारका पारितोषिक

हिन्दी संसार को विदित ही है कि हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन द्वारा प्रतिवर्ष समाजवाद विषय पर हिन्दी की सर्वोत्कृष्ट मौलिक रचना के लिए ५००) पुरस्कार दिया जाता है। पुरस्कार के लिए इस वर्ष पुस्तकें लेने की अन्तिम तिथि ३१ मार्च १९३९ कर दी गई थी। किन्तु खेद है कि अभी तक यथेष्ट मात्रा में पुस्तकें नहीं आई हैं। अतएव पुस्तकें पहुँचने की अन्तिम तिथि बढ़ा कर १५ जुलाई १९३९ कर दी गई है। हिन्दी लेखक इस व्यवस्था से लाभ उठायें और शीघ्र ही समाजवाद विषयक अपनी रचनायें पारितोषिक के लिए सम्मेलन को भेजें।

संयोजक,
मुरारका-पारितोषिक समिति,
हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन,
प्रयाग।

—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादकीय दृष्टिकोण

१—पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी साहित्य

आधुनिक हिन्दी के निर्माण में पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी जी ने किस अनवरत तपस्या के साथ अपनी लेखनी का संचालन किया, यह प्रत्येक हिन्दी साहित्यिक को ज्ञात है। आधुनिक हिन्दी साहित्य का प्रत्येक लेखक किसी न किसी प्रकार से पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी के साहित्यिक व्यक्तित्व से प्रभावित है। खड़ी बोली में हिन्दी कविता के विकसित होने का अवसर एक मात्र द्विवेदी जी की दूर दृष्टि की देन है। समालोचना तो द्विवेदी जी का अपना विषय रहा। निबन्धों के क्षेत्र में वे परिष्कृत और बहुज्ञ लेखक रहे। अनुवादों से उन्होंने संस्कृत साहित्य की गौरव-श्री हिन्दी साहित्य के गद्य में भर दी।

उनके निधन से हिन्दी साहित्य का एक महारथी सदैव के लिए उठ गया। यद्यपि द्विवेदी जी के जीवन काल ही में उनकी प्रतिभा और अध्यवसाय का परिचय हिन्दी के साहित्यिकों को हो गया था, लेकिन उनके निधन से तो उनका महत्त्व और भी स्पष्ट हो गया है। अब विद्वानों का क्या कर्तव्य है? हम तो यही समझते हैं कि इस अवसर पर महावीर प्रसाद जी द्विवेदी की समस्त कृतियों का अध्ययन करने के बाद उनके सम्बन्ध की जितनी बातें ज्ञात हो सकें प्रत्येक पृष्ठ पर उनका सम्यक् प्रकाशन हो। उनके सम्पादन काल की सरस्वती के उनके साहित्यिक महत्त्व की छाप है। सरस्वती के आधुनिक सम्पादकों का कर्तव्य है कि वे सरस्वती के पुराने अङ्कों का अध्ययन कर द्विवेदी जी की सम्पादन कला पर यथेष्ट प्रकाश डालें। हिन्दी के समालोचक द्विवेदी जी के प्रत्येक साहित्यिक दृष्टिकोण पर समालोचना करें और उनके महत्त्व का निर्धारण करें। द्विवेदी साहित्य की विद्वानों द्वारा यह समालोचना एक वृहद् ग्रन्थ के रूप में प्रकाशित हो। यह कार्य या तो काशी नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा सम्पादित हो अथवा 'साहित्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

113047 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन के द्वारा। यदि हिन्दी के विद्वान समालोचक द्विवेदी जी की साहित्यिक कृतियों एवं उनके साहित्यिक दृष्टिकोण पर गवेषणापूर्ण समालोचनाएँ लिख कर हमारे पास भेजेंगे तो हम उन्हें सादर स्वीकार करेंगे और निकट भविष्य में उन्हें यथाचित रूप से क्रमबद्ध कर सम्मेलन द्वारा प्रकाशित कराने का उपक्रम भी करेंगे। आशा है हिन्दी के विद्वान् साहित्यिक इस पवित्र और आवश्यक कार्य में हमसे सहयोग करेंगे। आधुनिक हिन्दी में अब वह समय आ गया है जब आचार्य पण्डित महावीर प्रसाद द्विवेदी की कृतियों पर यथोचित प्रकाश डाल कर उनके महत्त्व का निरूपण किया जावे और हर प्रकार उनकी कार्यशीलता और तपस्या के प्रति हिन्दी साहित्य की श्रद्धाञ्जलि समर्पित की जावे।

२—क्षमा याचना

इस अङ्क में परीक्षा फल का समावेश होने के कारण सम्मेलन-पत्रिका के प्रकाशन में कुछ देर हो गई। इसके लिए पाठकगण हमें क्षमा करें।

———

113047

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नियमावली

१—सम्मेलन पत्रिका प्रति मास प्रकाशित होगी।

२—हिन्दी सा० स० के आदर्शों की पूर्ति में सहायक होना पत्रिका का मुख्य उद्देश्य है।

३—पत्रिका का वार्षिक मूल्य १) तथा एक अङ्क का =) होगा।

४—पत्रिका के संबन्ध में पत्र-व्यवहार साहित्य मन्त्री, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग के पते से करना चाहिए।

५—पत्रिका-संबन्धी पत्र-व्यवहार में जवाब के लिए टिकट आने चाहिए; अन्यथा आवश्यक-अनावश्यक का विचार कर पत्रोत्तर दिया जायगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिस्टर्ड नं० ए० ६२९

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन द्वारा
प्रकाशित कुछ पुस्तकें

(१) सुलभ-साहित्य-माला

१ भूषण ग्रन्थावली २)
२ हिन्दी साहित्य का सं० इतिहास ॥)
३ भारत गीत ≡)
४ राष्ट्र भाषा ॥)
५ शिवा बावनी ≡)
६ सरल पिंगल ।)
७ भारतवर्ष का इतिहास २)
८ ब्रजमाधुरी सार ३)
९ पद्मावत पूर्वार्द्ध १)
१० सत्य हरिश्चन्द्र ।–)
११ हिन्दी-भाषा सार ।।।)
१२ सूरदास की विनय पत्रिका ≡)
१३ नवीन पद्य संग्रह ।।।)
१४ कहानी-कुञ्ज ॥=)
१५ बिहारी संग्रह ≡)
१६ कवितावली १)
१७ सुदामा चरित्र ।)
१८ कबीर पदावली ।।।=)
१९ हिन्दी गद्य निर्माण १॥)
२० हिन्दी साहित्यकी रूप रेखा ।)
२१ सती करुणाकी ॥)
२२ हिन्दी पर फ़ारसी का प्रभाव ॥=)
२३ पार्वती मङ्गल ।)

(२) साहित्य रत्नमाला

१ अकबर की राज्य व्यवस्था १)

(३) वैज्ञानिक पुस्तक माला

१ सरल शरीर विज्ञान ॥), ।।।)
२ प्रारम्भिक रसायन १)
३ सृष्टि की कथा १)

(४) बाल साहित्य माला

१ बाल पद्य रत्न ॥)
२ वीर सन्तान ।=)
३ बिजली =)

(५) ओझा अभिनन्दन ग्रन्थ

१६)

(६) विविध पुस्तकें

१ महात्मा गाँधी के निजी पत्र ।–)
२ टालस्टाय के विचार ।–)
३ इतना तो जानो ।–)
४ सनयाट सेन ।)
५ संजीवनी ।–)
६ नीति दर्शन ।।।)
७ लाजपतराय की जीवनी ।।।)

मुद्रक—गिरिजाप्रसाद श्रीवास्तव, हिन्दी-साहित्य प्रेस, प्रयाग।
प्रकाशक—साहित्य मंत्री, हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Certified
1999-2000

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri